Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation Chennai

जन ज्ञान [मासिक] ज्येष्ठ २०३९

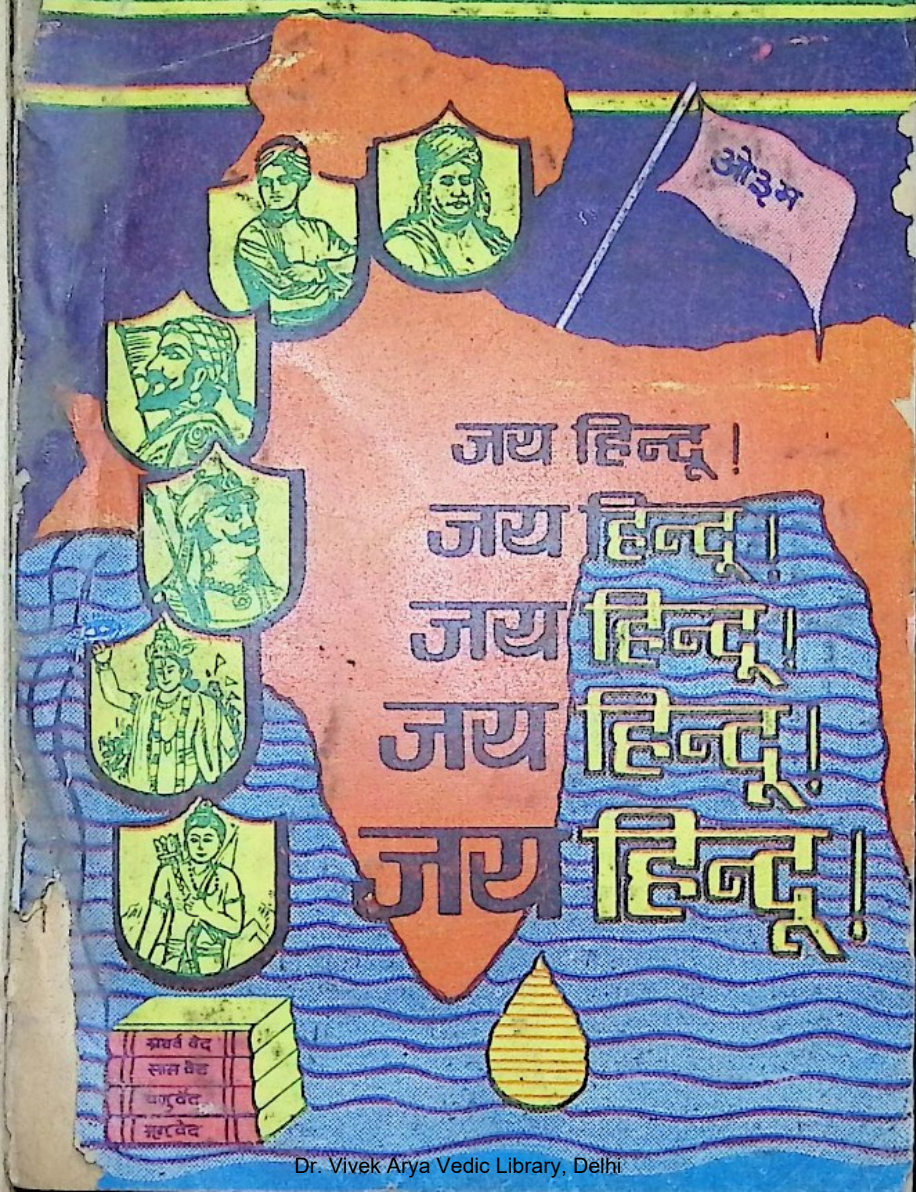


Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

श्रद्धा से, आदर से, अपनी समस्त पावन भावनाओं के साथ यह "जय हिन्दू" अंक उस महान् आत्मा को अर्पित करती हूं, जिन्हें मैंने कभी देखा नहीं पर जिनकी यश गाथाओं ने मुझे विकट संकट के क्षणों में जूझने का साहस प्रदान किया है। महान् क्रांतिकारी वीर सावरकर को निरन्तर विदेशों में प्र रणा देने वाले, अप्रतिम शौर्य के धनी

**—स्वर्गीय पंडित गयाप्रसाद शुक्ल**
**की स्मृति में सादर प्रणाम सहित—राकेशरानी**

जन्म : माघ बदि अष्टमी संवत् १९५१ : बलिदान ६ वैशाख १९८९

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादक
राकेशरानी
★
दूरभाष : ५६२६३६
५६४७४१-८०१२११
पता :
करौलबाग, नई दिल्ली-११०००५
वार्षिक शुल्क : २५ रुपए
विदेश में ६ पौंड : विमान से
३ पौंड : समुद्री डाक से
आजीवन : ५०१ रुपये
यह प्रति ६)
ज्येष्ठ संवत् २०३६
वर्ष १५ : अंक

# आप ही से !

आप का 'जन-ज्ञान' अनेक विघ्न-बाधाएं पार करता हुआ इस अंक के साथ ही पन्द्रहवें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। यह सब आप के सहयोग और प्रभु के आशीर्वाद से ही संभव हुआ है।

'जन-ज्ञान' का प्रत्येक अंक एक स्थायी अभिलेख बन चुका है। शासन उस पर बौखलाया है। यवन-ईसाई उसे मिटाने के लिए कृतसंकल्प हैं।

जुलाई-अगस्त-सितम्बर-अक्तूबर १९८१ के जन-ज्ञान के अंकों पर अभियोग शासन चला चुका है। अक्तूबर ८१ के अंक पर तो दो अभियोग चल रहे हैं। भविष्य में भी हम प्रत्येक संकट का सामना करने के लिए तैयार हैं।

इस संकट में भी क्या आप हमारी प्रार्थना पर ध्यान नहीं देंगे ? हमें आपका सक्रिय सहयोग चाहिए, ताकि हम सारे प्रहार सह सकें।

कम से कम अपने एक मित्र को जन-ज्ञान मासिक का सदस्य बना कर २५) उस का शुल्क भिजवाएं।

स्वयं आजीवन सदस्य बनें और सहयोग दें.....। आप भूलें नहीं कि हमारा बल-पूंजी सब आप ही हैं—

आपके स्नेह आशीर्वाद की इच्छुक
—राकेशरानी

CC-0. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

## इस अंक में पढ़िये


जय हिन्दू ! जय भारत !! (सम्पादकीय) ७
विजय के लिए संघर्ष (मैं हृदयमन्दिर से लिख रहा हूं ११
हिन्दू नेता ध्यान से पढ़ें (ऋषिवचनामृत) १७
पण्डिता राकेशरानी (एक परिचय)—जयकुमार १८
हिन्दुस्तान हिन्दुओं का है !—डा. केशवराम बलिराम हेडगेवार २१
हिन्दू समाज को चुनौती—श्री बालासाहेब देवरस ३३
एकजुट होकर हिन्दुत्व की रक्षा करें—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती ३८
तुष्टीकरण की आत्मघाती नीति का इतिहास
—स्व. भक्त रामशरणदास, पिलखुवा ४१
रग-रग हिन्दू मेरा परिचय (कविता)
—अटलबिहारी वाजपेयी ४५
यह है इस्लाम ! (स्वामी विवेकानन्द ने कहा था) ४६
हिन्दू शब्द की प्राचीनता—पण्डित श्रीपाद दामोदर सातवलेकर ५०
हिन्दू सम्प्रदाय नहीं, मानवधर्म है—सन्त प्रभुदत्त ब्रह्मचारी ५१
हिन्दुत्व ही राष्ट्रीयत्व—पं. मदनमोहन मालवीय ५२
हिन्दू धर्म 'रेलीजन' नहीं—रवीन्द्रनाथ ठाकुर ५३
जज़िया से हिन्दू मुसलमान बने—नेहरू जी ५४
क्या एक शताब्दी में हिन्दू संस्कृति का अन्त हो जायेगा ?
—बाबू श्रीप्रकाश ५५
मैं अब अपने को हिन्दू कहने में गर्व करता हूं—भवानीप्रसाद मिश्र ५७
कोई हमें कमजोर न समझे—ताराचन्द्र प्रेमी ५८
हिन्दुत्व के बिना भारतीय इतिहास शून्य है—डा. कर्णसिंह ५९
उस हिन्दू को मेरा प्रणाम !—स्व. मदनगोपाल सिंहल ६१
हिन्दू हूं रामचन्द्र "वीर" ६२
"हिन्दू का है हिंदोस्थान"—लक्ष्मीनारायणसिंह कुशवाह ६४
हिन्दू सावधान हों !—महन्त अवेद्यनाथ ६५
दो पाटन के बीच में हिन्दू बचे न कोय—स्वामी विद्यानन्द सरवस्ती ६७
हिन्दू कौन ? —आचार्य धर्मेन्द्र ७५




Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू की जय हो, जय हो (कविता)—कुमारी दिव्या ८१
करेंगे क्रान्तिमन्त्र गुंजार (कविता)—राकेशरानी ८३
हिन्दू साम्प्रदायिक हो ही नहीं सकता—जैनेन्द्र कुमार ८५
स्वतन्त्रता हिन्दू ने दिलाई—वीर सावरकर ९०
मेरी मीनाक्षीपुरम् यात्रा—डा० रघुवीर वेदालंकार ९२
भाई परमानन्दजी और हिन्दू राष्ट्र—शिवकुमार गोयल ९७
हिन्दू धर्म और उसकी विशेषताएं—विशनस्वरूप निर्द्वन्द्व (पटवारी जी) ११३
वीरता के आदर्श —डॉ० सुरेन्द्रसिंह ११६
भारत : इस्लामवाद के घेरे में—सीताराम गोयल ११८
हिन्दू धर्म विदेशियों की दृष्टि में—रमेशचन्द्र १२९
हिन्दुओं की घटती जनसंख्या के आँकड़े १३१
हिन्दुत्व—मानवकल्याण का मार्ग—डॉ. सम्पूर्णानन्द १३३
हिन्दुत्व —वैद्य गुरुदत्त १३४
हिन्दु जाति पर प्रहार—इन्द्रराज १३९
हिन्दू राष्ट्र की मांग करो—प्रेमप्रकाश १४१
गोरक्षा—एक राष्ट्रीय आवश्यकता—बृजकिशोर 'अश्क' १४५
भारत को हिन्दू राज्य घोषित करने के लाभ—प्रो. बलराज मधोक १५२
पाकिस्तान से सावधान रहने की आवश्यकता है —कोमलप्रसाद श्रीवास्तव १५७
वीर सावरकर के क्रान्तिकारी विचार १६१
चन्देमातरम्—वीर सावरकर १६३
वीर सावरकर की चिन्तनधारा १७४
राष्ट्र पर मँडराता भीषण संकट—प्रो. रामसिंह १८५
भारतीय राष्ट्र का जीवनरक्त क्या है ?
(स्वामी विवेकानन्द के विचार) १८९
मैंने इस्लाम क्यों छोड़ा ?—अमरेश आर्य २००
हिन्दू धर्म की मान्यताएं—प्रो० रत्नसिंह २०६
राजनीति के हिन्दूकरण का सवाल—कैलाश सत्यार्थी
भारत विभान के समय
हिन्दुत्व की रक्षार्थ बलिदान—स्व. भक्त रामशरणदास, पिलखुवा २१६
भारत के ग्रहमन्त्री के नाम—खुला पत्र २२३



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# जय हिन्दू विशेषांक

एक दिन बैठे-बैठे मन में विचार आया कि हिन्दू जन मानस को जगाने के लिए जन-ज्ञान (मासिक) का जय हिन्दू विशेषांक प्रकाशित किया जाए, और घोषणा कर दी।

आदेश इतने अधिक आए कि हम लाखों की संख्या में छापते तो भी मांग पूरी न हो पाती। किन्तु कागज की व्यवस्था न होने के कारण प्रथम संस्करण बहुत कम—केवल सोलह हजार ही छप सका।

जिनका धन २० अप्रैल तक आया था उन्हें ही यह अंक रिआयती मूल्य पर भेजा जा रहा है।

जनता की भारी मांग के कारण इसका दूसरा संस्करण भी प्रेस में दे दिया है और अब यह

## जय हिंदू विशेषांक

का नया संस्करण

**१०० प्रतियाँ लेने पर २) ५० प्रति, व कम लेने पर (कम से कम १० प्रतियाँ) ३ रु० के हिसाब से भेजा जाएगा।**

**जो मंगाना चाहें वे तुरन्त अपने आदेश भेज दें।**

जन-ज्ञान (मासिक) के नए सदस्यों को यह बिना मूल्य भेजा जाएगा।

अतः आप २५) भेजकर आज ही जन-ज्ञान (मासिक) के सदस्य बनें।

इस अंक के सम्पादन में श्री शिवकुमार गोयल व श्री सत्यपाल शास्त्री का उल्लेखनीय योगदान रहा है। हम उनके आभारी हैं। लेखकों का भी धन्यवाद। जो लेख देरी से आने के कारण नहीं छप सके, वे अगले अंकों में छापे जाएंगे।

—आभा

प्रबन्ध-सम्पादक

जन-ज्ञान (मासिक), वेदमंदिर कार्यालय

१५६७ हरध्यान सिंह मार्ग, करौलबाग नई, दिल्ली-५



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# क्या यह धर्म युद्ध हमें अकेले ही लड़ना होगा

दो विदेशी महाशक्तियों की चुनौती स्वीकार कर हमने उनपर प्रहार किया। हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए संघर्ष का बिगुल बजाया। परिणाम आप के समक्ष है।

मुसलमानों को संतुष्ट करने के लिए तीन अभियोग मुझ पर और एक महात्मा वेदभिक्षु जी पर हैदराबाद में चल चुके हैं। और भी न जाने कितने चलेंगे। प्रतिदिन मारने की धमकियां और पत्र तो मिलते ही रहते हैं।

देश के प्रत्येक भाग में काम फैल चुका है। किन्तु अर्थाभाव कार्य को बढ़ने से रोक रहा है। आप स्वयं सोचें कि इस स्थिति से निबटने के लिए आप का क्या कर्तव्य है?

मैं इन पंक्तियों द्वारा प्रत्येक हिन्दू से प्रार्थना कर रही हूं कि वह कम से १) तो धर्मयुद्ध में विजय के लिए तुरन्त भेजें। जो अधिक भेज सकें वे अधिक भेजें पर ऐसा कोई हिन्दू न हो जो १) भी न भेजे।

आप का यह १) रु० हमें विश्वास दिलाएगा कि आप का आशीर्वाद हमारे साथ है।

हम तो लड़ ही रहे हैं और संघर्ष भी करते ही रहेंगे किन्तु आप भी तो कुछ सोचिए कि आप क्या कर सकते हैं?

विजय के लिए संघर्ष-आहुति-बलिदान देने के लिए जितनी भावना जागेगी—सफलता उतनी ही समीप आएगी।

क्या आप कुछ सोचेंगे?

आपकी बहन

—राकेशरानी

अध्यक्ष

दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली-५



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

## देश-धर्म की रक्षा के लिए

# क्या आप १२५) भी नहीं भेज सकते ?

हमने पिछले डेढ़ वर्ष में हिन्दू जागरण के लिए जो कार्य किया उससे इस्लाम व ईसाइयत के अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्रकारी बौखला उठे हैं। उनकी पूरी शक्ति हमारे कार्यों को समाप्त करने में लगी हुई है।

**सम्पूर्ण हिन्दू समाज के लिए**

**यह एक चुनौती है**

हमारे सम्पूर्ण कार्यक्रमों को चलाने व शक्ति देने के लिए धन की तुरन्त आवश्यकता है।

**हमारी प्रार्थना है प्रत्येक हिन्दू अपने पास से**

**या**

**संग्रह करके अधिक से अधिक धन भेजें।**

**जो अधिक न भी भेज सकें वे इन पंक्तियों को पढ़कर**

## एक रीम कागज का मूल्य १२५) तो तुरंत ही भिजवाएं।

**आप काम नहीं रुकने देंगे, इसी विश्वास से आप को पुकार रहा हूं—**

—वेदभिक्षुः
अध्यक्ष

अखिल भारतीय
हिन्दू रक्षा समिति
१५९७ हरध्यानसिंह मार्ग,
करोलबाग, नई दिल्ली-५



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai



सम्पादकीय

# जय हिन्दू ! जय भारत !!

भारत के अतीत की गौरव गाथा सत्य, धर्म और न्याय के उदात्त सिद्धान्तों की यश गरिमा है— हम महान् थे, अपने सिद्धान्तों से, ज्ञान से, संदेश से। हमारे स्वर भू-मंडल में विजय के गीत बन कर गूंजते थे।

सैकड़ों वर्षों से विदेशी यवन व ईसाई अपनी शक्ति भर निरंतर हमें मिटाने का षड्यंत्र रचते रहे। तलवार के बल पर हमारी समाप्ति के लिए उमड़ती सेनाएं हमारी ऊर्जा से टकराकर समाप्त होती रहीं। हम सदा जीतते रहे, यदि हम कभी हारे भी तो केवल आपसी फूट से।

वेद के शब्दों में हम ने "वयं जयेम" का मंत्र पाठ किया। गीता के स्वर में निरंतर निष्काम कर्म करने की हमारी भावना जागृत रही। अपनी अमरता की बात नैनं छिन्दन्ति.....के स्वर में भगवान् कृष्ण की वाणी हमारी प्रेरणा बनकर मानस का चिन्तन बनती रही।

काल से टकराना हमें आया। शत्रु की तलवार को हमने सदा मुस्कराकर देखा और संकटों के घोर घने जगंल में भी हमारी वाणी हमारी शक्ति सदा अजेय रही।

१८५७ के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद जब निराशा का वातावरण सर्वत्र व्याप्त था, युगपुरुष दयानन्द ने एक ओर जहां हमें अपने अतीत गौरव से परिचित कराया, वहां हमारी भूलों का मार्ग दर्शन कर हमें सर्वत्र सफलता की प्रेरणा प्रदान की।

यवन-ईसाई मतों पर प्रबल प्रहार कर उन की धज्जियां उड़ाते हुए सत्य-असत्य का विवेक प्रदान कर महर्षि दयानन्द ने हमें जो मंत्र दिया, उस ने सोयी आर्य-हिन्दू शक्ति को एक बार फिर सिंह की तरह गौरव से सिर ऊंचा उठा कर चलने का मार्ग दर्शन दिया।

शुद्धि का मंत्र भारत वसुन्धरा में गूंजा। उनकी तलवार चमकती रही। हम लेखराम श्रद्धानन्द, राजपाल



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के रूप में सहस्रों बलिदान देते रहे। हम बढ़ते रहे, गूंजते रहे।

हमारे राजनैतिक नेताओं की अदूरदर्शितापूर्ण नीति ने हमें यवनों की खुशामद के मार्ग पर डालना चाहा, जिससे सांप्रदायिक शक्तियों को उभार मिला। भारत मां के टुकड़े हुए और लाखों का रक्तपान कर देश स्वतंत्र हुआ।

दुर्भाग्यवश पाकिस्तान निर्माण का घटना-चक्र भी हमारे नेताओं के नेत्र खोलने में, उनका व्यामोह समाप्त करने में असमर्थ रहा। परिणामस्वरूप सैक्युलरवाद, तुष्टीकरण और वोटों की राजनीति ने देश के भविष्य को दांव पर लगा दिया। १९४६ का वातावरण १९८० में फिर से जाग गया।

अरब देशों से धन आया, देश का मुल्ला जगा और विश्व के इस्लामीकरण की दुरभिसंधि ने भारत को इस्लामिस्तान बनाने की योजनाओं पर विधिवत् आचरण आरम्भ कर दिया। मुरादाबाद-संभल-हैदराबाद-गोधरा-अलीगढ़ आदि स्थानों पर मुसलमानों ने रक्त की होली खेलने का दुस्साहस किया। मीनाक्षीपुरम् जैसे सैकड़ों स्थानों पर हिन्दुओं को मुसलमान बनाने की प्रक्रियाएं आरम्भ हुईं।

परिणामस्वरूप हिन्दू जागा किन्तु दुर्भाग्यवश हिन्दू नेताओं ने शत्रु से टकराने और समस्याओं को ललकारने के स्थान पर गोलमोल नीति अपनायी। कुछ करने के स्थान पर धन संग्रह की योजनाएं ही प्रमुखता से उभरीं और एक बार फिर संकट सिर पर मृत्यु बन खड़ा हो गया। और आज...

अप्रैल १९८२ में जब ये पंक्तियां लिखी जा रही हैं, भारत मां के खंड-खंड होने की संभावनाएं तीव्रता से बढ़ रही हैं। पूर्वांचल में ईसाई पादरी नागालैंड-अरुणांचल-त्रिपुरा, मिजोरम में ईसाइयत का डंका बजा रहे हैं। छोटा नागपुर-झारखंड-हिमांचल में विदेशी पादरी हमें चुनौती दे रहे हैं।

देश के लगभग सभी स्थानों पर प्रत्येक मस्जिद को केन्द्र बनाकर मुल्ला और उनके साथी भारत को दारुल इस्लाम बनाने के लिए प्रत्येक संभव पग उठा रहे हैं। शासन की कायरतापूर्ण नीति से जहां कशमीर सुलग रहा है, वहां पंजाब में भी सांप्रदायिक शक्तियां नंगा नाच नाच रही हैं। देश में सम्प्रदायवाद और विघटनकारी तत्त्वों के हौसले बढ़ते जा रहे हैं।

ऐसी गंभीर स्थिति में जब मां पर संकट हो, जब देश की अखंडता पर प्रहार हो रहे हों, देशद्रोहियों को कुचलने के स्थान पर उन्हें स्वतंत्रता सेनानी माना जा रहा हो, कोई भी देशभक्त मौन दर्शक बन कर नहीं बैठ सकता।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमने पिछले १८ माह में देश-भक्त जनता को पुकारा है। हमारी पुकार से जागरण का शंख बजा है। उस के स्वर सुनकर मुस्लिम देश-द्रोही शक्तियां तिलमिलायी हैं और उनके प्रहार भी हम पर हो रहे हैं। शासन द्वारा अनेकों मुकद्मे चला कर हमें दबाने का—कुचलने का प्रयास किया जा रहा है। किन्तु हमें गौरव है, अभिमान है, इस देश की देश-भक्त जनता पर। हमारे स्वर ने जनता को जीवन के स्वर दिए हैं और आज सर्वत्र ये नारे गूंज रहे हैं—

हिन्दुओ जागो ! देश बचाओ !!
वन्दे मातरम् गाना होगा
या भारत से जाना होगा।

वस्तुतः आज सारे देश में हिन्दू लहर चल पड़ी है। हिन्दू वीर अपनी पूर्ण शक्ति से मां को अर्घ्य चढ़ाने के लिए अपने सिर कटाने और मां का अंग भंग करने वालों को कठोरतम दंड देने के लिए मचल रहे हैं। सोया स्वाभिमान जाग रहा है। मैं देख रही हूं, अपनी दूर दृष्टि से कि वह दिन शीघ्र आएगा जब हम भारत को—

## हिन्दू गणराज्य घोषित करेंगे

इसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए हमने जन-ज्ञान के १५वें वर्ष में प्रविष्ट होने पर प्रथम अंक "जय हिन्दू" के रूप में भेंट किया।

यह अब आप के हाथ में है। अर्थाभाव की चक्की में पिसते हुए बिना किसी भौतिक सहारे के केवल प्रभु विश्वास के बल पर जहां हम लाखों की संख्या में जागरण पुस्तिकाएं प्रकाशित कर चुके हैं, वहां जागरण का प्रबल शंखनाद करते हुए यह 'जय हिन्दू' अंक इस विश्वास से भेंट करते हैं कि देश का प्रत्येक हिन्दू देश के कण-कण में जय हिन्दू का नाद गुंजाएगा।

इस्लाम का परचम हम भारत पर नहीं लहराने देंगे, भारत को ईसालैंड या इस्लामिस्तान बनाने वालों के षड्यन्त्र हम नष्ट करेंगे। भारत की एकता, अखंडता और स्वतंत्रता पर प्रहार करने वालों से हम टकराएंगे। वे हारेंगे और हम जीतेंगे।

हिन्दू जीतेगा।
भारत हिन्दू राष्ट्र बनेगा।
तिरंगा शान से लहरायेगा।
हिन्दू कभी हारा नहीं—
हारेगा नहीं।

आत्मविश्वास का यह स्वर गुंजाते हम चल पड़े हैं—जो साथ आएं, स्वागत। जो कायर बनें—धन्यवाद। हमारे चरण विजयवरण के बिना अब रुकेंगे नहीं।

## चूड़ियां पहनोगे या रणभेरी बजाओगे?

हिन्दू नेताओं से एक प्रश्न पूछना चाहती हूं कि आगे आने वाले संघर्ष में उनका क्या भाग होगा ? वे कायरों



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की भाषा में ही बातें करते रहेंगे या रणभेरी बजाएंगे ?

समस्या जितनी कठिन है, उसे हम उतना महत्त्व नहीं दे पा रहे। सांप्रदायिकता का फुंकारता फन सर्वत्र सिर उठा रहा है। वह भाषणों से नहीं कुचला जाएगा। उसके लिए हमें निर्णायक युद्ध-संघर्ष करना होगा या मरना होगा।

क्षमा करें, हमारे नेताओं ने अब तक काम के नाम पर निधियां जमा की हैं। सब एक साथ बैठने को भी तैयार नहीं। धन संग्रह या थोथे भाषण—इस के अतिरिक्त वे कुछ नहीं चाहते !

हिन्दू वीरों से मुझे कहना है कि कौरव दल का दर्प दलन करने के लिए भगवान् कृष्ण के नाम पर सेना सजाओ। संगठित हो जाओ। प्रतिज्ञा करो कि—

१. हम भारत में एक भी मुस्लिम विश्वविद्यालय नहीं बनने देंगे।

२. तिरंगे झंडे का अपमान नहीं होने देंगे।

३. एक भी हिन्दू यवन-ईसाई नहीं हो पाएगा।

४. सांप्रदायिक शक्तियों को—विभाजक देशद्रोही तत्त्वों को समाप्त करने के लिए प्रारम्भ देकर भी संघर्ष करेंगे।

५. दंगे करने वालों को पूरे बल से कुचलेंगे।

६. भारत को हिन्दू गण राज्य घोषित कराएंगे।

७. ओ३म् ध्वज सर्वत्र फहराएंगे।

८. भारत मां का मस्तक नहीं झुकने देंगे।

९. हिन्दू की विजय के लिए जो भी संभव होगा करेंगे।

१०. विदेशी आक्रमणकारियों को सेना-पुलिस में आरक्षण चाहने वालों को, देशद्रोही समझेंगे और उन्हें समाप्त करेंगे।

ये १० प्रतिज्ञाएं जो ले सकें, वे वे हमारे साथ आएं—जो सैक्यूलरिज्म के गीत गाते हों, वे चूड़ियां पहन लें।

हमें खेद है कि शासन आपकी इस बहन पर तीन अभियोग चला चुका है। मतान्ध शक्तियां प्रतिदिन हत्या का भय दिखा रही हैं, किन्तु मैं तो सदा मृत्यु के स्वागत के लिए तैयार हूं।

कोई साथ दे या न दे, हमारा अभियान नहीं सकेगा। हम अपने रक्त से हिन्दू गणराज्य की नींव रखेंगे और आगे बढ़ेंगे। आप स्वयं सोचिए कि आपको कायरों की भांति जीना है या वीरों की तरह मृत्यु वरण करना है जो धर्म युद्ध में विजय के लिए आहुति दें सकें, हमारे हाथ उनके मस्तक पर टीका करना चाह रहे हैं—कौन आएगा तिलक लगवाने।

—राकेशरानी



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—वेदभिक्षुः

# विजय के लिए संघर्ष

हमारे धर्म पर, संस्कृति, स्वतंत्रता और देश पर इतना बड़ा संकट कभी नहीं आया जितना आज मंडराया है। संसार की दो महान् शक्तियां विदेशी ईसाई मिशनरी और अन्तर-राष्ट्रीय इस्लामी संगठन हमें समाप्त करने के लिए कृतसंकल्प होकर हम पर आक्रमण कर चुके हैं। किन्तु हमारा शासन सब कुछ जानता हुआ भी मौन है। उसकी नीति तुष्टीकरण की नीति है जिसका लाभ उठा कर षड्यन्त्रकारी बढ़ते जा रहे हैं।

गत १८ माह से हम ने देश के जन-मानस को पुकारा है। हमें प्रसन्नता है कि आज हिन्दू शक्तियां भी संगठित होकर कर्मक्षेत्र में उतरी हैं। किन्तु अभी तक भी स्थिति का सही चित्रण और समस्या का हल उनके मस्तिष्क में नहीं है।

हमने हिन्दू रक्षा समिति के माध्यम से इस चुनौती को स्वीकार किया। प्रत्येक स्थान पर सभी संगठनों का सहयोग हमें मिला और आज स्थिति यह है कि इस्लाम और ईसाइयत के संगठन पूरे बल से हमें मिटाने की तैयारी कर रहे हैं।

हमने युद्ध का बिगुल प्रभु के भरोसे बजाया है। देश का जन-मानस हमारे साथ है। हम निर्भय होकर सभी आपदाओं का मुस्कराते हुए सामना कर रहे हैं। शासन ने ३ अभियोग पंडिता राकेशरानी पर, एक अभियोग हैदराबाद में मुझ पर और हमारे हैदराबाद के अधिकारियों पर कानून के अंतर्गत चलाए हैं। किन्तु हमने आज तक अपनी नीतियां न बदली हैं, न बदलेंगे।

हमारी स्पष्ट घोषणा है कि—

१. भारत मां की स्वतंत्रता नष्ट नहीं होने देंगे।

२. जो भारत की आजादी, एकता और गौरव पर प्रहार करेगा, वह भारत का शत्रु है और उसे भारत से जाना होगा।

३. हमारा नारा—

वन्देमातरम् गाना होगा या
भारत से जाना होगा—

आज सारे देश का नारा बन चुका है। हम इसे प्रबल स्वर में गुंजाते रहेंगे।

ज्येष्ठ संवत् २०३६



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

४. भारत में एक भी मुस्लिम विश्वविद्यालय हम नहीं बनने देंगे।

५. मुसलमान भारत में हमारे बराबर के अधिकार लेकर रह सकते हैं पर यदि वे अल्पसंख्यक होने के नाते विशेष अधिकार चाहेंगे, तो उन्हें नहीं दिए जाएंगे।

६. भारत के सभी नागरिकों के लिए समान विधि-नियम शासन को बनाने होंगे।

७. तिरंगे झंडे का अपमान हम नहीं होने देंगे।

आज का संघर्ष हिन्दू-मुस्लिम या हिन्दू-ईसाई संघर्ष नहीं, यह देशद्रोहियों व देश-भक्तों का संघर्ष है।

इस संघर्ष में विजय हमारी होगी यह हमारा अटल विश्वास है।

राष्ट्र के जन-मानस में हिन्दू विजय की भावना जगाने की दृष्टि से यह "जय हिन्दू" अंक एक शक्तिशाली माध्यम सिद्ध होगा। हमारा संपूर्ण साहित्य पहले ही देश को जगा चुका है, फिर भी अभी लक्ष्य बहुत दूर है।

हम एक निर्णायक युद्ध लड़ रहे हैं। हमें जीतना ही है। लाखों सिर कटा कर भी हम विजय वरण करेंगे भारत के कण-कण पर 'ओ३म्' पताका लहराएंगे। यह हमारा दृढ़ विश्वास है।

आप से भी मेरी प्रार्थना है कि हिन्दू की जय के लिए उदारतापूर्वक हमें सहयोग दें। ऐसा न हो कि साधनों के अभाव में हमारे बढ़ते हुए कार्यों में बाधा उत्पन्न हो जाये।

प्रत्येक हिन्दू इन पंक्तियों को पढ़कर चाहे १) भेजे या १०००) किन्तु तुरन्त भेजे, अवश्य। आप की छोटी-सी सहायता भी हमारे लिए बहुत बड़ी सिद्ध होगी।

मैं विश्वास रखता हूं कि संकट की इस भीषण घड़ी में, जब हम जीवन या मृत्यु के झूलों में झूल रहे हैं, इस देश की हिन्दू जनता का आशीर्वाद हमें मिलेगा। हम आप को विश्वास दिलाते हैं कि हिन्दू की जय के लिए हम अपने प्राणों की अंतिम सांस तक लड़ते रहेंगे।

इस विश्वास के साथ कि विजय हमारी होगी—हिन्दू की होगी।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

## प्यार का उत्तर प्यार से— ईंट का उत्तर पत्थर से दो।

आज की संकट की घड़ी में कायरता या गोलमोल भाषा बोलने से काम नहीं चलेगा, हमें प्यार का उत्तर प्यार से और ईंट का उत्तर पत्थर से देने की नीति पर चलना होगा।

देश द्रोही शक्तियां जिस तेजी से सिर उठा रही हैं उन्हें यदि उसी तेजी से न कुचला गया तो हमारा सब कुछ संकट में पड़ जाएगा।

अन्तरराष्ट्रीय इस्लामवाद व विदेशी पादरियों के षड़यन्त्र रंग ला रहे हैं। चारों ओर दंगे, अलगाव व हिंसा का वातावरण पनप रहा है। इसका सामना करने के लिए हमें ईंट का जवाब पत्थर से और प्यार का जवाब प्यार से देने की नीति अपनानी पड़ेगी।

समय की मांग है कि हिन्दू संगठित हों और देश-धर्म-स्वतंत्रता की रक्षा के लिए सर्वस्व समर्पण की भावना से कार्य करें। तभी हम जीवित रह सकेंगे, अन्य कोई मार्ग है ही नहीं।

## शुद्धि का अमोघ अस्त्र

शुद्धि का मंत्र भारत की समस्याओं का एक मात्र हल है। मुसलमान और ईसाई सभी पहले हिन्दू थे। वे फिर से अपने घर में लौट आएं, और विदेशों की ओर मुंह उठाने के स्थान पर भारत मां की वन्दना करें, इस से उत्तम मार्ग कोई और है ही नहीं।

सभी हिन्दू संगठन मिलकर सभी भारतवासियों को हिन्दू बनने का प्रेमपूर्वक निमंत्रण दें। हिन्दू धर्म की विशेषताएं सभी तक पहुंचाएं और जो भी हिन्दू धर्म ग्रहण करे उन्हें प्यार से गले लगाएं।

हम यह न भूलें कि भारत को ईसालैंड या इस्लामिस्तान बनाने का सही उत्तर शुद्धि का शंखनाद ही है।

## मेरा स्वास्थ्य

पिछले दिनों की दौड़ धूप के कारण मेरा स्वास्थ्य फिर बहुत तेजी से बिगड़ गया है। जिगर-तिल्ली-गुर्दे काम ठीक नहीं कर रहे। ब्लड शूगर भी है। और बीमारी पोर्टल हाइपरटेंशन तो स्थायी है ही।

अतः मैं प्रार्थना करूंगा कि मुझे आप अपने उत्सव आदि में न बुलाएं। एक स्थान पर बैठकर जो भी सेवा, जितने दिन भी कर सकूंगा, करता रहूंगा।

आप सभी के स्नेह के लिए मैं आभारी हूं। मेरी इच्छा केवल यह है कि जीवन की अंतिम सांस तक हिन्दू संगठन का कार्य करता रहूं। इस कार्य में आप का सहयोग और आशीर्वाद जितना भी मिलता रहेगा, उतना ही कार्य मैं करता रहूंगा। प्रभु हिंदू जनता को जागृत करेंगे और भारत शीघ्र हिन्दू गणतंत्र घोषित होगा, यह मेरा स्वप्न है। इसकी पूर्ति के लिए आप जो भी कर सकते हों, करें।

—वेदभिक्षुः



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुस्लिम साम्प्रदायिक शक्तियों को प्रसन्न करने के लिए

२१ फरवरी की रात्रि को

धार्मिक हिन्दू नेता

दयानन्द संस्थान १५९७ हरध्यानसिंह मार्ग,
करोल बाग, नई दिल्ली-५ की अध्यक्ष

# पंडिता राकेशरानी को

धारा १५३ए व २९५ए के अंतर्गत
रात्रि में गिरफ्तारी व हवालात में रखने तथा उनपर तीन
मुकद्दमे चलाने का देश की हिन्दू जनता

# तीव्र विरोध करती है

आप भी प्रधान मंत्री व गृह मंत्री को पत्र लिख अपना

विरोध प्रकट करें

रामगोपाल शालवाले
(प्रधान सार्वदेशिक सभा)

प्रो० रामसिंह

बल राज मधोक
प्रधान
भारतीय जनसंघ

गोस्वामी गिरधारी लाल
(प्रधान सनातनधर्म सभा)

हंसराज गुप्त
(भू० पू० महापौर)

देवकीनन्दन
एडवोकेट

विक्रम सावरकर
अध्यक्ष
अ० भा० हिन्दू महासभा

श्याम सुन्दर सेठ

ओंकार सिंह
प्रधान बार एसोसिएशन
नई दिल्ली

विशन स्वरूप पटवारी

गणपति आर्य— प्रधान आर्य समाज बंबई

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai


जिस के घर में 'वेद' नहीं
वह हिन्दू का घर नहीं

हिन्दू मात्र का मान्य ग्रन्थ
परमात्मा की अमर वाणी

# चारों वेदों का हिन्दी भाष्य

मन्त्र - अर्थ - भावार्थ - स्वर - छन्द-देवता सहित

सुनहरी जिल्दें : अच्छा कागज
लागत मूल्य ४४४) किन्तु जन-ज्ञान के सदस्यों को
८ जून १९८२ तक
केवल २५१) में
साथ में ५१) का साहित्य भी
उपहार में दिया जाएगा।

सर्वश्रेष्ठ कागज पर उपहार संस्करण
मूल्य ८०४) : रिआयती मूल्य ६०१)
साथ में १०१) का साहित्य मुफ्त
५०) अगाऊ भेजें : शीघ्रता करें

दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर कार्यालय
१५९७, हरध्यानसिंह मार्ग, करोल बाग, नई दिल्ली-५


Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# धर्मयुद्ध में विजय के लिए

## प्राप्त दान सूची

| | |
|---|---|
| १. आर्यसमाज नई मंडी, मुजफ्फरनगर | ५०१-०० |
| २. ट्रांसपोर्ट कारपोरेशन आफ इंडिया, बम्बई | ५०१-०० |
| ३. स्त्री आर्यसमाज गांधी कालोनी, मुजफ्फरनगर | २५०-०० |
| ४. श्री शुगनचंद बंसल, मुजफ्फरनगर | २५१-०० |
| ५. श्री रामनारायण जी, मुजफ्फरनगर | २५१-०० |
| ६. श्री शिवाजी एम प्रेमनाथ, मुजफ्फरनगर | २५१-०० |
| ७. श्री बलवन्तसिंह, मुजफ्फरनगर | १२५-०० |
| ८. श्री विशम्भर दयाल, मुजफ्फरनगर | १५१-०० |
| ९. श्री रामचन्द्र जी, मुजफ्फरनगर | ५१-०० |
| १०. श्री सेवाराम जी, मुजफ्फरनगर | २१-०० |
| ११. श्री जयप्रकाश जी, मुजफ्फरनगर | ५१-०० |
| १२. श्री एम. जनेश्वर, मुजफ्फरनगर | ३१-०० |
| १३. श्री लाजपतराय जी, मुजफ्फरनगर | २१-०० |
| १४. श्री प्रेम प्रकाश आर्य, धुरी | १२२५-०० |
| १५. श्री खेमचन्द्र गुप्ता, श्रीगंगानगर | ५००-०० |
| १६. लाला गुलशन राय, मुजफ्फरनगर | २५१-०० |
| १७. आर्यसमाज गुड़गांव | २०१-०० |
| १८. श्री पटेल दयालाल गोपाल, सिगुप्पा, कर्नाटक | १२५-०० |
| १९. श्री शालिग्राम गौतम, नई दिल्ली | १२०-०० |
| २०. श्री सुरेशचन्द्र सारस्वत, बुलन्दशहर | १२५-०० |
| २१. श्री काशीराम और ताराचन्द गांधी, मेरठ | २०-०० |
| २२. श्री एन. एम. बागड़ी, बम्बई | १००-०० |
| २३. श्री रामनाथ वेदालंकार, तिलहर, शाहजहांपुर | १००-०० |
| २४. श्री पी. के. जरीवाल धनबाद, बिहार, | १००-०० |
| २५. श्री आर. एस. भटनागर, चण्डीगढ़ | ५१-०० |

सभी का हार्दिक धन्यवाद ।

—राकेशरानी



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

## हिन्द् नेता ध्यान से पढ़ें !

महर्षि दयानन्द सरस्वती

### आपस की फूट से देश का पतन

जब आपस में भाई-भाई लड़ते हैं तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है। आपस की फूट से कौरव-पांडव और यादवों का सत्यानाश हो गया सो तो हो गया, परन्तु अब तक भी वही रोग पीछे लगा है। न जाने यह भयंकर राक्षस कभी छूटेगा या आर्यों को सब सुखों से छुड़ाकर दुःख सागर में डुबा मारेगा। उसी दुष्ट दुर्योधन, गोत्रहत्यारे, स्वदेश विनाशक नीच के दुष्ट मार्ग में आर्य लोग अब तक भी चलकर दुःख बढ़ा रहे हैं। परमेश्वर कृपा करे कि यह राजरोग हम आर्यों में से नष्ट हो जाए। (स० प्र० स० १०)



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

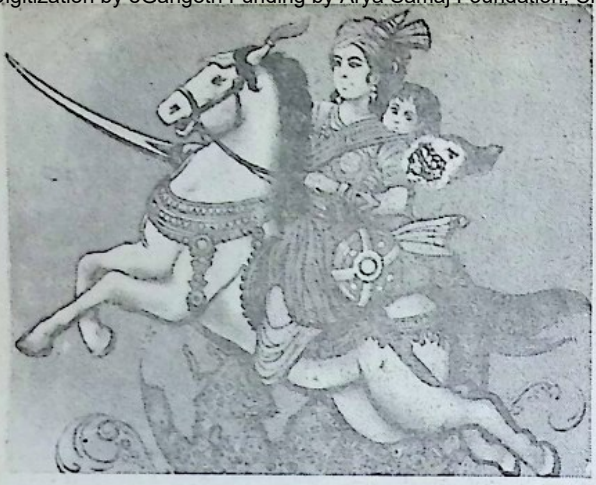

## खूब लड़ो मरदानी वह तो झांसी वाली रानी थी

सिंहासन हिल उठे, और कांपने लगी अंग्रेजी सत्ता, जब झांसी की रानी महारानी लक्ष्मीबाई वीर वेश धारण कर समर में कूद पड़ी।

वीरता की प्रतिमूर्ति महारानी लक्ष्मीबाई का नाम स्मरण आते ही देह में स्वयं जोश भर जाता है।

मातृ-भूमि की स्वतन्त्रता के लिए अगणित महिलाओं ने अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। भारतीय नारी सदा से वीरता की प्रतिमूर्ति रही है। उसने वीर वेश धारण कर समरांगण में शत्रु को ललकारा ही नहीं, पीछे भी हटाया है।

भारत ही वह पुण्य भूमि है जिसने नारी को भोग्या नहीं, पूज्या माना है। जिसकी नीति रही है—"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः ॥

इसी परम्परा में आज हमारे देश की प्रधानमंत्री एक महिला हैं। श्रीमती इन्दिरा गांधी की नीतियों से किसी को चाहे कितना ही मतभेद क्यों न हो, किन्तु इससे कोई इनकार नहीं कर सकता, कि राष्ट्रीय संकट की घड़ी में उन्होंने आगे बढ़कर शत्रु के छक्के छुड़ाये थे।

इसी परम्परा में आज संसार की दो महाशक्तियों ने हमारे धर्म, संस्कृति, स्वतंत्रता पर प्रहार किया तो उन आसुरी शक्तियों की चुनौती स्वीकार कर



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उनसे जझने वाली महान् महिला श्रीमती राकेशरानी भी हमारे लिए आदर्श हैं। धर्म युद्ध में जब आज के हिन्दू नेता गोल-मोल भाषा में बातें करते हैं, तब आपने इस्लाम और ईसाइयत की दुरभिसंधि की वास्तविकता प्रकट करते हुए प्राणों को हथेली पर रखकर शंख नाद किया है।

पंडिता राकेशरानी

मुसलमानों के अनेक संगठन उनके लेखों का उत्तर देने में अपने को असमर्थ पा कर ओछे प्रहार कर रहे हैं। तुष्टीकरण की नीति के वशीभूत होकर शासन भी उनपर तीन मुकद्मे दायर कर चुका है। रात्रि में (२१ फरवरी) को उन्हें हवालात में बन्द कर शासन ने अपनी अदूरदर्शिता का ही परिचय दिया है। किन्तु इस वीर धार्मिक महिला के साहस की उपमा नहीं। वे आज



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू रक्षा समिति शाहगंज (जौनपुर) के अधिकारियों व संरक्षकों के साथ पंडिता राकेशरानी व महात्मा वेदभिक्षुः।

° ° °

भी अपने पथ पर अडिग आगे बढ़ती चली जा रही हैं। दयानन्द संस्थान के अध्यक्ष रूप में जहां उन्होंने परमात्मा की अमरवाणी चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य छपवाकर घर-घर पहुंचाया है, वहां इस्लाम और ईसाइयत के विरुद्ध उनकी सबल लेखनी ने राष्ट्र में नये प्राण संचारित कर दिये हैं। काल से भी टकराने का उनका साहस, मुस्कराते हुए मृत्यु का स्वागत करने का उत्साह और केवल प्रभु के भरोसे दिन रात स्वयं को जलाकर भी काम करने की भावना देखकर प्रत्येक हिन्दू का सिर उनके चरणों में झुक जाता है। वे सच्चे अर्थों में मां बनकर आज देश के साठ करोड़ हिन्दुओं को एक सूत्र में आबद्ध कर शंखनाद कर रही हैं।

आज आवश्यकता है कि हम ऐसी वीर विदुषी महिला से प्रेरणा लेकर सत्य-धर्म-राष्ट्र की रक्षा के लिए जो कुछ भी कर सकते हों, करें।

हिन्दू जगत् की ओर से मां के चरणों में सादर वन्दना के पुष्प अर्पित कर रहा हूं।

जयकुमार, रांची (बिहार)



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

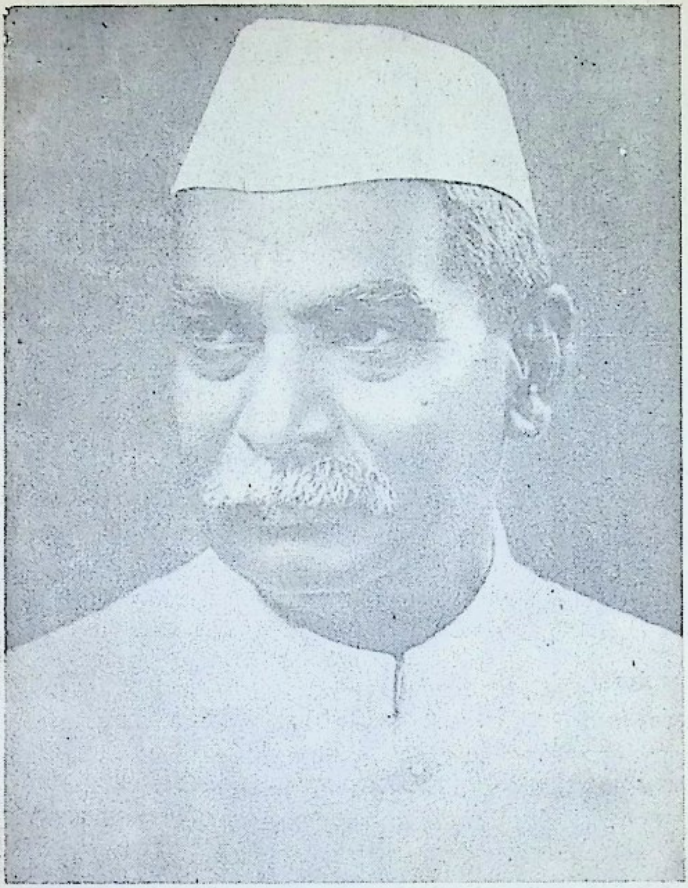

भारत के प्रथम राष्ट्रपति
सोमनाथ मन्दिर के उद्धारक
आदर्श हिन्दू—हिन्दी के समर्थक
**स्व० डा० राजेन्द्रप्रसाद**



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# हिन्दुस्तान हिन्दुओं का है !

**—डॉ. केशवराम बलिराम हेडगेवार**

केवल भूमि के किसी टुकड़े को 'राष्ट्र' नहीं कहते है। एक विचार, एक आचार, एक सभ्यता एवं एक परम्परा से जो लोग पुरातन काल से रहते आये हैं उन्ही लोगों से 'राष्ट्र' बनता है। इस देश को हमारे ही कारण 'हिन्दुस्थान' नाम दिया गया है। दूसरे लोग यदि सामोपचार से इस देश में बसना चाहते हैं, तो अवश्य बस सकते हैं। हमने उन्हे न कभी मना किया है, न करेंगे।

इंगलैण्ड अंग्रेजों का, फ्रान्स फ्रांसीसियों का, जर्मन जर्मनों का देश है। इस बात को उपर्युक्त देशों के निवासी सहर्ष घोषित करते हैं। किन्तु इस अभागे हिन्दुस्थान के स्वामी हिन्दू स्वयं अपने को इस देश का अधिकारी कहने का साहस नहीं करते। ऐसे विपरीत भाव हममें क्यों पैदा हो गये हैं?

हिन्दुस्थान की परिभाषा पुरातन काल से असंदिग्ध रूप से चली आई है। किन्तु हिन्दुओं का हिन्दुस्थान कहते ही आज के हमारे नेतागण चौंक उठते हैं।

भारतवर्ष, भरतखण्ड, आर्यावर्त्त, हिन्दुस्थान आदि नामों के द्वारा एक ही अर्थ प्रकट होते हुए भी उस अर्थ की कल्पनामात्र से हम हड़बड़ा जाते हैं। किसी जकड़े हुए तोते जैसी हमारी अवस्था हो रही है। भँवर में फंसे गोते खा रहे हैं। जो लोग हमारी संस्कृति को नष्ट-भ्रष्ट करने पर तुले हुए हैं, उन्हें गले लगाने के लिए हम मरे जा रहे हैं। यह सारा परिणाम है हमारी मानसिक दासता का, दुर्बलता का।

हिन्दुस्थान को दुनिया के सभी लोगों का समझकर 'साहेब जी' हिन्दुस्थान! बन्दगी हिन्दुस्थान! गुड मार्निंग हिन्दुस्थान! जैसे गीत गाते रहना और 'असहाय भारत की रक्षा करो' 'रक्ष भारत सहायहीना' आदि करुण प्रार्थना करना अपनी आंतरिक दुर्बलता का परिचय देना है। दूसरों से सहायता की आशा करना या भीख मांगना निरी दुर्बलता का चिह्न है। इसलिए निर्भयता के साथ यह घोषणा करो कि "हिन्दुस्थान हिन्दुओं का ही है"। अपने मन की दासता और दुर्बलता बिलकुल दूर भाग दो। हम यह नहीं कहते कि विदेशी लोग यहाँ न रहें। परन्तु विदेशी लोग इस बात को कभी न भूलें कि वे हिन्दुओं के हिन्दुस्थान में रहते हैं और उन्हें हिन्दुओं के अधिकारों का अतिक्रमण करने का कोई अधिकार नहीं। हमें ऐसी परिस्थिति उत्पन्न कर देनी चाहिए कि हमारे सिर पर दूसरे लोग सवार न हों।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Dr. Vivek Arya Collection, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

श्री बाला साहब देवरस सर संघचालक दयानन्द संस्थान की अध्यक्ष सुप्रसिद्ध हिन्दू नेता पंडिता राकेशरानी से चारों वेदों का भाष्य ग्रहण कर रहे हैं।

## धर्मयुद्ध में विजय के लिए अपने नगर में हिन्दू रक्षा समिति स्थापित करें



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

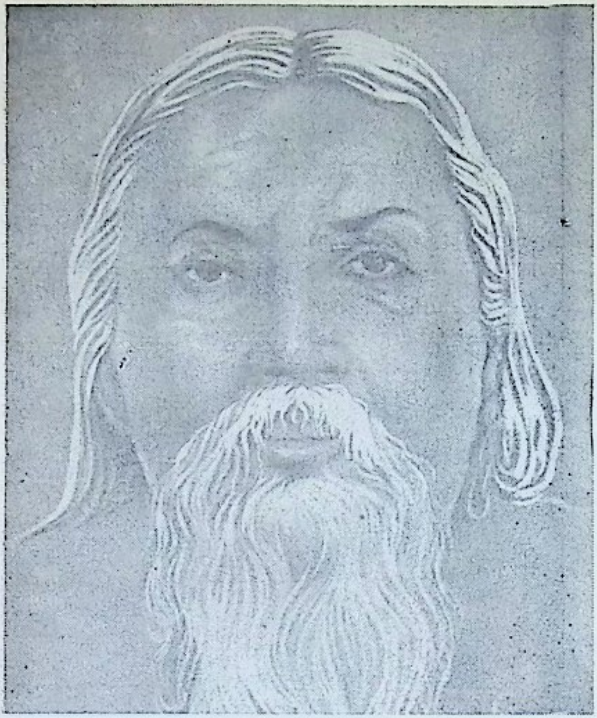

ज्ञान-कर्म-उपासना द्वारा भारत की अमूल्य निधि को भूमण्डल में प्रसारित कर भारत भाँ की स्वतन्त्रता और उत्कर्ष के लिए जीवन को ज्योतिर्मय कर सत्य साधना के धनी

## योगिराज अरविन्द

आप ने अखंड भारत और सबल हिन्दू राज्य की स्थापना का स्वप्न देखा था, जिसे अब हमे मूर्त रूप देना है।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू धर्म के महान् विचारक व विद्वान्

**स्व० स्वामी करपात्री जी महाराज**



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वीरश्रेष्ठ हाराणा प्रताप

CC-0. Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

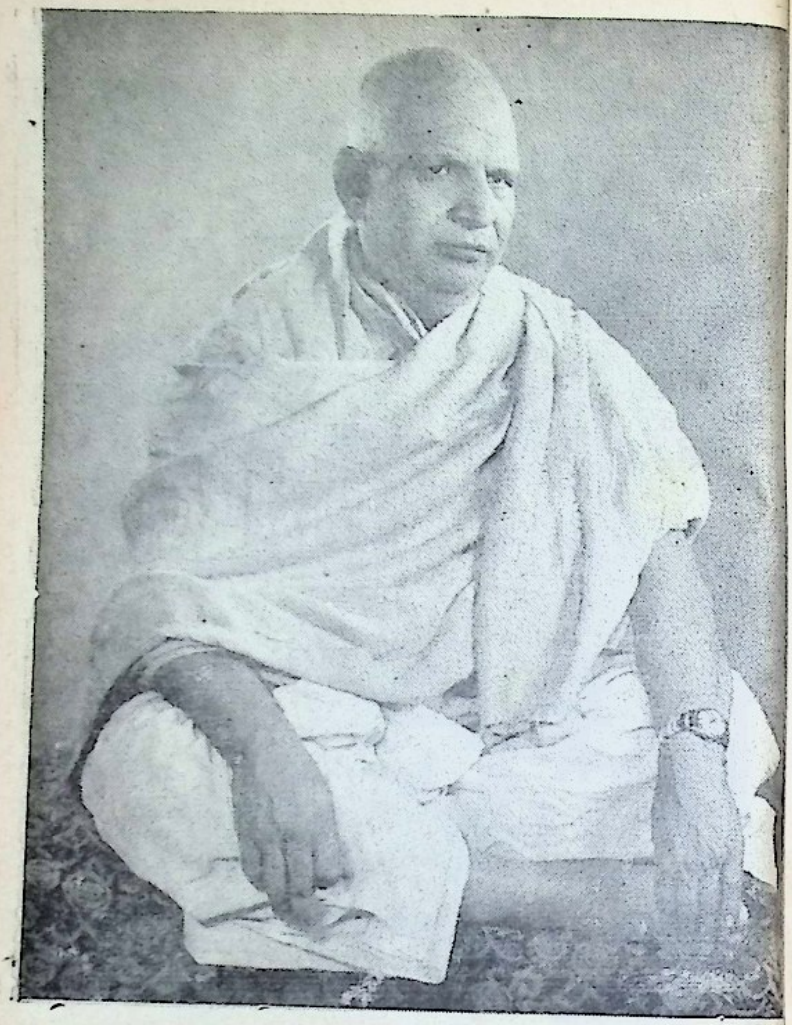

अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति के अध्यक्ष

**महात्मा वेदभिक्षुः**

आपके भाषणों-लेखों-प्रयत्नों से सारा देश हिन्दू राष्ट्र की स्थापना का सकल्प लेकर खड़ा हो गया है।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आततायी यवन आक्रान्ताओं के छक्के छुड़ाने वाले

**हिन्दू भावना के महान् सेनानी**

# वीर बंदा वैरागी



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गोघात का दुःख जगत मे मिटाऊं,
नमुख युद्ध में तुरुकन को मार खपाऊं ।
सकल जगत् में 'खालसा-पंथ' गाजे,
जगे धर्म हिन्दू सकल भंड भाजे ॥


Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

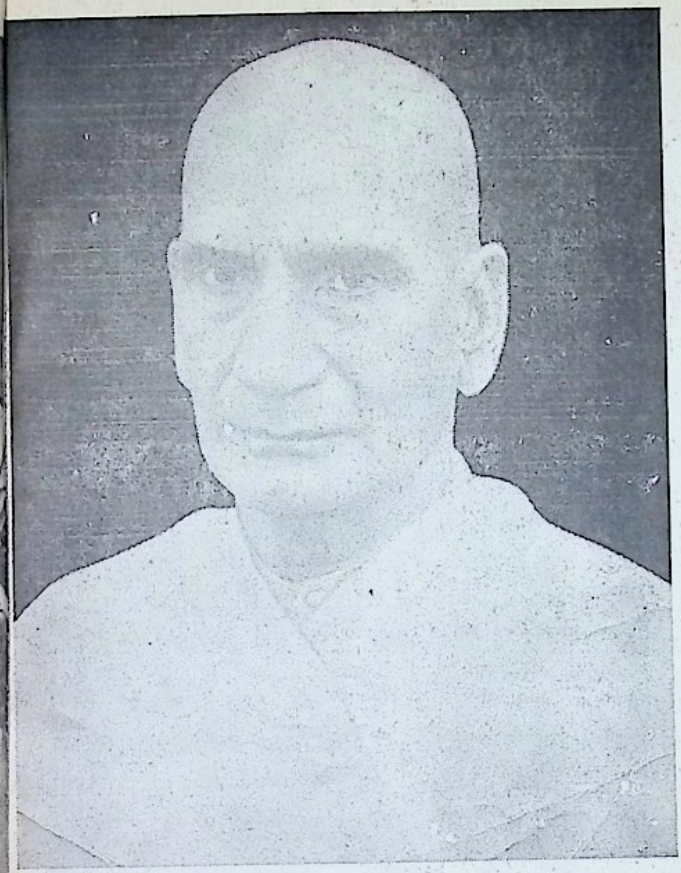

शुद्धि मन्त्र के प्रसारक, निर्भीक संन्यासी, हिन्दू संगठन के सूत्रधार

**स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती**

जो अब्दुल रशीद के हाथोंशहीद हो गए।

काश कि हम उनको राह पर चल पाते ?



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तर्क के तारों से यवनों-ईसाइयों के छक्के छुड़ाने वाले
परम ओजस्वी शास्त्रार्थमहारथी

# स्वर्गीय पं० श्री रामचंद्र देलहवी

अपने क्षेत्र में विजय के लिए
अधिक से अधिक साहित्य बांटें।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपने ढंग का अकेला धर्म रक्षक पत्र
जिसके लेखों से यवन-ईसाई बौखला कर
तीन अभियोग चला चुके हैं।

# जन-ज्ञान (मासिक)

के

## आजीवन सदस्य बनकर

## चारों वेदों का हिन्दी भाष्य

मूल्य : ४२२)

## उपहार में प्राप्त करें

शीघ्रता करें ! केवल १०० वेद
भाष्य ही उपहार में दिए जायेंगे

दयानन्द संस्थान (पंजीकृत न्यास)
१५६७ हरध्यान सिंह मार्ग, करोलबाग
नई दिल्ली-५



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai


# राजधानी में बन र
# विशाल वेद मन्दिर

में

अपना मकान बनवाएं

५० मकानों के लिए जमीन
मुफ्त दी जाएगी

रिटायर्ड जीवन आराम से बिताने वालों के
लिए स्वर्ण अवसर

विवरण पत्र लिख कर मंगाएं

अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली–५




Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# हिन्दू समाज को चुनौती

—श्री बालासाहेब देवरस

[राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपने तरीके से हिन्दू संगठन के महान् कार्य में संलग्न है। भारत विभाजन के दौरान संघ के स्वयंसेवकों ने लाहौर, कराची, ढाका, नोआखाली आदि में हिन्दुओं की रक्षा में भारी योगदान किया था।

संघ के सरसंघचालक श्री देवरस जी के हिन्दुत्व सम्बन्धी विचार यहां प्रस्तुत हैं।]

हिन्दू ही आज देश की महती आवश्यकता है। हिन्दू ही इस देश का सच्चा राष्ट्रीय है, यह ऐतिहासिक तथ्य है तथा 'धर्मनिरपेक्षता' की आड़ में इसे झुठलाया नहीं जा सकता।

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता ही नहीं, अन्य राजनीतिक दल भी लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता तथा समाजवाद—इन तीन सिद्धांतों पर एकमत हैं। परन्तु यह समझ लेना चाहिए कि इन तीनों तत्त्वों की रक्षा केवल हिन्दू ही कर सकते हैं। भारत में लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता तथा समाजवाद तभी तक संभव हैं जब तक कि यह देश हिन्दूबहुल देश है। किसी भी मुस्लिम देश में न लोकतंत्र है, न धर्मनिरपेक्षता तथा न समाजवाद।

बालासाहेब देवरस



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सारा संसार यह जानता है कि अधिकतर मुस्लिम देशों में न मन्दिर बनाने की छूट है न गुरुद्वारा या चर्च। कुवैत आदि में तो घरों में भी हिन्दू धार्मिक संस्कार नहीं कर सकते। हिन्दुओं को अपने मृतकों के शवों का दाह संस्कार करने की भी स्वतन्त्रता नहीं है, जबकि भारत में हमेशा से सभी मत-मतान्तरों व मजहबों को फलने-फूलने की पूरी छूट रही है। हमारी इस सहिष्णुत का विदेशियों-विधर्मियों ने अनुचित लाभ भी उठाया है।

## हिन्दू कौन है ?

हजारों वर्षों से इस देश के सब प्रान्तों की सभी भाषाओं में हिन्दू, हिन्दू समाज, हिन्दू धर्म, हिन्दू संस्कृति, हिन्दू परम्परा, हिन्दू सभ्यता आदि शब्द प्रचलित हैं। इसका स्पष्ट अर्थ है कि इस देश में हिन्दू और हिन्दू समाज है। इसका सबसे अच्छा प्रमाण पंडित नेहरू जी का है। पंडित नेहरू ने अपने प्रधानमंत्रित्वकाल में बड़े आग्रह से 'हिन्दू कोड' नाम का कानून बनाया। अगर हिन्दू और हिन्दू समाज न होता तो हिन्दू कोड कैसे बनता ? हिन्दू कोड बनाये जाने का मतलब इस मान्यता की पुष्टि करना है कि इस देश में हिन्दू और हिन्दू समाज है। जब कोई कानून बनता है तो उसमें पहले यह लिखना पड़ता है कि यह कानून किस-किस पर लागू होगा। पंडित नेहरू के नेतृत्व में बने हिन्दू कोड में लिखा है कि मुसलमान, क्रिश्चियन, पारसी और यहूदी को छोड़कर सनातनी, आर्यसमाजी, ब्राह्मसमाजी, बौद्ध, सिख, जैन आदि लोगों पर हिन्दू कोड लागू होगा। आगे यह भी कहा गया है कि इस सूची में अगर कोई छूट गये होंगे तो उन पर भी हिन्दू कोड लागू होगा। जो इसे अमान्य करेंगे, उनके ऊपर यह सिद्ध करने का दायित्व रहेगा कि उन पर हिन्दू कोड लागू नहीं होता।

हिन्दू कोड बनाते समय हिन्दू शब्द की इतनी व्यापक परिभाषा पंडित नेहरू के कारण इसीलिए हुई कि इस देश में हिन्दू और हिन्दू समाज है, यह ऐतिहासिक सत्य है। हिन्दू शब्द का प्रयोग परम्परागत अर्थों में किया गया है जिसमें सनातनी, आर्यसमाजी, बौद्ध, सिख, जैन आदि आते हैं।

## सुधार-आन्दोलन

कुछ लोग कहते हैं कि हिन्दू संगठन संकीर्ण, संकुचित, साम्प्रदायिक है। यह विचार करना आवश्यक है कि क्या परम्परागत अर्थ में हिन्दुओं को संगठित करने का कार्य संकुचित या साम्प्रदायिक है ? अपने समाज में पिछले ढाई डेढ़ सौ वर्षों में अनेक ऐसे महा पुरुष पैदा हुए जिन्होंने इस देश में



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सामाजिक सुधार के प्रयास किये। उन्होंने सामाजिक जीवन का गहराई से अध्ययन किया, उसमें व्याप्त दोष देखे और उन दोषों को दूर करने का प्रयास किया। यह कार्य उन्होंने लेखों, भाषणों, रचनात्मक पद्धति से और आवश्यकता पड़ने पर संघर्ष करके भी किया। इन महापुरुषों में लोक हितवादी महात्मा फुले, न्यायमूर्ति रानाडे, आगरकर, डा० अम्बेडकर, वीर सावरकर, महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, पंडित मदनमोहन मालवीय, राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, स्वामी विवेकानन्द, नारायण गुरु आदि अनेक समाज सुधारक शामिल किये जा सकते हैं। इन सभी महापुरुषों ने पिछले सौ डेढ़ सौ साल में सामाजिक दोषों को दूर करने के प्रयास किये। इन लोगों ने समाज के कौन-से दोष देखे ? किसी ने अस्पृश्यता का दोष देखा और कहा कि यह महाभयानक कलंक है, इसको खत्म करना चाहिये। किसी ने जातिव्यवस्था पर हमला किया और कहा कि अब जातिव्यवस्था अव्यवस्था हो गई है, इसको मिटाओ। किसी ने यहाँ की कुरीतियों और कुप्रथाओं का अध्ययन करके कहा कि इनको नष्ट करो। किसी ने दहेज पर तो किसी ने बाल-विवाह पर हमला किया। तरुण आयु में विधवा स्त्रियों के पुनर्विवाह के लिए भी आंदोलन हुए। प्रश्न यह उठता है कि अस्पृश्यता, जाति-व्यवस्था, दहेज, बाल-विवाह, विधवा-विवाह आदि किस समाज के दोष हैं। स्पष्ट है कि इन महापुरुषों ने जिस समाज के सुधार के प्रयास किये, वह इस देश का हिन्दू समाज ही था।

## मुस्लिम तथा ईसाई समाजों में भी दोष

एक प्रश्न यह भी उठ सकता है कि क्या इस देश के मुसलमान समाज का जीवन पुराना नहीं है ? हमें पता है कि इस देश के मुसलमानों का समाज जीवन हजार साल पुराना है। कोई भी समाज जब पुराना होता है तो उसमें दोष अवश्य पैदा होते हैं—दुनिया में इसका कोई अपवाद नहीं है। कुछ बातें काल-बाह्य हो जाती हैं, उनको छोड़ना पड़ता है। अगर यहाँ के मुसलमान समाज का जीवन हजार साल पुराना है तो स्वाभाविक है कि इसमें कोई न कोई दोष पैदा हुए होंगे। उदाहरण के लिये मुसलमान स्त्रियां घर में गोशा में रहती हैं और बाहर बुर्का में आती हैं। मानवीय दृष्टिकोण और स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह उचित नहीं है। लेकिन इन महापुरुषों ने इस विषय का स्पर्श नहीं किया। क्रिश्चियन समाज के जीवन में भी अनेक दोष हैं। क्रिश्चियन समाज भी इस देश का नया नहीं पुराना समाज है। केरल में सीरियन क्रिश्चियन २०० ई० में पहुंचे। वहाँ भी दोष पैदा हुए हैं। वहाँ अनेक चर्च हैं। वे आपस में लड़ते हैं, मारपीट करते हैं।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

## इस देश का तत्त्वज्ञान हिन्दू तत्त्वज्ञान

हम विचार करें कि अगर विदेश से यहां के जीवन का अध्ययन करने के लिए चिन्तक, लेखक, तत्त्वज्ञ आयेंगे तो वे किन ग्रन्थों का अध्ययन करेंगे ? यह बिल्कुल स्वाभाविक है कि वे इस देश में वेद, उपनिषद्, गीता, महाभारत, रामायण, बौद्ध, जैन और सिख साहित्य का ही अध्ययन करेंगे। उनको अगर कुरान का अध्ययन करना होगा तो वे काबा या इजिप्ट जायेंगे और अगर बाइबल का अध्ययन करना हो तो रोम या जर्मनी जायेंगे। हिन्दुस्तान में आयेंगे तो वे इन्हीं ग्रन्थों का अध्ययन करेंगे। इसमें तनिक भी अस्वाभाविक नहीं हैं। हिन्दुस्तान और हिन्दू समाज एकीकृत हैं। इसलिये हिन्दुस्तान का विचार करते समय अगर हिन्दू समाज का विचार किया जाता है तो उसकी संकुचित और साम्प्रदायिक कहने की न आवश्यकता है और न यह उचित ही है।

## असहिष्णुता के उदाहरण

आजकल अरब राष्ट्रों सऊदी अरब कुवेत, आबूधाबी आदि में हजारों की संख्या में हिन्दू रोजगार के लिये गये हैं। अगर वे वहां मंदिर या गुरुद्वारा बनाने की अनुमति मांगें तो उनको अनुमति नहीं मिलेगी। सऊदी अरब में तो सिखों को जाने की अनुमति ही नहीं है। यह है असहिष्णुता का नमूना।

कुछ लोग ऐसे हैं जो अपने को सहिष्णु कहते हैं। लेकिन सहिष्णुता की भी मर्यादा होती है। आंध्र के तूफान के पश्चात् क्रिश्चियन जगत् के सुप्रसिद्ध धर्मगुरु श्री बिली ग्राहम हिन्दुस्तान में आये थे। उन्होंने कह दिया कि सारे विश्व में यदि सब से सहिष्णु समाज कहीं है तो हिन्दुस्तान में है (Hindus are the most tolerant people in the world)। इसके बाद पत्रकारों ने मुझ से पूछा कि इस सम्बन्ध में ? तुम्हारा क्या कहना है मैंने कहा कि मैं श्री बिली ग्राहम को धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने हिन्दुओं को सहिष्णुता का प्रमाणपत्र दिया। लेकिन यह हिन्दुओं का सत्य वर्णन नहीं है। क्योंकि सहिष्णुता अच्छी बात है, किन्तु पर्याप्त अच्छी नहीं (Tolerance is good but not good enough)। सहिष्णुता की भी मर्यादा होती है। सहिष्णु आदमी यह तो मानता है कि सबको अपना मत मानने का हक है लेकिन उसका यह भी विचार होता है कि उसका मत दूसरे से अच्छा है। यह है सहिष्णुता की मर्यादा।

कुछ साल पहले पोप महोदय यूकरिस्टिक कांग्रेस में भाग लेने बम्बई



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आये थे। क्योंकि क्रिश्चियन मिशनरी यहाँ छल-बल-कपट से धर्मान्तरण करते हैं, इसलिये वहाँ के कुछ हिन्दुओं ने उनके विरोध में प्रदर्शन करने का निश्चय किया। स्वाभाविक रीति से बम्बई के क्रिश्चियन धर्म गुरु कार्डिनल ग्रेशास को चिन्ता हुई। उन्होंने प्रेस कान्फ्रेन्स बुलाकर उसके माध्यम से सब लोगों से प्रार्थना की कि क्योंकि पोप महोदय और क्रिश्चियन लोग सहिष्णु हैं, इसलिए उनके विरोध में प्रदर्शन मत करो। हम सब इस बात को मानते हैं कि सब को अपने-अपने मत के अनुसार चलने का हक है। एक पत्रकार ने उनसे पूछा कि आपने इतना तो कह दिया कि अपने-अपने मत के अनुसार चलने का सबको हक है, आप चार कदम आगे चलकर—जैसा हम हिन्दू कहते हैं 'एकम् सद् विप्रा बहुधा वदन्ति—सत्य एक होता है, विद्वान् लोग उसको अनेक प्रकार से कहते हैं—यह भी कह दीजिए कि जितने प्रकार के मत और मजहब हैं वे सब अच्छे हैं, सब धर्म समान है, अपने-अपने धर्म के अनुरूप चलो—कल्याण होगा, मोक्ष मिलेगा। इस प्रश्न के उत्तर में कार्डिनल महोदय ने कहा—"विश्व में सहिष्णुता की बात तो करूंगा, लेकिन यह नहीं कहूंगा कि सब धर्म समान हैं।" उन्होंने आगे कहा कि मेरे ऊपर क्रिश्चियन धर्म का प्रचार करने का दायित्व है। मैं कैसे कहूं कि सब धर्म समान हैं? इसे कहते हैं सहिष्णुता की मर्यादा। हिन्दुओं का तत्त्वज्ञान है 'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति' उनको यह कहना कि तुम अन्य मजहबों के विरोध में हो, घोर अन्याय और अपमान है।

## हिन्दुओं को चुनौती

आज विदेशी धन के बल पर हिन्दुओं के धर्मपरिवर्तन की योजना बनायी गयी है। ईसाई मिशनरी तो पश्चिमी देशों के धन के बल पर ईसाई करण के कार्य में लगे ही हुए थे। अब मुस्लिम देशों ने भारत में इस्लामी-करण का षड्यन्त्र रचा है। मीनाक्षीपुरम् में धर्मपरिवर्तन की घटना से सरकार को भी यह स्वीकार करना पड़ा है कि विदेशी धन इस कार्य के पीछे था।

कन्याकुमारी में स्वामी विवेकानन्द स्मारक के खिलाफ ईसाइयों द्वारा जो बवंडर मचाया गया तथा हिन्दुओं पर अत्याचार किये गये, यह घटना भी हमारे समाज के लिये चुनौती है। इन सब घटनाओं को देखकर तो हिन्दू संगठन आज और भी ज्यादा जरूरी हो गया है। यदि हिन्दू समाज का ह्रास होता रहा तो इसका भयंकर परिणाम भुगतना होगा।

प्रस्तुतकर्ता—शिवकुमार गोयल



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# एकजुट होकर हिन्दुत्व की रक्षा करें

—ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य
स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज

आज हिन्दू धर्म पर चतुर्दिक् आक्रमण किये जा रहे हैं। अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस आदि देशों से तो प्रति वर्ष अरबों खरब डालर भारत के अशिक्षित, गरीब व भोले भाले लोगों को ईसाई बनाने के लिए भेजे ही जाते रहे हैं, परन्तु अब कुछ वर्षों से अरब तथा अन्य मुस्लिम देश भारत को इस्लामिस्तान के रूप में बदल डालने का षड्यन्त्र रच रहे हैं। यह षड्यन्त्र खतरनाक है तथा इसकी उपेक्षा बहुत घातक सिद्ध होगी।

स्वामी स्वरूपानन्द

दक्षिण भारत के कुछ क्षेत्रों में हरिजनों के धर्मपरिवर्तन की घटनाएँ हुईं तो इस षड्यन्त्र का पता चला। इन घटनाओं के पीछे जहाँ मुस्लिम देशों का धन था, वहीं हाजी मस्तान जैसे तस्कर तथा मुस्लिम लीग व जमायते इस्लामी के विधायक व कुछ सांसद भी इस कुचक्र में शामिल थे। कहा यह गया कि सवर्ण हिन्दू हरिजनों से दुर्व्यवहार करते थे। उन्हें तालाब पर नहीं जाने देते थे, इसलिये प्रतिक्रिया में उन्होंने इस्लाम स्वीकार किया। श्री जगजीवन राम जैसे वरिष्ठ नेता ने भी मीनाक्षीपुरम् में हुए धर्मपरिवर्तन का कारण हरिजनों के साथ दुर्व्यवहार बताया, जबकि आर्य नेता ला०



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रामगोपाल शालवाले तथा श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम् कई बार मीनाक्षीपुरम् गये तथा उन्होंने जाँच के बाद घोषणा की कि मीनाक्षीपुरम् में कोई तालाब ही नहीं है अतः उस पर से पानी न भरने देने की बात मनगढ़न्त व निराधार है। वहाँ के सवर्ण व हरिजन प्रेम से रह तेपाये गये हैं। धर्म परिवर्तन का राज विदेशी धन तथा सदस्यों का षड्यन्त्र है।

यदि हम सोते रहे और हमने इन घटनाओं को गम्भीरता से नहीं लिया तो आगे चल कर देश को भयंकर परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं। यदि इस देश में हिन्दुओं की संख्या घटती गयी तो हिन्दुत्व, भारतीय संस्कृति तथा हमारे धर्म के अस्तित्व के लिये ही खतरा पैदा हो जायेगा।

देश की संस्कृति पर कलियुगी अवतार, अपने को भगवान् घोषित करने वाले पाखण्डी और नये-नये मत-मतान्तर भी आघात कर रहे हैं। वे हमारी धार्मिक व्यवस्था तथा वेद शास्त्रों के विश्वास को डिगाने में लगे हुए हैं। अब बाहरी आक्रमण ने हमें नयी चुनौती दे डाली है।

## हरिजनों पर अत्याचार घोर पाप है

अन्त्यजनों (हरिजनों) को हिन्दू समाज से अलग करने का षड्यन्त्र नया नहीं है। भारत विभाजन के दौरान भी मियाँ निला आदि ने षड्यन्त्र रचा था कि अन्त्यजों को हिन्दू समाज से अलग कर दिया जाये परन्तु भक्त रविदास के इन अनुयायियों ने स्पष्ट घोषणा कर दी थी कि वे हिन्दू समाज के अटूट अंग हैं।

हमारे धर्मशास्त्र में हरिजनों के प्रति घृणा की एक बात भी नहीं है। यदि ऐसा होता तो भक्त रविदास को भगवत् साक्षात्कार होने की घटना हमारे प्राचीन ग्रन्थों में कैसे आ सकती थी? ऐसे हजारों प्रसंग पुराणों में हैं, जिसके अनुसार अन्त्यज भाई पर अत्याचार करने वाले को, उनकी बहिन-बेटी पर कुदृष्टि डालने वाले को नरक की यातना भोगनी पड़ी। सनातनधर्मियों के सर्वमान्य नेता स्वर्गीय पूज्य स्वामी करपात्रो जी हमेशा ऐसे प्रसंग सुनाया करते थे, जिनके अनुसार अन्त्यज, डोम या चाण्डाल पर भी अत्याचार करने वाले को सीधा नरक में जाना पड़ा।

जो लोग हरिजनों पर अत्याचार करते हैं, वे घोर पापी है। हमारे धर्म में तो चींटी, वृक्षों तक के पोषण की बात कही गयी है। फिर भला मानव पर अत्याचार को अच्छा कैसे बताया जा सकता है?



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

## शुद्धि शास्त्रसम्मत है

जो व्यक्ति लोभ, दबाव या छलछिद्र के बल पर मुसलमान या ईसाई बना लिये गये, उन पर हमेशा हमारा अधिकार रहेगा। उन्हें अपने पूर्वजों के हिन्दू धर्म में वापस आने का पूरा अधिकार है।

जब नवाखली में मुस्लिम दरिन्दों ने हिन्दू युवतियों का उपहरण किया तो स्वर्गीय पूज्य स्वामी करपात्री जी ने हम लोगों को वहां भेजकर हिन्दू महिलाओं के उद्धार का आदेश दिया था। महाराजश्री ने बलात् मुस्लिम बना ली गयी हजारों युवितियों को पुनः हिन्दूधर्म में दीक्षित कराया था। धर्म संघ के तत्त्वावधान में उस समय हजारों लोगों को शुद्ध किया गया था।

हम पूज्य स्वामी करपात्री के आदेश से अनेक वर्षों से वनवासी बन्धुओं को जिन्हें जालसाजी कर ईसाई बना लिया गया था, पुनः सनातनधर्म में दीक्षित करने के कार्य में लगे हुए हैं। चाईबासा (बिहार) तथा मध्यप्रदेश के क्षेत्रों में हमने हजारों व्यक्तियों को उनके पुराने धर्म में लौटाया है।

पूज्य स्वामी करपात्री जी ने तो यहां तक व्यवस्था दे दी थी कि मन्दिरों में जिस स्थान से धर्माचार्य दर्शन करते हैं, वहां से अन्त्यज बन्धु भी करने के अधिकारी हैं। प्रतिमा के स्पर्श का तो धर्माचार्यों को भी अधिकार नहीं है। यह कार्य केवल पुजारी ही कर सकता है।

हमारा धनी-मानी सज्जनों को भी सुझाव है कि वे गरीब वनवासियों, हरिजनों तथा पिछड़े वर्ग के हिन्दुओं की सेवा के लिये धन का सदा उपयोग करें। अभावग्रस्त क्षेत्रों में औषधालय तथा सत्संग भवन खोले जाने चाहिए।

केन्द्रीय सरकार को भी इस खतरे को गम्भीरता से लेते हुए विदेशी धन तथा विदेशी मिशनरियों पर प्रतिबंध लगा देना चाहिए।

प्रस्तुति - शिवकुमार गोयल

## भारत सब धर्मों की जननी है

भारत सब धर्मों की जननी है। इसी भूमि पर हिन्दू धर्म जमा है। भविष्य में भारत ही पुनः जगत् में आध्यात्मिक शक्ति का सृजन करेगा।

—श्रीमती एनी बीसेण्ट



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# तुष्टीकरण की आत्मघाती नीति का इतिहास

—स्व० भक्त रामशरणदास, पिलखुवा

सात सौ वर्षों तक मुसलमान शासक हिन्दुत्व पर प्रहार करते रहे परन्तु उसका बाल बांका नहीं हो पाया। गोभक्षक विधर्मी अंग्रेज भी डेढ़ सौ वर्षों तक उस पर प्रहार करते करते असफल रहे। परन्तु हमारे देखते ही देखते गांधी-नेहरू के अनुयायियों में धर्मनिरपेक्षता के नाम पर उसी हिन्दुत्व की भावना को इतना शिथिल कर डाला कि आज हमारी युवा पीढ़ी अपने को हिन्दू कहने में शर्माने लगी है। हमारे पतन की इससे बढ़ कर पराकाष्ठा और क्या हो सकती है?

लेखक

आशा थी कि देश के स्वाधीन होते ही धर्मप्राय भारत में धार्मिक मूल्यों की पुनःस्थापना होगी। गोमाता की हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा दिया जायेगा हिन्दू धर्म-शास्त्रों, मन्दिरों को संरक्षण प्राप्त होगा, देववाणी संस्कृत को उचित स्थान मिलेगा, परन्तु कांग्रेसी शासकों धर्मनिरपेक्षता के नाम पर हिन्दुत्व पर ही प्रहार शुरु कर दिये। पाश्चात्य सभ्यता के रंग में डूबे नेहरूजी ने प्रधानमंत्री बनते ही सबसे पहले गोहत्या जारी रखने की घोषणा की।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दूसरा काम उन्होंने हिन्दू कोड बिल, तलाक बिल बनवाकर हिन्दुत्व के प्राण पातिव्रत्य धर्म पर प्रहार करने का किया।

नेहरूजी चाहते थे कि पाश्चात्य देशों की तरह भारतीय युवतियां भी आये दिन पति को तलाक दे कर नये-नये विवाह करती रहें। स्वाधीन भारत में हिन्दुत्व पर यह प्रबल प्रहार था।

## जब माता सीता को "बेगम सीता" कहा गया

कांग्रेसी शासन ने पाठ्यपुस्तकों से धार्मिक शिक्षा को निकालकर यह प्रयास किया कि बच्चे शुरू से ही हिंदुत्व, धर्म नैतिकता से विमुख रहे इतना ही नहीं, डा० जाकिर हुसैन ने हिन्दुस्तानी के नाम पर एक ऐसी पाठ्य-पुस्तक तैयार कराई, जिसमें भगवती सीता को "बेगम सीता" भगवान् राम को "शाहजादा राम" महर्षि वाल्मीकि को 'मौलाना वाल्मीकि' और महाराज दशरथ को" "बादशाह दशरथ" जैसे शब्दों से सम्बोधित किया गया था। इस ऊलजलूल पाठ्यपुस्तक का विरोध सनातनधर्मियों व आर्यसमाजियों ने ही नहीं टण्डन जी जैसे वरिष्ठ कांग्रेसी नेताओं ने भी किया था।

हिन्दू तो धर्मनिरपेक्षता के नाम पर सब कुछ सहन करता रहा परन्तु मुसलमान अपनी जगह अडिग रहे। हिन्दू गांधी जी के रहने पर मन्दिर में "ईश्वर अल्लाह तेरो नाम" का उद्घोष करने को तत्पर हो गया परन्तु मुसलमानों ने कभी भी मन्दिरों में 'ईश्वर' का नाम लेना सहन नहीं किया न किसी मस्जिद में गांधी जी की 'रामधुन ही गाई जा सकी। प्राथमिक पाठ्य पुस्तकों में 'ग' से गणेश होता था। मुस्लिम लीग ने कहा कि "हमारे बच्चे गणेश नहीं पढ़ेंगे। 'शासन ने तुरन्त 'गणेश' की जगह 'ग' से 'गधा' कर दिया। मुसलमानों को गधा स्वीकार था।

इसी प्रकार धर्मनिरपेक्षता के नाम पर देववाणी संस्कृत की उपेक्षा तो की ही गयी, हिन्दी के रूप को भी विकृत करने का षड्यन्त्र रचा गया। गांधी जी ने हिन्दुस्तानी भाषा के नाम पर हिन्दी के शुद्ध रूप को विकृत कर उसमें उर्दू के शब्दों को घुसेड़ना शुरु कर दिया। इसी हिन्दुस्तानी की खिचड़ी का टण्डनजी ने विरोध किया तो उन्हें साम्प्रदायिक करार दे दिया गया।

## जब हिन्दू युवतियों के विधर्मियों से विवाह कराये गये

कांग्रेस सरकार वोटों के लिये निरन्तर तुष्टीकरण की नीति अपनाती रही। मुसलमानों की हर उचित मांग के सामने घुटने टेके जाते रहे।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कांग्रेसी नेताओं ने कुछ हिन्दू युवतियों के मुसलमानों से विवाह कराने का षड्यन्त्र रचा। कुख्यात हिन्दू विरोधी सुभद्रा जोशी के षड्यन्त्र के परिणाम स्वरूप पंजाब से दिल्ली लाई हुई राज शर्मा नामक हिंदू कन्या को सिकन्दर बख्त के साथ विवाह के लिये तैयार किया गया। उसे पद व धन का लोभ देकर तैयार किया गया था। राज शर्मा के परिवार में इस घटना से रोष व्याप्त हुआ। उन्होंने हिन्दू नेता प्रो० रामसिंह जी से सम्पर्क किया। आर्य नेता श्री रामगोपाल शालवाले तथा संघ के नेताओं ने आगे आकर इस षड्यन्त्र का विरोध किया। विवाह के दिन ही दिल्ली की हिन्दू जनता भड़क उठी। अनेक कांग्रेसी नेताओं की टोपियां जला डाली गयीं। दिल्ली में दंगा हो गया। विवाह रुक गया। परन्तु मुस्लिमपरस्त कांग्रेसी नेताओं ने बाद में राज शर्मा को पुनः सिकन्दर बख्त को सौंप दिया।

## तुष्टीकरण की होड़

यह देश का दुर्भाग्य रहा कि सनातन धर्म तथा आर्यसमाज के अधिकतर लोग जहां कांग्रेस की मुस्लिमपरस्त नीति का विरोध करते थे, वहीं उनमें एक गुट ऐसा आगे आ जाता था जो उसके समर्थन के लिये तत्पर रहता था। स्वामी करपात्री जी महाराज के नेतृत्व में धर्मसंघ ने हमेशा कांग्रेस की हिन्दू विरोधी नीति का डटकर विरोध किया। इसी प्रकार प्रो० रामसिंह जी आदि के नेतृत्व में आर्य समाजी भी इस नीति से टक्कर लेते रहे।

आर्यसमाज ने अलवर क्षेत्र के मेवों को शुद्ध कर उन्हें वैदिक धर्म में दीक्षित किया। सरकारी संत शिरोमणि आचार्य विनोबा भावे को यह सहन न हुआ। वे भागे-भागे मेवात पहुंचे और उन्होंने शुद्ध हुए मेवों को पुनः गोभक्षक बनवाकर ही चैन लिया।

राजनीतिक दलों ने अनुभव किया कि कांग्रेस मुसलमानों के वोटों से सत्ता में बनी हुई है। अब क्या था। सभी दलों में तुष्टीकरण की नीति की होड़ लग गयी। समाजवादी एवं कम्युनिस्ट ही, नहीं जनसंघी तक किसी भी तरह मुसलमानों को आकर्षित करने की कोशिश करने लगे। और तो और रामराज्य परिषद् जैसी धार्मिक-राजनीतिक संस्था के मंच से भी जब मैंने दीनदार ईमानदार मुसलमान वेदान हिन्दू से अच्छा हैं शब्द सुने तो मैं कितना उद्वेलित हो उठा था, लिख नहीं सकता। मैंने गाजियाबाद में एक दिन स्वर्गीय पूज्य स्वामी करपात्री जी से कहा महाराज जी, दीनदार मुसलमान तो वह होता है, जो कुरान के आदेश का पालन करता हुआ



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मूर्तियों का भंजन करे, काफिर महिलाओं का अपहरण करे तथा दारुल हरब को दारुल इस्लाम में बदलने के लिये जेहाद करे।" महाराजश्री मेरी बात सुनकर मुसकराते हुए बोले—आप ठीक कहते है।

इस तुष्टीकरण की होड़ के भयंकर परिणाम सामने आते गये। श्रीमती इन्दिरा गांधी ने न जाने कैसे जीवन में एक काम साहसपूर्ण किया और वह था अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के कट्टर पंथी रूप को व्यापक बनाने का। परन्तु सभी विपक्षी दलों ने इस क़दम को मुसलमानों पर अत्याचार बताना शुरू कर दिया जनता पार्टी ने उर्दू को द्वितीय भाषा बनाने के आश्वासन देने शुरू कर दिये। जामा मस्जिद के जिस इमाम को' पाकिस्तानी एजेन्ट बताया जाता था, उसे ही हीरो बना दिया गया। सय्यद शहाबुद्दीन जैसे घोर साम्प्रदायिक को राज्यसभा में पहुंचा दिया गया—हिन्दुत्व को कोसने के लिये।

यह मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति का ज्वलन्त उदाहरण है कि हर दंगे के लिये राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तथा हिन्दुओं को जिम्मेदार ठहरा दिया जाता है। जमशेदपुर में स्पष्ट रूप से मुस्लिम दंगा शुरू करते हैं, परन्तु उसका दोष संघ तथा हिन्दुओं पर डाल दिया जाता है

अपनी दुर्दशा के लिये हिन्दू स्वयं जिम्मेवार हैं। उनके नेता सत्ता के भूखे तथा स्वार्थी बन चुके हैं। यदि यही स्थिति जारी रही तो इतिहास उन्हें कभी क्षमा नहीं करेगा और हिन्दुओं के अस्तित्व को निरन्तर खतरा पैदा होता रहेगा।

---

## हिन्दू सबका समुच्चय

हिन्दू तो एक जीवन पद्धति (Way of life) है। यह हमारे जीवन का एक अंग है। हमारे धर्म का अंग नहीं है। हम सनातधर्मी हो सकते हैं, बौद्ध हो सकते हैं, जैनी हो सकते है, लेकिन सबका मिश्रण, सबका समुच्चय जो है वह हमारी एक जातीयता का होना है। धर्म हमारा अलग-अलग हो सकता है, लेकिन हिन्दू का अर्थ है, हिन्दु स्थान में रहने वाले जितने लोग हैं, हिन्दू शब्द उन सबका वाचक है।"

—स्वर्गीय डॉ० सर्वेपल्ली राधाकृष्णन्
(भूतपूर्व राष्ट्रपति)



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# रग-रग हिंदू मरा परिचय

अटलबिहारी वाजपेयी

हिन्दू तन-मन, हिन्दू जीवन,
रग-रग हिन्दू मेरा परिचय !
मैं शंकर का वह क्रोधानल,
कर सकता जगती क्षार-क्षार,
मैं डमरू की प्रलय-ध्वनि हूं
जिसमें नचता भीषण संहार,
रण चण्डी की अतृप्त प्यास,
मैं दुर्गा का उन्मत्त हास।
मैं यम की प्रलयंकर पुकार,
जलती मरघट का धुआं धार।
फिर अन्तरतम की ज्वाला से,
जगती में आग लगा दूं मैं,
यदि धधक उठे जल-थल-अम्बर,
जड़-चेतन फिर कैसा विस्मय ? ॥ हिन्दू···॥

(२)

मैं आदि पुरुष निर्भयता का
वरदान लिए आया भू पर,
पय पीकर सब मरते आये,
मैं अमर हुआ लो विष पीकर,



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अधरों की प्यास बुझाई है,
मैंने पीकर वह आग प्रखर,
हो जाती दुनिया भस्मसात्,
हा जिसको क्षण भर ही छूकर।
भय से व्याकुल फिर दुनिया ने,
प्रारंभ किया मेरा पूजन,
मैं नर-नारायण नीलकंठ,
बन गया न इसमें कछ संशय ॥ हिन्दू··· ॥

(३)

मैं अखिल विश्व का गुरु महान्,
देता विद्या का अमर दान,
मैंने दिखलाया मुक्ति मार्ग,
मैंने सिखलाया ब्रह्म-ज्ञान,
मेरे वेदों का ज्ञान अमर,
मेरे वेदों की ज्योति प्रखर,
जगती के मन का अंधकार,
कब क्षण भर को भी सका ठहर
मेरा स्वर नभ में घहर-घहर,
सागर के जल में छहर-छहर,
इस कोने से उस कोने तक,
कर सकता जगती शोभामय ॥ हिन्दू··· ॥

(४)

दुनिया के वीराने पथ पर।
जब जब नर ने खाई ठोकर,
दो आंसू शेष बचा पाया,
जब जब मानव सब कुछ खोकर;



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैं आया तभी द्रवित होकर,
मैं आया ज्ञान-दीप लेकर,
भूला-भटका मानव पथ पर,
चल निकला सोते से जगकर।

जगती के आवर्तों में फंसकर,
जो बैठ गया आधे पथ पर,
उस नर को राह दिखाना ही,
मेरा सदैव का दृढ़ निश्चय ॥ हिन्दू··· ॥

(५)

मैं तेजपुंज ! तमलीन जगत् में,
फैलाया मैंने प्रकाश,
मैंने जग का विनाश रच कर,
कब-कब चाहा निज का विकास ?

शरणागत की रक्षा की है,
मैंने अपना जीवन देकर,
विश्वास नहीं यदि आता हो,
तो साक्षी है इतिहास अमर।

यदि आज देहली के खण्डहर,
सदियों की निद्रा से जगकर,
गुंजार उठें ऊंचे स्वर से—
'हिन्दू की जय' तो क्या विस्मय ? ॥ हिन्दू··· ॥

(६)

होकर स्वतंत्र मैंने कब चाहा।
मैं कर लूं जग को गुलाम ?



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैंने तो सदा सिखाया है,
करना अपने मन को गुलाम।

गोपाल राम के नामों पर,
कब मैंने अत्याचार किया ?
कब दुनिया को हिन्दू करने,
घर घर में नर संहार किया ?

कोई बतलाये काबुल में,
जाकर कितनी मस्जिद तोड़ीं ?
भू-भाग नहीं शत-शत मानव के,
हृदय जीतने का निश्चय ॥ हिन्दू··· ॥

(७)

मैं एक बिन्दु परिपूर्ण सिन्धु,
है यह मेरा हिन्दू समाज,
मेरा इसका संबंध अमर,
मैं व्यक्ति और यह है समाज।

इससे मैंने पाया तन मन,
इससे मैंने पाया जीवन,
मुझको केवल अधिकार यही,
कर दूं सब कुछ इसके अर्पण।

मैं तो समाज की थाती हूं,
मैं तो समाज का हूं गुलाम,
मैं तो समष्टि के लिए व्यष्टि का
कर सकता बलिदान अभय ॥ हिन्दू··· ॥



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# स्वामी विवेकानन्द ने कहा था

मुसलमान सर्वाधिक साम्प्रदायिक, संकीर्ण पिछड़े हुए हैं।

उनका मूलमन्त्र है : दुनिया में एक ही खुदा है और उसका एक ही पैगम्बर है।

अतएव जो इस सिद्धांत के पोषक नहीं हैं, वे न केवल खराब ही हैं, अपितु समूल नष्ट करने योग्य हैं।

जो व्यक्ति इसमें विश्वास नहीं करता है।

उसे मौत के घाट उतार देना चाहिए।

मस्जिदों के अतिरिक्त जो उपासना-गृह हैं।

उन्हें जमीदोज कर देना चाहिए।

कुरान का विरोध करने वाली सारी पुस्तकों का अग्नि संस्कार कर देना चाहिए।

केवल इसलिए उन्होंने अपनी तलवार से पूरी पांच शताब्दियों तक ऐटलाण्टिक और प्रशांत महासागर के मध्य में स्थित सारे भूमि-खण्ड को रक्ताभिषक कराया है।

## यह है इस्लाम !



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# हिन्दू शब्द की प्राचीनता

—पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर

मेरी दृष्टि में हिन्दू संस्कृति एक ही है। मेरा यह दृढ़ विचार है कि हिन्दू शब्द भी उतना ही प्राचीन है जितना भारतीय शब्द।

अब तक संशोधन के आधार पर हिन्दू शब्द की प्राचीनता ईसा पूर्व ४८६ वर्ष तक मानी गई है।

(The name of Hindu appears in the form of "Hindus" in the inscription on the monument of the Darius Hystaspes near Persepolis 486 B.C. Encyclopedia of Religions.)

हिंसया दूयते यस्मात् हिन्दूरित्यभिधीयते।

हिन्दू वह जो हिंसात्मक कर्म से घृणा करता है अथवा जिसे हिंसात्मक कर्म से दुःख होता है, वह हिंदू है।

मेरुतंत्र में भी लिखा है—

हीनं च दूषयत्येष हिन्दूरित्यभिधीयते।

—हिन्दू वह जो हीन कर्म से द्वेष करता है। इसी परिभाषा को और विस्तृत तथा स्पष्ट करते हुए रामकोषकार ने लिखा है—

हिन्दुर्दुष्टो न भवति ना नार्यो न विदूषकः।
सद्धर्मपालको विद्वान् श्रौतधर्मपरायणः॥

—हिन्दू दुष्ट, अनार्य और विदूषक अर्थात् द्वेष करने वाला नहीं होता। इसके विपरीत वह सद्धर्म का पालक, विद्वान् और श्रुति-स्मृति में प्रतिपादित धर्म का आचरण करने वाला होता है।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# हिंदू सम्प्रदाय नहीं, मानव धर्म है

यद्यपि धर्म अपरिवर्तनशील, शुद्ध और सनातन है। उसमें वृद्धि नहीं, ह्रास नहीं। किन्तु व्यवहार में धर्म, देश, काल और पात्र के अनुसार वह सदा परिवर्तित हुआ है, होता रहेगा। वर्ण धर्म, मानव धर्म, युग धर्म, आपद् धर्म ये देश के अनुसार, काल के अनुसार, पात्र के अनुसार बदलते रहते हैं।

संत प्रभुदत्त ब्रह्मचारी

हिंदू धर्म सम्प्रदाय नहीं, वह मानव धर्म है। हमारे यहां धर्म शब्द बड़ा ही व्यापक है। उसके भावों को द्योतित करने वाला दूसरा शब्द किसी भाषा में नहीं है। कहीं धारणा से धर्म माना है, कहीं दस लक्षण वाला धर्म माना है। अविरोधी सिद्धान्त को धर्म कहा है। कहीं मनसा, वाचा, कर्मणा सबके हित में रत हो, सबका सहृदय हो, वह धर्म है, कहीं वेद, स्मृति सदाचार और अपनी आत्मा से निर्णीत मत ही धर्म है। कहीं महाजनों के पथ को ही धर्म बताया गया है। सारांश यह कि हमारे यहां तो धर्म की एक ही व्याख्या नहीं।

हम कहें कि वर्णाश्रम धर्म है। कहीं महाजनों के पथ को मानने वाला ही हिंदू है, तो हिन्दुओं में ऐसे बहुत-से वर्ग हैं जो वर्णाश्रम धर्म को नहीं मानते। हम कहें कि जो वेद शास्त्रों को माने वही हिन्दू है तो जैन, लिंगायत तथा और भी ऐसे सम्प्रदाय हैं, जो वेदों को प्रामाणिक नहीं मानते। यह कहें कि जो अवतार माने वही हिन्दू है--बहुत-से साम्प्रदायिक अवतारों का खण्डन करते हैं। अतः हमारे मत में वही हिन्दू है जो भारतीय संस्कृति माने। अब संस्कृति क्या? तो यह संस्कृति शब्द भी बड़ा व्यापक है। रहन-सहन भाषा, वेश, परम्परागत आचार तथा देश की विचारधारा, स्वदेशप्रेम—ये सब संस्कृति के अन्तर्गत हैं। जो भारत की सभ्यता, भारतीय धर्म, भारतीय समाज, आचार-विचार को मानकर उसी अनुसार आचरण करने की चेष्टा करें, वे हिन्दू हैं।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# हिन्दुत्व ही राष्ट्रीयत्व

महामना पं० मदनमोहन मालवीय

समस्त संसार में हिन्दुओं की ही एक ऐसी जाति है जिसने धार्मिक ए दार्शनिक सिद्धान्तों को व्यावहारिक रूप दिया है। वही एक जाति पृथ्वी पर ऐसी रह गयी है जो वेदशास्त्रों पर अगाध श्रद्धा रखती है। वही ए जाति है जो न केवल आत्मा की अमरता पर विश्वास रखती है बल्कि अनेकता में एकता को भी प्रत्यक्ष देखती है। ये ऐसे तत्त्व हैं जिन्हें आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों, समस्त विश्व अपनाना चाहेगा, इनकी आवश्यकता को अनुभव करेगा। उस समय यही हिन्दू जाति उसे मार्ग दिखलायेगी। 'हिन्दुत्व' का परित्याग कर भारतीय राष्ट्रीयता जीवित नहीं रह सकती

उत्तमः सर्वधर्माणां हिन्दू धर्मोऽयमुच्यते।
रक्ष्यः प्रचारणीयश्च सर्वभूतहिते रतः॥



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# हिन्दू धर्म 'रेलीजन' नहीं

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

अथ च, संसार में एकमात्र जो सभी वैषम्य के बीच में ऐक्य, समस्त विरोधों में शांति का आनयन करता है, समस्त विच्छेदों के बीच एकमात्र मिलन का सेतु है उसी को धर्म कहा जाता है।

हमारा धर्म 'रेलीजन' नहीं है, वह मनुष्यत्व का एकांश नहीं है। यह पालिटिक्स से तिरस्कृत, युद्ध से बहिष्कृत, व्यवसाय से निर्वासित, प्रत्याहिक व्यवहार से दूरवर्ती नहीं है। समाज के किसी भी विशेष अंश में उसे प्राचीरबद्ध करके मनुष्य के आरामआमोद से, काव्य-कला से, ज्ञान-विज्ञान से उसकी सीमा की रक्षा करने के लिये सदैव पहरा खड़ा नहीं किया जा सकता। ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ आदि आश्रम इसी धर्म को जीवन के भीतर, संसार के भीतर, सर्वतोभाव से सार्थक करने के सोपान हैं। धर्म संसार के आंशिक प्रयोजन साधन के लिए नहीं है। समग्र संसार ही धर्मसाधन के लिए है। इस तरह धर्म ने घर के भीतर गृहधर्म, राजत्व के भीतर राजधर्म होकर भारतवर्ष के सम्पूर्ण समाज को एक अखण्ड तात्पर्य का दान किया है।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# जजिया से हिंदू मुसलमान बने : नेहरू जी

"कुछ लोगों ने अपना मजहब इसलिए बदल लिया कि इस्लाम उन्हें अच्छा लगा। कुछ लोग डर की वजह से मुसलमान हो गए और कुछ इसलिए कि जीतने वालों की तरफ रहना अच्छा था। लेकिन तबदीली की असली वजह आर्थिक थी। जो लोग मुसलमान नहीं बने उन्हें जजिया देना पड़ता था। गरीबों के ऊपर यह बहुत बड़ा बोझ था। बहुत-से तो सिर्फ इस बोझ से बचने के लिए अपना मजहब तब्दील करने के लिए तैयार हो जाते थे। ऊंचे वर्ग के आदमियों में मुसलमान होने की प्रेरणा दरबार में इज्जत और ऊंचे ओहदों के लालच से हुआ करती थी।

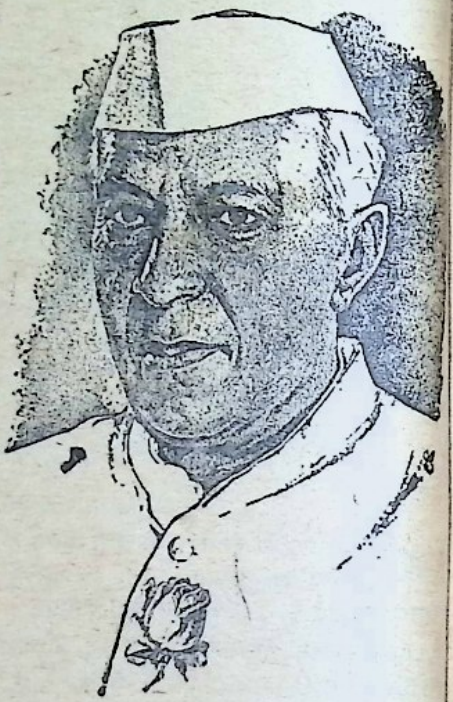

## औरंगजेब ने हजारों मन्दिर नष्ट किये

इसके बाद मुगल खानदान का आखिरी आदमी औरंगजेब आया। उसने अपने शासन की शुरुआत अपने पिता को जेलखाने में डाल कर की।

उसने हिंदुओं पर जुल्म करने की नीति जानबूझकर अपनायी। उसने हिन्दुओं पर [illegible] या टैक्स फिर लगा दिया। जहां तक हो सका हिन्दुओं से [illegible] छीन लिए। जिन राजपूत सरदारों ने अकबर के वक्त में इस राजघराने की मदद की थी उन्हीं को उसने नाराज करके राजपूतों से लड़ाई मोल ले ली। उसने हजारों हिन्दू मंदिरों को बराबर करवा दिया और पुराने जमाने की कितनी ही इमारतें धूल में मिला दी गई।

(विश्व इतिहास की झलक ९-९-१९३२]



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# क्या एक शताब्दी में हिन्दू संस्कृति का अंत हो जाएगा?

—बाबू श्रीप्रकाश [भूतपूर्व राज्यपाल]

आज से पन्द्रह वर्ष पूर्व भारत की स्थिति पर विश्व की राजनीति से परिचित इस लेख के लेखक स्वर्गीय बाबू श्रीप्रकाश ने जो विचार प्रकट किए थे, उनके विचारों का आज की परिस्थिति में भी उतनी ही महत्ता है। —सम्पादक

मेरा प्रथम महाभय या महासंकट यह है कि दस वर्षों के भीतर-भीतर देश पन्द्रह अथवा इससे भी अधिक छोटे, दुर्बल, दरिद्र और स्वतन्त्र राज्यों में विभक्त हो जाएगा। विभाजन के आधार भाषागत अथवा साम्प्रदायिक हो सकते हैं। जब हमने स्वेच्छा से देश का विभाजन सांप्रदायिक आधार पर मान लिया, तब हम इस विष को फैलने से कैसे रोक सकते हैं?

मेरा दूसरा महाभय यह है कि हमारे देश में सैनिक अनन्याधिकार भ हो सकता है। हमें स्वराज्य प्राप्त किए हुए बीस वर्ष से अधिक हो गए ः देश की शांति एवं सुव्यवस्था का प्रबन्ध सन्तोषजनक नहीं है।

मेरा तीसरा महाभय यह है कि हमारे ऊपर विदेशी आक्रमण भी हो सकता है। हमारी निरपेक्षता की नीति के कारण संसार में हमारा कोई मित्र नहीं है। जब हम किसी के मित्र नहीं हैं तो कोई दूसरा भी हमारा मित्र नहीं है। हमारे ऊपर न कोई विश्वास करता है और न कर सकता है।

मुझे अपना चौथा महाभय प्रकट करते विशेष रूप से कष्ट और असमंज हो रहा है। विवश होकर मुझे यह कहना पड़ता है कि मुझे यह भय है कि एक शताब्दी में जिस मानव-व्यवस्था को हम हिन्दू धर्म के नाम से जानते हैं, वह लुप्त हो जाएगी। उसके साथ-साथ हमारी पुरातन परम्परागत संस्कृति, जीवनक्रम और विचारशैली—सब गायब हो जायेंगी। मैं हिन्दू के नाते यह नहीं कह रहा हूं। तुलनात्मक दृष्टि से सम्प्रदायों, दर्शनों और विचारों वादों और मतों के अध्येता के रूप में मैं यह कहना चाहता हूं कि पुरातन मिस्र और यूनान



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की संस्कृतियों के लुप्त होने से मानव जाति की जितनी हानि नहीं हुई, उससे कहीं अधिक हानि हिन्दू नाम से प्रचलित आर्य संस्कृति के लुप्त होने से होगी।

अवश्य ही कुछ लोग ऐसा कहेंगे कि जब यह धर्म पांच हजार वर्षों तक भयानक संकटों और संघर्षों के बीच बचा रहा और समय की गति से जो कुछ भी इसमें दोष और त्रुटियां आती रहीं, उन्हें यह सम्हालता रहा तो यह सम्भव नहीं हो सकता कि आगे के एक सौ वर्षों में यह नष्ट हो जाए। यह भूलना नहीं चाहिए कि यद्यपि हमारे शरीर दासता की जंजीर में बँधे थे, तथापि हमने अपने मस्तिष्क को किसी के अधीन नहीं होने दिया। हमने अपनी आध्यात्मिक स्वतन्त्रता का समर्पण किसी के सामने कभी भी नहीं किया। हम किसी से अच्छी बात नहीं सीखते, उसकी बुराइयों को लेने में हम सदा तत्पर रहते हैं। हमने मुसलमान के भ्रातृभाव के सुन्दर आदर्श को नहीं लिया। उनसे बहुत-सी खराबियां ली हैं—अंग्रेजों के भी बहुत-से दोष हममें आए। समय का पालन, अपने कर्तव्यों के प्रति दत्तचित्त रहना, परिश्रम करना आदि गुण हमने नहीं लिए—आज हमारे ही शत्रु हमारे हृदयों में बस गए, हम विरोधों और संघर्षों के बीच रहते हुए जिस शक्ति को पांच हजार वर्षों से बचाए हुए थे, उसे हम अपनी ही वर्तमान अवस्था में सौ वर्ष के भीतर खो देंगे।

मेरा पाँचवाँ महाभय यह है कि जब हिन्दू धर्म लुप्त हो जाएगा, तब एशिया और अफ्रीका के महाद्वीप इस्लाम और कम्यूनवाद में बराबर-बराबर विभक्त हो जाएँगे। भारत ही हिन्दुओं के देश के रूप में दोनों तरफ के आक्रमणों को सम्हाले हुए दीवार की तरह खड़ा है। जब यहाँ से यह धर्म चला जायेगा तो उसका पोषण और रक्षक कौन बचेगा? तब सारा ही पूर्वी जगत् अर्थात् अफ्रीका और एशिया इस्लाम और कम्यूनवाद में बंट जायेंगे।

मेरा पहला महाभय तब दूर हो सकता है जब हम देश के बालक-बालिकाओं, स्त्री-पुरुषों को सच्ची देशभक्ति की शिक्षा दे सकेंगे?

सैनिक एकाधिकार के मेरे दूसरे महाभय का निराकरण सबके मस्तिष्कों में लोकतन्त्रात्मक भावनाओं के संचार से हो सकता है।

हमारे तीसरे महाभय या विदेशी आक्रमण से बचाव तभी हो सकता है जब सारी जनता को खतरे का सामना करना सिखाया जाए। वह प्रत्येक स्थान पर आत्मरक्षा के लिए सजग और सन्नद्ध हो।

चौथे महाभय हिन्दू संस्कृति तथा धर्म को नष्ट होने से बचाने के लिए हमें ऊँच-नीच के भेदभाव को मिटाकर सच्चे भाईचारे तथा परोपकार की वृत्ति अपनानी होगी।

इस्लाम और कम्यूनवाद को रोकने के लिए भी चौथे उपाय का अवलम्बन करना होगा। इसी से सच्ची समानता स्थापित हो सकती है। ●



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# मैं अब अपने को हिन्दू कहने में गर्व करता हूं

—भवानीप्रसाद मिश्र

[सुविख्यात कवि व गांधीवादी चिन्तक]

यह हमारे देश का दुर्भाग्य ही है कि बहुसंख्यक हिन्दू समाज को सम्प्रदायवादी कहा जाता है जबकि वास्तव में हिन्दू कभी भी सम्प्रदायवादी नहीं रहा।

सच माने में तो मुस्लिम तथा ईसाई ही संकीर्ण व सम्प्रदायवादी रहे हैं। वे अपने मजहब के खिलाफ़ कुछ सुनने को तैयार नहीं होते। वे आज भी गले-सड़े पुराने नियमों व परम्पराओं को लागू किये जाने के आकांक्षी हैं। अनेक कुरीतियों को मजहब का अंग मानते हैं। बहुविवाह जैसी कुरीति को भी मजहब बताते हैं।

मैंने कभी भी अपने को "हिन्दू" की परिधि में नहीं रखा लेकिन जो परिस्थितियां इस समय देश के सामने हैं उनको देखकर मैं अनुभव करने लगा हूं कि हमें साहस व दृढ़ता के साथ अपने को हिन्दू कहना चाहिये।

## गांधी जी ने धर्मपरिवर्तन को घातक बताया था

महात्मा गांधी भविष्य के खतरे को पहचानते थे। वे अस्पृश्यता के घातक परिणामों से भी परिचित थे। इसीलिये उन्होंने सबसे पहले हिन्दू समाज को अस्पृश्यता के कलंक से मुक्त करने के लिये पग उठाया तथा हरिजनोद्धार के कार्य को प्राथमिकता दी। वे जानते थे कि विदेशी और विधर्मी हमारे समाज की दुर्बलता का लाभ उठाकर धर्मपरिवर्तन का कुचक्र रचेंगे।

बापू ने अपने को 'हिन्दू' कहने में गर्व का अनुभव किया था। उन्होंने प्रलोभन व भय द्वारा धर्मपरिवर्तन का विरोध किया था। उनकी चेतावनी आज अक्षरशः सत्य होकर सामने आ रही है। विदेशी शक्तियां धर्मपरिवर्तन तथा राष्ट्रभक्ति के प्रति आस्था डिगाने में लगी हुई हैं। मुझे प्रसन्नता कि हमारी प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी भी इस कुचक्र से चिन्तित हैं।

हमें हिन्दू दर्शन, भारतीय संस्कृति तथा राष्ट्रवाद की भावनाओं का प्रचार व प्रसार करने की ओर विशेष शक्ति लगानी चाहिये। हिन्दू दर्शन ही मानव मात्र के कल्याण का आकांक्षी है तथा उसी के माध्यम से संसार सुख-शांति प्राप्त कर सकता है। ✻



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# कोई हमें कमजोर न समझे

—ताराचन्द्र प्रेमी

सागर में फिर ज्वार उठा है, लहरें महाप्रचण्ड हैं,
कोई हमें कमजोर न समझे, हिन्दू सदा अखण्ड हैं।
हमें हमारे महर्षियों ने, ऐसा पाठ सिखाया है,
सहन करो कुछ सीमा तक, ऐसा आदर्श बताया है।
युगनन्दन श्री कृष्णचन्द्र ने सही बहुत-सी गाली,
चला सुदर्शन अरि को गर्दन, तुरत अलग कर डाली।
पल में सब सीधा कर देंगे, कितना कोई उद्दण्ड है,
कोई हमें कमजोर न समझे, हिन्दू सदा अखण्ड हैं।
सागर में फिर.....

उठ चल वीर बढ़ा चल आगे, हर ज्वाला अंगारों में,
सीना ताने शेर बढ़ा चल, आंधी और तूफानों में।
नव जीवन सरिता उमड़ेगी, वीर तुम्हारे गानों में
ऐसा तुमको मन्त्र मिला है, ज्योति जगेगी प्राणों में।
प्राण दे गया वीर हकीकत, वह भी कैसी होली थी,
बीत रहा था बचपन तक, यौवन ने आंखें खोली थीं।
कि अपने शौर्य से माता की, भरी मांग में रोली थी,
अभी तोतली-सी बोली में, नहीं जवानी बोली थी।
युग-युग तक संदेश मिलेगा, जीवन भरी कहानी में।
साहस की सरिता उमड़ा दो, आग लगा दो पानी में
उठो जवानो जीवन वालो, करने काम जवानी में
साहस की सरिता उमड़ा दो, आग लगा दो पानी में



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# हिंदुत्व के बिना भारतीय इतिहास शून्य है

—डा० कर्णसिंह
अध्यक्ष, विराट् हिन्दू समाज

इतिहास के आंख खोलने से लेकर आज तक अवाध गति से आगे की ओर बढ़ता हुआ हिन्दुत्व महानदियों की भांति ही शताब्दियों से विचार और कर्म की अनगिनत धाराओं को ले कर चलता आया है। इसने विविध आध्यात्मिक और सामाजिक आन्दोलनों को जन्म दिया है। इसी प्रकार हिन्दुत्व बहुसंख्य भारतीयों का धर्म रहा है।

यहां तक कि तथाकथित मुस्लिम तथा ब्रिटिश शासनकालों में भी यही बहुसंख्यक भारतीय हिन्दू ही थे और १९८१ की जनगणना में भी यही निष्कर्ष निकला कि अस्सी प्रतिशत भारतीयों ने अपने को हिन्दू घोषित किया है।

वस्तुतः यह हिन्दुत्व ही है जिसने पचास शताब्दियों से भी अधिक समय से भारतीय इतिहास से साथ खिलवाड़ किए जाने के बावजूद अनेक बाधाओं के होते हुए भी एक व्यापक सामाजिक संस्कार की रचना की। भारतीय इतिहास हिन्दुत्व के बिना उसी प्रकार अग्राह्य है जैसे इस्लाम के बिना अरब का इतिहास और ईसाइयत के बिना लातीनी अमेरिका का इतिहास। इसका यह अर्थ नहीं है कि भारत में अन्य धर्मों द्वारा जो कार्य किया गया है उसे नकारा जा रहा है, बल्कि इस बात को चिह्नित करना ही इसका उद्देश्य है कि हिन्दुत्व की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विशिष्टता भारतीय परिदृश्य के संदर्भ में ऐसा तथ्य है, जिसका कोई दूसरा विकल्प नहीं है। इस दृष्टि से हिन्दुत्व में सामाजिक सुधार की आवश्यकताएं सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए बहुत ही अर्थपूर्ण हो जाती हैं।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वास्तव में हिन्दू समाज सुधार उतना ही प्राचीन है, जितना कि प्राचीन स्वयं हिन्दुत्व है—इस अर्थ में कि इसकी महान् आध्यात्मिक स्वतंत्रता इतनी सामर्थ्य रखती है कि उसका प्रत्येक ऋषि अपने निजी आध्यात्मिक अनुभवों के आधार पर वेदों और उपनिषदों में प्रतिपादित आत्मिक सत्य का अपनी विचारधारा के अनुकूल प्रतिष्ठापन करता रहा है। भगवान् महावीर और भगवान् बुद्ध ऐसे असाधारण सुधारक थे जिन्होंने जाति-प्रथा और पशुबलि जैसी कट्टर सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध नई चेतना जाग्रत की।

इसके बाद का हिन्दू समाज सुधार का इतिहास ऐसे महापुरुषों से भरा हुआ है, जैसे कि गुरु नानक, जिन्होंने अपनी आध्यात्मिक तथा दिव्य दृष्टि, प्रभावी व्यक्तित्व तथा आध्यात्मिक उपलब्धियों से हिन्दू समाज को नई दिशा दी।

वास्तव में हमारा स्वतंत्रता आन्दोलन भी हिन्दू समाज सुधार आन्दोलनों के मार्ग से होकर ही आया है।

महादेव गोविंद रानाडे तथा र०के० भंडारकर द्वारा सन् १८६७ में महाराष्ट्र में स्थापित प्रार्थना समाज, १८७५ में स्थापित आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती और १८९७ में स्थापित रामकृष्ण मिशन के स्वामी विवेकानन्द आदि महापुरुषों द्वारा संचालित आन्दोलनों ने नवजागरण का वातावरण पैदा किया। यही हमारे स्वतन्त्रत आन्दोलना की नींव थी जो कि बीसवीं सदी के मध्य में राजनैतिक विजय का परिणाम थी।

हमारे समाज में बहुत-सी कुरीतियां आती गयीं। अस्पृश्यता भी उन्ही का परिचायक है। अस्पृश्यता के खिलाफ स्वामी दयानन्द सरस्वती स्वामी विवेकानन्द, महात्मागांधी आदि ने आवाज उठाई। महामना मालवीय जी महाराज ने भी अस्पृश्यता को कलंक वताया।

अस्पृश्यता का लाभ विधर्मियों ने उठाया। विदेशी मिश्नरियों ने गरीब हरिजनों को ईसाई वनाया। अब कुछ उग्रवादी मुस्लिम देश धन भेजकर इस्लामीकरण कर रहे हैं। इस प्रकार विदेशी धन के दुरुपयोग से देशकी एकता के लिये भी घातक खेल खेला जा रहा है। सरकार को इस ओर गंभीरता से सोचना होगा।

हिन्दू समाज को संगठित व सुदृढ़ करने के लिये कुरीतियां मिटानी ही होंगी। साथ ही हिन्दुत्व पर आघातों को रोकने के लिये हमें सचेत होना होगा। ✻



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# उस हिन्दू को मेरा प्रणाम !

—स्व० श्री मदनगोपाल, मेरठ

जिसके आँगन में खेल रहे हैं सूरदास के बाल श्याम ।
जिसके प्रांगण में शोभित हैं तुलसी के सीता और राम ।।
जिसके मन्दिर में गूंज रहा मीरा के गिरधर का सुनाम ।
लीलामय का क्रीड़ास्थल है जिसका कोना-कोना ललाम ।।
वह 'पुण्य भूमि' जिसकी पूज्या, उस हिन्दू को मेरा प्रणाम ।
उसके पद-पद्मों को, पद की पावन रज को मेरा प्रणाम ।।१।।

उस हिन्दू को मेरा प्रणाम !

जिसकी रग-रग में दीख रहा अब तक उसका स्वर्णिम अतीत ।
जिसके स्वासों में गूंज रहा उसके वेदों का अमर गीत ।।
देखा करती जिसकी भृकुटि ही प्रकृति प्रिया निशदिन समीत ।
गौरीशंकर जिसकी चोटी गंगा जिसका यज्ञोपवीत ।।
वह 'पितृ भूमि' जिसकी अपनी, उस हिन्दू को मेरा प्रणाम ।
उसके पद-पद्मों को, पद की पावन रज को मेरा प्रणाम ।।२।।

उस हिन्दू को मेरा प्रणाम !

सरितायें जिसकी कण्ठहार, हरियाली जिसका दिव्य चीर ।
मलयाचल की शीतल सुवायु है जिसके स्वासों का समीर ।।
जिसकी गोदी में खेले हैं राणा प्रताप, शिवराज वीर ।
बन्दा बैरागी, छत्रसाल, बप्पा, कुम्भा, सांगा, हमीर ।।
वह 'मातृ भूमि' जिसकी माँ है, उस हिन्दू को मेरा प्रणाम ।
उसके पद-पद्मों को, पद की पावन रज को मेरा प्रणाम ।।३।।

उस हिन्दू को मेरा प्रणाम !



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# हिन्दू हूं !

—स्व. महाकवि महात्मा रामचन्द्र "वर" महाराज

मैं ज्वालामुखी धराधर हूं, मैं सरस सुधामय इन्दू हूं।
मैं इस प्रकार का हिन्दू हूं।

मैं गौतम, कपिल, कणाद, व्यास, मैं ही अगस्त्य विज्ञानी हूं।
मैं परशुराम प्रलयंकर हूं, मैं द्रोण धनुर्धर ध्यानी हूं॥
मैं याज्ञवल्क्य, जमदग्नि, अत्रि, मैं पाणिनि ऋषि सुज्ञानी हूं।
चाणक्य महानीतिज्ञ चतुर, अत्यंत आत्म-अभिमानी हूं॥
मैं इस प्रकार का हिन्दू हूं।

मैं हरिश्चन्द्र हूं दृढ़प्रतिज्ञ, मैं नृप शिवि प्राणी रक्षक हूं।
मैं राववेन्द्र रघुकुल भूषण, मर्यादा का संरक्षक हूं॥
मैं दुष्ट दैत्य दानव दल के, दमनार्थ बन गया तक्षक हूं।
मैं प्रणपालक राणा प्रताप, फल पत्र कंद तृण भक्षक हूं॥
मैं इस प्रकार का हिन्दू हूं।

मैं चन्द्रगुप्त बनकर प्रकटा, विक्रमादित्य बनकर आया।
शक हूण यवन गिन-गिन मारे, संपूर्ण विश्व तब थर्राया॥
शिवराज छत्रपति बन मैंने, हिन्दू ध्वज नभ में फहराया।
बन्दा वैरागी बन मैंने, हिन्दुत्व सूर्य को चमकाया॥
मैं इस प्रकार का हिन्दू हूं।

मैं बाजीराव पेशवा हूं, मैं रिपु विजयी रणजितसिंह हूं।
अफगान सैन्य संहारक हूं, बलशाली नलवा हरिसिंह हूं॥
अंग्रेज शत्रुओं का नाशक, मैं ही बन गया कुंवरसिंह हूं।
सावरकर और भगतसिंह हूं, लन्दन विजयी ऊधमसिंह हूं॥
मैं इस प्रकार का हिन्दू हूं।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैं रासबिहारी बोस बना, मैं तिलक राजगुरु बन प्रकटा।
मैं नेताजी बनकर सहसा, गोभक्षक गोरों पर झपटा॥
मैं ही राममूर्ति बनकर, था अगणित देशों में डपटा।
मैं इस प्रकार का हिन्दू हूं।

उनने नौआखाली में जब, मेरे शिशुओं को दल डाला।
मेरी कन्याओं को अतिशय, निर्दयतापूर्वक दल डाला॥
तब मैंने उसका प्रत्युत्तर, सहसा बिहार में दे डाला।
गढ़मुक्तेश्वर में फिर मैंने, ब्याज अलीगढ़ का डाला॥
मैं इस प्रकार का हिन्दू हूं।

लाहौरी, बहावलपुर में जब आघात हुए मुझ पर भारी।
रावलपिंडी में, बन्नू में लूटी उनने मेरी नारी॥
तब नारनौल, पटियाला में, मैं बना अतुल आयुध धारी।
गुड़गांव, भरतपुर, अलवर में अगणित रिपुसेना संहारी॥
मैं इस प्रकार का हिन्दू हूं।

भारत माता के अंग काट, जो पाकिस्तान बनाया है।
प्रिय वंग पञ्चनद कर विदीर्ण, सीमान्त सिन्धु विसराया है॥
ढाका, पेशावर, चट्टगांव, लाहोर पृथक् करवाया है।
इसके प्रतिकार हेतु मन में, मैंने सुविधान बनाया है।
मै इस प्रकार का हिन्दू हूं।

दिल्ली के रक्त दुर्ग पर अब, भगवा झण्डा फहरायेगा।
जो पाकिस्तान बना है वह, सहसा श्मशान बन जायेगा॥
इरान, अरब, अफगान, मिश्र, सबमें मेरा यश छायेगा।
मेरे पद चिह्नों पर निश्चय, अमरीका भी आ जाएगा।
मैं इस प्रकार का हिन्दू हूं।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# "हिन्दू का है हिन्दोस्थान"

—लक्ष्मीनारायणसिंह कुशवाह

कवि ! केवल भरलो एक तान, हिन्दू का है हिन्दोस्थान ।।
जब आ ग्रीकों ने बाहर से, भारत पर अत्याचार किया ।
वह नहीं यहीं तक माने थे, भारत पर निज अधिकार किया ।।
तब चन्द्रगुप्त ने ले कृपाण, ग्रीकों से दिलवाया प्रमाण ।
"हिन्दू का है हिन्दोस्थान" ।। १ ।।

जब भोली हिन्दू जनता पर, फैली अकबर की परिपाटी ।
तब प्रताप की ज्वाला को ले, जल पड़ी भूमि हल्दी घाटी ।।
वीरों के पाकर अग्निबाण, अकबर चिल्लाया बचा प्राण ।
"हिन्दू का है हिन्दोस्थान" ।। २ ।।

औरङ्गजेब ने जब भू पर, इस्लामी रंग फैलाया था ।
तब सिंह शिवा की गर्जन से, वह मुगल राज्य दहलाया था ।।
मिट गये यहाँ पर मुसलमान, कर याद बहुत-से यही गान ।
"हिन्दू का है हिन्दोस्थान" ।। ३ ।।

जब असुरों ने हद से बाहर, कर दी थी अपनी कुटिलाई ।
तब रानी झांसी भाला ले, उन पर थी दुर्गा-सी धाई ।।
"नाना" से लख कर वीर्य वान्, कह, लगे मांगने प्राणदान ।
"हिन्दू का है हिन्दोस्थान" ।। ४ ।।

वीरों ने इसके ही हित में, खाई घासों की रोटी थी ।
वीरों ने इसके ही हित में, नुचवाई अपनी बोटी थी ।।
गाते बच्चे भी यही गान, सरहिन्द-भीत मे हो दफान ।
"हिन्दू का है हिन्दोस्थान" ।। ५ ।।

सुन हिन्दू, नहीं ! नहीं ! द्रोही, तुझको क्या सूझी नई चाल ?
मां के मस्तक को कटवाकर, अपना ऊँचा कर रहा भाल ।।
यद्यपि करता मां रक्त पान, पर गा तो दे तू वही गान ।
"हिन्द का है हिन्दोस्थान" ।। ६ ।।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# हिन्दू सावधान हों

## गोरक्षापीठाधीश्वर महन्त श्री अवेद्यनाथजी महाराज

हिन्दू साम्प्रदायिक नहीं है बल्कि वह राष्ट्र का वाचक है। भारतीय मूल के धर्म को मानने वाले सभी लोग हिन्दू हैं। यदि 'हिन्दू धर्म' शब्द का प्रयोग होता है तो वह केवल सनातन धर्म नहीं, आर्यसमाज नहीं, सिख, बौद्ध और जैन नहीं बल्कि भारत मूल के समस्त धर्म ही हिन्दू धर्म के अन्तर्गत, हिन्दू धर्म के वर्चस्व में आते हैं। इसलिये आपके मन से इस बात की भ्रान्ति हमेशा के लिए निकल जानी चाहिए कि देश में हिन्दू साम्प्रदायिक है। जो लोग यह कहते हैं कि हिन्दू धर्म-शास्त्र में छुआछूत के लिए स्थान है वे लोग हिन्दू शास्त्र के बारे में जानकारी नहीं रखते। जिस हिन्दू धर्मशास्त्र ने यह कहा है कि मस्तिष्क ब्राह्मण है, भुजा क्षत्रिय है, उस हिन्दू धर्म शास्त्र ने चरण को अन्त्यज भी कहा है। एक ओर सारे शरीर का भार पैर पर रहता है! दूसरी तरफ अपना मस्तक चरण पर झुकता है। भगवान् की चरणपादुका की ही पूजा होती है। इसलिए यदि सचमुच ही हरिजन को चरण समझते हैं तो जिन शास्त्रों में चरणों की अपार महिमा जिस प्रकार गाई गई है उसी प्रकार से समाज में हरिजनों को भी सम्मान देना चाहिए।

### इस पर क्या-क्या अत्याचार नहीं ढाये गये !

इतिहास आपके सामने है। हिन्दू जाति में इस प्रकार से विघटन हुआ है कि एक हजार वर्ष तक विदेशियों को इस देश में शासन करने का मौका मिला है और उसी अभिशाप के कारण इस देश में हमें अपमानित किया गया, हमारे मन्दिरों को तोड़ा गया, धर्मशास्त्रों को जलाया गया। उस अभिशाप का कलंक आज भी, हम देखते हैं, अयोध्या, मथुरा, वाराणसी में हमारे मंदिरों को तोड़कर बनाई गई मस्जिदें खड़ी हैं। अगर आज भी हिन्दू नहीं चेता, यदि हरिजनों को उसने अपने से अलग रखा तो निश्चित ही है कि वह



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संसार में कम होगा। ७१ और ८१ की जनगणना के आँकड़े इस बात साक्षी हैं कि हिन्दू इस देश में धीरे-धीरे घट रहा है। अगर यही क्रम जा रहा तो निश्चित रूप से ईसाई और मुसलमान बहुसंख्यक हो जायेंगे तो हिन्दू इस देश में अल्पसंख्यक हो जायेगा। इस गणित को समझ करके भी य हरिजनों को दिल से, मन से, हृदय से लगाकर, उन्हें समाज में उचित स्थान देव उन्हें गले से लगा लें तभी हम इस देश में सुरक्षित रह सकते हैं। हमारा धर्म संस्कृति सुरक्षित रह सकती है, अन्यथा हमें घातक परिणाम झेलना पड़ेगा।

## धर्मपरिवर्तन अर्थात् राष्ट्रपरिवर्तन

हिन्दू महासभा के महान् नेता स्वातन्त्र्यवीर सावरकर ने ठीक ही कहा थ 'धर्मान्तरण अर्थात् राष्ट्रान्तरण'। उनकी इस बात को गलत बताया गया, पर आगे जाकर उनकी चेतावनी बिलकुल ठीक निकली। धर्मपरिवर्तन के साथ-सा राष्ट्रीयता का भी परिवर्तन कर दिया जाता है। नागालैण्ड, मिजोरम आ के ईसाई बनाये गये लोग देश के प्रति विद्रोही हो गये हैं।

अतः हमें वीर सावरकर की चेतावनी को ध्यान में रखकर हिन्दू राष्ट्रवा का घोष करना होगा।

वीर सुभाष और वीर सावरकर
हिन्दू राष्ट्र का स्वप्न देखते हुए



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# दो पाटन के बीच में हिन्दू बचे न कोय

—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

स्ट इण्डिया कम्पनी के बोर्ड आफ डायरेक्टर्स के चेयरमैन मिस्टर मेंगल्स ने ब्रिटिश पार्लमेण्ट में अपने वक्तव्य में कहा था—

"Providence has entrusted the extensive empire of Hindu-an to England in order that the banner of Christ should ave triumphant from one end of India to the other. Every-ne must exert all his strength that there may be no dila-riness on any account in continuing in the country the grand ork of making all Indians Christians."

विधाता ने हिन्दुस्तान का विशाल साम्राज्य इंग्लैंड के हाथों में इसलिए पा है कि ईसामसीह का झण्डा इस देश के एक कोने से लेकर दूसरे तक हरा सके। प्रत्येक ईसाई का कर्त्तव्य है कि मस्त भारतीयों को अविलम्ब ईसाई वनाने महान् कार्य में पूरी शक्ति के साथ जुट ये।

लेखक

भारतीय स्वाधीनता के प्रथम युद्ध सेपाही विद्रोह) की समाप्ति के दो वर्ष बाद ग्लैण्ड के तत्कालीन प्रधानमंत्री लार्ड पामर्स्टन घोषणा की—

"It is not only our duty but in our terest to promote the diffusion of hristianity as far as possibbe roughout the length and breadth of dia." (Christianity and Govenment India by Mayhew, Page 194)



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अर्थात् यह हमारा कर्त्तव्य ही नहीं है, अपितु हमारा हित इसी कि भारत में ईसाइयत का अधिक से अधिक प्रसार हो।

बम्बई के गवर्नर लार्ड री ने १८७६ मे ईसाई मिशनरियों के शिष्टम को प्रिंस आफ वेल्स के सामने प्रस्तुत करते हुए कहा था—

"They are doing in India more than all those civil soldiers, judges and governors your highness has met."

जितना काम आपके सिपाही, जज, गवर्नर और दूसरे अफसर क हैं, उससे कहीं अधिक ये (मिशनरी) कर रहे हैं।

विदेशी शासन और ईसाइयत का चोलीदामन का साथ रहा है। ह दासता की लड़ियों को सुदृढ़ करने में ईसाइयत ने अंग्रेजों के कंधे से भिड़ाकर काम किया है। आक्रान्ता के रूप में जाने से पहले ईसाई मिश भेजे जाते थे। मिशनरियों द्वारा मैदान तैयार होने के बाद सेनायें उत थीं। सैनिक शक्ति के सहारे शासन जम जाने पर सरकार की ओर से को देश के ईसाईकरण में हर प्रकार का सहयोग मिलता था। यही पर भारत में अपनाई गई। महात्मा गांधी जैसे असाम्प्रदायिक व्यक्ति को स्वीकार करना पड़ा कि ईसाइयों द्वारा किये जा रहे सेवा कार्यों का वा विक उद्देश्य लोगों की विवशता का लाभ उठाकर उन्हें ईसाई बनाना यह बात उस दिन पूरी तरह उजागर हो गई जब मानवता की अवतार सेवा की मूर्ति मानी जाने वाली मदर टैरेसा ने श्री ओ३म्प्रकाश त्यागी द्व बलात् धर्म-परिवर्तन पर रोक लगने वाले बिल का विरोध किया। धर्म-परिवर्तन का समर्थन करने वाले व्यक्ति को 'भारतरत्न' की उप प्रदान करने वाली सरकार को सेक्युलर कौन मान सकता है? भारत सर के इस राष्ट्रविरोधी कदम से मेदर टैरेसा को यह साहस हुआ कि सूरत आर्यसमाज मंदिर खरीदने जा पहुंची और अधिकारियों के बेचने से इन करने पर धमकी दे आयीं कि "अब मैं देख लूगी।" सूरत वही स्थान है व्यापारी के रूप में सर टामस रोव ने इस देश की धरती पर सबसे कदम रक्खा था। आज भी केरल, नागालैण्ड, असम आदि में जहां ईसाइयों का जोर है, वहां राष्ट्रविरोधी गतिविधियां जोरों पर हैं।

मुसलमान आक्रान्ता के रूप में इस देश में आये और लगभग ७०० तक उन्होंने यहां शासन भी किया। भारत के करोड़ों मुसलमानों में अ कतर इसी देश के रहने वाले हैं। किन्तु उन्होंने कभी भी किसी वि मुसलमान आक्रान्ता का उसके विदेशी होने के कारण विरोध नहीं कि



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इतिहास साक्षी है कि मुसलमानों की यह मनोवृत्ति आज भी ज्यों की त्यों बनी है। सच तो यह है कि बड़े से बड़ा देशभक्त भी कलमा पढ़ते ही देशद्रोही बन जाता है। बड़े से बड़े राष्ट्रवादी मुसलमान के हृदय में जो आदर भाव विदेशी आक्रान्ता महमूद गजनवी या मुहम्मद गौरी के लिए है, वह देश के लिए मर मिटने वाले प्रताप या शिवाजी के लिए नहीं है। यह कुरान की शिक्षा के अनुरूप ही है।

इस्लाम के नाम पर मुसलमानों को राष्ट्रविरोधी बनाने में सबसे अधिक हाथ अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी का रहा है। प्रायः लोग १९४७ में भारत के विभाजन के लिए जिम्मेदार द्विराष्ट्र सिद्धान्त के प्रवर्तक के रूप में मुहम्मद अली जिन्ना को मानते हैं। बहुत कम लोग जानते हैं कि १८८८ में सर सैयद अहमद खां ने लिखा था—"I object to every Congress, in every shape or form whatsoever, which regards India as one nation."

अर्थात् मैं किसी भी रूप में हिन्दुस्तान को एक राष्ट्र मानने के लिए तैयार नहीं हूं। अपनी इसी मान्यता का प्रचार व प्रसार करने के लिए सर सैयद अहमद खां ने १८७५ में मुहम्मदन एंग्लो-ओरियण्टल कालिज की स्थापना की जिसने १९२० में अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी का रूप धारण किया।

१८८३ ईसवी में बैक नामक एक अंग्रेज की नियुक्ति इस कालिज के प्रिंसिपल के पद पर हुई। १८९९ तक यह व्यक्ति अपने पद पर बना रहा। इन १६ वर्षों की अवधि में सर सैयद अहमद खां और अलीगढ़ कालिज पूरी तरह मि० बैक के प्रभाव में रहे। परिणामतः ये दोनों राष्ट्रविरोधी गतिविधियों का केन्द्र बन गये। इंग्लैण्ड से भारत के लिए रवाना होने से पूर्व मि० बैक ने वहां एक भाषण दिया। अपने भाषण में भारत के लिए प्रस्तावित संसदीय पद्धति का विरोध करते हुए मि० बैक ने कहा था कि इस प्रणाली के लागू होने पर—

"The Muslims will be under the majority opinion of the Hindus, a thing which will be highly resisted by the Muslims and which, I am sure, they will not accept quietly".

इस प्रकार मुसलमानों को हिन्दुओं के विरुद्ध भड़काकर, हिन्दुओं और मुसलमानों को आपस में लड़ाने के इरादे से मि० बैक ने इस देश की धरती पर कदम रखा और वह जब तक यहां रहा इस दिशा में प्रयत्न करता रहा। सन् १८८५ में कांग्रेस की स्थापना हुई। इसके ३ वर्ष बाद १८८८ में मि० बैक के परामर्श और सहयोग से सर सैयद ने Patriatic Association के नाम



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से एक संगठन बनाया जिसका उद्देश्य ब्रिटिश पार्लमेण्ट को यह विश्व दिलाना था कि भारत के मुसलमान स्वराज्य आदि के संघर्ष में हिन्दु के साथ नहीं हैं।

सन् १८९९ में सर चार्ल्स ब्रेडला ने भारत में अंशतः लोकतंत्रात्म शासन पद्धति लागू करने के लिए पार्लमेण्ट में एक बिल प्रस्तुत किय मि० वैक ने इस बिल का विरोध करने के लिए अलीगढ़ कालिज विद्यार्थियों को देश देश के कोने-कोने में भेजकर ज्ञापन पर मुसलमानो हस्ताक्षर कराये। कुछ विद्यार्थियों को साथ लेकर वह स्वयं दिल्ली पहु और जामा मस्जिद की सीढ़ियों पर बैठ गया। उस दिन जुम्मा था। नम के लिए मुसलमान भारी संख्या में एकत्र थे। नमाज से लौटते मुसलमानो इस ज्ञापन पर यह कहकर हस्ताक्षर कराये गये कि इस ज्ञापन में मुसलम की ओर से सरकार से यह अनुरोध किया गया है कि वह गोहत्या पर र लगाकर मुसलमानों के धार्मिक अधिकारों में हस्तक्षेप न करे। इस प्रकार कि के विरोध में २०७३५ मुसलमानों के हस्ताक्षर कराके इंगलैण्ड भेजे गये।

सन् १८९५ में मि० वैक ने इंगलैण्ड में एक भाषण दिया जिसका सा संक्षेप अलीगढ़ कालिज की मैगजीन में छपा। उक्त भाषण में मि० वैक कहा था—

"A friendship between the English people and the Muslim was possibbe but not between Muslims and followers of othe religins."

अर्थात् अंग्रेजों के साथ तो मुसलमानों का मेल हो सकता है, परंतु अ किसी मत वाले के साथ नहीं। इस प्रकार की भावना के रहते साम्प्रदायिक सद्भाव तथा देशभक्ति का खयाल भी मुसलमानों के भीतर कैसे ठहर सकता था

१८९८ में सर सैयद का और १८९९ में वैक का देहान्त हो गया। व वैक के उत्तराधिकारी थियोडोर मेरिसन ने (जो पहले से प्रोफेसर था) द का काम जारी रखा। वह मुसलमान विद्यार्थियों को बराबर भड़काता रह था कि भारत में लोकतंत्र का अर्थ होगा—अल्पसंख्यकों का लकड़हा घसियारे और पानी भरने वाले झींवर बन जाना।

मैरिसन के बाद कालिज के प्रिंसिपल के पद पर आर्चिबाल्ड नाम अंग्रेज की नियुक्ति हुई। उन दिनों बंगाल के विभाजन के कारण लोगों बड़ी भारी उत्तेजना थी। अंग्रेज सरकार भारतीयों में व्याप्त असन्तोष शान्त करने के उद्देश्य से शासन व्यवस्था में कुछ सुधार करना चाहती थी जैसे ही आर्चिबाल्ड को इस बात की भनक पड़ी, वह तत्काल शिमला पहुंच



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और तत्कालीन वाइसराय लार्ड मिण्टो से साम्प्रदायिक आधार पर मुसलमानों को विशेष प्रतिनिधित्व देने का अनुरोध किया। आर्चिबाल्ड द्वारा तैयार किए ज्ञापन को लेकर मुसलमानों का एक शिष्टमण्डल सर आगाखां के नेतृत्व में एक अक्तूबर १९०६ को वाइसराय से मिला। ज्ञापन पर सभी स्तरों पर मुसलमानों को साम्प्रदायिक आधार पर विशेषाधिकार देने की मांग की गई थी। ब्रिटिश सरकार उसके लिए पहिले से तैयार थी। उसी दिन शाम को वाइसराय की पत्नी लेडी मिण्टो के नाम भेजे गये पत्र में एक अधिकारी ने लिखा—

"A very big thing has happened today. A work of statesmanship that will affect India and Indian history for a long time. It is nothing less than the pulling out of 63 million people from joining the ranks of seditious opposition."

इस प्रकार ६ करोड़ मुसलमानों को राष्ट्र की मुख्य धारा से काटकर उन्हें हिन्दू और हिन्दुस्तान दोनों का विरोधी बना दिया गया। लेडी मिण्टो ने अपनी डायरी में उस दिन लिखा—

"This has been a very eventful day, as someone has said to me—an epoch in Indian history.

इस प्रकार के खाद पानी से साम्प्रदायिकता का विषवृक्ष फलता फूलता रहा। बहुत जल्दी इसकी शाखा प्रशाखा दूर तक फैल गयीं। तीन महीने बाद ३० दिसम्बर १९०६ को ढाका में मुस्लिम लीग की स्थापना के तीन महीने बाद ही अलीगढ़ के विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए नवाब वकारुलमलिक ने कहा—

"God forbid, if the British rule disappears from India Hindus will lord it over and we will be in constant danger of our life, property and honour."

साम्प्रदायिकता से विषाक्त अलीगढ़ कालिज की नींव पर ही अलीगढ़ यूनिवर्सिटी खड़ी हुई। अलीगढ़ यूनिवर्सिटी की एक-एक ईंट वहां के पेड़-पौधों की एक-एक पत्ती में इतना विष भरा है कि उसे जड़-मूल से उखाड़े बिना साम्प्रदायिक विद्वेष की भावना को दूर नहीं किया जा सकता। इस्लाम के नाम पर मुसलमानों को राष्ट्रविरोधी बनाने में अलीगढ़ यूनिवर्सिटी का बहुत बड़ा हाथ रहा है। अपनी परम्पराओं के अनुरूप वहां से शिक्षित दीक्षित मुसलमानों ने १९२० से १९४७ तक जो कुछ किया उसी के परिणामस्वरूप



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१९४७ में बंटवारा हुआ। अंग्रेज कृतघ्न नहीं रहा। मार्च १९४७ वाइसराय बनकर हिन्दुस्तान में आने से पहले लार्ड माउण्टबेटन भारत और उसकी स्वतंत्रता के महान् शत्रु चर्चिल से मिलने गए। भारत के विरुद्ध अंग्रेज की सहायता करने के लिए मुसलमानों का कृतज्ञतापूर्वक स्मरण करते हुए चर्चिल ने माउण्टबेटन से कहा—

"I am sorry that you should perform this grievous duty of giving freedom to India). I am not going to tell you how to do it. But I will tell you one thing—whatever arrangement you may make, you must see that yon don't harm a hair on the head of a single Muslim They are the people who have been our friends, and they are the people the Hindus are now going to oppress. So you must take steps that they can't do it."

(Indian Express Magazine, April 4, 1982)

लार्ड माउण्टबेटन ने चर्चिल को दिए वचन को निभाया और देश को स्वतंत्रता देने के साथ उसका बंटवारा इस प्रकार किया कि भारतभूमि का एक भाग कटकर पाकिस्तान के रूप में मुसलमानों को एक स्वतंत्र देश मिल गया और शेष भारत पर उनका पूर्ण अधिकार ज्यों का त्यों बना रह गया। यही कारण है कि हिन्दू-मुस्लिम समस्या आज भी ज्यों की त्यों बनी हुई है। आज भी भारत के मुसलमान के दिल में जो प्यार पाकिस्तान के लिए है उसका शतांश भी हिन्दुस्तान के लिए नहीं है। ऐसा न होता तो १९६४ में जब ओलिम्पिक खेलों में भारत की टीम हारी थी तो हिन्दुस्तान के मुसलमान खुशियां न मनाते। मद्रास के श्री सी० आर० रविचन्द्रन के अनुसार"'During the Indo-Pak war I have heard the Muslims in my neighbourhood shouting "Pakistan Zindabad." (Sunday, 11-17 April 1982)

संसार के किसी भी कोने में मुसलमानों को किसी प्रकार की भी शिकायत हो (भले ही वह मुसलमानों से हो) उसे बहाना बनाकर हिन्दुस्तान के मुसलमान यहां के हिन्दुओं के विरुद्ध जहाद छेड़ देंगे। हम कितना ही कहें संविधान की धारा ३७० के रहते कश्मीर को भारत का भाग उन अर्थों में नहीं माना जा सकता जिन अर्थों में देश के अन्य प्रदेशों या राज्यों को माना जाता है। जब कोई कश्मीरी मुसलमान नई दिल्ली से लौटकर कश्मीर पहुंचता है तो यही कहता है कि मैं 'भारत होकर आया हूं,' क्योंकि वह अपने मन में यही मानता है कि कश्मीर भारत का अंग नहीं है। कश्मीर की समस्या का हल करने के लिए पाकिस्तान बार-बार जनमतसंग्रह की बात



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करता है। (पहले शेख अबदुल्ला भी भी यही रट लगाते थे और सत्ता में न रहने पर फिर भी यही राग अलापेंगे।) परन्तु बरसों से ६ आने सेर का चावल खिलाते रहकर भी भारत सरकार जनमत संग्रह के लिए तैयार नहीं है—इसलिए कि वह अच्छी तरह जानती है कि कश्मीर के सभी मुसलमान सामूहिक रूप से पाकिस्तान के पक्ष में मत देंगे। इस्लाम की तालीम उन्हें सदा इस बात की प्रेरणा करती रहती है कि काफिर (गैर-मुस्लिम), चाहे वह तुम्हारा बाप ही क्यों न हो, तुम्हारा शत्रु है। उसका संहार करना तुम्हारा धर्म है। इंग्लैण्ड के महान् साहित्यकार जर्ज बर्नार्ड शा ने लिखा है—

"Islam is the most intolerant religion in the world. Either you accept it or have your throat cut by someone who will be destined to heaven."

(Everybody's Political what is what : Religions' Summary)

इस विचारधारा के रहते न देश में शान्ति रह सकती है और न देश बाह्य आक्रमण से सुरक्षित रह सकता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए १९०१ में जनसंख्या के अध्यक्ष मि० बर्न ने स्वामी दयानन्द के विषय में लिखा था—

"Dayanand feared Islam and Christianity because he considered that the adoption and adaptation of any foreign creed would endanger the national feelings he wished to foster."

# हिन्दू बनो

१. चोटी रखो
२. यज्ञोपवीत पहनो।
३. मम्मी-डैडी-अंकल-आंटी कहना छोड़ो।
४. घर में पैंट का प्रयोग बन्द करो।
५. अपनी भाषा, वेश-देश-साहित्य-धर्म से अपने बच्चों को परिचित कराओ।

## हिन्दुओ जागो! देश बचाओ!



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# हिन्दू कौन ?

हिन्दू वह है जिसके मन में, हिन्दूपन की ज्वाला हो।
हिन्दू वह है जो स्वजाति पर, मरने को मतवाला हो॥
हिन्दू थे गुरु गोविन्दसिंह सुत, चुने गये दीवारों में।
हिन्दू थी वह सती पद्मिनी, जली चिता अंगारो में॥
हिन्दू था वह वीर वैरागी, जला लोहित अंगारों में।
हिन्दू था वह वीर हकीकत, कटा शीश तलवारों में॥
हिन्दू थे राणा प्रताप निज, कट्टर अचल विचारों में।
हिन्दू थे शिवराज चले जो, तलवारों की धारों में॥
भरा हुआ हिन्दुत्व सुधा से, जिसका जीवन प्याला हो।
हिन्दू वह है जो स्वजाति पर, मरने को मतवाला हो॥
जिसके लिए प्रतापसिंह ने धूल जंगलों की छानी।
जिस पर निज सर्वस्व लुटा कर भामाशाह बना दानी॥
शीश कटा कर वीर हकीकत ने रक्खा जिसका पानी।
बलिदानी वीरों ने हंस-हंस कर दी थी जिस पर कुर्बानी॥
आज हमारे रहते उसका हो सकता अपमान नहीं।
अखण्ड हिन्दुस्तान, कभी रह सकता पाकिस्तान नहीं॥
भरी त्याग और बलिदानों से जिसकी जीवन शाला हो।
हिन्दू वह है जो स्वजाति पर मरने को मतवाला हो॥
हिन्दू नहीं भूप जयचन्द थे, किया जिन्होंने कुत्सित कार्य।
शक्तिसिंह और मानसिंह भी, नहीं कहे जा सकते आर्य॥
पाकिस्तान बनाया जिनने, और कर रहे अत्याचार।
पूर्ण अहिन्दू हैं "निर्मोही" गांधी और गोपालाचार्य॥
है यह भद अहिन्दू हिन्दू का गोरा हो या काला हो।
हिन्दू वह है जो स्वजाति पर मिटने को मतवाला हो॥

—स्व० महात्मा रामचन्द्र महाराज, 'वीर' जी



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—आभा

# राष्ट्र जागरण का शंखनाद— हिन्दू रक्षा समिति

हिन्दू रक्षा समिति के उद्घाटन समारोह में आर्यसमाज के सर्वोच्च नेता श्री महात्मा रामगोपाल जी जगद्गुरु शंकराचार्य श्री १००८ स्वामी स्वरूपानन्द जी का स्वागत कर रहे हैं।

देश में जागरण के शंखनाद का दूसरा नाम है—हिन्दू रक्षा समिति। समय के साथ अनेक संगठन जागे, किन्तु जिस ढंग से हिन्दू रक्षा समिति ने कार्य किया, उसकी जो नीति रही, उसके कारण साधनों के अभाव में भी जन-मानस का जो प्रेम-सौहार्द, सहयोग इसे मिला, उस पर हमें गर्व है।

देश के दो महान् संगठनों के प्रतिनिधियों द्वारा हिन्दू रक्षा समिति का उद्घाटन हुआ। जगद्गुरु श्री १००८ स्वामी स्वरूपानन्द जी महाराज ने



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चार अक्तूबर सन् १९८० को आर्यसमाज दीवान हाल में उद्घाटन किया और आर्यसमाज के सर्वोच्च नेता श्री महात्मा रामगोपाल जी वानप्रस्थ ने इस समारोह की अध्यक्षता की।

कु० आभा प्रचार मंत्री, अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति के साथ कार में से उतरते हुए जगद्गुरु शंकराचार्य जी।

० ० ०

दोनों नेताओं के आशीर्वाद और स्पष्ट लक्ष्य के कारण समिति का संदेश सारे भारत में फैलता गया। बीकानेर, अजमेर, गोधरा, हैदराबाद, मुरादाबाद, लखनऊ, शाहगंज मुगलसराय, छोटा नागपुर, मकराना, जयपुर और विभिन्न भागों में समिति के सम्मेलन हुए। अग्नि शिखा बनकर समिति ने अग्नि जलाने का जो प्रयास किया, उसे देश का निष्पक्ष इतिहासकार भुला न सकेगा। आज भी जब जम्मू में मुस्लिम सांप्रदायिकों ने यरुशलम में गोलियां चलने पर हिन्दुओं को मारना और उनकी दूकानें जलाना प्रारम्भ किया तो हिन्दू रक्षा समिति के अधिकारी ही हिन्दुओं की रक्षा के लिए तत्पर हुए।

## हिन्दू रक्षा समिति के उद्देश्य

१. भारत राष्ट्र की स्वतन्त्रता, सुरक्षा, एकता और संस्कृति को हानि पहुंचाने वाले तत्त्वों का—



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२. मजहब और जाति के आधार पर आरक्षण, विशेष अधिकार व विधि-नियम मांगने की विघटनकारी प्रवृत्ति का—

३. विदेशी देशद्रोही शक्तियों के राष्ट्रघातक षड्यन्त्रों का—

४. भारत के नागरिकों के लिए पृथक्-पृथक् राजनियमों और अधिकारों का—

५. साम्प्रदायिकता, जातीयता, प्रान्तीयता व चरित्र भ्रष्ट करने वाली विदेशी विचारधाराओं का

संगठित विरोध कर भारत की रक्षा करना "हिन्दू रक्षा समिति" का उद्देश्य है।

यही नहीं, आरम्भ से ही समिति ने जो मांगें प्रस्तुत कीं, उन्हें कोई भी देशभक्त अस्वीकार न सका।

# हिन्दू रक्षा समिति की मांगें

१. भारत के सभी नागरिकों के लिए समान सिविल कानून, नियम और अधिकार बनाए जाएं।

२. मजहब व जाति के आधार पर पुलिस, सेना व सरकारी विभागों में आरक्षण की माँग को किसी भी स्थिति में स्वीकार न किया जाए।

३. कश्मीर, असम व देश के सभी भागों में पाकिस्तानी घुसपैठियों व सेवा की आड़ में राजनैतिक देशद्रोहपूर्ण षड्यन्त्रों में लगे सभी विदेशी पादरियों को तुरन्त भारत से निकाला जाए।

४. अल्पसंख्यक आयोग समाप्त किया जाए।

५. भारत के किसी भी भाग में मुस्लिम विश्वविद्यालय खोलने की अनुमति न दी जाये और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया जाए।

६. अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक शब्दों का प्रयोग बन्द हो और तुष्टीकरण की नीति समाप्त की जाए।

७. कश्मीर सम्बन्धी धारा ३७० तुरन्त हटाई जाए और वहाँ भारत के नागरिकों के बसने की व्यवस्था हो।

८. मजहब के नाम पर अधिकार मांगने व दंगा करने वालों को पूरी शक्ति से कुचल दिया जाए।

९. जो भारत को अपना देश नहीं मानते उनको वोट का अधिकार न दिया जाए। प्रत्येक नागरिक को वोट का अधिकार देने से पहले एक शपथपत्र भरने का



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नियम बनाया जाए, जिसमें वह स्वीकार करे कि मैं भारत को अपनी मातृभूमि स्वीकार करता हूं और मेरी प्रथम निष्ठा भारत राष्ट्र के प्रति रहेगी।

१०. गोहत्या का कलंक तुरन्त समाप्त किया जाए।

११. बिहार व उत्तर प्रदेश में उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने का आदेश तुरन्त रद्द किया जाये।

समिति की यह स्पष्ट घोषित नीति रही कि वह सभी हिन्दू संगठनों के प्रयासों में सहयोग देगी। किसी भी हिन्दू संस्था की आलोचना नहीं करेगी। अपने नाम पर बल न देते हुए समिति ने अपने लक्ष्य और कार्यक्रम को ही प्राथमिकता दी, जिसके परिणामस्वरूप सभी हिन्दू संगठनों और कार्यकर्ताओं का सक्रिय सहयोग समिति को प्राप्त रहा।

हिन्दू रक्षा समिति ने कोई स्थिर कोष नहीं बनाया। न धन संग्रह पर ही बल दिया। काम और केवल काम पर ध्यान देते हुए समिति ने अपने कार्यक्रम को ही प्रमुखता दी।

समिति की स्पष्ट नीति सत्य कहने की रही। उसने अराष्ट्रीय तत्त्वों की ईंट का उत्तर पत्थर से देने की, देशद्रोही तत्त्वों को समाप्त करने के लिए उग्र राष्ट्रवाद को प्रोत्साहित करने की, सभी प्रकार की सांप्रदायिक शक्तियों को मिटाने की बात प्रबल स्वर में गुंजायी।

समिति की नीति-रीति और कार्यक्रम के प्रसार के लिए दयानन्द संस्थान के सहयोग से १६ पुस्तकें लाखों की संख्या में प्रकाशित की गयीं। हैदराबाद में तेलगू भाषा में भी समिति का साहित्य वहां समिति के सहयोगी संगठनों ने भारी संख्या में प्रकाशित किया।

जन-ज्ञान के नियमित पाठक तो समिति के कार्यों से पूर्णतया परिचित हैं—किन्तु जनसाधारण को भी यह भली भांति विदित है कि धन न होते हुए भी समिति के प्रयासों से देश पर आक्रमण करने वाली दो महाशक्तियां सत्य के उद्घोष से बौखला गयीं।

३० जनवरी के उर्दू ब्लिट्ज़ में समिति द्वारा प्रकाशित साहित्य की कट आलोचना की। परिणामस्वरूप मुस्लिम साम्प्रदायिक क्षेत्रों में विरोध का विष तेजी से फैलने लगा।

देश-विदेश के मुस्लिम सांप्रदायिक संगठन तिलमिला उठे और उन्होंने लेखों-पोस्टरों और प्रदर्शनों द्वारा समिति के विरुद्ध वातावरण बनाना आरम्भ कर दिया।

परिणामस्वरूप समिति की स्तम्भ, दयानन्द संस्थान की अध्यक्ष जन-ज्ञान की सम्पादक पंडिता राकेशरानी के विरुद्ध एक मास के अन्दर ही तीन अभियोग शासन द्वारा दायर कर दिये गए। उन्हें रात्रि में ६ बजे



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गिरफ्तार किया गया। मुसलमानों को प्रसन्न करने की दृष्टि से एक विदुषी हिन्दू महिला को हवालात में रखा गया।

समिति के कार्यालय की साम्प्रदायिक तत्त्वों से रक्षा के लिए १८ दिन तक सशस्त्र पुलिस २४ घंटे नियुक्त करनी पड़ी। किन्तु इन सभी परिस्थतियों से जूझते हुए समिति का कार्य चलता रहा, बढ़ता रहा।

समिति के अध्यक्ष महात्मा वेदभिक्षुः और निर्देशक वयोवृद्ध प्रो० रामसिंह जी ने रुग्ण होते हुए भी गर्मी-सर्दी की चिन्ता किए बिना देशव्यापी दौरे किए। उनके भाषणों ने सोए हिन्दू को सिंह की तरह जागरूक बना दिया।

समिति के नारे आज देश के नारे बन चुके हैं। "वन्दे मातरम् गाना होगा या भारत से जाना होगा" का नारा महात्मा वेदभिक्षुः जी ने आज से लगभग अठारह मास पूर्व लखनऊ अधिवेशन में घोषित किया था जो आज सर्वत्र गूंजता हुआ देशभक्ति की भावनाएं जागृत कर रहा है। हम सब हिन्दू हैं—हिन्दू जीतेगा के स्वर आज के समय का संगीत बन गए हैं।

इन पंक्तियों को आप पढ़ेंगे, पर क्या इतना ही पर्याप्त होगा? क्या आप समिति के लक्ष्य और कार्यक्रम—१२ मांगों को ठीक समझते हैं? उत्तर हां में हो, तो आज ही समिति के सदस्य बनिए औरों को भी बनाइए। अपने नगर में हिन्दू रक्षा समिति स्थापति कीजिए और हिन्दू सैनिक बनकर देश, धर्म, स्वतंत्रता, एकता की रक्षा में योगदान दीजिए।

वेद, गौ, गंगा, गीता, गायत्री की रक्षा के लिए शंखनाद कीजिए और संकल्प लीजिए कि—

१—भारत को इस्लामिस्तान-ईसालैण्ड बनाने का स्वप्न देखने वाले, सेवा की आड़ लेकर काम करने वालों को हम सफल नहीं होने देंगे।

२—राम-कृष्ण का एक भी अनुयायी ईसाई-मुसलमान नहीं होने पाएगा।

३—भारत मां की स्वतंत्रता-एकता की रक्षा सर्वस्व देकर भी करेंगे—

४—सत्य-शांति-न्याय और मानवता का प्रतीक ओ३म् का झंडा सर्वत्र फहराएंगे।

हम आह्वान करते हैं उन भाइयों का जिनकी नसों में हकीकतराय, बंदा वैरागी, गुरुगोविन्दसिंह, शिवाजी और राणा प्रताप का रक्त बहता है—उन बहिनों का जिनके दिलों में सीता, सावित्री और लक्ष्मीबाई अभी भी जिंदा हैं। हिंदू में वर्तमान चुनौतियों के विरुद्ध जो जागरण अब आ रहा है—उसे संगठित और सशक्त बनाने की आवश्यकता है। मैं आमंत्रण करूंगी कि एक सप्ताह के अन्दर अपने जिले, नगर, कस्बे, गांव या मोहल्ले, जितनी भी आपकी कार्य सीमा हो, वहां हिन्दू रक्षा समिति की शाखा का गठन करें। —आभा



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"देसी काजल आंखों के लिए लाभकारी है।"

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के नेत्र विशेषज्ञ डाक्टर का कहना है।

भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त

# भीमसेनी काजल

(एला युक्त)

आंखों को निरोग और शीतल रखता है

मुरारी ब्रदर्स

(इंडिया) प्रा० लि०

जी-7, माडल टाउन, दिल्ली-110009

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# हिन्दू की जय हो, जय हो !!

कुमारी दिव्या

हिन्दू की जय हो, जय हो !
भारत माता बुला रही है,
वीर हिन्दुओ जागो !!
उठो जवानो, आगे बढ़कर,
मां की पीर मिटाओ !!
भारत माता की जय बोलो,
वीर हनुमानो, तुम जागो !
धर्म हमारा संकट में है,
तुम देशद्रोहियों को भगाओ,
सिलैण्ड षड्यन्त्र मिटाओ !
इस्लामिस्तान के भाव जलाओ !!
हिन्दू की जय हो, जय हो !
अगर न जागे देश के वीर,
तो क्या होगा देश का,
अगर तो वीर जाग गए,
तो क्या होगा देशद्रोहियों का;
और उनकी मनोवृत्ति का ।
भारत में जो रहता है,
वह हर कोई हिन्दू है ।
न कोई हरिजन है,
न कोई नीच है ।
न कोई अछूत है,
सब कोई भाई हैं,
हिन्दू की जय हो, जय हो !!
भारत देश है मेरा प्यारा,
इसकी रक्षा करना फर्ज है हमारा !
भारत है मेरी मातृभूमि,
हम सब हैं इसी में जन्मे,
भारत मां की जय हो, जय हो !!
हिन्दू की जय हो, जय हो !!
समस्या बहुत ही विकट हैं । जागिए !



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai


# एक ही स्थान पर

सभी वस्तुएं उपलब्ध

हर प्रकार के बिल्डर्स हार्डवेयर, ब्रास व अल्युमीनियम की फिटिंग, पेंट तथा वार्निश, कर्टेन व डोर फिटिंग, सेनिटरी वेयर और टाइलें, ओज़ार, अल्युमीनियम सेक्शन व सीढ़ियां, तथा घर की सजावट के लिये आकर्षक फिटिंग का सामान

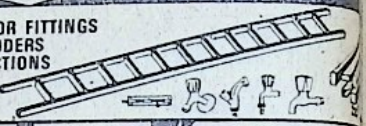

Ai ATUL

★ ALUMINIUM DOOR FITTINGS
★ ALUMINIUM LADDERS
★ ALUMINIUM SECTIONS
★ C.P. BATHROOM FITTINGS

Johnson
Ceramic Glazed Tiles

GARDEN TOOLS & LAWN MOWE

GEDORE
HAND TOOLS

PUMA
WATER PUM

Super Snowcem
DECORATIVE WATERPROOF CEMENT COATING

ICI
PAINTS

Parryware
SANITARY WARE

FEVICOL

Godrej
LOCKS & LATCHES

TAJMAHAL
Cement Colours

DECORATIVE HANDLES

Araldite
ADHESIVE

# पटवारीजी

3314, बैंक स्ट्रीट, करोल बाग, नई देहली-110005. फ़ोन : 563231




Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# करेंगे क्रांति मंत्र गुंजार !

गगन से दूर, धरा के पास, चलो, हम कर लें नव-निर्माण !
विजय जय का लेकर संदेश, करेंगे धरती पर अभियान ।।

सिसकती दीन दशा को देख, विकल ना होंगे किसके प्राण ?
मनुज का ऐसा होगा अन्त, किया था किसने कब अनुमान ?
लिया था सोच स्वप्न में क्रूर, निशा का करना है अवसान ।
निरन्तर कर सबसे संघर्ष, मिलेगा मन चाहा वरदान ।

खिलेंगे मुरझाये से फूल, श्रवण कर शाश्वत मंगल गान ।
गगन से दूर, धरा के पास, चलो, हम कर लें नव-निर्माण ।।

बिखरते पीड़ा के उद्‌गार, लगा है आहों का अम्बार ।
नहीं है ज्ञान, कहां पर मोल, मिलेगा सत्य शांति का सार ।
सरलता प्रेम न्याय के राग, कहां पर भूली धरती मौन ।
जली है कैसी ज्वाला आज, बचेगा इससे ऐसे कौन ?

यही हैं प्रश्न जिन्हें दिन रात, हमें सुलझाना निश्चित मान ।
गगन से दूर, धरा के पास, चलो, हम कर लें नव-निर्माण ।।

जगत् की आभा का अनुराग, सुनाता आमन्त्रण है आज ।
चलो अब चलना है अविराम, सजा लो सारे टूटे साज ।
जलाकर पाप ताप को दूर, मिटाकर व्याकुल हाहाकार ।
गला कर हिंसा और अशान्ति, धरा के छलनामय व्यापार ।

उदित होगा स्वर्णिम रवि-कांत, सुमंगल-शोभित-शुभ्र विहान ।
गगन से दूर, धरा के पास, चलो हम कर लें नव-निर्माण ।।

यही है लक्ष्य, यही है चाह, यही है वेद-धर्म उद्देश्य ।
यही है "आर्य" शब्द का भाव, यही है ऋषियों का सन्देश ।
सभी हों एक, न कोई दूर, किसी से रह पाये अनजान ।
बंधे हों ऐक्य भाव में पूर्ण, सभी का एक सत्य हो ज्ञान ।

करेंगे क्रान्ति मंत्र गुंजार, किया है प्रण वीरों ने आन ।
गगन से दूर, धरा के पास, चलो हम करें लें नव-निर्माण ।।

—राकेश रानी



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai


हर शुभ अवसर के लिये

शुद्ध और पवित्र

एम डी एच

हवन सामग्री

कीमती जड़ी बूटियों से निर्मित

**महाशियां दी हट्टी प्राइवेट लिमिटिड**

9/44 इंडस्ट्रियल ऐरिया, कीर्ति नगर, नई देहली-110015

फ़ोन : 534093 539609

सेल्स आफिस : खारी बावली, दिल्ली-110006 फ़ोन : 232855




Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# हिन्दू साम्प्रदायिक हो ही नहीं सकता

## —सुप्रसिद्ध विचारक जैनेन्द्र कुमार की लेखनी से

पुणे, शोलापुर, कोल्हापुर, अहमदाबाद के बाद अलीगढ़, बड़ोदा और कन्याकुमारी। साम्प्रदायिकता का यह रोग भारतदेश के शरीर में कुछ गहरा बैठ गया मालूम होता है। दंगों के रूप में रोग जब यह तब फूटता ही रहता है। उपचार के लिए बताया जाता है—सैक्युलरिज्म—धर्म-निरपेक्षता। लेकिन यह इलाज कारगर होता नहीं दीखता। उलटे लगता ऐसा है कि धर्म की निरपेक्षता के आधार पर राजनीति ज्यादा आसानी से दिमाग को पकड़ लेती है और अपने-अपने पंथ मतवाद के आग्रहों को उभार कर नए-नए उत्पात रच चलती है।

धर्म मेल-मिलाप बढ़ाता है। फिर धर्म के नाम पर यदि उपद्रव होता है तो क्यों? इसके उत्तर के लिए प्रश्न की गहराई में जाना होगा। गहराई तत्त्व की और इतिहास की भी।

हिन्दू के साथ साम्प्रदायिकता असंगत और बेमेल है। हिन्दू उस अर्थ में कोई एक पंथ या मतवाद तो है नहीं। हिन्दू के अन्तर्गत जैन वैसे ही आ जाता है, जैसे शैव या शाक्त। किन्तु जैन पंथ अलग है और इसका अपना एक विशिष्ट तत्त्ववाद भी है। हिन्दू के अन्तर्गत सैकड़ों ही जाति-उपजातियां हैं। इसलिए यों भी उसका एक सम्प्रदाय नहीं हो सकता।

पर इस्लाम के साथ यह बात नहीं है। इसकी अपनी एक निश्चित जमात है। पिछले दिनों तो उसे अलग कौम ही मान लिया गया। उस आधार पर भारत का विभाजन हुआ और कांग्रेस के धर्म-निरपेक्ष जन इसमें भागी हुए। सिर्फ गांधी अलग और विरुद्ध रहे। लेकिन वह तो कांग्रेस के चार आना सदस्य भी नहीं थे।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक गांधी ही धर्म के आधार पर अलग राष्ट्र मानने की विवशता से मुक्त रह सके तो इस कारण कि वह धार्मिक थे। अर्थात् राजनीतिक नहीं थे। दूसरी ओर मुस्लिम लीग के वाहिद नेता कायदेआजम जिन्ना सौ फीसदी राजनीतिक थे। उनके समक्ष इंडियन नेशनल कांग्रेस के नेता जवाहरलाल नेहरू आदि भी सौ टंच राजनीतिक थे। राजनीतिक अर्थात् धर्म-निरपेक्ष।

## धर्म और सम्प्रदाय

धर्म को लेकर सम्प्रदाय खड़ा हो जाया करता है। पर इस साम्प्रदायिकता को एक और इकट्ठा रखने वाला होता है मत। मतवाद आत्मिक या आंतरिक की जगह शारीरिक और लौकिक हो जाता है और उसके आस-पास दुनियादारी इकट्ठी होने लगती है। उसमें आग्रह उपजता है जो आपसी रगड़े-झगड़े उत्पन्न करता है।

साम्प्रदायिकता भारत में प्रमुखतः हिन्दू बनाम मुस्लिम वाली समझी जाती है। पर हिन्दू में तो हिन्दू के रूप में किसी के मुकाबले खड़े होने की कभी जरूरत नहीं हुई। हिन्दू शब्द की यह कमजोरी मानी जाती है। राजनीतिक दृष्टि से चाहे हो भी यह कमजोरी पर ठीक यही उसकी शक्ति और महिमा भी है। अर्थात् उस शब्द पर कोई बाहरी सीमा नहीं लादी जा सकती। उसमें नए-नए देवता शामिल होते गए हैं। प्रकार-प्रकार की उपासनाएं है। तरह-तरह के मठमंदिर हैं। हिन्दू धर्म की यह विशेषता रहने दी गई होती, तो मस्जिद-गिरजा भी उसी तरह स्थान पा सकते थे। उसमें इन्जील और कुरान भी मान्य ग्रंथों की गिनती में आ सकते थे। पर वह क्रम रुक गया।

प्रक्रिया बस चल रही थी। आपसी टंटों-झगड़ों के नीचे भी हठात् एक सम्मिश्रण पनपता जा रहा था। मुसलमान आया अगर बाहर से तो इस देश की धरती में रच-पचकर यहां का हो चला था। आपसी व्यवहार में से मिली-जुली संस्कृति और भाषा उग रही थी। यह सब अनिवार्य था और नैसर्गिक था। लेकिन बीच में भंग आ गया।

वह भंग आया बहुत-कुछ अंग्रेज के कारण। १८५७ की क्रान्ति में राजनीतिक स्तर पर हिन्दू-मुस्लिम भेदभाव जैसे रह ही नहीं गया था। लेकिन फिर अंग्रेज के लिए जरूरी हुआ कि यह भेदभाव रचे और उपजाए। उसको तो इस देश और धरती को अपना मानना था नहीं। देश उसका बाहर था और यहां से खींचकर उसे अपने को और अपने देश को धन-दौलत से भर लेना था। वहाँ से इस भेद को बाकायदा सींचा गया और आखिर वह दिन आया कि मुस्लिम को सूझने लगा कि अल्पमत होकर वह अगर हिन्दुस्तान में



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

खैरियत से है तो अंग्रेज की बदौलत ! उसमें डर डाल दिया गया कि अंग्रेज चला जाएगा तो उसका क्या होगा। चुनांचे मुस्लिम लीग और नेशनल कांग्रेस में सीधी बात असम्भव हो गई। अंग्रेज को ऊपर मुंसिफ के रूप में मानना जरूरी हो गया। बंटवारा हुआ और उसका निर्णायक अंग्रेज बना।

## मतभेद अनिवार्य हैं

मतभेद तो होते हैं और हुआ करेंगे। तेज होने पर उन पर लड़ाई भी छिड़ सकती है। लेकिन लड़ाई का अंत आता है और अंत अकसर सुलह से होता है। जिसको हार कहते हैं वह भी सुलह का ही रूप हुआ करता है। कभी ऐसा तो हो नहीं सकता कि कोई पक्ष पूरा-का-पूरा नेस्तनाबूद कर दिया जाए। अखिर आज दुनिया बहुत-कुछ एक है और विज्ञान और उद्योग की राह से आपस में सब मुल्क निकट आ गए हैं और राष्ट्रसंघ जैसी संस्था मानव जाति के पास हो सकी है तो यहां तक आने में मानव जाति को कितनी लड़ाइयां लड़नी पड़ी हैं।

पर वह मौका नहीं मिला। अंग्रेज था और उसका आसरा था। गांधी ने कहा कि अंग्रेज को जाने दो। फिर आपस में तुम उलझोगे तो आखिर में सुलझ भी लोगे। तीसरे के भरोसे रहने से तुम लोग दो होगे तो सदा-सदा के लिए दो ही बने रहोगे।

खयाल था कि मुस्लिम होमलैंड के तौर पर पाकिस्तान बन जाएगा तो चलो एक झटके से समस्या सदा को हल हो जएगी। पर क्या समस्या तनिक भी हल हुई है ? क्या वह गहरी और कायमी ही नहीं होती चली गई है ?

मैं मानता हूं कि साम्प्रदायिकता की इस गंभीरतम समस्या का अन्त राज की नीति में से नहीं पाया जा सकेगा। राज की नीति क्या है ? यही न कि अल्पमत को सुरक्षा मिले। आवश्यक हो तो विशेष अधिकार भी मिलें और बहुमत को किसी पर हावी न होने दिया जाए। अल्पमत के अधिकार बहुमत के केवल कर्त्तव्य। इसी प्रकार सामाजिक न्याय की रक्षा होगी और सन्तुलन कायम रहेगा। राजनीति चल रही है और अल्पमत को सदा यह कहते रहना पड़ता है कि हम असुरक्षित हैं। सुरक्षा अधिक अर्थात् आरक्षण चाहिए। अल्पमत बनाम बहुमत का वातावरण चहका रहता है। इस वातावरण में हर समुदाय की तबीयत मचलती है कि वह भी अपने को एक अल्पमत के रूप में क्यों न खड़ा करे? लोकतंत्र है और वयस्क मताधिकार है। अपनी वोट एक ओर इकट्ठी रखो और इस आधार पर कसकर सौदा करो



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और सत्ता में अपना दखल रखो। और हर फिरके और हर जाति में दुकि साज नेतृत्व खड़ा हो रहा है जो इस पैंतरे पर ध्यान रखता है और उस ह याद पर अपनी-अपनी राजनीतिक सत्ता का निर्माण करता है। जिस लोक की व्यवस्था के नीचे आज हम जी रहे हैं उसका असली चरित्र और स्व कुछ यह है। इसमें सिर्फ हिन्दू है जिसका अपना कोई संगठित समुदाय है, फिर भी वह बहुमत माना जाता है और सदा घाटे में रहता है। हरि हैं। अनुसूचित वर्ग और जातियां हैं। ये सब अल्पमत हैं। आरक्षित हैं, पिछड़े हैं। इसलिए उन्हें मात्रा से अधिक दो। सत्ता अगर वोटों से बनती है तो क का लेखा-जोखा सही रखना सबसे कुशल राजनीति है।

## पृथक् भाव में वृद्धि

भारत में इस परिस्थिति में हम देख रहे हैं कि तरह-तरह के नामों पृथक् भाव बढ़ता ही जा रहा है। इस अलहदगी को हमने एक समय उचि और वैध ठहराया था। 'सेपरेट इलेक्टोरेट' का प्रावधान किया था। अब आरक्षित निर्वाचन क्षेत्र हैं। जोर है जातीयता पर—साम्प्रदायिकता पर। ध्र निरपेक्ष सारी राजनीति अन्दर ही अन्दर उस भेदभाव और पृथक् भाव बढ़ावा देती है। बढ़ावा देती और सत्ता पाकर फिर उसी से अपने को हैर और परेशान भी अनुभव करती है।

आवश्यकता है अब उस तत्त्व की जो इस अलहदगी की चेतना को क करे। कम क्या घुला कर समाप्त कर दे। यह काम राज की नीति के क का नहीं। यह काम सांस्कृतिक है और केवल उनके बल का है जो सत्ता सामने रखकर नहीं जीते हैं। हम भूल गए हैं सेवा की राजनीति को। उ के बल पर हमने स्वराज पाया था। स्वराज आते-आते राजनीतिकों के सि फिर गए और सेवा से मुंह मोड़ सत्ता को उन्होंने अपना लेना चाहा तो सत्ता मिली, पर दो टूक होकर मिली। दो टुकड़े चलो हो गए, लेकिन अगर व सत्ता की राजनीति चलती चली जाएगी तो भारत और भी टूक-टूक हो तो इसमें विस्मय नहीं है। ●

---

# अपने नगर में हिन्दू रक्षा समिति स्थापित करें।

---



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# प्रचार साहित्य

| | |
|---|---|
| १. चुनौती इस्लामी साम्राज्यवाद की | ६० पैसे |
| २. भारत के मुसलमानों का क्या करें ?—वेदभिक्षुः | ४० ,, |
| ३. क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे ? | ४० ,, |
| ४. हिन्दुओं को चेतावनी—वेदभिक्षुः | ४० ,, |
| ५. मोपला (उपन्यास)—वीर सावरकर | ५ रुपये |
| ६. हम सब हिन्दू हैं—वीर सावरकर | ४० पैसे |
| ७. पोस्टर—दो प्रकार के | ८० ,, |
| ८. इस्लाम में क्या है ?—राकेशरानी | ४० ,, |
| ९. शुद्धि का मंत्र—कुंवर चादकरण शारदा | ८० ,, |
| १०. इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियां—जहीर नियाजी | ४० ,, |
| ११. हिन्दू जागो ! देश बचाओ ! | ४० ,, |
| १२. इस्लाम—एक परिचय | ४० ,, |
| १३. Bible in the Balance | ६० ,, |
| १४. A Challenge to the Christian Faith | २५ ,, |
| १५. पोप की सेना का भारत पर हमला—वेदभिक्षुः | ४० ,, |
| १६. पादरियों को चुनौती | २५ ,, |
| १७. बाइबिल को चुनौती—ओ३म्प्रकाश त्यागी | ४० ,, |
| १८. क्या ईसा खुदा का बेटा था ? | ४० ,, |
| १९. और पादरी भाग गया | ४० ,, |

**१००० पुस्तकें मंगाने पर ५० प्रतिशत कमीशन**

**३०० से ५०० तक पुस्तकें मंगाने पर २५ प्रतिशत कमीशन**

## अ० भा० हिन्दू रक्षा समिति, वेद मंदिर, नई दिल्ली-५



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai



# स्वतन्त्रता किसने दिलाई ?

## हिन्दू ने ! हिन्दू ने !! हिन्दू ने !!!

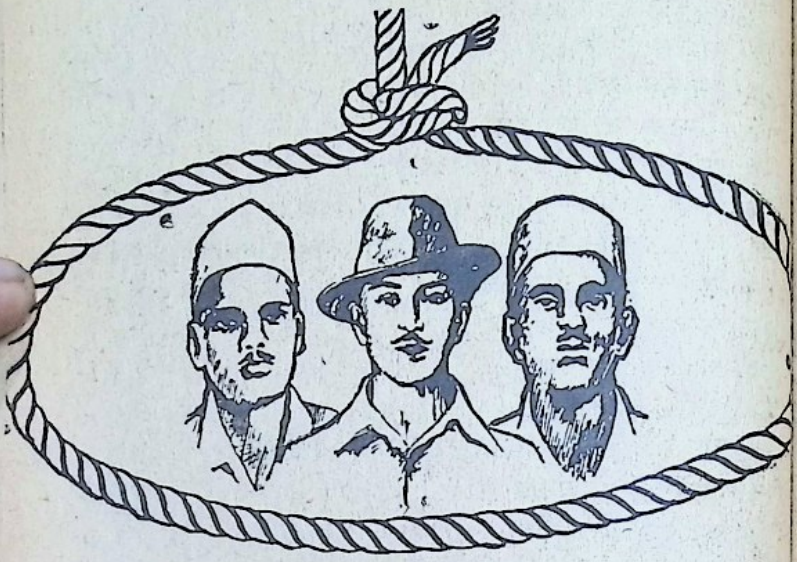

स्वतन्त्रता की देवी को प्रसन्न करने के लिए प्राणों की आहुति देने वाले अमर शहीद

## सुखदेव, भगतसिंह, राजगुरु

अंग्रेजों की दासता से हिन्दुस्तान की स्वतंत्रता के लिए सन् १८५७ से प्रारंभिक संघर्ष में किसने सच्चा त्याग किया ? हिन्दुओं ने अथवा मुसलमानों ने ? मंगल पाण्डे, वीर कुंवरसिंह, तात्या टोपे व झांसी की वीरांगना लक्ष्मीबाई कौन थी ? हिन्दू अथवा मुसलमान ? अण्डमान में कौन



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गये ? जिस पूर्वी बंगाल की सत्ता का सूत्र आज मुसलमानों के हाथों में है, उस बंगाल से प्रज्वलित स्वतंत्रता के हवन कुण्ड में कौन समिधा बने ? वे मुसलमान न थे, हिन्दू थे। सत्याग्रह संगम में बलिदान करने वाले भी कौन थे ? मुसलमान ? नहीं ! नहीं !! हिन्दू थे। अण्डमान की भूमि खोदकर देखो और वहां से प्राप्त हुतात्माओं की अस्थियां देखो। उन सब पर 'हिन्दू', 'हिन्दू' अक्षर अंकित मिलेंगे।

यह सिद्ध है कि हिन्दुस्थान के उद्धारार्थ आत्मार्पण सदैव हिन्दुओं ने ही किया है। यह देश हिन्दुओं का ही है। हिन्दू इस भूमि को मातृभूमि व पितृभूमि के साथ-साथ पुण्यभूमि मानकर इस पर सर्वस्व न्यौछावर करता रहा है। हिन्दू के अतिरिक्त अन्य सभी ने तो इस पर आक्रमण करके इसे दासता में जकड़ने का ही प्रयास किया। अतः हिन्दू ही इस देश का सच्चा राष्ट्रीय है, इस देश का सच्चा पुत्र है जो देश की स्वाधीनता व अखण्डता की रक्षा के लिये गोलियां खा सकता है, 'हर हर महादेव' का घोष करके फांसी पर झूल सकता है और अपने रक्त से भारत माता का अभिषेक कर सकता है।

## स्वाधीनता 'दान' में नहीं मिली

आज स्वाधीन भारत की कांग्रेसी सरकार अपनी पाठ्य पुस्तकों द्वारा छात्र छात्राओं को सिखाती है कि गांधीजी की कांग्रेस ने भारत का शासन अंग्रेजों से निःशस्त्र क्रांति व अहिंसा के बल पर लिया। किन्तु यह सर्वथा गलत व हजारों हुतात्माओं के प्रति अन्याय है।

जब हमारी शक्तिशाली सेना ने तलवार म्यान से निकालकर स्वतंत्रता के लिए अंग्रेजों पर वार करना शुरू किया और देश की हिन्दू जनता स्वाधीनता के लिए उठ खड़ी हुई तो अंग्रेज घबड़ा गये और उन्होंने स्वतंत्रता को दान करने की बात बनाना शुरू कर दिया। जब जगह-जगह हिन्दू वीर अंग्रेजों पर टूट पड़े और विद्रोह उठ खड़ा हुआ तो अंग्रेजों को यहां से भागने पर विवश होना पड़ा।

अंग्रेजों ने स्वतंत्रता गांधी जी के चर्खे-तकली से डरकर या अहिंसा से हृदय परिवर्तन होने के कारण 'दान' में कदापि नहीं दी, वरन् स्वतंत्रता के दीवाने क्रांति वीरों ने अंग्रेजों से उसे छीना था। स्वाधीनता का वास्तविक श्रेय ज्ञात व अज्ञात हिन्दू हुतात्माओं को ही है।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# मेरी मीनाक्षीपुरम् यात्रा

—डॉ० रघुवीर वेदालंकार

मीनाक्षीपुरम्—जिसने गत वर्ष धर्मान्तरण के द्वारा समाचारपत्रों में प्रमुख स्थान प्राप्त कर लिया था, साथ ही झकझोर दिया था, हिंदुओं को। इतना ही नहीं धर्मनिरपेक्षता की चादर ओढ़ने वाली सरकार का ध्यान भी अपनी ओर आकृष्ट कर लिया था। इसी मीनाक्षीपुरम् के लिए अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति की ओर से १-४-'८२ को मैं K. K. Express द्वारा रवाना होकर ३-४-'८२ को प्रातः Quilon Junction पर उतरा। प्राकृतिक दृष्टि से यह हरा भरा प्रदेश है। चारों ओर नारियल के वृक्ष न केवल सघन छाया एवं नेत्रतृप्ति ही प्रदान करते हैं अपितु वहां की जनता के जीवन का साधन भी हैं। यहां पुरुष वर्ग अधिकतर लुंगी पहनता है। पैंट कम देखने में आयी। अनेक व्यक्ति नंगे पैर रहते हैं या चप्पल रखते हैं। महिलाएं—यहां तक कि लड़कियां भी—पैर आदि के परिधान से दूर हैं। सलवार आदि भी नहीं पहनी जाती। यहां का केला एक फुट तक लम्बा होता है। वजन में आधा किलो, दाम १ रुपया। Quilon पहुंचकर मीनाक्षीपुरम् का पता पूछने लगा तो प्रतीत हुआ कि वहां इस नाम से लोग परिचित ही नहीं हैं। यहां का जन समुदाय मलयालम बोलता है किन्तु स्टेशन मास्टर को अंग्रेजी में किसी प्रकार पूरी बात बतलाने से पता चला कि यहां से कुछ दूर पर Singattia Station है। वहां जाने पर मीनाक्षीपुरम् का पता चल सकता है। १२-१५ बजे गाड़ी से सिगोटै के लिए रवाना होकर साढ़े १२ बजे सिगोटे जाकर पता

लेखक



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चला कि यहां से Ponpoli के लिए बस जाती है। पानपोली उतरकर उसके पास ही मीनाक्षीपुरम् है। मीनाक्षीपुम् की ओर कदम रखते ही पता चल गया कि वहां मुसलमानों का अड्डा अभी भी पूर्ववत् कायम है। गाँव में प्रवेश करते ही सबसे पहले पड़ती है मस्जिद, जहां पर एक मौलवी इस्लाम के प्रचार प्रसार के लिए स्थित है। मस्जिद पर ऊंचा सा हरा झंडा अभी भी फहरा रहा है जो मानो अपनी विजय की सूचना दिशाओं को स्वयं दे रहा है। न केवल मस्जिद पर अपितु गांव में भी कम से कम १०-१२ स्थानों पर वही हरे झंडे फहरा रहे थे, जो इस बात के सूचक थे कि अभी यहां इस्लाम अपने पैर अच्छी प्रकार जमाए हुए है। मस्जिद के सामने ही एक सरकारी प्राइमरी स्कूल है। उसमें कुछ सिपाही भी अपनी ड्यूटी पर थे। एक सिपाही से जिसके माथे पर हिन्दू रीति से तिलक लगा था, मैंने मीनाक्षीपुरम् में आर्यसमाज, हिन्दू परिषद् अथवा अन्य किसी अन्य हिन्दू संस्था के केन्द्र की जानकारी चाही तो उन्होंने कहा कि यहां इस प्रकार का कोई केन्द्र नहीं है। हां, हिन्दू नेता यहां आते रहे हैं तथा जो व्यक्ति मुसलमान बने थे उनमें से कुछ को पुनः शुद्ध भी किया गया है। इसी विषय पर देर तक मस्जिद के मौलवी से भी बातचीत होती रही। उसने इस बात से स्पष्ट इन्कार किया कि मुसलमान से पुनः कुछ लोग हिन्दू बने हैं।

उसने अपने चारों ओर उन अनेक व्यक्तियों को भी मुझे दिखलाया जो अभी भी मुसलमान हैं। वे सब मलयालम बोलते थे अतः भाषा की कठिनाई थी उनसे बात करने में। हां, मस्जिद का मौलवी फर्राटे की अंग्रेजी बोल रहा था। उसका कहना था कि हम अभी भी अपने उद्देश्य में लगे हैं। सब व्यक्ति यहां मस्जिद में आकर प्रतिदिन नमाज अदा करते है।

मस्जिद से थोड़ी दूर पर ही एक हिन्दू मंदिर भी है। किन्तु यह अवश्य आश्चर्यजनक था कि पूरे मीनाक्षीपुरम् में कहीं पर उस समय ओ३म् का या भगवा झण्डा दिखलायी नहीं पड़ा। पानपोली से मीनाक्षीपुरम् की ओर मुड़ते हुए सड़क पर ही पण्डैया नामक एक हिन्दू का पक्की ईंटों का मकान है। कुछ हिन्दी वह समझ एवं बोल लेता है। उसके अपने शब्दों में "यहां नेता लोग—हिन्दू लोग आता है। बहुत आया, पहले भी आया, करता कुछ नहीं। मुसलमानों को बाहर मुल्क से पैसा आ रहा है। किसी को मुसलमानों ने पैसा देकर बनाया। किसी को और तरीका से फंसा लिया।"

मीनाक्षीपुरम् में मस्जिद के मौलवी से पता चला कि यहां से ७ किलो-मीटर की दूरी पर Tenkasi नगर है। वहां पर आर्यसमाज तथा हिन्दू परिषद् के सैन्टर हो सकते हैं। उन केन्द्रों को देखने एवं अधिक जानकारी प्राप्त करने



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की इच्छा से तेनकाशी जाकर उक्त दोनों संस्थाओं के केन्द्रों का पता पूछ पर नहीं चल सका। अंत में डाकघर से पूछने से विश्व हिन्दू परिषद् के कार्यकर्ता बाल सुब्रह्मण्यम् का पता चला। मुख्य रूप में यह अकेला व्यक्ति ही परिषद् के कार्य में लगा है। २ घण्टे तक प्रतीक्षा करने पर भी भेंट इस लिए नहीं हो सकी कि उस समय वे परिषद् के लिए चन्दा एकत्रित कर गये हुए थे। इससे इस संदेह की पुष्टि अवश्य हुई कि हिन्दू परिषद् भारत भर में धन संग्रह में लगी हुई है—शायद चुनाव के लिए। समीक्षकों के अनुसार तेनकाशी में जाकर सबसे अधिक आश्चर्य तो इस बात पर हुआ कि यहां पर हिन्दुओं की—ऐसे हिन्दुओं की, जो अभी भी पूरे मस्तक पर तिलक पोते रहते हैं, संख्या पर्याप्त है। मंदिर का विश्वनाथ स्वामी का विशाल मंदिर अभी भी प्रातः सायं पूजा के समय तुरही, बाजे, घण्टों की ध्वनि से गूंज उठता है।

इसके अतिरिक्त यहां अनेक छोटे छोटे मंदिर हैं जिनमें हिन्दू लोग पूजन करते हैं। हिन्दू धर्म का ऐसा प्रसार होते हुए भी यहां से केवल ५ किलोमीटर पर मीनाक्षीपुरम् में सामूहिक धर्मान्तरण की घटना घट गयी। इतना ही नहीं, अपितु मीनाक्षीपुरम् की मस्जिद में रहने वाला मौलवी तेनकाशी का ही रहने वाला है जो अभी अपना कार्य निवास होकर कर रहा है जबकि यहां का हिन्दू वर्ग इस ओर से सर्वथा उदासीन है। मुझे लगा कि हिन्दुओं के धर्मान्तरण का कारण उनकी यह निष्क्रियता एवं उदासीनता ही है। किसी भी समाज के चार वर्ग हो सकते हैं—१ बौद्धिक वर्ग, २—राजनैतिक वर्ग, ३—सामाजिक कार्यकर्त्ता तथा धार्मिक वर्ग ४—साधारण जनता। आज हिन्दू धर्म का बौद्धिक वर्ग इस दिशा में कुछ नहीं सोच रहा। राजनीतिक वर्ग तो धर्मान्तरण को प्रोत्साहन ही दे रहा है, बाधक नहीं बन रहा। किन्तु भारत का धार्मिक वर्ग—महान् पुजारी, साधु संन्यासी आदि तथा धनाढ्य सामाजिक वर्ग भी निकम्मा हो चुका है। जिसके कारण यह सब कुछ हो रहा है। यदि यह वर्ग जाग जाए तो देश में इतने मठ, मंदिर, आश्रम, साधु और महन्त हैं कि किसी का भी धर्मान्तरण न होने दें।

दक्षिण भारत में धर्मान्तरण को रोकने के लिए दक्षिण भारत में ही स्थानीय समितियां, संगठन बनाने होंगे। वहां की भाषा में साहित्य, पत्रिकाएं तैयार करके वितरित करनी होंगी। वहीं के स्थानीयी लोगों को वहां प्रचारक बनाना होगा। तभी यह कार्य स्थायी रूप ले सकता है अन्यथा नहीं। खेद है कि इस दिशा में व्यापक स्तर पर अभी तक कुछ नहीं हो रहा। यात्रा के मध्य उस प्रदेश में अनेक पादरी तथा महिलाएं सब स्थानों पर दिखलाई पड़े जो वहीं के थे तथा मलयालम बोल रहे



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

थे। वहां हिन्दुत्व के प्रचार के लिए भी ऐसा ही करना होगा। साथ ही मुसलमानों के उस वर्ग को भी साथ लगाना चाहिए जो कि मुस्लिम मजहबी कानून के खिलाफ आवाज उठ रहे हैं। उदाहरणार्थ अभी बम्बई के समीप जलगांव में मुस्लिम महिलाओं ने जलूस एवं सभा का आयोजन करके मांग की कि मुसलमानों की बहुपत्नी प्रथा पर प्रतिबंध लगाया जाए। क्यों नहीं हिन्दू उनके साथ लगकर उनकी मांग को आगे बढ़ाते ? इस प्रकार भारत में धर्मान्तरण को रोकने के लिए व्यापक एवं लम्बे समय तक चलने वाले स्थायी कार्यक्रम बनाने होंगे। तभी इस दिशा में कुछ किया जा सकता है।

## हिन्दू बनाम सेक्युलरिज्म

भारत का एक दुर्भाग्य सेक्युलरिज्म भी है। इसका अर्थ असाम्प्रदायिकता नहीं है। अंग्रेजी के इस शब्द का प्रयोग जिस अर्थ में किया जा रहा है, उससे असाम्प्रदायिकता का प्रचार नहीं होता।

प्रचार उससे इस भाव का होता है कि—

मुसलमान मुसलमान है, और क्रिस्तान क्रिस्तान है मगर·····

हिन्दू हिन्दू नहीं, गैर-मुस्लिम है।

भारत के सेक्युलर राज्य की दृष्टि से हिन्दू और मुसलमान बराबर नहीं हैं ! हिन्दू एक ही विवाह कर सकता है। मगर मुसलमान के एक ही विवाह की बात नहीं है। उसके विवाहों की संख्या पर रोक नहीं है। किन्तु हिन्दू यदि एक पत्नी के रहते दूसरा विवाह करना चाहे तो उसे मुसलमान हो जाना पड़ेगा।

शिक्षा आयोग ने सिफारिश की है कि धार्मिक शिक्षा के बिना भारत की संस्कृति नहीं बचेगी किन्तु भारत की सेक्युलर सरकार अपने ही द्वारा स्थापित शिक्षा आयोग के सुझावों पर अमल नहीं करना चाहती। सेक्युलरिज्म का इस गलत अर्थ में प्रयोग जवाहर लाल जी के जोर से बढ़ा और डा० राजेन्द्र-प्रसाद व डा० राधाकृष्णन् सरीखे राष्ट्रपति भी इस प्रवाह को रोक न सके। फिर भी डा० राधाकृष्णन् को यह श्रेय अवश्य दिया जायगा कि उन्होंने इस दिशा में अपने दो-तीन भाषणों में यह खुलासा कर दिया कि 'सेक्युलरिज्म' का अर्थ धर्मनिरपेक्षता नहीं, बल्कि असाम्प्रदायिकता है।

—स्वर्गीय डा० रामधारी दिनकर (राष्ट्रकवि)



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# इस्लाम-ईसाइयत की चुनौती स्वीकार करो और

# जन-ज्ञान घर-घर में पहुंचा दो!

प्रतिमास कम से कम २० प्रतियाँ मंगाकर वितरित करें—केवल ३०) में।

आप २) प्रति हमें भेज दें। हम उसे जमा रखेंगे और प्रतिमास केवल ३०) को वी० पी० से आपको जन-ज्ञान की २० प्रतियां भेज देंगे।

## डाक खर्च भी हम देंगे।

आप २० या २० से अधिक जितनी भी प्रतियां चाहें, १) ५० प्रति के हिसाब से मंगा सकते हैं।

२० से कम प्रतियां २) प्रति के हिसाब से भेजेंगे।

प्रबन्धक, जन-ज्ञान (मासिक)

१५९७ हरध्यानसिंह मार्ग, नई दिल्ली-५



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# भाई परमानन्द और हिन्दू राष्ट्र

—शिवकुमार गोयल

महान् क्रांतिकारी देशभक्त देवतास्वरूप भाई परमानन्द इस युग के हिंदू राष्ट्रवादी चिंतकों में से एक थे। जिस प्रकार आज हिंदू एवं हिंदुत्व के विरुद्ध विषैला वातावरण उत्पन्न किया जा रहा है। हिंदू-संस्कृति को जड़मूल से समाप्त कर डालने के प्रयास जारी हैं, इसी प्रकार भाई परमानन्द जी के समय भी गांधी जी एवं कांग्रेस ने मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति को ग्रहण कर हिंदू को सम्प्रदायिक, संकीर्ण एवं दकियानूसी बताकर उसके विरुद्ध विषवमन प्रारंभ कर दिया था। उस समय हिंदू महासभा एवं राष्ट्रीय स्वयं-सेवक संघ, ये दो संगठन ऐसे थे जिन्होंने विपरीत परिस्थितियों में भी हिंदू सगठन के कार्य को आगे बढ़ाया।

लेखक

एक ओर कांग्रेस मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति के कारण हिंदुत्व के पीछे हाथ धोकर पड़ी थी तो दूसरी ओर आर्यसमाज ने 'हम हिंदू नहीं, आर्य हैं' का अभियान चलाया था। भाई परमानन्द जी यद्यपि हिंदू महासभा के साथ-साथ



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यसमाज के भी प्रमुख नेता थे, तथापि उन्होंने इतिहास का गहन अ
करने के बाद यह निष्कर्ष निकाला था कि यदि समस्त हिंदू समाज को
एक नाम पर एकत्र किया जा सकता है तो वह 'हिन्दू' शब्द ही हो सक
हिंदू शब्द को मुसलमानों की देन अथवा निंदनीय बताने वालों की
करते हुए भाई जी ने लिखा—

"हिंदू हमारे लिए एक नाम ही नहीं है, इसके साथ तो आरंभ से
हमारी जाति का इतिहास बंधा है। इस नाम की कथा बताने वाले
कवि और अवतार हुए हैं। इसके लिए शास्त्रों और दर्शनों के रचयिता
हैं। इसकी मानरक्षा के लिए हमारे वीर और क्षत्रिय युद्ध करते रहे।
लिए उन्होंने अपने प्राणों को वार दिया।" [हिंदू संगठन पृष्ठ ११]

उस समय गांधीजी की हिन्दू विरोधी आँधी अपने यौवन पर थी। गां
ने घोषणा की थी—"बिना मुसलमानों को साथ लिए स्वराज्य मिलना अ
है।" इस उद्घोष से प्रोत्साहित होकर मुस्लिमलीगी नेताओं ने शर्तों पर
रखनी आरम्भ कीं, गांधीजी व कांग्रेस उनको स्वीकार कर लीगियों को प्रो
हित करती रही। गोहत्या की छूट व मस्जिदों के आगे बाजा बजाने
शर्त को स्वीकार करने के साथ-साथ 'मुसलमान भाइयों' को प्रसन्न करने
लिए "हम हिन्दू नहीं, हिन्दुस्तानी हैं" जैसा प्रचार भी प्रारम्भ कर दिया
ऐसे समय में भाई जी ने हिंदू महासभा के मंच से घोषणा की—

"इस गांधीवाद की चल रही हिंदू घातक, मुस्लिम पोषक आँधी के
मैं अपनी आत्मा को नहीं दबा सकता। मैं हिंदू हूं, हिन्दू की सन्तान
आजन्म हिंदू कहलाऊंगा, हिन्दुस्तानी नहीं।" उन्होंने घोषणा की—

"अगर हमदर्दिये हिन्दू निशानी कुफ्र की ठहरी
मुझे यह कुफ्र देता जा, मेरा ईमान लेता जा।"

जो लोग हिंदुओं को केवल धार्मिक कार्यों में लगे रहकर राजनीति
अलग रहने का उपदेश देते थे उन्हें भाई जी ने उत्तर दिया कि हिंदू जाति
अस्तित्व सदैव राजनीति पर आधारित रहा है। वे लिखते हैं—

संसार की जातियों में हिंदू जाति ही एक जाति है जिसकी नींव धर्म
ही नहीं अपितु राजनीति पर भी है। हिंदू शब्द ही एक राजनीतिक शब्द है।
का अर्थ वे लोग हैं जो हमारे देश की पृथ्वी के स्वामी हैं, इस देश को पु
भूमि मानते हैं। जो व्यक्ति ईसाई या इस्लामी मजहब को सामने रख कर



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शब्द का लक्षण उसी प्रकार ढूंढ़ना चाहते हैं, वे गलती पर हैं। हिंदुओं में ऐसे मत भी हैं जो जैन मत के समान ईश्वर का अस्तित्व ही नहीं मानते और ऐसे मत भी हैं, जो वेदान्तियों की तरह सब कुछ ब्रह्म ही ब्रह्म समझते हैं। जिन नियमों या सिद्धान्तों को वर्तमान धर्म अपनी नींव समझते हैं हिन्दू उनको दर्शनमात्र समझते हैं और इसके साथ ही प्रत्येक मनुष्य को इन पर स्वतंत्रता से विचारने और भिन्न मति रखने का अधिकार देते हैं। अन्य मत हिंदुओं से परिहास में कहते हैं कि हिंदू क्या हैं? हम समझते हैं कि हिंदू जाति को इस बात का अभिमान और घमण्ड रहना चाहिये कि इसका मस्तिष्क इतना ऊंचा रहा है कि आरम्भ से ही यह धार्मिक सिद्धान्तों की कैद से मुक्त रही।

इसलिए हम कह सकते हैं कि हिंदू धर्म एक तरह की राजनीति ही रही है। श्री कृष्ण का जीवन एक राजनीतिक नेता का जीवन था। उनका ईश्वरत्व उनके क्रियात्मक जीवन में था।"

जिस प्रकार आज कुछ धार्मिक नेता तथा सरकारी साधु 'हमें राजनीति से क्या मतलब' तथा धर्म व राजनीति अलग-अलग हैं, कहकर राजनीति की उपेक्षा करते हैं उसी प्रकार उस समय में भी आर्यसमाजी व सनातनधर्मी केवल शास्त्रार्थों तथा धार्मिक वाद-विवादों में फंसकर समय नष्ट कर रहे थे। भाई जी कहते हैं—

"आजकल के सुधारक ब्राह्मणों तथा क्षत्रियों के धर्मों पर वाद-विवाद करने तथा किन्हीं को सच्चा व किन्हीं को झूठा ठहराने में ही आर्य धर्म का पुनरुज्जीवन समझते हैं। भूले-भटके ये लोग यह नहीं समझते कि ब्राह्मणों तथा क्षत्रियों के वेदों तथा शास्त्रों में वर्णित धर्मों के पाठमात्र से या व्याख्यानों में वर्णन कर देने से देश में न कोई ब्राह्मण उत्पन्न हो सकता है न कोई क्षत्रिय। प्राचीन धर्म के पुनरुज्जीवन का अर्थ है कि देश में ब्राह्मण व क्षत्रिय हों। जो लोग राजनीति के डरकर तथा अपने आपको केवल, धार्मिक बताकर प्राण बचाना चाहते हैं, उन्हें स्मरण रखना चाहिये कि वे ईसाइयों या मुसलमानों की तरह कोई नया मत बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं, देश के प्राचीन धर्म को पुनरुज्जीवित नहीं कर रहे। राजनीति हिंदू धर्म का अटूट अंग है। राष्ट्र की आर्थिक, सांस्कृतिक, शारीरिक उन्नति के सब विषय राजनीति के अंतर्गत हैं। हिन्दुओं के पतन का सबसे बड़ा कारण ही राजनीति के प्रति उदासीनता रहा है।

## हिंदू कौन ?

हिंदू की परिभाषा पर भी मतभेद रहा है। श्री लोकमान्य तिलक ने हिंदू की परिभाषा करते हुए लिखा है—

 Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi 

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रामाण्यबुद्धिर्वेदेषु नियमानामनेकता ।
उपास्यानामनियमो हिन्दूधर्मस्य लक्षणम् ।।

अर्थात् वेदों में प्रामाण्य बुद्धि रखने वाला, नियमों का पालन करने वाला अनेक प्रकार से ईश्वर की उपासना करने वाला हिंदू है ।

इसी प्रकार सनातनधर्म के मान्य नेता स्वामी करपात्री जी ने हिंदू की परिभाषा इस प्रकार की है—

गोषु भक्तिर्भवेद्यस्य प्रणवे च दृढा मतिः ।
पुनर्जन्मनि विश्वासः स वै हिंदुरिति स्मृतः ।।

अर्थात् गोमाता एवं ओंकार में जिसकी भक्ति हो तथा पुनर्जन्म में जिसका विश्वास हो, वह हिन्दू है ।

श्री तिलक जी की परिभाषा के अनुसार वेदों में विश्वास रखने वाला जैनी हिंदू के अंतर्गत नहीं आ पाता, किंतु स्वामी करपात्री जी की परिभाषा विस्तृत है, क्योंकि हिंदू जाति की पांचों शाखाएं सनातनधर्मी, आर्यसमाजी, जैनी, बौद्ध एवं सिक्ख गोमाता, ओंकार एवं पुनर्जन्म में समान भक्ति व विश्वास रखती हैं । हिंदू महासभा के महान् नेता स्वातंत्र्यवीर सावरकर आस्तिकों के अतिरिक्त नास्तिकों को भी अलग नहीं करना चाहते, अतः उन्होंने विस्तृत परिभाषा की है—

आसिन्धु सिन्धुपर्यन्ता यस्य भारतभूमिका ।
पितृभूः पुण्यभूश्चैव स वै हिन्दुरिति स्मृतः ।।

अर्थात् वीर सावरकर इस भारत भूमि में रहने वाले उस प्रत्येक व्यक्ति को हिंदू मानते हैं जो इसे पितृभू व पुण्यभू मानता है । इस परिभाषा में जिनकी पुण्यभूमि मक्का-मदीना या अन्य स्थानों पर है, वे हिंदू के अंतर्गत नहीं आते ।

भाई परमानंद जी ने जहां वीर सावरकर की उक्त परिभाषा को सर्वश्रेष्ठ माना है वहाँ वे गोभक्ति एवं ब्राह्मणभक्ति को भी हिंदू का लक्षण मानते हैं । वे लिखते हैं—

"वेद हिंदुओं के धर्म का चिह्न है और गौ उनकी राजनीतिक एकता और आर्थिक उन्नति का । हिंदू की एक परिभाषा ठीक ही यह की गई है कि जो गौ और ब्राह्मण (वेदरक्षक) की रक्षा करे वह हिंदू है ।

('मेरे अंत समय का आश्रय' पृ० २३८)



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आज मुस्लिम तुष्टीकरण की होड़ में हिंदू की परिभाषा को विकृत किया जा रहा है। 'जो भी भारत में रहता है वही हिंदू है', मुसलमान मुहम्मदी हिंदू है, जैसी परिभाषाएं करके हिंदुत्व की पवित्रता व विशिष्टता को ही समाप्त कर डालने का प्रयास जारी है। कुछ राजनीतिक नेताओं को हिन्दू-मुस्लिम संस्कृति तथा राम-रहीम में अंतर ही दिखाई नहीं देता।

भाई जी एवं वीर सावरकर आदि ने स्पष्ट रूप से यह घोषित किया कि हिन्दू-संस्कृति की विशिष्टता से अन्य बनावटी मत-मजहबों की तुलना कदापि नहीं की जा सकती। भाई जी हिन्दू संस्कृति की महत्ता प्रदर्शित करते हुए लिखते हैं—

"हिन्दुओं को यह याद रखना चाहिए कि यदि उनकी सभ्यता या संस्कृति संसार से मिट गई तो उनका अस्तित्व ही मिट जाएगा। धर्म और संस्कृति का त्याग करके न जीना अच्छा है और न मरना। धनधान्य की परवाह न करके प्राणों रक्षा करनी चाहिए और प्राणों की परवाह न करके धर्म की रक्षा करनी चाहिए। धर्म और सम्मान एक ही हैं।

इस राष्ट्र की उपलब्धि एक ही है कि इसने असंख्य तूफानों को झेलकर संसार की सबसे प्राचीन संस्कृति को बचाया है जो किसी और से नहीं हुआ। राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए हमें सब कुछ बलिदान करने के लिए तैयार रहना चाहिए। इसका कारण यह है कि गुलामी में जातियां अपनी सत्ता गंवा देती हैं।"

भाई जी ऐसी स्वतंत्रता को व्यंग्य मानते थे जिसमें हिंदुओं की अपनी राजनीतिक सत्ता न हो। वे लिखते हैं—

"अपनी सत्ता को खोकर यदि स्वतंत्रता मिले तो वह स्वतंत्रता किसी काम की नहीं। देश के वर्तमान संघर्ष में हिंदुओं को सबसे बड़ा खतरा है।"

(मेरे अंत समय का आश्रय)

गांधी जी एवं कांग्रेस मिली-जुली (सामासिक) संस्कृति के आधार पर नये समाज की रचना करना चाहते थे, जबकि भाई जी का यह स्पष्ट मत था कि स्वराज्य का वास्तविक अर्थ अपना अर्थात् हिंदुओं का राज्य है। इसीलिए उन्होंने श्री जवाहरलाल नेहरू से इस आशय का पत्रव्यवहार किया था कि यदि स्वाधीनता प्राप्त हो गयी तो फिर देश की सत्ता किसके हाथों में होगी? उसका आदर्श क्या होगा? भाई जी का यह विचार था कि यदि सत्ता को अंग्रेजों के हाथों से लेकर मुसलमानों के हाथों अथवा मिली-जुली संस्कृति के



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उद्घोषकों के हाथों में ही देना है तो फिर उसे स्वराज्य कैसे कहा सकता है ?

सन् १९४७ में जब गांधी जी की मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति दिन दिन बढ़ती गई और मुस्लिम लीगी हिंदुओं के विरुद्ध जगह-जगह दंगे प्रारंभ करने लगे तो भाई जी का हिन्दू हृदय हाहाकार कर उठा। उन्होंने लिखा—

"भारत के राजनीतिक क्षेत्र में हिन्दू जाति और उसकी सभ्यता को बुरी प्रकार से कुचलने का प्रयास किया जा रहा है। उसके जन्मसिद्ध अधिकार उससे छीनकर दूसरों के सुपुर्द किए जा रहे हैं। किंतु एक दृष्टि से यह कोई नई समस्या नहीं है, बहुत प्राचीन है। हिंदू जाति के इस महान वृक्ष की जड़ों पर कुठाराघात करने वाले कौन हैं ? हमारे वही भाई जिनका पालन-पोषण इसी माता के दुग्ध से हुआ है। इसके विनाश के लिए जो षड्यंत्र किया जा रहा है वह हिंदुओं के धन से ही तैयार हुआ है। आज वह इस जाति का स्पष्ट विरोध करके परायों से मित्रता गांठने के विचार में कभी हाथ न आने वाली छाया के पीछे भाग रहे हैं। किंतु उन्हें यह ध्यान रखना चाहिए कि जो मनुष्य अपने भाई बंधुओं से पृथक् होकर परकीयों की सहायता करते हैं, उन्हें पृथ्वी भी छोड़ देती है।"

('हिंदू' साप्ताहिक, २५ फरवरी १९४७)

## हिन्दू कृतघ्न हैं !

भाई जी ने उस समय की राजनीतिक परिस्थितियों को न केवल निकट से देखा था, अपितु उन्हें स्वयं हिंदू महासभा के नेता के रूप में समस्त परिस्थितियों से जूझने का अवसर मिला था। वे यह जानते थे कि गांधी-नेहरू तथा अन्य कांग्रेसी नेता मुसलमानों से सौदेबाजी करके हिंदू हितों को बलिदान करते जा रहे हैं। ऐसी परिस्थिति में उन्होंने हिंदू समाज को चेतावनी दी कि वह इन हिंदूद्रोही नेताओं के भ्रम में न फंसकर हिंदू महासभा के ध्वज के नीचे आकर हिंदू संगठन के सूत्र में बंधे। उस समय हिंदू गांधी जी की आंधी में फंसा हुआ था। उसे शत्रु व मित्र की पहचान नहीं थी। अतः इस कृतघ्न हिंदू समाज ने जहां गांधी जी के जय-जयकार किए वहां हिंदू नेताओं की घोर उपेक्षा। भाई जी ने उस समय स्पष्ट कहा—

"निराश न होकर बिना किसी फल की कामना के आगे बढ़ते रहो। हिंदू कृतघ्न हैं जो अपने शत्रुओं की जय-जयकार करते हैं तथा उनसे प्रेम करते हैं एवं अपने मित्रों व हितैषियों की उपेक्षा व घृणा। महाराणा प्रताप का कोई मित्र नहीं था जबकि मानसिंह के पीछे तमाम हिंदू देश था। आज गांधी



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

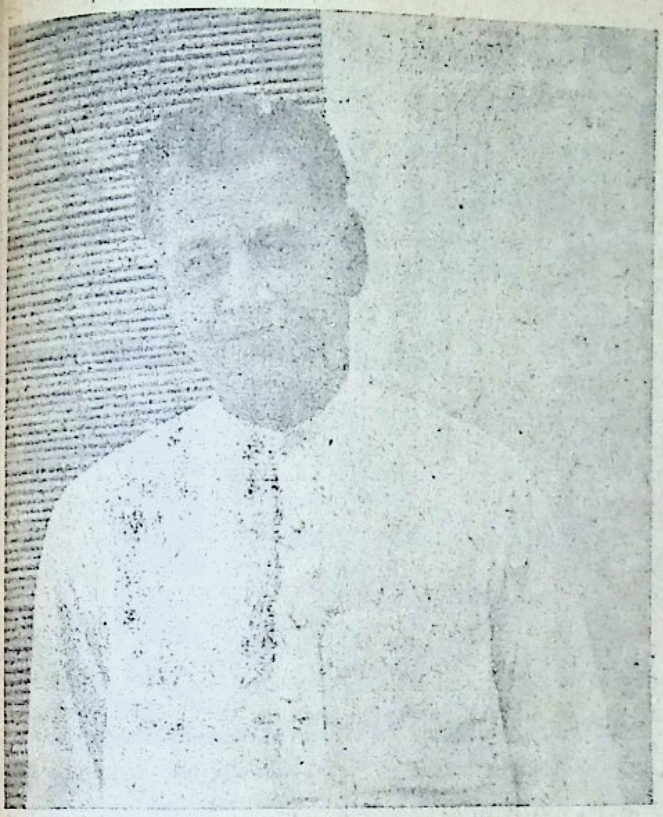

देवतास्वरूप भाई परमानन्द

हरू की जय-जयकार इसीलिए हो रही है, क्योंकि वे हिंदओं के शत्रु हैं तथा मारे प्रति इसीलिए घृणा प्रदर्शित की जा रही है, क्योंकि हम हिंदुओं के हितैषी हैं। इन बातों की चिन्ता किए बिना हिंदू संगठन के कार्य में तत्पर हो।"

[भाई परमानंद—दोज हू नो हिम]

उपरोक्त शब्दों से भाई जी की मनोव्यथा का अच्छा परिचय मिलता



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है। उनका हृदय हिंदू समाज की कृतघ्नता को देखकर हाहाकार
करता था, किंतु निराशा उनके पास नहीं फटकती थी। वे आशा व साहस
सजीव प्रतिमा थे तथा निराशा के अंधकार में आशा की किरण देखते
वे कहते हैं—

"सान्त्वना की एक बात है। यदि यह जाति और इसकी संस्कृति
युगों के अंदर विभिन्न आंदोलनों से नष्ट नहीं हुई है तो भविष्य के लिए
हम निराश नहीं हैं। जातियों का उठना-गिरना लगा रहता है। यदि
राष्ट्र की सभ्यता में ऐसी शक्ति विद्यमान है कि वह उस जाति के
जिंदगी कायम रख सके तो अत्यंत पतन की अवस्था में उस सभ्यता
के प्रेमी पैदा होते हैं जो अपने जीवन की सम्पूर्ण शक्ति मरती हुई
में उंडेल देते हैं और उसे जीवित कर देते हैं। मुसलमानी आक्रमणों के
हिंदुओं की इतनी मुर्दा हालत थी कि एक पठान सिपाही सैकड़ों हिंदुओं
पकड़कर गुलाम बनाकर ले जाता था या जी में आया तो कत्ल कर
था। इसका इलाज गुरु गोबिंदसिंह ने निकाला। "बड़े यज्ञ" के लिए
देने वाले पैदा किए जिनका नाम उन्होंने खालसा रखा। पुराणों में भी
उपाय बरता पाया गया है। जब वेदधर्म का नाश होने लगा था तो
ही यज्ञ करके अग्निकुल राजपूत पैदा किये गये। वह नुस्खा यही है
आत्मा को मृत्यु के भय से ऊपर उठाओ। मौत का डर दूर हो जाने से
जीवित हो जाता है।

भगवद्गीता में यही ज्ञान अर्जुन को दिया गया है कि इस आत्मा को
छेद नहीं सकते, आग जला नहीं सकती, जल गला नहीं सकता तथा
उड़ा नहीं सकती। गुरु हरगोविंद की वाणी में गीता का भरपूर ज्ञान
जब उनकी चिता हजार मन चंदन डालकर बनाई गई तो उनके दो राज
शिष्य दौड़कर चिता में जलने के लिए कूद पड़े। प्रेम और मृत्यु के
उदासीनता का ऐसा दृश्य जगत् में कम ही दिखाई दिया है। इसी नुस्खे
अपनाकर बंदा बहादुर पैदा हुआ जिसने मुसलमानों का सामना किया।
मुर्दा हिंदुओं को बंदा बैरागी ने पंजाब भर में विजेता जाति बना दि
वे निडर हो गए। फूट के कारण बंदा पकड़ा गया। जिस समय
के बेटे को मुसलमानों ने चीरकर उसका हृदय निकालकर बन्दा के
पर फैंका और उसे तपी हुई सलाखों से मारा, तब भी भगवान् का नाम
जिह्वा पर रहा।

"हमारे वेद-शास्त्र तथा धर्मरक्षा में आत्माहुति देने वाले वीरों के
हरण न केवल हमारे हृदय में आशा का संचार करते हैं वरन् उनसे हमें



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की सच्ची प्रेरणा मिलती है। महाराणा प्रताप, महारानी पद्मनी, गुरु गोविन्द-सिंह, शिवाजी, बंदा बहादुर के त्यागपूर्ण कार्यों के चिंतन से किसी भी मृत-प्राय जाति में जीवन शक्ति का संचार होना असंभव नहीं।

[मेरे अंत समय का आश्रय]

भाई जी को हिंदू राष्ट्र की रक्षा के लिए यवनों से सतत संघर्ष करने वाले हिंदू वीरों और हिंदुत्व पर बलिदान होने वाले धर्मवीरों की गाथाओं पर अभिमान था। वीर बंदा वैरागी पर उन्होंने एक पुस्तक भी लिखी थी तथा वीर वैरागी के महान् जीवन से वे अत्यधिक प्रभावित थे। उन्होंने यहां तक लिखा—"वीर वैरागी ही पहला पुरुष था जिसने लाहौर छोड़, पंजाब का अधिकांश भाग मुसलमानों से जीतकर नए सिरे से हिंदू राज्य की नींव रखी। उसकी आत्मा में हिंदू धर्म और हिंदू जाति के लिए मर-मिटने की तड़प थी जिसे उसने शरीर का मांस नुचवाकर प्रकट किया।"

## हिन्दू राष्ट्रीयता की आत्मा—श्रीकृष्ण

भाई जी श्रीमद्भगवद्गीता को हिंदू राष्ट्र का महान् राजनीति-शास्त्र तथा भगवान् श्रीकृष्ण को हिंदू राष्ट्रीयता की आत्मा मानते थे।

उन्होंने लिखा—"भगवद्गीता को पढ़ने वाला कोई ही होगा जिसके मन में अपने आपको श्रीकृष्ण के प्रेम में अर्पण करने की इच्छा उत्पन्न न हुई हो। श्रीकृष्ण क्या हैं? वे हिंदू राष्ट्रीयता की आत्मा हैं। श्रीराम और श्रीकृष्ण ये दो नाम हिंदू जाति के प्राण हैं। हमारी राष्ट्रीयता या जातीयता सबसे बढ़कर इन दो नामों से बंधी हुई है। यदि ये दो नाम हमसे बाहर निकल जाएं तो हमारा राष्ट्र या जाति मृतप्राय हो जाए।"

गांधी जी जहां एक ओर राम और रहीम को एक बताकर तथा मंदिरों में राम-रहीम व अल्लाह-करीम के कीर्तन कराकर लोगों को भ्रमित कर रहे थे वहाँ दूसरी ओर गीता, महाभारत व रामायण को वे काल्पनिक तक लिखने से नहीं चूके। राम व कृष्ण को उन्होंने हिंसक लिखा तथा हरिजन सेवक में यहां तक लिख मारा कि "मैं बाली का छल से वध करने वाले हिंसक राम को भगवान् तो क्या मानव तक मानने के लिए तैयार नहीं हूं।" गांधी जी की भ्रांत राष्ट्रीयता में यही तो दोष था।

जहां गांधी जी की दृष्टि में भगवान् राम व कृष्ण, शिवा, प्रताप राक्षसों का संहार करने के कारण हिंसक थे, वहां भाई जी दुष्टदलन व म्लेच्छों के संहार के कारण ही राम-कृष्ण व शिवा-प्रताप को हिंदू राष्ट्रीयता की आत्मा मानते थे।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

## महान् हिन्दू जाति

भाई जी को हिंदू जाति के बलिदानमय इतिहास पर महान् गर्व था। उन्होंने इतिहास का अध्ययन करने पर यह देखा कि जहां विश्व की अनेक जातियों व सभ्यताओं का नामोनिशान तक मिट गया वहाँ हिंदू जाति अनेक आघातों के बाद भी गौरव के साथ जीवित है। उन्होंने लिखा—

"केवल हिंदू जाति है जिसने प्राचीन आर्य नसल की सभ्यता को बचाए रखा है। सबसे पहले उसको बौद्ध मत का मुकाबला करना पड़ा। कुमारिल भट्ट और शंकराचार्य के प्रयत्न से वैदिक धर्म की विजय हुई। ज्यों ही वह इससे निवृत्त हुआ, हिंदू धर्म को इस्लाम का मुकाबला करना पड़ा। इस्लाम की एक लहर अफ्रीका से होकर योरुप को गई और दूसरी मिश्र, ईरान और अफ़गानिस्तान को विजित करती हुई इधर हिंदुस्तान में आई। यह संघर्ष लगभग आठ सौ वर्ष तक जारी रहा। इसमें पंजाब, महाराष्ट्र और राजपूताना ने धर्म की रक्षा के लिए त्याग और वीरों के बलिदान में विशेष रूप से भाग लिया। राणा प्रताप, गुरु गोविंदसिंह और शिवाजी इत्यादि के विषय में ज्यादा कहना व्यर्थ-सा है।

पंजाब में लाहौर नगर सदा के लिए एक यादगार रहेगा, जहाँ चने बेचने वाला वह लड़का पैदा हुआ, जिसका बेटा गुरु अर्जुनदेव और पोता हरगोविंद जैसा ज्ञानी वीर था, जिसकी संतान आगे गुरु तेग बहादुर और गुरु गोविंद हुए।

औरंगजेब का समय था। हिंदू लोग अन्याय से तंग आ गए। कश्मीर में ब्राह्मणों पर अत्याचार और अन्याय की सीमा न रही। वे गुरु तेगबहादुर के पास सहायता के लिए आए। धन्य हैं वे परिवार जिन्होंने सभी कष्ट झेले, किंतु सारा कश्मीर मुसलमान हो जाने के बावजूद यज्ञोपवीत और तिलक की लाज रखी।

इन दिनों ईसाई मजहब अपनी पूरी ताकत से हमारी युगों से बची आ रही प्राचीन सभ्यता को मिटा देने की पूरी कोशिश करता आ रहा है। योरुपीय जातियों ने अपने पूरे उत्कर्ष को ईसाइयत की मदद में नियोजित कर दिया है। इस कारण हिंदुत्व और ईसाइयत का संघर्ष लगातार जारी है। हम हिंदुत्व को ईसाइयत का डटकर मुकाबला करते हुए देख रहे हैं।"

['मेरे अंत समय का आश्रय']

भाई जी ईसाई व मुस्लिम सभ्यता व संस्कृति को हिंदू सभ्यता-संस्कृति से बिल्कुल भिन्न मानते थ। सभ्यता-संस्कृति के विषय में उनके विचार



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बिल्कुल स्पष्ट थे। वे हिंदू जाति, धर्म तथा संस्कृति, तीनों को ही महत्त्व देते थे। वे व्यक्तिगत धर्म की अपेक्षा जातिधर्म को महत्त्व देते थे। उनका यह सुस्पष्ट विचार था कि राष्ट्र की रक्षा के लिए जाति व धर्म की रक्षा आवश्यक है। यदि जाति व धर्म ही मिट गया तो फिर राष्ट्र का क्या महत्त्व? वे इस मत की पुष्टि करते हुए लिखते हैं—

"जब जयचन्द के सामने उसकी लड़की ने प्रश्न किया कि आपके इस देश-द्रोह से हिन्दू धर्म उठ जायेगा, लाखों गौओं का वध किया जाएगा और मंदिर गिराए जाएंगे तब जयचन्द ने उत्तर दिया—"कुछ भी हो जाए, मेरी आत्मा तभी प्रसन्न होगी जब मैं पृथ्वीराज का लहू गिरता देखूंगा।" यदि हम बाद के मराठों और सिखों का इतिहास ध्यान से पढ़ें तो उनके अन्दर भी हम यही पाएंगे कि भारत से जाति धर्म नष्ट हो गया था। यदि यह जाति धर्म विद्यमान होता तो न भारत में इतनी आँधियां आतीं और न देश का इतना विनाश होता।"

आज जो देश की प्राचीन संस्कृति को मिटाकर मनगढ़ंत सामासिक संस्कृति (कम्पोजिट कल्चर) बनाने का प्रयास किया जा रहा है, भाई जी इसे पहले से ही जानते थे कि गांधी जी हिंदू-मुस्लिम एकता की मृगमरीचिका में फंसकर देश की महान् संस्कृति को ही विनष्ट करने पर तुले हुए हैं। इसीलिए उन्होंने स्पष्ट किया कि "भारत का महत्त्व हिंदुत्व, हिंदू सभ्यता, संस्कृति तथा हिन्दूधर्म के कारण है। महान् हिन्दू संस्कृति की बनावटी व असत्य पर आधारित ईसाई व इस्लाम मजहबों से तुलना करना मूर्खता है। विशुद्ध हिंदू संस्कृति को मिटाकर मिली-जुली संस्कृति बनाने का प्रयास किया गया तो महान् राष्ट्र नष्ट हो जाएगा।"

## गांधी जी को हिन्दू-मुस्लिम एकता

जिस प्रकार आज कांग्रेसी, कम्युनिस्ट, सोशलिस्ट आदि हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए हिन्दू को जड़मूल से मिटा डालने के लिए तत्पर हैं, किन्तु मुसलमान इस्लाम पर विश्वास न रखने वाले को काफिर ही मानकर एकता के लिए तैयार नहीं हैं, उसी प्रकार सन् १९४६ में गांधी जी ने हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए हिन्दू एवं हिन्दू हितों को बलिदान करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। भाई जी ने साप्ताहिक "हिन्दू" के ५ नवम्बर, १९४६ के अंक में "हिन्दुओं को बेचकर क्या मिला?" शीर्षक लेख में हिन्दू-मुस्लिम एकता की विफलता पर प्रकाश डालते हुए लिखा—



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"कई वर्ष हुए, बनारस जाने का अवसर मिला। हिन्दू यूनिवर्सिटी सायंकाल श्री मालवीय जी मिले। उन्होंने कहा—'आइए, आपको यूनिवर्सि दिखाएं।' एक मंदिर के स्थान पर जाकर कहने लगे—'यहां दो करो से ऐसा मंदिर बनाया जाएगा कि जिसका उदाहरण भारतवर्ष में न मिलेगा। मैंने प्रश्न किया—आपने हिन्दू महासभा बनाने में बड़ा भारी भाग लि है। अब आप हिंदू सभा को छोड़कर कांग्रेस में क्यों चले गये हैं?" वह कह लगे—"बात यह है कि देश की स्वतंत्रता का प्रश्न हमारे सामने है। यह हिन्दू मुस्लिम एकता के बिना नहीं मिल सकती। इस समय गांधी जी के रूप एक ऐसा ऋषि उत्पन्न हुआ है जिसने भारत के लोगों को एक करके स्वतंत्र का मार्ग खोल दिया है।" मैंने पूछा—"क्या आप यह समझते हैं कि गांध जी हिंदू-मुस्लिम एकता करने में सफल हो गए हैं? सत्य तो यह है कि उन्हों जितना प्रयत्न इस एकता के लिए किया है, उतना ही अधिक मुसलमान हिंदुओं से परे होते चले गए हैं।"

इसमें मालवीय जी का कोई दोष नहीं था। गांधी जी और उनकी संस्था ने अपने आंदोलन की नींव इसी आधार पर रखी थी कि जब तक हिंदू-मुस्लिम एकता नहीं होती, स्वराज्य मिलने की कोई सम्भावना नहीं हो सकती आज पच्चीस वर्ष के बाद हम क्या देखते हैं? गांधी जी और उनके साथी बताते हैं कि भारतवर्ष को अब स्वतंत्रता मिल गई है, किन्तु हिंदू-मुस्लिम एकता का कोई चिह्न दिखाई नहीं देता। एकता तो एक ओर रही, मुसल मान तो यह कहते हैं कि भारतवर्ष के खण्ड कर दो, क्योंकि हम हिंदुओं के साथ रहना भी नहीं चाहते। प्रश्न होता है कि गांधी जी का वह सिद्धां कहां गया? उनको अपने विचारों के अनुसार स्वतंत्रता तो मिल गई है किंतु हिंदू-मुस्लिम-एकता का विचार सर्वथा मिथ्या भ्रम सिद्ध हुआ है।"

## राष्ट्र की स्वाधीनता का श्रेय किसे?

आज कांग्रेस सरकार की ओर से यह प्रचार किया जाता है कि भारत की स्वाधीनता गांधी जी तथा अहिंसात्मक सत्याग्रह के कारण प्राप्त हुई। भाई जी ने इस विषय में विवेचना की—

"जो सिद्धांत ये लोग स्वतंत्रता के सम्बन्ध में बताते हैं, सर्वथा अशुद्ध हैं। प्रथम बात तो यह है कि नई योजना स्वतंत्रता है या नहीं? आरम्भ में तो ये लोग प्रसन्न होकर कहने लगे—हमें स्वतंत्रता मिल गई है। बाद में कहने लगे—स्वतंत्रता का द्वार खुल गया है। अब भी जवाहरलाल की सम्मति है कि स्वतंत्रता मिलने में दो-तीन वर्ष लगेंगे और यदि संविधान



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सभा में स्वतंत्रता न मिली तो हम फिर से स्वतंत्रता का युद्ध आरम्भ करेंगे। इसके साथ ही अग्रगामी दल बताता है कि यह संविधान सभा केवल धोखा है। अग्रगामी दल वही संस्था है जिसे सुभाष बाबू ने स्थापित किया था।

इस प्रकार के मतभेदों को सर्वथा उपेक्षित करके हम देखना चाहते हैं कि स्वतंत्रता मिलेगी कैसे? श्री जवाहरलाल तो कहते हैं कि वर्किंग कमेटी के 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव के बाद जो गड़बड़ी हुई, उससे घबरा कर गवर्नमेंण्ट ने स्वतंत्रता देने की घोषणा की। साधारण जनता कहती है कि स्वतंत्रता अमुक दल के बलिदानों के कारण प्राप्त हुई है।

यदि हम थोड़ा-सा भी विचार करें तो पता लगेगा कि ये दोनों बातें गलत हैं। 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव के बाद जो थोड़ी-बहुत गड़बड़ी हुई वह केवल बिहार, यू० पी० और सी० पी० के कुछ जिलों तक सीमित थी। यह ठीक है कि गवर्नमेंण्ट की ओर से इस गड़बड़ को दबाने के लिए बहुत सख्तियां की गयीं, किन्तु यह गड़बड़ सन् १८५७ के आंदोलन से कोई मुकाबला नहीं कर सकती। यह गड़बड़ अगस्त-प्रस्ताव के बाद हुई। इसलिए श्री जवाहरलाल को वह प्रस्ताव और गड़बड़ बहुत महत्त्वपूर्ण प्रतीत होते हैं। उन्हें यह ज्ञान नहीं कि सन् १४-१५ में गवर्नमेण्ट के विरुद्ध विद्रोह का जो आन्दोलन आरम्भ किया गया था, वह सन् १९४२ की गड़बड़ से कई गुना अधिक महत्त्व रखता है। अमरीका से आए हुए कई हजार हिंदू क्रांतिकारी कई वर्ष तक जेलों में नजरबन्द रखे गये। इनके अतिरिक्त कितने ही गोली से उड़ा दिए गए या फांसी पर लटका दिए गए।

शेष रहा बलिदानों का प्रश्न। स्वतंत्रता कही जाने वाली इस नयी वस्तु के मिलने के बाद गांधी जी बताते हैं कि उनके हृदय में गवर्नमेण्ट के विरुद्ध यों ही गलतफहमी थी; क्योंकि अंग्रेज तो स्वयं ही भारतवर्ष को स्वतंत्रता की ओर ले जाना चाहते हैं। इसका स्पष्ट अभिप्राय यह है कि गांधी जी का अपना सारा आंदोलन सर्वथा व्यर्थ था और उसका कोई अच्छा फल नहीं निकला।

कई लोगों का विचार है कि आजाद हिन्द फौज के आंदोलन से गवर्नमेण्ट स्वतंत्रता देने पर तैयार हो गई है। यह भी एक प्रकार की भ्रांत धारणा है। आजाद हिन्द फौज के लोग विशेष व्यक्तिगत उद्देश्य से फौज में भरती हुए। जापान की आकस्मिक सफलता के कारण वे युद्धबंदी बन गये। अब कहा जाता है कि उनके दिल में विचार आया कि अंग्रेज तो अब भारतवर्ष

 Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi 

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से जा रहे ही हैं, वे अपने आपको स्वतंत्रता की फौज क्यों न बना लें ? उनमें इस प्रगति का थोड़ा-बहुत प्रभाव सम्भवतः गवर्नमेण्ट पर हुआ हो, कि किसी के भय से भारतवर्ष को स्वतंत्रता देने का विचार उसे नहीं आ सकता। आजाद हिन्द फौज के साथ जरा नम्रता का व्यवहार किया गया है तो भय से नहीं; अपितु इसलिए कि गवर्नमेण्ट ने युद्ध जीत लिया था और उन लोगों पर जो गवर्नमेण्ट के सहायक थे, किसी प्रकार का अत्याचार करना उचित नहीं समझा गया।

श्री जवाहरलाल का यह विचार कि उन्होंने बाहुबल से स्वतंत्रता प्राप्त की है, सर्वथा निरर्थक है। इंग्लैण्ड के लोगों का विशेष आचरण है। जब कभी उनके विरुद्ध बागवत की गयी या क्रांतिकारी आंदोलन चलाया गया तभी अंग्रेजों ने उसको दबाने का प्रयत्न किया है। जब युद्ध में इंग्लैण्ड सफल हुआ तो उसने देखा कि भारतवर्ष के लोगों में भी स्वतंत्रता की कामना है और संसार की दूसरी जातियां भारतवर्ष पर अंग्रेज अधिकार देखकर जलती हैं। अब उसने संसार को यह दिखाना चाहा कि भारतवर्ष को भी एक प्रकार की स्वतंत्रता प्राप्त है, किन्तु इस बात से इंग्लैण्ड की सब पार्टियां सहमत न थी। केवल लेबर पार्टी इसके पक्ष में थी। लेबर पार्टी की विशेष नीति है। जब सन् १९१९ के महायुद्ध में ब्रिटेन को सफलता मिली तो पार्लमेण्ट में यह घोषणा की गई कि भारत को ब्रिटिश उपनिवेश का भागीदार बनाया जाएगा। इसके बाद निर्वाचन में अकस्मात् लेबर पार्टी जीत गयी और इंग्लैण्ड में लेबर गवर्नमेण्ट बन गयी। इस गवर्नमेण्ट ने हिंदुओं को अवसर दिया कि वे देश के लिए कोई नया डैमोक्रैटिक संविधान प्रस्तुत करें। तब इरविन वाइसराय थे। इरविन के साथ सन्धि करने गांधी जी लंदन गए, किंतु गवर्नमेण्ट के प्रतिनिधियों से बातचीत करने की बजाय उन्होंने पहले मुसलमानों के साथ निर्णय करने का अवसर मांगा। परिणाम यह हुआ कि लेबर गवर्नमेण्ट के हट जाने पर नयी गवर्नमेण्ट ने भारत में भेद की नीति पर आचरण करके साम्प्रदायिक निर्णय दिया, जिससे भारतवर्ष में पराधीनता की जड़ें अधिक दृढ़ हो गयीं। दूसरे महायुद्ध के बाद भी इंग्लैण्ड में गवर्नमेण्ट को सफलता मिली, उसने निर्णय किया कि भारतवर्ष को कुछ दिया जाए। किंतु यहां तो साम्प्रदायिक निर्णय विद्यमान था। गवर्नमेण्ट की बड़ी समस्या यह है कि साम्प्रदायिक प्रश्न को किस प्रकार सुलझाया जाये ?

वाइसराय इंग्लैंड की पुरानी नीति को पूर्ण रूप से छोड़ने के लिए तत्पर न था। उसका कांग्रेस पर दबाव स्थापित रहा। जब गांधी जी बीमारी से



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कारण जेल से छोड़ दिए गए तो उनको चिंता हुई कि किस प्रकार कार्य-समिति के शेष सदस्य भी छोड़ जाएं ? उन्होंने वाइसराय से मिलने का प्रयत्न किया। वाइसराय ने इससे इन्कार कर दिया। इसके बाद गांधी जी के संकेत पर सर तेजबहादुर सप्रू ने सर्वदलीय सम्मेलन बुलाया। इसका उद्देश्य गवर्नमेण्ट को यह बताना था कि कांग्रेसी नेता मुसलमानों को समान प्रतिनिधित्व देने पर तैयार हैं। न केवल यह, अपितु गांधी जी ने श्री राजगोपालाचारी को आदेश दिया, वह स्पष्ट रूप में पाकिस्तान के पक्ष में हो गए तो उन्हें गद्दार कहा गया। इस पर वह आश्चर्यान्वित हुए। किंतु जब गांधी जी ने कहा कि राजगोपालाचारी ने मेरी अनुमति के अनुसार यह कार्य किया है, तो लोगों ने गांधी जी पर दोषारोपण न किया। इसके बाद गांधी जी ने अपने मित्र भूलाभाई देसाई को आदेश दिया कि वे मुसलमानों के साथ गठबंधन करके वाइसराय को बताएं कि कांग्रेस गवर्नमेण्ट की भेद-नीति को स्वीकार करने पर तैयार है। देसाई दो-तीन मास तक इस काम में लगे रहे, किंतु इसको सर्वथा गुप्त रखा। जब वाइसराय को विश्वास हो गया कि गांधी जी मुसलमानों को हिंदुओं के समान प्रतिनिधित्व देने पर तैयार हैं तो वाइसराय लंदन गए और वर्किंग कमेटी के सदस्यों को छोड़कर कांग्रेस के साथ संधि करने पर तैयार हो गए। यह कार्यवाही लेबर गवर्नमेण्ट के परामर्श से हुई। नया संविधान भी इसी कार्यवाही का परिणाम है।

गांधी जी और उनके दल ने हिंदुओं को बेचकर हिंदू-मुस्लिम एकता स्थापित करनी चाही, किंतु उनका सारा परिश्रम व्यर्थ गया। उसी प्रकार इस दल के सब राजनैतिक आंदोलन और कथित बलिदान सर्वथा व्यर्थ गए।"

[साप्ताहिक 'हिंदू', ५ नवम्बर १९४६]

## निर्भ्रान्त हिन्दू राष्ट्रीयता के समर्थक

आज भले ही गांधी-नेहरू की आंधी में हम स्वाधीनता का श्रेय कांग्रेसी नेताओं को देकर इतिहास के साथ खिलवाड़ कर रहे हों, किन्तु भाई जी उन निर्भीक व तेजस्वी इतिहासकारों में से थे जिनकी लेखनी ने किसी राष्ट्रद्रोही, धर्मद्रोही तथा जातिद्रोही को क्षमा नहीं किया। उन्होंने हिन्दू राष्ट्र की संस्कृति, धर्म, जाति व देश के साथ विश्वासघात करने वालों का स्पष्ट शब्दों में भाण्डा फोड़ा। 'हिंदू-मुस्लिम एकता' के विनाशकारी व भ्रांत सिद्धांत के कुपरिणामों से उन्होंने देश की जनता को परिचित कराकर अपना कर्त्तव्य पूरा किया। भले ही अभागी हिंदू जनता ने उनकी चेतावनी की उपेक्षा की। उन्हें साम्प्रदायिक, दकियानूसी तथा संकीर्ण की उपाधि से विभूषित किया गया, किन्तु वीर सावरकर एवं भाई परमानंद ने 'साम्प्रदायिक' की उपाधि को गौरव के साथ स्वीकार करके देश की अभागी हिन्दू जनता को खतरे से सावधान करने में कोई कसर उठा नहीं रखी।

 Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi 

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आज पुनः उसी विनाशकारी हिंदू-मुस्लिम एकता तथा मिली-जुली खिचड़ी संस्कृति का परीक्षण किया जा रहा है। कांग्रेसी, कम्युनिस्ट, सोशलिस्ट आदि सभी राजनीतिक दल हिंदू-मुस्लिम एकता की प्राप्ति के लिए न केवल हिंदू हितों को बलि चढ़ाने पर तुले हुए हैं अपितु हिंदू संस्कृति व पावन हिंदू नाम को ही मिटा डालना चाहते हैं। हिंदू की ऐसी भयंकर परिभाषाएं प्रारम्भ कर दी गई हैं कि जिनसे समस्त हिन्दू जाति का सारा इतिहास ही नष्ट हो जायेगा। यदि काबा-कर्बला व मक्का-मदीना को पुण्य-भूमि मानने वालों, धर्म-शास्त्रों से हमाम गरम करने वालों, समस्त विश्व में इस्लामी शासन स्थापना करने को शिक्षा देने वालों तथा गैर-इस्लामी को काफिर बताने वाली पुस्तक पर ईमान लाने वालों को भी 'मुहम्मदी हिंदू' मान लिया जाय तो फिर महाराणा प्रताप, शिवाजी, गुरु गोविन्दसिंह, बन्दा वैरागी का संघर्षमय इतिहास बेकार हो जाएगा। रामपंथी हिंदू वीर वैरागी व 'मुहम्मदपंथी हिंदू' औरंगजेब का संघर्ष हास्यास्पद माना जाएगा। यदि दुर्गा व फातिमा में अन्तर नहीं है तो फिर हकीकतराय व गुरु गोविंदसिंह के बच्चों को भी 'मुहम्मदी हिंदू' बनकर प्राण बचा लेने चाहिये थे।

भाई जी प्रायः कहा करते थे कि यह ठीक है कि मुसलमान पहले हिंदू ही थे तथा वे हमारे समाज के अंग हैं, किंतु जिस प्रकार शरीर में दो प्रकार के कीटाणु होते हैं—एक स्वास्थ्य के व दूसरे रोग के। उसी प्रकार ये रोग के कीटाणु हैं। रोग के कीटाणुओं को समाप्त करने के लिए जिस प्रकार स्वास्थ्य के कीटाणुओं को प्रबल करना आवश्यक है उसी प्रकार हिंदू संगठन परमावश्यक है।

## हिन्दुत्व का अपमान असह्य था

प्रो० धर्मवीर जी ने ठीक ही लिखा है—

"देवतास्वरूप भाई परमानन्द जी के अन्दर हिंदू शब्द के लिए अत्यंत श्रद्धा थी। यह उन्हें प्राणों से भी अधिक प्रिय था। वे इसका अपमान कदापि सहन नहीं कर सकते थे। सीमाप्रांत में जब किसी हिन्दू लड़की का अपहरण किया जाता तो उन्हें आग लग जाती। दक्षिण में जब किसी हिंदू को पतित कर ईसाई बना लिया जाता तो वे अन्दर ही अन्दर जलने लगते। श्रीमती सरोजिनी नायडू लाहौर आयीं तो सर फजल हुसैन के यहां ठहरीं। सायं काल जनता के समक्ष उनका कविता पाठ हुआ, रात को सर फजल हुसैन के मित्रों के साथ शराब का दौर चला। वे दक्षिण अफ्रीका गयीं तो मुस्लिम बोहरों ने सोने के कड़े उपहारस्वरूप पेश किए। हिन्दुत्व का यह अपमान भाई जी के लिए असह्य था।" ['युगधर्म' दैनिक २४ नवम्बर १९६८]



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# हिन्दू धर्म और उसकी विशेषताएं

—बिशनस्वरूप निर्द्वन्द्व (पटवारीजी)

इससे पूर्व कि हिन्दू धर्म की विशेषताओं पर कुछ लिखा जाए, यह सोचना पड़ेगा कि 'धर्म' शब्द 'हिन्दू' के साथ ही क्यों? धर्म का अर्थ क्या है? संसार में जो शेष मनुष्य हैं, वे स्वयं को हिन्दू क्यों नहीं मानते? इन पर धर्म शब्द फिट क्यों नहीं होता? संसार में अनेक जातियां और मजहब हैं, मत-मतान्तर हैं, रिलीजन्स हैं। किन्तु 'धर्म' शब्द का प्रयोग केवल हिन्दू के साथ होता है। ऐसा क्यों?

हिन्दू के साथ 'धर्म' शब्द का प्रयोग होने का कारण स्पष्ट है और वह यह कि 'हिंदू जीवन-पद्धति का ही दूसरा नाम है।" संसार में शेष जितने भी मजहब, मत व रिलीजन्स हैं, उनमें अंधविश्वास है, उनके जीने, रहने-सहने और पूजा आदि के ढंग संकुचित और सीमित हैं। जैसे मुसलमान वही है, जो मुहम्मद साहब तथा कुरान पर विश्वास रखता है, ईसाई वह है जो ईसा तथा बाइबिल का पुजारी है। इसी प्रकार हमारे देश में जिन हिन्दुओं ने जैन-बौद्ध तथा सिख मतों को ग्रहण कर लिया, वे भी स्वयं को हिन्दू नहीं कहते। उनकी आस्था भी जैन, बौद्ध ग्रंथों और गुरु-ग्रंथ साहब तक ही सीमित है। और फिर, मत तथा धर्म में भी बहुत बड़ा अंतर है। मत एक लकीर का नाम है, जो सीधी और सपाट है। जो दिखाई तो देती है, किन्तु इधर-उधर सोचने व तर्क की आज्ञा नहीं देती और शेष मतावलम्बियों को मनुष्य ही नहीं मानती।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

किन्तु धर्म में विशालता तथा उदारता विद्यमान होती है। हिन्दू शब्द इ
कसौटी अथवा व्याख्या पर खरा उतरता है। यदि हिन्दू शब्द पर गहराई
सोचा जाए तो उसका बहुत ही सीधा अर्थ यह होगा—

१. हिन्दू स्वच्छ जीवन का एक ढंग है। २. हिन्दू मानवता का नाम है
३. हिन्दू एक विशाल संस्कृति का नाम है।
४. हिन्दू सहिष्णुता, उदारता से परिपूर्ण है।

लेखक

हिन्दू शब्द का प्रयोग कब से आरम्भ हुआ और इस देश का नाम भारत वर्ष, आर्यावर्त और हिन्दुस्थान कैसे पड़ा? इस विषय में जहां तक इतिहास हमें बताता है, इस देश पर पश्चिम दिशा में सिन्धु नदी अथवा सिन्धु प्रदेश की ओर से आक्रमण हुए। ये विदेशी आक्रमणकारी इस देश की भाषा तथा शब्द



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का प्रयोग तथा उच्चारण सही-सही नहीं कर पाते थे। उन्होंने सिन्ध नदी के लिए 'इण्डस' शब्द का प्रयोग किया। यही इण्डस शब्द क्रमशः बिगड़ते-बिगड़ते हिन्दू शब्द में परिणत हो गया। अतः यह हिन्दू शब्द भारत को विदेशियों की ही देन है। जब ये विदेशी आगे चलकर हिन्दुओं के निकट सम्पर्क में आए और भारत के मालिक ही बन बैठे तो उन्होंने हिन्दुओं के रहने के इस स्थान को "हिन्दुस्थान" कहना आरम्भ कर दिया और यहां रहने वाले हिन्दू कहलाये।

हिन्दुस्थान शब्द इतना व्यापक, प्रचलित और लोकप्रिय हो गया था कि देशवासियों ने स्वयं को हिन्दू कहलाने में ही गौरव का अनुभव किया। वैसे भी यदि देखा जाए तो जो भी नागरिक जिस देश में रहता है, वह चाहे जिस मत, मजहब, रिलीजन में विश्वास रखता हो, वह उसी नाम से जाना जाता है। जैसे चीन में यदि कोई मुसलमान अथवा ईसाई मत को मानने वाला रहता है तो वह चीनी कहलाता है। इसी प्रकार रूस, जर्मनी, अमरीका, जापान आदि देशों में रहने वाले नागरिकों के विषय में कहा जा सकता है। किन्तु विदेशियों की चाल व षड्यन्त्र के कारण इस देश में सदियों से रहने वाले यहां के नागरिक स्वयं को हिन्दू कहलाने में लज्जा का अनुभव करते हैं। यहां का नागरिक अपने को हिन्दू कहलाने में घोर लज्जा का अनुभव करता है। इस देश में अन्य मत-मतान्तरों के अनुयायी, जैसे मुसलमान, ईसाई, जैन, बौद्ध, सिख आदि अपने आपको इंडियन, भारतीय, हिन्दुस्तानी कहलाने में तो शायद अपनी तौहीन नहीं समझते, किन्तु अपने आपको हिन्दू कहलाने में चिढ़ते हैं और अपने आपको हिन्दू समझने में संकोच का अनुभव करते हैं।

अब आप सोचेंगे कि आज तो इस देश में विदेशियों का मतलब नहीं रह गया। लेकिन नहीं, ऐसा नहीं है। हमारे पूज्य व लाड़ले तथा सत्तालोलुप नेहरू ने तो हिन्दुस्तान को दो भागों में बांटकर भारत व पाकिस्तान—ये दो नाम दिए।

जैसाकि हम इससे पहले कह आए हैं, इस देश पर पहले यवनों ने आक्रमण किया और इस देश का नाम आर्यावर्त, भारत और फिर हिन्दुस्तान हुआ। उनके बाद अंग्रेजों ने इस देश का नाम इंडिया रखा और यहां के रहने वाले उनकी भाषा में इंडियन कहलाये।

इसका कारण यह है कि इस देश का नागरिक इतना सीधा, सरल और उदारमना है कि इस देश में जब-जब जो भी विदेशी शासक आये, उसने उन्हें आदर और उदारतापूर्वक स्थान दिया और उन्हीं के रंग में रंग गया।

(शेष पृष्ठ १२५ पर)



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai



—डा० सुरेन्द्रसिं

# १ अजेय राणा कुम्भा

राजस्थान के इतिहास में मेवाड़ के शासक राणा अथवा हिन्दुओं के कहलाते हैं। मेवाड़ की वीर भूमि ने सदैव अमूल्य रत्न पैदा राजस्थान का वैभव बढ़ाया है। महाराणा सांगा, महाराणा प्रताप, वीर महारानी पद्मिनी, पन्ना धाय आदि अनेक वीरों और वीरांगनाओं ने वीरता, बलिदान व त्याग का परिचय देकर राजस्थान को गौरवान्वित और देश को प्रेरणा दी। महाराणा कुम्भा भी राजस्थान के इन्हीं गौरव वीरों में से एक हैं जिन्होंने खिलजी वंश के सुल्तान महमूद को रणक्षे पराजित कर चित्तौड़ में 'विजयस्तम्भ' का निर्माण करवाया, जो वीरता प्रतीक है।

सन् १४३३ में अपने पिता मोकल की मृत्यु के बाद कुम्भा चित्तौ शासक बने। गद्दी पर बैठने के पश्चात् सर्वप्रथम कुम्भा ने अपने पि हत्यारे महवा को दंड देने के लिए माण्डू के सुल्तान महमूद खिलजी को लिखा कि महवा को मेरी शरण में दे दो। सुल्तान के मना करने पर १४३७ में सारंगपुर के पास कुम्भा और महमूद के बीच संघर्ष हुआ और संघर्ष में महमूद को रणभूमि से भागना पड़ा। कुम्भा ने उसका पीछा कि और बन्दी बना कर ६ माह तक चित्तौड़ में कैद रखा और फिर रिहा दिया। इस विजय की याद में कुम्भा ने विशाल कीर्तिस्तम्भ बनवा महमूद खिलजी ने सन १४४३ में कुम्भलेशर पर आक्रमण किया कि सफलता न मिलने के कारण हार मानकर उसे वापस लौटना पड़ा। सन १४ में महमूद ने मांडलगढ़ पर चढ़ाई की परन्तु वहाँ भी उसे सफलता न मिली। राणा कुम्भा ने गुजरात के कुतुबुद्दीन तथा नागौर के मुसलमानों बुरी तरह परास्त किया। शत्रुओं से सदैव लोहा लेने वाले इस वीर की राज्य लोभ के कारण इसी के पुत्र उदयसिंह के हाथों हुई।

राणा कुम्भा स्वयं कवि थे। संगीत एवं शिल्पकला के प्रेमी थे। संगी शास्त्र पर आपने चार पुस्तकें लिखी थीं और अनेक दुर्गों का निर्माण करवा था। राणा कुम्भा ने ३५ वर्ष तक शासन किया और अपना सम्पूर्ण जी युद्धक्षेत्र में ही बिताया था। वास्तव में राजस्थान की वीर वसुन्धरा ऐसे ही वीरों ने अपनी देशभक्ति से गौरव प्रदान किया।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# २. महाराणा सांगा

मेवाड़ के वीरों ने राजस्थान का जो गौरव बढ़ाया, वह इतिहास में अमर है और भविष्य में भी रहेगा। महाराणा सांगा उन वीरों में से एक थे जिनका सम्पूर्ण जीवन रणक्षेत्र में बीता। युद्धकला में निपुण सांगा का पूरा नाम संग्रामसिंह था। इनका जन्म १२ अप्रैल सन् १४८२ को हुआ था। आप महाराजा रायमल के तृतीय पुत्र थे। पिता के देहान्त के बाद २४ मई १५०९ को सांगा मेवाड़ के सिंहासन पर बैठे। उस समय आपकी आयु २७ वर्ष थी। मेवाड़ के राजाओं में ये सबसे अधिक प्रतापी योद्धा थे। आपने मेवाड़ राज्य को उन्नति के शिखर पर पहुंचाया। सांगा की सेना में १००५०० हाथी थे और सात बड़े राजा, नौ राव तथा १०४ रावत थे।

राणा सांगा के समय में ही मुगलों के सरदार बाबर ने भारत पर आक्रमण किया। अठारह बार दिल्ली व मालवा के सुल्तानों को रणक्षेत्र में पराजित किया। १५७४ में बूंदी की सीमा पर खातौली गांव के निकट सांगा ने सुल्तान इब्राहीम लोदी को पराजित किया। इस युद्ध में राणा सांगा का बायां हाथ कटा और घुटने में तीर लगा, फिर भी वे मैदान में डटे रहे। मांडू के सुल्तान मुहम्मद को हराकर सांगा ने उसे तीन महीने तक चित्तौड़ के दुर्ग में बन्दी बना कर रखा। बाद में उसे रिहा कर दिया। राणा सांगा दिल्ली पर अधिकार करना चाहते थे, लेकिन मुगल राज्य के संस्थापक बाबर ने इब्राहीम लोदी को हराकर दिल्ली पर अपना अधिकार जमाया। दिल्ली का बादशाह बनने पर बाबर ने मेवाड़ पर आक्रमण करने की तैयारियाँ आरम्भ कीं। राणा सांगा ने भी आसपास के राजाओं की सहायता से एक विशाल एवं सशक्त सेना एकत्रित की और मुगलों का मुकाबला करने के लिए आगे बढ़े। आगरा के पास खानवा के मैदान में घमासान युद्ध हुआ। राणा सांगा की सैन्य शक्ति और राजपूतों की युद्ध कुशलता देख कर मुगल सेना घबरा गई। बाबर ने अपनी सेना को कसमें दिलाकर जोशीले शब्दों में हिम्मत बँधाई। एक बार फिर घमासान युद्ध हुआ और राणा सांगा एक बार फिर बुरी तरह घायल हुए। कुछ राजपूत सरदार उन्हें वहां से निकाल ले गए। सांगा की वीरता की स्वयं बाबर ने प्रशंसा की थी। राणा के तीन उत्तराधिकारियों में से कोई भी उनके समान योग्यता वाले न थे।

राणा सांगा वास्तव में राजस्थान के गौरवशाली लौह पुरुष थे। उनके शरीर पर अस्सी घावों के निशान और युद्ध में खोई एक आंख और एक टांग सांगा की वीरता का प्रमाण मानी जाती है।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# भारत : इस्लामवाद के घेरे में

—सीताराम गोय

मुसलमानों ने कई सौ वर्ष तक भारत पर शासन किया। उनका शा तो समाप्त हो गया, लेकिन वे अपने पीछे इस्लामवाद छोड़ गये।

इस्लामवाद के बुनियादी सिद्धान्त इस्लाम की शिक्षाओं पर आधा हैं। मुसलमानों का अब तक का इतिहास बताता है कि इस्लाम ने अपने अ यायियों को प्रयोगवाद, बुद्धिवाद, विश्वबन्धुता, मानवता, उदारता आदि दूर रखा है। दूसरी ओर ये गुण हिन्दुओं और पाश्चात्य संस्कृति के नि गुण हैं। जहां तक भारत का सम्बन्ध है, मुसलमान इसपर कब्जा करना चा हैं और इसे इस्लाम में दीक्षित करना चाहते हैं। इसलिए यहां इस्लामव का चरित्र और भी अधिक दूषित और विध्वंसात्मक हो गया है।

हम एक बात स्पष्ट कर दें कि जब हम इस्लामवाद शब्द का इ माल करते हैं, तब हमारा आशय अपने उन सब मुसलमान भाइयों से न होता, जो हमीं में से हैं। हमारा संकेत तो उन थोड़े-से मुसलमानों की ओ होता है, जिन्हें अपनी अरबी, फारसी अथवा तुर्की नस्ल पर अभिम है। सच तो यह है कि भारत के मुसलमान इस्लामवाद के प्रवर्त्तक न होक स्वयं इसके शिकार हैं। इस्लाम इन बेचारों का इस्तेमाल अपने नीचता और हिंसात्मक कृत्यों के लिए कर रहा है। भारत के अधिकतर मुसलम को बलपूर्वक अथवा लोभ-लालच से मुसलमान बनाया गया। लेकिन सा जिक अथवा सांस्कृतिक रूप में उन्हें धर्मान्तरण से लाभ पहुंचा। यह क इस बात से सिद्ध होता है कि भारतीय समाज में आज भी मुसलमानों स्थिति अच्छी नहीं। इसलिए भारत के मुसलमानों पर इस्लामवादी हो का आरोप लगाने की बजाय इस्लामवाद से उनकी रक्षा की जानी चाहिए।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पाठक पूछेंगे कि इस्लामवाद से हमारा मतलब क्या है? इस्लामवाद से हमारा मतलब अपने आप को सही मानने वाले उस मनोविज्ञान और चारदीवारी में बन्द सांस्कृतिक रुख से है, जिसके फलस्वरूप धर्मान्तरित मुसलमानों के लिए शान्तिपूर्वक और गरिमा के साथ अन्य देशवासियों के साथ मिल कर रहना असम्भव हो जाता है। अनेक हिन्दू हैं, जो इस्लामवाद के कई सिद्धान्तों को मानते हैं। दूसरी ओर अनेक मुसलमान हैं, जो इस्लामवाद से भयभीत हैं और उनके सम्प्रदाय में इस्लामवाद का जो व्यापक प्रभाव है, यदि उन्हें उससे मुक्त कर दिया जाये, तो वे प्रसन्नतापूर्वक भारतीय राष्ट्रवाद की मुख्य धारा में सम्मिलित हो जायेंगे।

जो इस्लामवाद को उसके विशुद्ध और परिपूर्ण रूप में जानना चाहते हैं, उनसे अनुरोध है कि वे डॉक्टर मुहम्मद इकबाल की उन दो लम्बी नज्मों को पढ़ें, जो उन्होंने अपने कैरियर के प्रारम्भिक काल में लिखी थीं और जिनके फलस्वरूप इस्लामवाद के अनुयायियों ने उन्हें अल्लामा की पदवी प्रदान की थी। इन नज्मों के शीर्षक हैं शिकवा और जवाबे शिकवा। हाल ही में श्री खुशवन्तसिंह ने इनका अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया है।

शिकवा का अन्त इन पंक्तियों से होता है कि नगमा हिन्दी है तो क्या, लय तो हिजाज़ी है मेरी अर्थात् मेरे गीत भारतीय हैं, तो क्या हुआ, मेरी लय तो हिजाज़ी है। (हिजाज़ अरब का वह भाग है, जिसमें मक्का और मदीना स्थित हैं।)

जवाबे शिकवा का स्वर और भी अधिक तीखा है। अल्लाह निम्नलिखित शब्दों में मानव समुदाय के लिए अपना श्रेष्ठ सन्देश देता है की वफ़ा तू ने मुहम्मद से, तो हम तेरे हैं।

भारत में अनेक मुसलमान ऐसे हैं, जिन्होंने न तो डॉ० इकबाल का नाम सुना है और न उनकी शायरी पढ़ी है। दूसर ओर ऐसे हिन्दू भी हैं, जिनके हृदय में डॉ० इकबाल के लिए अत्यन्त सम्मान की भावना है। हमारे कहने का मतलब यह है कि भारतीय समाज के किसी एक वर्ग को इस्लामवादी नहीं कहा जा सकता। यह तो उस बुद्धिवादी अथवा बुद्धिहीन रुख का नाम है, जिसके विचार में एक पैगम्बर ने सचाई का एकाधिकार ले रखा है और सारा ज्ञान किसी एक पुस्तक में ही भरा पड़ा है।

अल्लामा इक़बाल और अल्ताफ़ हुसैन हाली जैसे उनके छुटभैयों के संकेतों से लाभ उठाकर हम कह सकते हैं कि इस्लामवाद को निम्नलिखित पांच बुनियादी बातों में बन्द किया जा सकता है—



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१. इस्लाम के प्रादुर्भाव से पूर्व भारतीय समाज इस्लाम-पूर्व अरब की तरह आध्यात्मिक, नैतिक और सांस्कृतिक दृष्टि से पूर्ण अन्धकार युग (जाहिलिया) में रह रहा था।

२. इस्लाम ही एकमात्र सच्चे धर्म को भारत में लाया। एकमात्र प्रामाणिक नैतिक मूल्यों, एकमात्र मानवीय संस्कृति और एकमात्र प्रगतिशील सामाजिक व्यवस्था को लाने वाला भी इस्लाम ही था।

३. एशिया और अफ्रीका के अनेक अन्य देशों की तरह भारत में भी इस्लामी सभ्यता फैलाने वाले इस मिशन को पूरा न किया जा सका, क्योंकि धूर्त अंग्रेजों ने अधिकांश में छलकपट द्वारा भारत में स्थापित इस्लामी साम्राज्य का अन्त कर के इस मिशन के पूर्ण होने में बाधा डाली।

४. यद्यपि पाकिस्तान की स्थापना से रावी नदी के पश्चिम में और हुगली नदी के पूर्व में इस्लामी शक्ति सफल और दृढ़ हुई है, तथापि इस्लाम द्वारा भारत पर विजय अभी अधूरी है।

५. इस्लाम को अधिकार है कि वह बलप्रयोग समेत सब उपाय इस्तेमाल कर के दारुलहरब भारत को दारुलइस्लाम बनाये, ताकि हकूमते इलाहिया (ईश्वरीय शासन) जाहिलिया (अन्धकार युग) के सब चिह्न समाप्त कर दे और इस्लाम के कानून और संस्कृति की स्थापना करे।

स्वर्गीय पंडित सुन्दरलाल सदृश अनेक हिन्दू हैं, जो इस्लामवाद की उपरिलिखित पांच बातों में से प्रथम दो को पूरी तरह स्वीकृत करते हैं। यह बात दूसरी है कि तीसरी बात पर पहुंचते ही तर्क उनका साथ छोड़ देता है और वे अगली तीन बुनियादी बातों तक नहीं बढ़ते, यद्यपि प्रथम दो बातों के साथ अन्तिम तीन बातों का आना अनिवार्य है। दूसरी ओर स्वर्गीय रफी अहमद किदवई और न्यायमूर्ति मुहम्मद करीम चगला सदृश अनेक मुसलमान हैं, जो इन बुनियादी बातों के विरुद्ध हैं।

प्राचीन भारतीय इतिहास के इस वर्णन और भावी लक्ष्य की चर्चा करने के बाद इस्लामवाद ने एक समरनीति निर्धारित की है, जिसके अन्तर्गत भारतीय मुसलमानों का इस्तेमाल बुनियाद और शस्त्रागार के रूप में किया जाता है। इस समरनीति की कुछ मुख्य-मुख्य बातें निम्नलिखित हैं—

१. भारत के मुसलमानों—विशेषतः बुद्धिजीवी मुसलमानों—को बुद्धिवाद, विश्वबन्धुता, मानववाद और उदारता की प्रत्येक भावना से अलग कर दिया जाये और मुल्ला-मौलवियों की एक फौज को इस्लाम के सिद्धान्तों में शिक्षित करके उन्हें इस काम पर लगा दिया जाये कि वे मुसलमानों के दिल-दिमाग को प्रभावित करके उन्हें सीधे रास्ते पर बनाये रखें।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जो भी मुसलमान इस्लामवाद को स्वीकृत न करे अथवा इसकी आलोचना करने का साहस करे अथवा यह कहे कि "हमें राष्ट्र की मुख्य धारा में सम्मिलित हो जाना चाहिए," उसे भगोड़ा कह कर उसकी निन्दा की जाये और हत्यारी मुस्लिम भीड़ उचित रूप से उसे अपना शिकार बनाये।

मुसलमानों को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया जाये कि वे जितनी शिकायतें कर सकें, करे और ऐसा दिखायें कि वे पददलित अल्पसंख्यक हैं, जिन्हें पाशविक हिन्दू बहुसंख्यक सताते हैं, जिनका शोषण करते हैं और जिनके साथ द्वितीय श्रेणी के-से नागरिकों का बरताव करते हैं।

४. मुसलमानों की इन मनगढ़न्त शिकायतों का इस्तेमाल इस बात के लिए किया जाये कि मुस्लिम समाज एक सुसंगठित वोट बैंक बन जाये, जितने चुनावों क्षेत्रों में संभव हो, पलड़ा झुकाने वाला सिद्ध हो और जो सब इस्लामी राजनैतिक दलों को इस बात के लिए ब्लैकमेल करे कि वे मुस्लिम उम्मीदवारों को अपनी सूची में सम्मिलित करें अथवा अपने चुनाव घोषणापत्रों में मुस्लिम समाज के लिए अधिकाधिक रिआयतें सम्मलित करें।

५. मुसलमानों की इस बात के लिए सहायता की जाये और उन्हें उकसाया जाये कि वे सही या गलत तौर पर अतन्र्राष्ट्रीय इस्लामी हितों के लिए भारत का समर्थन प्राप्त करने की खातिर आन्दोलन करें, ताकि उनका ध्यान उनकी अपनी आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिति से सम्बन्धित मांगों से हटाये रखा जा सके।

६. मुसलमानों को धीरे-धीरे इस बात के लिए राजी और तैयार किया जाये कि वे मामूली-से बहाने पर दंगा करने का नाटक करें—चाहे वह बहाना यहां-वहां घूमने वाले सूअर का हो, मस्जिद के सामने बाजा बजाने का हो, उर्दू का हो, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के अल्पसंख्यक रूप का हो, दो सम्प्रदायों के गुंडों के आपसी झगड़े का हो, किसी आस्ट्रियन दुस्साहसी द्वारा यरूशलम की अलअकसा मस्जिद पर बम गिराने का हो, पाकिस्तान के राष्ट्रपति जिया उल हक द्वारा जुल्फिकार अली भुट्टो को फांसी पर चढ़ाने का हो, सऊदी अरब की राजनीति के किसी असन्तुष्ट गुट द्वारा काबा की मस्जिद पर कब्जे का हो अथवा विशाल इस्लामी विश्व की किसी ऐसी ही घटना का हो।

७. इस प्रकार बार-बार दंगे करवाकर मुसलमानों को डरा दिया जाये और तब उन्हें इस बात के लिए तैयार किया जाये कि वे केवल मुसलमानों की ऐसी बस्तियां खड़ी करें, उन्हें मजबूत बनायें और उनका विस्तार करें, जिनमें आयातित अथवा अन्य प्रकार के हथियार व गोला-बारूद जमा किये जायें।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह सप्तसूत्री समरनीति भारत के मुसलमानों के लिए है, जिन का दिल, दिमाग बदलना है, जिन्हें ब्लैकमेल करना है, उकसाना है और इस्लामवाद के दायरे में लना है। इसी प्रकार की समरनीति का एक दूसरा पहलू यह है कि हिन्दू समाज के विभिन्न वर्गों को तटस्थ और पंगु बनाकर अथवा उनकी चापलूसी करके इस्लामवाद की प्रगति के लिए मार्ग प्रशस्त किया जाये। इस दूसरी समरनीति के कुछ अन्य प्रमुख पहलू ये हैं—

१. धर्मनिरपेक्षता की जो अवधारणा भारत के संविधान में अन्तर्निहित है और जो सब राजनैतिक दलों के लिए सर्वाधिक पवित्र नारा बन गई है, उसे विकृत किया जाये, उसका गलत अर्थ निकाला जाये और उसका अधिकतम दुरुपयोग किया जाये, ताकि भारत सरकार की मशीनरी और सार्वजनिक जीवन में हिन्दू संस्कृति की जो थोड़ी-सी अभिव्यक्ति हो रही है, उसे समाप्त कर दिया जाये।

२. "साम्प्रदायिक" और "साम्प्रदायिकता" शब्दों का, जो भारत की राजनैतिक शब्दावली में गाली बन कर रह गये हैं, खूब इस्तेमाल किया जाये और इसे अधिकाधिक रहस्यपूर्ण बनाया जाये—उन सब संगठनों, संस्थाओं और दलों को बदनाम करने के लिए, जो प्रत्यक्षतः अथवा/और अप्रत्यक्षतः इस्लामवाद का हितसाधन नहीं करते।

३. जो इस्लाम और उसकी संस्कृति के इस दावे को चुनौती दें कि वही सच्चे हैं। जो इस्लामी इतिहास की सच्ची बातों को जानते हों और बतलाते हों और जो शिकवा-शिकायतें करने की इस्लामी पैंतरेबाजी को समझ चुके हों, उन व्यक्तियों और संगठनों पर फासिस्ट और धर्मनिरपेक्षता-विरोधी होने का आरोप थोपा जाये।

४. उन हिन्दुओं की प्रशंसा की जाये और उनका समर्थन किया जाये, जो राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय इस्लामी हितों की वकालत करने में आगे हों और जिन्हें इस्लाम और उसकी संस्कृति में वे उच्चतर मूल्य दिखाई देते हों, जिनका दावा इस्लामवाद करता हो।

५. सदा भारत के बहुनस्ली, बहुधर्मी बहुभाषाभाषी, बहुराष्ट्रीय और सांस्कृतिक दृष्टि से मिले-जुले स्वरूप के गीत गाये जायें, ताकि वास्तविक और विधेयात्मक भारतीय राष्ट्रवाद के उदय को रोका जा सके—इस अभियान को पराजित किया जा सके।

स्वतन्त्र भारत में इस्लामवाद मुसलमानों में कुछ आगे प्रधानतः इसलिए बढ़ पाया, क्योंकि विभिन्न कारणों से हिन्दू बुद्धिजीवियों के एक बड़े वर्ग ने



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस विचार को संरक्षण दिया। कांग्रेसी राजनीतिबाजों ने इसे इसलिए संरक्षण दिया क्योंकि उन्हें शीघ्र ही पता चल गया कि वे हिंदुओं में अल्पसंख्या में हैं और वे सत्ता में तभी बने रह सकते हैं, जब कि उन्हें हिन्दुओं के जो वोट मिलते हैं, उनमें मुसलमानों के वोट भी शामिल हो जायें। सोशलिस्टों ने आगे बढ़कर इसे इस लिए संरक्षण दिया, ताकि मुसलमानों के वोट मिल जायें। (उनकी यह आशा अभी तक थोड़ी-बहुत भी पूरी नहीं हुई।) गान्धीवादियों ने इसे इसलिए संरक्षण दिया, क्योंकि उन्हें याद न रहा कि उनके महान् नेता महात्मा गान्धी हिन्दू थे और सनातन धर्म पर उनका दृढ़ विश्वास था—इसलिए भी कि उन्होंने मुसलमानों समेत सब लोगों के प्रति अहिंसा के उनके (गान्धीजी के) सिद्धान्त को गलत समझा और यह मान लिया कि ऐसा करकेउन्होंने (गान्धी जी ने) इस्लाम को अपनी स्वीकृति प्रदान की है। समाज से कटे हुए हिन्दू बुद्धिजीवियों ने इसे केवल इसलिए संरक्षण दिया, क्योंकि उन्हें हिन्दू समाज और हिन्दू संस्कृति से द्वेष था ओर वे किसी भी बहाने उसकी निन्दा करने के लिए मैदान में निकले थे। इस प्रकार मुसलमानों को संरक्षण देना उन सब लोगों के लिए शौक की बात हो गई, जो अपने आपको विशालहृदय, उदार, प्रगतिशील और धर्मनिरपेक्ष कहलवाना चाहते थे।

लेकिन स्थानीय साधनों और अन्तर्राष्ट्रीय संरक्षण के अभाव में भारत में इस्लाम की प्रगति कुछ धीमी थी। विदेशों में इसका एक मात्र संरक्षक पाकिस्तान है, जो समाचारपत्रों आदि में उन्मादपूर्ण प्रचार और अन्तर्राष्ट्रीय प्रचारमंचों पर प्रापेगंडा करने के सिवा कुछ अधिक सहायता न कर सका। भारत को पाकिस्तान के साथ जिन अनेक युद्धों को लड़ने लिए बाध्य किया गया (जिन में नुकसान पाकिस्तान का ही हुआ) उनसे भी भारत में इस्लामवाद को आवश्यक मात्रा में आत्मविश्वास प्राप्त करने में रुकावट पेश आई।

इस्लामी देशों द्वारा राजनैतिक हथियार के रूप में तेल का इस्तेमाल और अनेक अरब देशों (विशेषतः लीबिया और सीरिया) से बड़ी मात्रा में पैट्रो-डालरों के आगमन से भारत में इस्लामवाद को एक ही झटके में आत्मविश्वास की नई चमक मिली। अरब धन का आगमन स्वाभाविक और अनिवार्य घटना है, क्योंकि अन्ततः इस्लामवाद अरब साम्राज्यवाद का ही दूसरा नाम है, जिसने इतिहास के एक चरण में अनेक गैर-अरब देशों को आज भी आध्यात्मिक दृष्टि से गुलाम बनाकर रखा हुआ है।

अब भारत में इस्लामवाद उस अरब धन का अधिकाधिक लाभ उठाने में व्यस्त है, जो अनेक स्रोतों से और बढ़ रही मात्रा में आ रहा है। कुछ लाभ बहुत स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। इस नये नाटक के कुछ प्रमुख दृश्य ये हैं—



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१. इस्लामवाद के प्रचार के लिए एक शक्तिशाली प्रेस और अनेक प्रकाशनगृहों का समारम्भ (विशेषतः भारतीय भाषाओं में)।

२. इस्लाम की शिक्षा देने और मिशनारियों को प्रशिक्षित करने के लिए अनेक पुराने मकतबों, मदरसों और संस्थाओं की सहायता व ऐसे नये केन्द्रों की स्थापना, जिनमें मुस्लिम जनता (कहना चाहिए 'भेड़ों') के विश्वास को पवित्र बनाने के लिए उच्च वेतनों पर मिशनरी रखे जाते हैं और इस्लाम में दीक्षित होने वालों के लिए नये क्षेत्र ढूंढ़े जाते हैं।

३. मुसलमानों द्वारा व्यक्तिगत रूप से, और इस्लामी संस्थाओं और संगठनों द्वारा जिस मूल्य पर भी मिले, शहरी और देहाती क्षेत्रों में चारों ओर भूमि और ठोस सम्पत्ति का क्रय।

४. मुस्लिम घरों और महल्लों में हथियारों का निर्माण और संग्रह व मुस्लिम गुंडों का प्रशिक्षण।

५. प्रत्येक इस्लामी हित के लिए बार-बार राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों और प्रदर्शनों का आयोजन।

७. प्रत्येक राजनैतिक दल में घुसपैठ और जज्ब होने के लिए मुस्लिम राजनेताओं और राजनीतिबाजों को धन देना और प्रत्येक सार्वजनिक मंच से काम करना।

८. हिन्दूसमाज के दुर्बल वर्ग—विशेषतः हरिजन वर्ग—के लोगों को इस्लाम में दीक्षित करने के लिए धन का लालच देना।

यह समरनीति नई नहीं। मुस्लम लीग ने भी पाकिस्तान की स्थापना के लिए यही समरनीति अपनाई थी। अन्तर केवल इतना है कि तब जो सहायता और उकसाहट अंग्रेजों से मिलती थी, अब वह अरब देशों से मिलती है। परिणाम यह है कि केवल दस वर्ष में भारत में इस्लामवाद उसी खतरनाक आयाम तक पहुंच गया है, जहां वह विभाजन से पूर्व पहुंचा था। हमें इस स्थिति पर विचार करना चाहिए।

# हिन्दू धर्म सर्वाधिक प्राचीन है

संसार के सभी धर्मों में हिन्दू सर्वाधिक प्राचीन धर्म है। साथ ही उसका तत्त्वज्ञान प्रचुर है। प्रत्येक हिन्दू का कर्त्तव्य है कि वह उसके संरक्षण एवं वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति में सहयोग करे। प्राणिमात्र का कल्याण हो।

**दलाई लामा**



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(पृष्ठ ११५ का शेष)

अब इस देश में शेष जो भी नागरिक हैं, वे हिन्दू हैं। ये संख्या में कितने हैं—यदि इस बात पर ध्यान दिया जाए तो शाय्द ही कोई हिन्दू हो। जो भी हिन्दू होने का दावा करते हैं, अपने को आर्य मानते हैं, क्योंकि इस देश का पुराना नाम आर्यावर्त था और यहां के सभी निवासी आर्य थे। तो फिर यह हिन्दू धर्म क्या हुआ ? इस देश को हम हिन्दुस्थान कैसे कहें ?

तो फिर हिन्दू एक कपोल-कल्पित शब्द-मात्र है क्या ? नहीं, ऐसा नहीं। हम एक विशाल संस्कृति, मनुष्यता, उदारता, सहिष्णुता और स्वच्छ-जीवन का ढंग मानते हैं और गर्व करते हैं कि हम हिन्दू हैं और हमारा धर्म हिन्दू है—चाहे विदेशियों ने किसी भी स्वार्थवश अथवा भूल से इस शब्द का प्रयोग किया हो। आज भी हिन्दू शब्द धर्म की कसौटी पर पूरा उतरता है।

हिन्दू 'जीयो और जीने दो' की मीमांसा का नाम है। हिन्दू स्वच्छ जीवन जीने की प्रणाली का नाम है और संसार के हर व्यक्ति को, जो थोड़ा सा भी बुद्धिजीवी है, हिन्दू होने में और अपने आपको हिन्दू मानने में गौरव अनुभव करना चाहिए। वास्तव में आर्यत्व ही का दूसरा नाम हिन्दुत्व है।

# हिन्दू—सनातन सत्य की प्रतीक

धर्म ही से जीव मात्रा धारणा होती है। यह इस बात का परिचायक है कि जीवन के आध्यात्मिक एवं सामाजिक जीवन में कोई संबंध है। भारत का सहस्रों वर्ष का जीवन किसी चेतन आदर्श को निरन्तर खोज रहा है। उसका जीवनोद्देश्य अध्यात्म विद्या अथवा आत्मज्ञान है। ऐसा जीवन दर्शन तथा धर्म सबको निःसन्देह अपनी ओर आकृष्ट करता है—करेगा ही। इसी को आज हम हिन्दू नाम से जानते हैं। वास्तव में सदा इसे सनातन धर्म कहते आये हैं। इसका आदि नहीं है। न कोई व्यक्ति विशेष इसका जनक है। यह सार्वभौम है। वास्तव में इसकी कोई भौगोलिक सीमा नहीं है। आज जो विद्यमान है तथा भविष्य में जो होंगे वे इसी धर्म के अन्तर्गत हैं।

**—श्री जगद्गुरु शंकराचार्य**

**शृंगेरी मठ**



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# क्या आप हिन्दू हैं ?

क्या आप को अपने धर्म, संस्कृति
और परम्पराओं पर अभिमान है ?

क्या आप अपना सभी कुछ बचाने की
भावना रखते हैं ?

यदि आपका उत्तर हां में
हो तो
आज ही : सामने का फार्म भरकर

## अखिल भारतीय
## हिन्दू रक्षा समिति
## के स्वयं सदस्य बनें

और

अपने नगर में हिन्द रक्षा समति
स्थापित करें ।

## हिन्दुओ जागो ! देश बचाओ !

मंत्री, अ० भा० हिन्दू रक्षा समिति,
वेद मन्दिर, नई दिल्ली-११०००५



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

॥ ओ३म् ॥

# अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति

शाहगंज (जौनपुर) उत्तर प्रदेश

**प्रधान कार्यालय, १५९७ हरध्यान सिंह मार्ग, नई दिल्ली-५**

# सदस्यता-पत्र

मैंने "हिन्दू रक्षा समिति" के उद्देश्यों को भली भांति समझ लिया है। मैं इनके लक्ष्य से सहमत होकर इनका सदस्य बनना स्वीकार करता हूं।

सदस्यता शुल्क रुपया दे रहा हूं। मुझसे इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए जो भी संभव होगा' करता रहूंगा।

हस्ताक्षर.....

नाम व पूरा पता.....

.....

---

## हिन्दू रक्षा समिति के उद्देश्य :-

१. भारत राष्ट्र की स्वतन्त्रता, सुरक्षा, एकता और संस्कृति को हानि पहुंचाने वाले तत्वों का
२. मजहब और जाति के आधार पर आरक्षण, विशेष अधिकार व विधि-नियम मांगने की विघटनकारी प्रवृत्ति का—
३. विदेशी देशद्रोही शक्तियों के राष्ट्रघातक षड़यन्त्रों का—
४. भारत के नागरिकों के लिए पृथक्-पृथक् राज नियम और अधिकारों का—
५. साम्प्रदायिकता, जातीयता, प्रान्तीयता व चरित्र भ्रष्ट करने वाली विदेशी विचारधाराओं का

संगठित विरोध कर भारत की रक्षा करना "हिन्दू रक्षा समिति" का उद्देश्य है।

---

## सदस्यता :—

१. १०१) वार्षिक देने वाले "पोषक सदस्य" होंगे।
२. ५१) वार्षिक देने वाले "विशिष्ट सदस्य" होंगे।
३. २५) वार्षिक देने वाले "सहयोगी सदस्य" होंगे।
४. १२) वार्षिक देने वाले "प्राथमिक सदस्य" होंगे।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# अपने ग्राम-नगर में हिन्दू रक्षा समिति स्थापित कीजिए

सबसे पहले आप समिति के उद्देश्य और मांगें पढ़ डालिए। यदि उनसे सहमत हों तो कम से अपने १९ साथी और बनाइए। इस प्रकार २० सदस्य बनाकर उनके फार्म तथा उनके पूरे शुल्क का ड्राफ्ट "अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति" के नाम का बनाकर केन्द्रीय कार्यालय, नई दिल्ली को भेजिए। साथ ही स्वीकृति के लिए पत्र भी पत्र लिखें।

स्वीकृति प्राप्त होने पर आप में से जिन्हें संयोजक बनाया जाए —वे एक अस्थायी कोषाध्यक्ष व मंत्री नियुक्त कर लें तथा अपने यहां विधिवत् कार्यालय बना, लेटर-हैड, रसीद बुक छपवा लें। स्थापना के दो माह के भीतर आप एक कार्यकर्ता सम्मेलन बुलाएं और रात्रि को सार्वजनिक सभा हिन्दू रक्षा सम्मेलन के रूप में रख।

आपका लक्ष्य अधिक सदस्य बनाना हो। अपने सदस्यता शुल्क व दान से सम्मेलन कीजिए। साहित्य बांटिए, पोस्टर लगाइए और संगठन सुदृढ़ बनाइए।

२० सदस्यों के बाद बने सदस्यों का चौथाई शुल्क आप केन्द्र को भेजेंगे। दान रूप में एकत्र सम्पूर्ण धन आप अपने क्षेत्र में व्यय कर सकेंगे। किन्तु सारा हिसाब आपको नियमानुसार रखना होगा।

केन्द्र कभी भी आपके आय व्यय की जांच कर सकेगा और केन्द्र को यह भी अधिकार होगा कि वह अनियमितता प्रतीत होने पर आपकी समिति भंग कर नयी समिति गठित कर सके।

हिन्दू रक्षा समिति वस्तुतः राष्ट्र की गौरव, परम्परा, इतिहास और स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए कृतसंकल्प सर्वस्व-समर्पित देशभक्तों का संगठन है। अतः सभी इसी दिशा में सोचते हुए सभी कार्य सम्पन्न करेंगे, ताकि सफलता मिल सके।

हम किसी भी संकट में सेवा के लिए सदा प्रस्तुत हैं—

(प्रो०) धर्मवीर प्रधान मंत्री

**अ. भा. हिन्दू रक्षा समिति, करौलबाग, नई दिल्ली-५**



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# हिन्दू धर्म--विदेशियों की दृष्टि में

—रमेशचन्द्र

सम्पादक, पंजाब केसरी, जालन्धर

जो निर्मल है, निष्काम भाव से परिपूर्ण है, सौरभ से युक्त है, सुन्दर है, सराहनीय है और जिस भी व्यक्ति के साथ हो उसी की शोभा बढ़ाता है—उसी का नाम धर्म है। धर्म की इस अनुपम कसौटी पर यदि हिन्दू धर्म को कसा जाए तो वह इस पर सर्वथा खरा उतरता है और यह बात स्वतः प्रमाणित हो जाती है कि हिन्दू धर्म एक नहीं अनेक ऐसी विशेषताओं का भंडार है जो उसे अद्वितीय भी बनाती हैं और हृदयग्राही भी। उदारता, सादगी, ईमानदारी, सत्य-प्रियता, निर्भीकता, सौजन्य और शौर्य सभी तो सनातन काल से हिन्दू धर्म की अनमोल धरोहर रहे हैं।

लेखक

## सत्यप्रियता और ईमानदारी

सत्य-प्रियता मनुष्य के चरित्र का सबसे पहला और सबसे बड़ा मापदण्ड है और हिन्दू युगयुगान्त से अपनी सत्य-प्रियता के लिए संसार भर में सदा ही मान और सम्मान की दृष्टि से देखे जाते रहे हैं।

सुप्रसिद्ध विद्वान स्ट्रैबो ने लिखा है, हिन्दू इतने ईमानदार और सत्यप्रिय हैं कि उन्हें न तो अपने सामान की रक्षा के लिए घरों में ताले ही लटकाने पड़ते हैं और न ही कोई संधि का समझौता करने के लिए कागजी लिखा-पढ़ी करने की आवश्यकता अनुभव होती है।

दूसरी शताब्दी के एक और विद्वान् एरियन लिखते हैं—"मैंने किसी भारतीय को कभी झूठ बोलते नहीं देखा।"



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चीनी यात्री ह्यूनसांग ने भी हिंदुओं की सच्चरित्रता की भरपूर सराहना की है। वो लिखते हैं—"भारतीय अपनी ईमानदारी और ऊंचे चरित्र के कारण दूर से ही पहिचाने जाते हैं। वे कमाई में कभी बेईमानी को नहीं आने देते और न्याय में अत्यधिक दया और क्षमा को स्थान देते हैं।

## निष्कपटता और निर्भीकता

तेरहवीं सदी के विद्वान् शम्सुद्दीन अबू अब्दुल्ला हिन्दुओं की निष्कपटता और निर्भीकता से अत्यन्त प्रभावित थे। उन्होंने लिखा है—"हिन्दू छल-कपट और हिंसा से दूर का भी सम्बन्ध नहीं रखते। वे न मृत्यु से डरते हैं न जीवन से।"

तेरहवीं सदी के ही मार्को पोलो का मत है—"आपको मालूम होना चाहिए कि ये ब्राह्मण संसार में श्रेष्ठतम व्यापारी हैं और सर्वाधिक सत्य-प्रिय हैं। संसार का बड़े से बड़ा आकर्षण भी इन्हें झूठ बोलने को विवश नहीं कर सकता।"

एक अन्य विद्वान् अबुल फजल ने कहा है कि हिन्दू सत्य के पुजारी हैं और व्यवहार के अत्यंत ईमानदार जबकि जान मैलकम का मत है कि हिन्दुओं की सत्य-प्रियता भी उतनी ही उल्लेखनीय है जितना उनका साहस और शौर्य।

## इतनी ही बात नहीं

सुप्रसिद्ध अंग्रेज विद्वान् मैक्समूलर ने तो हिंदुओं की प्रशस्ति में यहां तक लिख दिया है कि हिन्दू केवल अपनी सत्य-प्रियता के लिए ही विश्वविख्यात नहीं हैं, उनकी उदारता, प्रतिभा, शालीनता, निष्ठा, शिष्टता, विवेक, ज्ञान-प्रियता, कला-प्रियता, उद्यम और सम्मानपूर्वक जीने और जीने देने की उत्कट अभिलाषा भी अनुकरणीय और सराहनीय है।

मैगस्थनीज के मतानुसार भारतीय नारी के चरित्र की ऊंचाई और पवित्रता संसार भर में कहीं भी दिखाई नहीं देती। उसका पतिव्रत धर्म सच-मुच एक ऐसा आदर्श है जिसकी प्रशस्ति जितनी भी की जाए कम है।

## सहनशीलता : श्रमनिष्ठा

सुपरिचित इतिहासकार और दार्शनिक विद्वान् नेवुहर लिखते हैं—"हिंदू संसार भर में सर्वाधिक सहनशील हैं, श्रमशील हैं, सद्गुणी हैं, सदाचारी हैं और हमेशा इस बात का ध्यान रखते हैं कि उनकी किसी भी बात से किसी के मन को किसी प्रकार की ठेस न पहुंचे।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

## सर्वाधिक संस्कृत

विशप हेवर ने तो हिन्दू धर्म-अवलम्बियों के बारे में यहां तक कह दिया है कि एक सभ्य और सुसंस्कृत व्यक्ति के चरित्र में पाई जाने वाली एक भी विशेषता का अभाव यदि कोई व्यक्ति हिन्दुओं में बताए तो मैं कहूंगा कि वह हिन्दुओं के साथ कभी रहा ही नहीं।

हिंदुओं के सम्बन्ध में विदेशी और विधर्मी विद्वानों के जो उदाहरण मैंने दिए हैं उनसे स्पष्ट है कि हिंदू धर्म उन सभी विशेषताओं का एक सुन्दर और सजीव समन्वय है जो मानव जीवन का अटूट और अनिवार्य अंग हैं। इस दृष्टि से यदि यह कहा जाए कि मानव धर्म का ही दूसरा नाम हिन्दू धर्म है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने महान् धार्मिक आदर्शों का ध्वज निरन्तर ऊंचा करते और अपनी पुरातन परम्पराओं का पालन करते हुए संसार में हिंदू धर्म की गरिमा पुनः प्रतिष्ठापित करें।

## हिन्दू धर्म विश्वव्यापी तथा विज्ञान सम्मत है

मेरी समझ से योरुप तथा एशिया के सभी धर्मों की अपेक्षा हिन्दू धर्म विश्वव्यापी है। किसी के विरोध में मुझे कुछ नहीं कहना है। अन्य धर्मों में भी समय-समय पर असाधारण प्रतिभा, उत्कृष्टता तथा आत्मिक उन्नति के क्षण पाये जाते हैं किन्तु मुझे ब्राह्मण अर्थात् हिन्दू धर्म से सर्वाधिक अनुराग इस कारण है क्योंकि उसमें अन्य सभी धर्म समाविष्ट हैं। योरुप के ईसाई धर्म की अपेक्षा आधुनिक विज्ञान परिकल्पना की कसौटी पर वह ही अधिक खरा सिद्ध हुआ है।

—रोमाँ रोलाँ



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# हिंदुओं की घटती जनसंख्या के आँकड़े

## मुसलमानों की वृद्धि का प्र. श. अधिक

जनगणना के शासकीय आँकड़े सिद्ध करते हैं कि मुसलमानों की वृद्धि हिन्दुओं से अधिक हो रही है। समस्त भारत में १८८१ से १९४१ तक के ६० वर्षों में हिन्दुओं की संख्या ४३.८ प्र. श. बढ़ी थी, जबकि मुसलमानों की ८९ प्र. श. बढ़ी। भारत-विभाजन के पश्चात् भारत से ७२ लाख मुसलमान पाकिस्तान गए। फिर भी भारत में मुसलमानों की गिनती पाकिस्तान के मुसलमानों से अधिक तथा विश्व में मुस्लिम आबादी की दृष्टि से तीसरे नम्बर पर है। १९७१ की जनसंख्या के अनुसार भारत में ६ करोड़ १४ लाख मुसलमान थे जो पूरी जनसंख्या के ११ प्र. श. हैं।

## पिछली दशाब्दो में हुई वृद्धि

| | | | |
|---|---|---|---|
| हिन्दू | २२.६९ प्र०श० | बौद्ध | १७.२० प्र०श० |
| मुसलमान | ३०.८५ ,, | जैन | २८.४८ ,, |
| ईसाई | ३२-६० ,, | अन्य | २५.१० ,, |
| सिख | ३२.२७ ,, | | |

## मुस्लिम जनसंख्या में वृद्धि के आँकड़े

१९७१ की जनगणना के अनुसार विभिन्न राज्यों में मुसलमानों की संख्या का प्रतिशतक इस प्रकार था—असम २४ प्र० श०, प० बंगाल २०.५ प्र. श., केरल १९.५ प्र० श०, उ० प्र० १५.४८ प्र० श०, बिहार १३.४८ प्र० श०, कर्नाटक १०.६३ प्र० श०, अण्डमान-निकोबार १९.१२ प्र० श०। शेष सभी राज्यों में मुस्लिम जनसंख्या १० प्र०श० से कम थी।

## ८ जिले मुस्लिमबहुल : ३० जिलों में वृद्धि

भारत विभाजन के समय सन् '४७ में एक भी जिला मुस्लिमबहुल नहीं था। इस समय जम्मू-कश्मीर में मुस्लिम बहुमत है। वहा मुसलमान ६६ प्र० श० हैं। लक्षद्वीप, मिनीकाय, अमीनदीव द्वीपों में मुसलमान १५ प्र. श. हैं। जम्मू-कश्मीर के छह जिले, प० बंगाल और केरल में एक-एक जिला मुस्लिम बहुसख्यक है। भारत में ४ जिले ऐसे हैं जहां मुस्लिम जनसंख्या ४० से ५० प्र. श. है, ९ जिलों में ३० से ४० प्र. श. है और जिलो में २० से ३० प्र. श. है। इन तीस जिलों में मुसलमानों को ५० प्रतिशत बनने मे देर न लगेगी।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# हिंदुत्व--मानव कल्याण का मार्ग

—डा० सम्पूर्णानन्द

धर्म और मजहब पर्यायवाची शब्द नहीं हैं। स्मृतियों में देखिये। उनमें उन चीजों का नामोनिशान मिलेगा जो धर्म के अन्तर्भूत हैं। कुछ ऐसी बातें हैं जिनको धर्म का लक्षण कहा गया है और सार्वभौम तथा सर्ववर्णिक धर्म कहा गया है। अर्थात् ये ऐसी बातें हैं जो सब मनुष्यों के लिए धर्म हैं। इस सूची में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, दया, क्षमा, शौच, आर्जव के नाम आते हैं। कहीं किसी सूची में भी शैव, शाक्त या वैष्णव होने की या संस्कृत भाषा में किन्हीं स्तोत्रों के पाठ करने की चर्चा नहीं आती। ऐसी बातों को देखने से तो यह बात मन में उठती है कि कोई भी भला आदमी 'हिन्दू' कहा जा सकता है। एक दृष्टि से यह बात ठीक है। परंतु कुछ ऐसी बातें हैं जिनको मानना हिन्दू के लिए अनिवार्य है। हिन्दू ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करता हो या न करता हो परन्तु उसके लिए आत्मा की सत्ता को स्वीकार करना आवश्यक है। आत्मा की सत्ता को मानना ही धर्म का मूल है। धर्म से ही अर्थ और काम की सिद्धि होती है और धर्म ही मोक्ष की ओर ले जाता है। जिसको आत्मा पर आस्था नहीं उसके लिए धर्म-पथ पर चलना कठिन है। ऐसा कोई हिन्दू न होगा जो व्यावहारिक दृष्टि से ईश्वर के विराट् स्वरूप की सत्ता को स्वीकार न करता हो। सब प्राणी ईश्वर के विराट् स्वरूप के अंग हैं। सब एक दूसरे से सम्बद्ध हैं। सब के सुख-दुःख एक दूसरे के दुःख-सुख पर निर्भर हैं ऐसा हिन्दू मात्र को मान्य है। इसलिए न केवल प्राणिमात्र में वरन् सम्पूर्ण जगत् में उसको एक प्रकार से ईश्वर की झलक दीख पड़ती है। अशिक्षित हिन्दू का हृदय भी कहता है कि

सियाराम मय सब जग जानी।
करौं प्रनाम जोरि युग पानी॥

एक बात और है। हिंदू के हृदय पर कर्म सिद्धान्त की अमिट छाप बैठी हुई है। भले ही किसी घोर विपत्ति में फंसकर वह ईश्वर या किसी देव-देवी को याद करे। यह भी हो सकता है कि बहुत कष्ट की अवस्था में उसके मुंह से दैव जगत् के सबंध में कोई शिकायत या निन्दा के वाक्य निकल जाये परंतु प्रत्येक हिन्दू के हृदय में यह बात बैठी हुई है कि

कर्म प्रधान विश्व करि राखा।
जो जस करहि सो तस फल चाखा॥



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# हिन्दुत्व

## सुप्रसिद्ध उपन्यासकार वैद्य गुरुदत्त जी की लेखनी से

वर्तमान युग के हिन्दू दो श्रेणियों में बांटे जा सकते हैं। एक वे जो भारतीय इतिहास को अंग्रेज की दृष्टि से देखते हैं। उनके मस्तिष्क में हिन्दू समाज का आरम्भ मुसलमानों के आने से दो-चार सौ वर्ष पूर्व से हुआ है। उससे पहले वे क्या थे, कुछ नहीं कहा जा सकता। यूरोपियन इतिहास लेखक तो यह कहते हैं कि लगभग दो सहस्र वर्ष पूर्व यहां गुप्त थे, मौर्य थे, जाट थे। भील, गोंड और इसी प्रकार अनेकानेक जातियां और राज्य परिवार थे। उससे भी पूर्व अन्धकार था। पढ़े-लिखे हिन्दू, विशेष रूप में अंग्रेजी ऐनक से देखने वाले यही समझते हैं। उनके लिए हिन्दू शब्द की कुछ भी महिमा नहीं और जब वे देश में हिंदू संगठन की बात सुनते हैं तो समझते हैं कि देश में मूर्खों की संख्या कम नहीं हो रही।

एक दूसरी प्रकार के भी हिंदू हैं। वे समझते हैं कि घर-घर में तुलसी लगवाने से अथवा राम, कृष्ण, विष्णु, शिव, भगवती, दुर्गा, काली के मंदिर बना देने से हिंदू संगठन हो जायेगा।

एक सार्वभौमिक हिन्दू सम्मेलन में ही यह निश्चय हुआ था कि तुलसी घर-घर में लगाने से हिंदू संगठन हो जायेगा।

हम समझते हैं कि इन दोनों श्रेणियों के लोग वस्तुस्थिति को न समझ जल मथ रहे हैं और ये टूटे मन्दिर बनाते रहेंगे और कांग्रेस, मुसलमान, ईसाई भारत में दनदनाते हिंदू देवी-देवताओं की हंसी उड़ाते रहेंगे। ये सरलचित्त व्यक्ति जाति के लक्षण हो नहीं समझते। इनकी बुद्धि पर सैमिटिक मजहब वालों के एक सहस्र वर्ष के ऊपर के राज्य की छाप लगी है। उन सैमिटिक मान्यताओं में बाहरी लक्षण को जातीय लक्षण माना जाता है। सुन्नत होने से मुसलमान होता है और चोटी रहने से हिंदू होता है। स्वर सहित वेद मंत्र बोल शुद्ध घी से आहुति देने से आर्य होता है और काबा की ओर मुख कर नमाज पढ़ने से मुसलमान होता है।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऐसे आचार-विचार हिन्दुत्व के लक्षण नहीं हैं। हिंदुत्व यहूदी मजहब, ईसाइयत और इस्लाम से भिन्न है। इसकी आत्मा है। शरीर तो बदलता रहता है। आत्मा बनी रहती है।

हमारी इस धारणा का समर्थन मिलेगा किसी हिन्दू से पूछें कि क्या राम हिंदू था? किस पुस्तक में उसे हिन्दू लिखा है? नहीं तो तुम उसे अपनी जाति का महापुरुष अथवा अवतार क्यों मानते हो? विष्णु, शिव, ब्रह्मा और कृष्ण भी तो कहीं हिन्दू नहीं कहे गये। तो फिर यह क्या है? हम हिंदू उनको अपना पूर्वज, पूज्य और आदरणीय क्यों मानते हैं?

वास्तविक बात यह है कि हिन्दुत्व वह नहीं है जो हम में प्रायः अंग्रेजी पढ़े-लिखे मानते रहे हैं। हम जाति न तो देश में रहने से मानते हैं, न किसी विचार के माता-पिता के घर जन्म लेने से मानते हैं। जाति के सम्बन्ध कुछ एक ऐसी मान्यताओं से हैं, जिनका सम्बन्ध शरीर अथवा मन से नहीं है, वरन् बुद्धि और आत्मा से है।

शरीर का सम्बंध उन मान्यताओं से होता है जो आंखों से देखी जायें, कानों से सुनी जायें अथवा अन्य इंद्रियों से जानी जायें। उदाहरण के रूप में अग्नि जलाकर यज्ञ हवन करना, मंत्रोच्चारण करना, घी-सामग्री का होम करना, किसी सुंदर मूर्ति के कंधे पर धनुष रखे होना, उसे राम-नाम से स्मरण करना, किसी का मुख में बांसुरी पकड़ना, उसको नृत्य की मुद्रा में खड़े कर तसवीर बना, पुष्प-पत्र चढ़ाना, ये और इसी प्रकार की मान्यताएं हैं जिनका शरीर से संबंध रहता है। ये मान्यताएं जाति की नहीं हैं। यदि इनको आधार बनाकर जाति मानेंगे तो कृष्ण के उपासक राम के उपासकों से भिन्न जाति के हो जायेंगे। शिव के उपासक लक्ष्मीनारायण से पृथक् समुदाय में हो जायेंगे। इसी प्रकार स्वामी दयानंद रचित संस्कारविधि से हवन करने वाले गणपति "ॐ स्वाहा" करने वालों से पृथक् हो जायेंगे।

ऐसा तो है नहीं। इस कारण कम से कम भारतीय परिभाषा में जाति के लक्षण की वे मान्यताएं नहीं जो आँखों से देखी जायें और जो शरीर के अन्य अंगों से पालन की जा सकें।

मन से स्वीकार की गई मान्यताएं भी हमारे जातीय संगठन में कुछ अधिक महानता नहीं रखतीं। मन स्मृति यंत्र है। जो हमारे पुरखा करते थे, वही करना मन की मान्यताओं को मानना है। बाबा से भी दूर की बात स्मरण रह सकती है। ये मान्यताएं रीति-रिवाज कहाती हैं। अतः यह भी जाति के लक्षणों में नहीं। यदि ऐसा मानेंगे तो कदाचित् भाई-बहन, पिता-पुत्र भी भिन्न-भिन्न जाति के हो जायेंगे।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मनुष्य में एक अन्य यंत्र है बुद्धि। इसका घनिष्ठ संबंध है जीवात्मा से। इस यंत्र की भी कुछ मान्यताएं हैं। हम समझते हैं इन मान्यताओं का नाम संस्कृतिक मान्यताएं है।

उदाहरण के रूप में एक व्यक्ति परमात्मा को मानता है। ऐसे परमात्मा को जैसे इस वेद मंत्र में लिखा है—

स पर्य्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम। कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥ (यजुः ४०-८)

इस लक्षण वाले परमात्मा को मानना, न तो शरीर का धर्म है, न ही मन का। यह बुद्धि का धर्म है। इसमें जितने लक्षण लिखे हैं, वे बुद्धि से ही समझे जा सकते हैं। उदाहरण के रूप में वह सर्वव्यापक है। वह सर्वशक्तिमान् है। वह शरीररहित है। वह विकाररहित है इत्यादि।

पूर्ण मंत्र को समझने का यत्न करिये तो पता चलेगा कि यह बुद्धि का विषय है। मन और इन्द्रियों का नहीं है। ये सांस्कृतिक मान्यताएं हैं। यह इस कारण कहते हैं, क्योंकि बुद्धि इन मान्यताओं का संस्कार जीवात्मा तक पहुंचाती है और जीवात्मा पर संस्कार सुदृढ़ हो जाये तो संस्कार जन्म-मरण के बंधन से पार हो जाते हैं।

हम हिन्दू ऐसी मान्यताओं के आधार पर जाति मानते हैं। अतः जो इस प्रकार की मान्यताओं को स्वीकार करते हैं, वे हिन्दू जाति के हैं। ऐसी बुद्धि के विषय में सर्वमान्य ग्रंथ भगवद्गीता में कहा है—

दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनंजय।
बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः ॥ (भ० गीता २-४९)

अर्थात् बुद्धि से दूर किया हुआ कर्म हीन होता है। इस कारण बुद्धि के आश्रय हो जाओ। और भी कहा है—

इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः।
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः ॥
एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना।
जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम् ॥ (भ० गीता ३-४२,४३)

अर्थात् इंद्रियों को बलवान् कहते हैं, परन्तु इंद्रियों से बलवान् मन है। मन से बलवान् बुद्धि है। बुद्धि से बलवान् आत्मा है। अतः आत्मा के द्वारा मन को वश में करके हे अर्जुन, दुर्जन काम रूपी शत्रु को जीत।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अतः वे मान्यताएं जो बुद्धि से स्वीकार की जायें, उनके आधार पर जो मानव समूह है, वह वैदिक, भारतीय अथवा हिंदू विचार से जाति कही जाती है।

हिन्दुओं में वे लोग जो हिन्दुत्व को अंग्रेजी से प्रस्तुत ऐनक से देखते हैं, वे तो हिन्दू जाति की उस काल से ही कल्पना करते हैं, जब से भारत में बसने वाले दासता में फंसे हुए हैं। साथ ही हिन्दू समुदाय के वे लोग जो गुप्त साम्राज्य के संगठन को देखते हैं, उनको हिन्दू वे दिखाई देते हैं जो राम, कृष्ण की मूर्तियों पर फूल चढ़ाते हैं अथवा जो "एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति" की कूक लगाते हैं। दोनों प्रकार के हिन्दू हिन्दुत्व की प्राचीनता सिद्ध नहीं कर सकते, परंतु अपने को शिव, विष्णु, और राम कृष्ण की जाति का कहते हैं।

यह अयुक्त परस्परविरोधी तथ्य वर्तमान हिंदू समाज को परेशान कर रहे हैं तो हिन्दुत्व क्या है? हिंदू समाज किसका नाम है, यह प्रश्न उत्पन्न होता है। हिन्दू समाज के कर्णधार जब तक इस विषय पर स्थिरमत नहीं हो जाते, तब तक यह हिन्दू समाज मेंढकों की पसेरी ही बना रहेगा। वर्तमान युग में जब तक शिक्षा-दीक्षा विरोधियों के हाथ में है, तब तक संगठन और जाति का उत्थान सम्भव नहीं होगा।

हमारा मत है कि हिंदू संस्कृति को, जिसे हिन्दुत्व का नाम दिया जा सकता है, बौद्धिक विषयों पर ले आने से बात सरल हो जायेगी। तब ऐसा प्रतीत होने लगेगा कि आज भारत में रहने वाले हिन्दू एक ऐसी जाति के घटक हैं, जिनकी मान्यताएं वैदिक अर्थात् सृष्टि के आरम्भिक काल से अक्षुण्ण चली आती हैं। हम उनमें से कुछ मान्यताएं गिनाते हैं—

(१) एक परमात्मा जो सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञ, कायारहित इत्यादि गुणों को रखता है, उसे स्वीकार करना यह हिन्दुत्व का एक लक्षण है।

(२) प्राणी के शरीर में एक आत्मा है जो इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख, संवेदना गुण रखने वाला है।

(३) कर्म करने वाला आत्मा है। इससे फल का भोक्ता भी वही है। शरीर, इन्द्रियाँ तो सामान्य कर्म करने के कारण हैं।

(४) जीवात्मा कर्माधीन बार-बार जन्म लेता है और एक जन्म के कर्मफल अगले जन्म तक भी ले जाता है।

(५) कर्म का मापदण्ड है—



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धृतिः,क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ॥ (मनु ६-९२)

(६) जो ऐसा मानता है जैसा इस वेद मंत्र में कहा है—

सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विचिकित्सति ।। (यजुः ४०-६)

(७) आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् ॥

अथवा जो इस व्यवहार को ठीक मानता है ।

(८) परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।

(९) सबसे यथायोग्य व्यवहार करना ।

(१०) गुण, कर्म स्वभाव से अधिकार मानना ।

ये कुछ बौद्धिक मान्यताएं हैं, जो जहां तक ज्ञान जाता है, भारत में रहने वाले समाज को सर्वमान्य रही हैं । यही वेद मत है । यही वैदिक स्मृति, उपनिषदादि ग्रन्थों का मत है । यही पौराणिक हिंदू समाज मानता है । वेदानुयायी, आर्य, भारतीय तथा हिंदू नाम बदलता रहा है । जैसे आत्मा पर शरीर बदलता रहता है । सभ्यता तो मन और शरीर की मान्यताओं का नाम है, बदल जाती रही है, परन्तु आत्मा की उक्त और कदाचित् दो चार और मान्यताएं हैं, जो निरंतर हमारी जाति की मान्यताएं रही हैं ।

हम इसे ही हिन्दुत्व मानते हैं ।

जाति सांस्कृतिक मान्यताओं से बनती है । नाम बदल सकता है । शरीर की भांति सभ्यता भी बदल सकती है । यदि संस्कृति अक्षुण्ण बनी रहे तो जाति जीवित रहती है ।

जाति ही राष्ट्र बन जाती है, जब उसका कोई देश हो और उस देश पर राज्य हो ।

मानव समूह की सांस्कृतिक मान्यताएं राष्ट्र और राज्य होने पर जाति के लक्षण सम्पूर्ण हो जाते हैं । तब इस राष्ट्र में सभ्यताएं अनेक हो सकती हैं । उनके होने से जातीय ऐक्य बना रह सकता है । यह गुण वेद मत, भारतीयता और हिन्दुत्व में आदि काल से रहा है । इसी कारण कहा है—

यूनान मिस्र रोमाँ सब मिट गये जहां से
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी ॥

बात यही है कि हमारी डोर संस्कृति से बंधी है । वह बुद्धि और जीवात्मा से बंधी है और यह अमिट है ।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# हिंदू जाति पर प्रहार

—इन्द्रराज, मंत्री, उ० प्र० आर्य प्र० सभा

आज भारत के अन्दर और बाहर भारत की आत्मा को—वैदिक संस्कृति को पूरी तरह से नष्ट करने के प्रयत्न हो रहे हैं। जातिवाद, दहेजप्रथा, भ्रष्टाचार, हिंसा, छुआछूत, ऊंच-नीच का भेदभाव जहां भारत की स्वतन्त्रता को खोखला कर रहा है वहां विदेशी शक्तियां इसको पैट्रो-डालर के बल पर इस्लामिस्तान या ईसाईस्तान के रूप में बदल देना चाहती हैं। वोट की राजनीति इस भयंकर विनाश को देखकर भी मौन है।

इस समय की सब से भयंकर समस्या धर्मपरिवर्तन है। यद्यपि यह हिन्दू जाति की कमजोरी का ही परिणाम है पुनरपि इस कमजोरी का लाभ उठाकर विदेशियों के संस्कृति और सभ्यता को मिटाने के कुचक्र को सहन नहीं किया जा सकता। तेजी से चारों ओर से हिंदू जाति पर प्रहार हो रहे हैं। (नं० १) नशाखोरी को प्रोत्साहन हिन्दू जाति का विनाश कर रहा है। परिवार नष्ट हो रहे हैं और समाज पथभ्रष्ट हो रहा है।

लेखक

(नं० २) देश में गोवध पहले से अधिक है। गोमांस का निर्यात होता है। भोली भाली गोमाता भूखी - प्यासी हरयाणा से चलकर मद्रास के बूचड़खानों तक पहुंचती



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है और गोमांस अरब देशों को निर्यात होता है। गौ भारतीय संस्कृति का प्रतीक है। गोहत्या राष्ट्रहत्या है।

(नं० ३) देश को एक सूत्र में बांधने वाली राष्ट्रभाषा एवं मातृभाषा हिन्दी का गला दबाया जा रहा है। उत्तर प्रदेश में उर्दू को द्वितीय भाषा का दर्जा देने का घृणित प्रयास चल रहा है। आश्चर्य है कि शासक पार्टी एवं विरोधी पार्टियाँ सब मौन हैं। हिन्दी चिल्ला रही है। उनसे कोई बचाने वाला नहीं है। लगता है द्रौपदी दुर्योधन के दरबार में असहाय अवस्था में चिल्ला रही है और भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य, धृतराष्ट्र आदि सब मौन हैं।

(नं० ४) चलचित्र, रेडियो, टी० वी० में आलिंगन और चुम्बन, अश्लील हाव-भाव और संगीत युवा पीढ़ी को खोखला कर रहे हैं।

(नं० ५) जनसंख्या की वृद्धि को रोकने के बहाने परिवार नियोजन, नसबंदी शिविर हिन्दुओं की जनसंख्या को घटाने का एक घिनौना कुचक्र है। प्रायः नसबन्दी शिविरों में हिन्दू देवियों और पुरुषों की संख्या बहुत अधिक और मुसलमानों और ईसाइयों की संख्या नगण्य है। यह कार्य आंख बन्द करके चल रहा है। जब तक परिवार नियोजन एवं नसबन्दी का कार्य एक राष्ट्रीय नीति नहीं बनती और सब सम्प्रदायों पर समान रूप से लागू नहीं होती, तब तक इसको हिंदुओं के विरुद्ध भारी षड्यंत्र का नाम ही दिया जायेगा।

(नं० ६) धर्म परिवर्तन को रोकना होगा। हिंदू जाति को विशाल होना होगा। जन्म के आधार पर जातपात को मिटाना होगा। शुद्धि का चक्र पुनः चलाना होगा अन्यथा हिंदू नष्ट हो जायेगा। वैदिक संस्कृति समाप्त हो जायेगी। हिंदू अल्पमत में आयेगा और समाप्त होगा तो भारत समाप्त हो जायेगा। स्वतंत्रता नष्ट हो जायेगी। शक्ति के पीछे अन्धानुकरण करने वाली हिंसा भारत की आत्मा को वशीभूत कर देगी। हिंदुओ! उठो। राष्ट्र पर भारी संकट मँडरा रहा है।

---

## भग्न मन्दिर देखकर.....

जिस समय मुसलमानों ने काली मां के मन्दिर को तोड़ा था, उस समय हिन्दू क्या अपने बाहुबल से उन्हें रोक न सकते थे? यदि मैं उस समय उपस्थित होता तो प्राणों की बाजी लगाकर भी माता के मन्दिर की रक्षा करता।

—स्वामी विवेकानन्द

---



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# हिन्दू राष्ट्र की मांग करो

—महाशय प्रेमप्रकाश,
प्रधान, विश्व हिन्दू परिषद्, जिला सगरूर

हिन्दू के लिए प्रतिदिन उदय होने वाला सूर्य एक पर्व को लेकर उदय होता है। चाहे वह प्रतिपदा हो, द्वितीया हो, चाहे तृतीया, अमावस्या हो, चाहे पूर्णिमा। पर्व से उसे प्रसन्नता, उत्साह और पराक्रम प्राप्त होता है। इसी कारण यह दिन हो चाहे "नव रात्र", यह ओज-तेज को लेता चला जाता है। इसी लिये यह भक्तों का अनुयायी बनता है। ऋषि, महर्षि, ब्रह्मर्षि और देवर्षियों से प्रेरणा लेता है, परन्तु उनकी पूजा नहीं करता। यह तो उस राम की पूजा करता है जो धनुषधारी है। यह तो उस कृष्ण की पूजा करता है जो "सुदर्शन चक्र" धारी है। यह तो उस हनुमान् की पूजा करता है जो गदाधारी है। यह तो उस "शिव" की पूजा करता है जो त्रिशूलधारी है। यह तो उस दुर्गा की पूजा करता है, जिसके हाथों में शक्ति चमक रही है। हमारे कहने का भाव यह है कि हम शक्ति की पूजा करते हैं। शक्ति को भक्ति से अलग नहीं किया जा सकता। भक्ति है ही शक्ति प्राप्त करने के लिये, और शक्ति है अखिल मानवमण्डल के कल्याण के लिए। इसी लिये भगवान् कृष्ण गीता में कहते हैं—

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अर्थात् मैं अपनी शक्ति का उपयोग हो चाहे प्रयोग, श्रेष्ठ व्यक्तियों के रक्षण, पोषण अर्थात् कल्याण में लगाऊं और दुष्ट व्यक्तियों के नाश में। चाहे वह कंस हो या कर्ण, वाली हो या रावण, मुगल हो या अंग्रेज जो किसी प्रकार से व्यक्तियों को—परिवार को, समाज को और राष्ट्र को हानि पहुंचाता है, उसे नष्ट करना, एक ऐतिहासिक आवश्यकता है। इसीलिए प्रार्थना आती है—

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानां प्राणि मार्तिनाशनम्।

प्रभो! मैं आप से राज्य की कामना नहीं करता, मैं आपसे स्वर्ग नहीं मांगता और न ही मैं इस जन्म के बाद मोक्ष की मांग करता हूं। प्रभो! एक ही इच्छा है कि जो प्राणी दुःखों से दुःखी हैं, उनके दुःखों को नष्ट कर दूं।

आज व्यक्ति व्यक्ति पर, परिवार परिवार पर, दुःखों की घनघोर घटायें छाई हुई हैं। छोटा हो या बड़ा, धनी हो या निर्धन, मूर्ख हो या विद्वान्—सभी दुःखों से दुःखी हैं। कारण सामाजिक बुराइयां। आलस्य, अज्ञान और अन्ध-विश्वास के कारण ही नहीं, अपितु देश के अन्दर हो रही खुदा और ईमान के नाम पर "धर्मपरिवर्तन" की घटनायें। ये घटनायें साधारण नहीं, समूचे समाज एवं राष्ट्र को चुनौती हैं। कोई है माई का लाल, जो इसे स्वीकार करे। मुझे महाराणा प्रताप और छत्रपति शिवाजी याद आ रहे हैं, जिन्होंने गीता के शब्दों के अनुसार "युद्धाय कृतनिश्चयः" का शंखनाद किया था और सिंहगढ़ के किले पर विजय प्राप्त करके हिन्दू ध्वज लहरा दिया था।

हिन्दुओं ने जब भी शंखनाद किया, इनके आगे कोई भी खड़ा नहीं रह सका। इन्हें कोई धर्म से डिगा न सका। हिन्दू कभी मरता ही नहीं। गीता ने स्पष्ट कहा है—

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देहि॥

अर्थात् जैसे मनुष्य फटे पुराने कपड़े फैंक कर नये वस्त्र धारण करता है, वैसे ही जीव पुराने शरीर को छोड़कर नया शरीर धारण करता है। यह भी कहा गया है—

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥ गीता



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू के पास मनोबल, आत्मबल, बुद्धिबल और धन बल की कमी नहीं। कमी है तो संगठन भावना की। वह जागृत हो रही है। हिन्दुओं के कुछ और जागृत होने पर यहां करोड़ों रुपये दैनिक इस्लामिस्तान और ईसाई-स्तान बनाने के लिये आने पर भी सभी स्वप्न बेकार हो जायेंगे। इतिहास साक्षी है कि मुस्लिम मनोवृत्ति ने लोगों को जब भी जीता, "त्याग से नहीं तलवार से जीता है।" और इस समय जो षड्यन्त्र रचे जा रहे हैं, उनमें लोभ और भय काम कर रहा है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि मीनाक्षीपुरम् में जो हिन्दू मुसलमान बनाये गये, उनके लिये अलग मस्जिद बनाई जा रही है। इससे स्पष्ट है कि वे वर्गवाद और जातिवाद के पालक हैं।

परन्तु अब हमें संभलना चाहिये। यदि हम आज से १२५ वर्ष पूर्व आर्य-समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द की बात मान लेते तो आज छुआछूत का नाम भी न होता। यदि स्वामी श्रद्धानन्द जी का शुद्धि आन्दोलन अपना लेते तो वातावरण ही और होता। यदि अमर शहीद पं० लेखराम जी की प्रेरणा को अनुसार भाषण और लेखन का कार्य चालू रखते तो ये घटनायें हो ही नहीं सकती थीं। इन घटनाओं ने तो क्या घटना था, पाकिस्तान भी न बनता। परन्तु अब मौत भेद की दीवारें धर्म और ईश्वर के नाम पर खड़ी की गई हैं, जबकि धर्म अर-ईश्वर सत्य, प्रेम और न्याय का मार्ग बताते हैं, परन्तु मानव और मानव के बीच में ऐसी दीवारें खड़ी कर दी गई हैं या खाइयां खोद दी गई हैं, जिनके कारण आदमी का आदमी के साथ मिलना कठिन ही नहीं, असम्भव भी हो गया है।

मानव जब उठा, वह वायु को धकेल कर आगे बढ़ा, आकाश को चीरकर ऊपर चढ़ा। भगवान् राम जब लंका में जाने लगे तो समुद्र को पांव तले रौंद दिया गया। गीता में जो विराट् रूप दिखाया गया है, उस सन्दर्भ में भगवान् कृष्ण कहते हैं—दिन में मैं सूर्य हूं, रात्रि को चन्द्रमा हूं, पर्वतों में "सुमेरु पर्वत" हूं, नदियों में गंगा हूं इत्यादि। यह जो विराट् रूप दिखाया गया है, यह भगवान् की शक्तियों का दिग्दर्शन नहीं है, मानव की शक्तियों का प्रदर्शन है। मनुष्य समुद्र में जलयान है, आकाश में वायुयान है, चन्द्रमा में राकेट है। कोई भी ऐसा कार्य नहीं, जो मानव न कर सके। क्या वीर सावरकर ने समुद्र पार नहीं किया? नेता जी ने दूसरे देश में जाकर सेना तैयार नहीं की? असम्भव शब्द तो मूर्खों और कायरों का है। मर्द वे हैं जो जमाने को बदल देते हैं।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू मनोबल—आत्मबल बहुत ऊंचा है। यह युग बदल सकता ही नहीं, बदलेगा।

हिन्दू की परम्परायें और मान्यतायें संकीर्ण नहीं, जो राम को माने वह हिन्दू, जो राम को न माने वह भी हिन्दू। साकार माने वह हिन्दू और जो निराकार को माने वह भी हिन्दू। जो ईश्वर को न माने वह भी हिन्दू। हम तो यह मानते हैं कि जैसे रूस के रहने वाले रूसी, जापान में रहने वाले जापानी, उसी प्रकार हिन्दुस्तान में रहने वाले सभी हिन्दू। सरकार से कई सम्मेलनों में मांग की गई है कि हिन्दू कोड बिल का नाम बदल कर इण्डियन कोड बिल किया जाये और यह भारत के प्रत्येक नागरिक पर लागू हो। जो इस बिल को स्वीकार न करे, उसे भारत की नागरिकता से वंचित किया जाये।

हिन्दुओ ! जागो ! जागो !! जागो !!! और ऐसी जागृति पैदा कर दो कि हर व्यक्ति समाज और राष्ट्र के लिये खड़ा हो जाये। उठो ! बढ़ो और चढ़ो !! फिर सारी हिन्दू जाति एक स्वर में हिन्दू राष्ट्र की मांग करे।

जहरीली फिरकापरस्त विचारधारा वाले

# अजीम अख्तर

प्रेस अधिकारी, दिल्ली प्रशासन को तुरन्त पद से हटाने को देश की हिन्दू जनता केन्द्र से प्रबल मांग करती है।

हिन्दू समाचारपत्रों को तंग करने वाला
पक्षपाती अधिकारी हिन्दू नहीं सहेंगे

अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति
१५६७ हरध्यानसिंह मार्ग, नई दिल्ली-५

यह मांग आप पत्र द्वारा प्रधानमंत्री व गृहमंत्री को भेजें।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

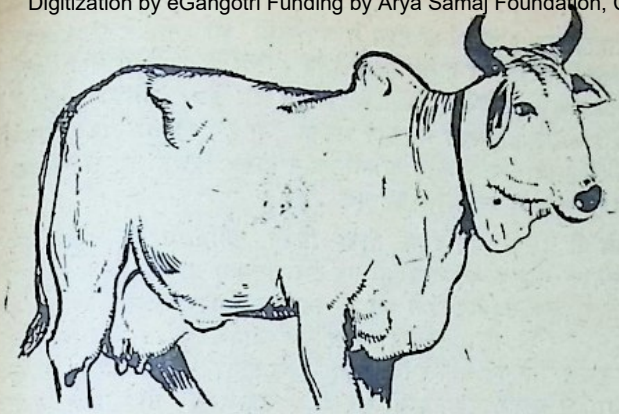

# गोरक्षा—एक राष्ट्रीय आवश्यकता

—बृजकिशोर 'अश्क'

स्वतन्त्रता प्राप्ति के लगभग पैंतीस वर्ष बाद भी हिन्दुस्तान जैसे उदात्त, सहिष्णु, गौरवशाली एवं विख्यात प्राचीन संस्कृति वाले देश में गोहत्या का पूर्णतः प्रतिबन्धित न होना और इसके लिये देशवासियों को अन्ततः सत्याग्रह करने को बाध्य होना अपने आप में एक प्रश्न ही नहीं, वरन् चिन्ता एवं आश्चर्य का विषय है। जिस देश की संस्कृति के श्रेष्ठ संवाहकों ने न केवल श्रद्धा के अतिरेकवश अपितु गाय की उपयोगिता को वैज्ञानिक एवं आर्थिक कसौटी पर कस कर "गावो विश्वस्य मातरः" अर्थात् गाय प्राणिमात्र की रक्षा करने वाली (माता) है, कहा, वहीं आज गोवंश की समाप्ति की स्थिति हृदय-विदारक नहीं तो और क्या है?

प्रारम्भ से ही भारत शान्ति का संदेशवाहक, शक्ति का स्रोत, ज्ञान का अक्षय भंडार एवं विश्व का गुरु रहने के साथ ही एक कृषिप्रधान देश रहा है। कृषि का मुख्य आधार भारत जैसे प्रकृति वाले देश में गाय ही है। गाय की इस उपयोगिता को न समझ कर प्रगतिशील होने का दिखावा करने वाले भारतवासी भौतिकता एवं पाश्चात्य सभ्यता के खोखलेपन का अंधानुकरण कर रहे हैं। स्वयं पर गर्व कर रहे हैं। क्रोम, क्राउन, काफ, गोसल्ला (चमड़े) हेतु मुंहमांगी कीमत दे रहे हैं—यह जानते हुए भी कि उक्त किस्म के चमड़ों की प्राप्ति निरीह पशुओं की हत्या जीवित ही तड़पा-तड़पा कर की जाती है। आज दुधारू एवं युवा गाय, गर्भवती गाय, युवा बछड़े एवं गर्भस्थ बछड़ों की भी हत्या मांस एवं चमड़े के व्यापार हेतु धड़ल्ले से जारी है और मानवता एवं दया की बात करने वाले लोग मौन-मूक दर्शक बने बैठे हैं।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गोहत्या पर प्रतिबन्ध के प्रश्न ने जब कभी भी हवा से उतर कर जन-मानस को झिझोड़ने का प्रयास किया, क्षुद्र स्वार्थी नेताओं ने थोक वोट पर निगाह जमाकर इसे वर्ग एवं धर्म से जोड़ने की बेजा कोशिशें कीं। इसी कारण आज तक यह प्रश्न अधर में लटका हुआ है। गोहत्या पर प्रतिबन्ध का प्रश्न धार्मिक, जातीय अथवा राजनैतिक न होकर विशुद्ध रूप से नैतिक एवं राष्ट्रीय है। इसका प्रबल आर्थिक पक्ष भी है।

भले ही किसी वर्गविशेष द्वारा किसी वर्गविशेष के आदेश पर या नियमानुसार गोहत्या की जाती हो एवं उसे मान्यता प्राप्त हो, परन्तु उस वर्ग विशेष के मौलिक उद्घोषकों ने इसे न सिर्फ अस्वीकार किया बल्कि इसकी मनाही भी कर दी थी। 'तनबीहुल गोफेलीन' नामक पुस्तक के पृष्ठ ३३ पर भले ही मुसलमानों को आदेश दिया गया है कि 'कुर्बानी करने का सवाब अल्लाह पाक देता है। खस्सी, मेंढ़ा, दुम्बा कुर्बानी के जानवर हैं। जो लोग गाय या ऊँट की कुर्बानी करते हैं उनको सात कुर्बानी का सवाब मिलता है।" परन्तु इस्लाम प्रवर्तक मुहम्मद साहब ने कभी गाय की कुर्बानी नहीं की और आज भी मुसलमानों के पवित्र स्थल मक्के में गाय की कुर्बानी नहीं होती।

कुरान शरीफ के सूर-ए-हज में लिखा है 'हरगिज नहीं पहुंचेंगे अल्लाह के पास उसके गोश्त और खून। हाँ, पहुंचती है उसके पास तेरी परहेजगारी।" पैगम्बर मुहम्मद ने "नाशियात हादी" नामक पुस्तक में लिखा है कि "गाय का घी, दुग्ध तुम्हारी तन्दुरुस्ती बनाने वाला और उसका गोश्त नुकसानदेह है।" इतिहास के चन्द पृष्ठ इस बात की गवाही देने को साबूत बच गये हैं कि मुसलमान बादशाह जहाँगीर, शाहजहाँ, मुहम्मदशाह तुगलक, नसरुद्दीन खुसरो, बाबर, हुमायूं एवं गयासुद्दीन आदि ने अपने-अपने शासनकाल में न सिर्फ गो-हत्या पर रोक लगा दी थी, अपितु ऐसे अपराधी के लिये कड़े दण्ड की भी व्यवस्था की थी। बाबर ने हुमायूं को लिखी गई वसीयत में अन्य सभी बातों के साथ यह भी स्पष्ट लिखा था कि "गाय की कुर्बानी विशेष रूप से बन्द कर दो।"

ईसाइयों के धर्मग्रन्थ बाइबल में वृषभ को देवता माना गया है। ईसामसीह ने स्पष्ट कहा है "तू किसी को मत मार, तू मेरे समीप पवित्र होकर रह, जंगलों के प्राणियों का वध करके उनका मांस मत खा।"

सनातन वैदिक धर्म ने तो प्रारम्भ से ही गाय के उपयोग एवं महत्त्व को समझा और उससे भरपूर लाभ भी उठाते रहे। उस परम्परा में विश्वास रखने वाले आज भी गाय को माता कहकर सम्बोधित करते हैं। प्राचीन ऋषियों से लेकर राम-कृष्ण चन्द्रगुप्त, चन्द्रसेन, वीरभद्र, भोज, विक्रमादित्य एवं दलीप आदि समस्त भारतीय संस्कृति के पोषकों ने गो-संवर्धन हेतु आजन्म



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रयास किया। वेदव्यास जी ने लिखा है कि "प्राचीन हिन्दू राजा युधिष्ठिर की गोशाला में अठारह लाख गौवें रहती थीं। मेगास्थनीज, फाह्यान, मार्कोपोलो, ह्वेनसांग आदि विदेशी यात्रियों ने लिखा कि हाथी जितने बड़े एवं घोड़े से भी तीव्रगामी वृषभ भारतवर्ष में पाये जाते थे। यजुर्वेद में भी कहा है 'दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वान्" अर्थात दूध से वसुधा को सिंचित करने वाली गायें और विशालकाय बैल हमारी निधि हैं। प्राचीन भारत में गाय की व्यापकता एवं उपयोगिता का संकेत गर्ग संहिता, गोलोक खण्ड के अध्याय ४ में मिलता है, जिसमें लिखा है—

"नन्दः प्रोक्तः स गोपालैर्नवलक्षगवां पतिः,
उपनन्दश्च कथितः पञ्चलक्षगवां पतिः,
वृषभानुः स उक्तो यो दशलक्षगवां पतिः
गवां कोटिर्गृहे यस्य नन्दराजः स एव हि।"

अर्थात् 'पांच लाख गायों को रखने वाला गोपाल उपनन्द, नौ लाख गायों को रखने वाला नन्द, दस लाख गायों को रखने वाला वृषभानु, तथा एक करोड़ गायों को रखने वाला नन्दराज कहलाता है।" इससे स्पष्ट होता है कि प्राचीन भारत में दूध-दही की नदियां सचमुच कैसे और क्यों बहती थीं।

गाय के प्रति हिन्दुओं एवं प्राचीन भारतीयों के अनुराग का कारण उसकी उपयोगिता का आर्थिक पहलू भी है। यहाँ उस दिशा में भी दृष्टिपात करें।

प्रसिद्ध अमरीकी कृषि विशेषज्ञ श्री इक्लसन ने अपनी पुस्तक "दुधारू पशु और दुग्ध उत्पादन" में स्पष्ट लिखा है कि "तीन करोड़ रुपये से अधिक मूल्य की खाद प्रतिदिन भारत की गायों के मूत्र से ही प्राप्त हो सकती है। गाय के मल एवं मूत्र में भूमि को उपजाऊ बनाने वाले पदार्थ प्रचुर मात्रा में होते हैं।" उनके इस कथन की भारत के भूतपूर्व पशुविशेषज्ञ सर अल्बर्ट हर्बर्ट की पुस्तक 'एग्रीकल्चरल टेस्टामेन्ट' की उन पंक्तियों से हो जाती है जिन में कहा गया है कि 'रासायनिक खाद कृषि योग्य भूमि को जीवांश (ह्यूमंस) प्रदान नहीं कर पाते, गोबर तथा हरी खाद ही प्राकृतिक खाद है।

यहां यह उल्लेखनीय है कि अमरीका जैसे साधनसम्पन्न देश में भी एक बड़ी मात्रा (लगभग ५३ प्रतिशत) में भूमि की उर्वरा शक्ति में ह्रास हो गया है। भारत के कृषक भी इस बात से इनकार नहीं करते कि भले ही रासायनिक खाद तत्काल और प्रत्यक्ष रूप से पैदावार बढ़ा देती है, परन्तु अन्तराल में परोक्ष रूप से उससे भूमि की उर्वरा शक्ति ही कम होती है। यही कारण है कि आज भारत के हर क्षेत्र में पशुओं के खाद की माँग बढ़ती जा रही है और आज भी उसे श्रेष्ठ माना जाता है। गोवंश के नष्ट होने से न सिर्फ स्वास्थ्य-


Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वर्द्धक दूध, दही' घी आदि अपितु धनवर्द्धक फसलों में भी कमी आ गई है। इस कारण प्राकृतिक खाद नहीं मिल रहा और रासायनिक खादों एवं तरह-तरह के कीटनाशकों के निरन्तर नस्ल-दर-नस्ल प्रयोग से फसल (अन्न) स्वादहीन एवं अस्वास्थ्यकर होती जा रही है।

डा० राजेन्द्रप्रसाद ने "हमें ट्रैक्टर नहीं चाहिये" शीर्षक से एक लेख लिखा था। उक्त लेख में स्पष्ट किया गया था कि एक ट्रैक्टर भले ही तूफानी गति से घन्टों में कई एकड़ भूमि को जोत दे, परन्तु बैलों द्वारा जुताई धीरे-धीरे होती है जिससे मिट्टी को पर्याप्त मात्रा में सूरज की गर्मी एवं हवा का सम्पर्क मिलता है। इसके साथ ही पशुओं के मल-मूत्र से भी मिट्टी की उर्वरा शक्ति प्राकृतिक रूप से बढ़ती है। दूसरे पहलू पर गौर करें तो एक ट्रैक्टर के ईंधन से कम लागत में ही एक ट्रैक्टर से ज्यादा जुताई कर सकते हैं, बिना प्रदूषण फैलाये। इन बैलों की प्राप्ति का मुख्य स्रोत गाय ही है, जो बैल के साथ-साथ हमें दूध भी पीने को देती है।

श्री डी० एच० जानी ने अपनी पुस्तक "रोमांस आफ दि काऊ" में लिखा है "एक गाय अपने १९½ वर्ष के जीवन काल में १५४७४९ पौंड दूध तथा सात बछड़े एवं दस बछियाँ देती है। १० वर्ष तक वह हर वर्ष ९५४४ पौंड दूध देती रही, साथ में लगभग २९५ दिनों तक वह दूध देती रही। सारे मूल्य का अनुमान किया जाये तो यह ९७३६ रुपये का दूध, २७०० रुपये के बछड़े और १३६५ रु. का खाद—कुल मिलाकर लगभग १३००० रुपए हुए। गाय से बछड़ा और बछड़े से पुनः गाय एवं बैल उत्पन्न होने, दूध एवं घी मिलने तथा प्राकृतिक खाद प्राप्त होने का क्रम रुकता नहीं।

अपने देश में एक गैर-सरकारी आंकड़े के अनुसार लगभग एक करोड़ सत्तर लाख बैलगाड़ियां हैं, जिनसे वस्तुओं की ढुलाई की जाती है। इन गाड़ियों पर लदे माल को बैल ही खींचकर यत्र-तत्र पहुंचाते हैं और इन बैल-गाड़ियों से लगभग दो करोड़ लोगों को आजीविका की प्राप्ति होती है। इस तरह आवश्यक वस्तुओं को स्थानान्तरित करने में जहां यन्त्र की व्यवस्था विफल है, उन दुर्गम एवं पथरीली राहों पर बैलगाड़ियां कार्यरत हैं। यह गाय की ही हम पर कृपा है।

उत्तर प्रदेश में एक वर्ष में लगभग अठारह करोड़ टन गोबर उत्पन्न होता है, जिसमें अधिकांश ईंधन के रूप में जला दिया जाता है। अपने देश में औसतन ५०० आबादी वाला एक गाँव लगभग सात हजार टन गोबर जलावन के काम में लाता है। इस तरह अगर गोबर की जगह लकड़ी की आवश्यकता पड़े तो इसके लिये भारतीय कृषि अनुसंधान शाला के भूतपूर्व निदेशक डा० पाल के अनुसार 'प्रतिवर्ष लगभग पचास एकड़ भूमि पर वृक्षा-


Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
रोपण करने होंगे और पड़ लगने के सात वर्ष बाद उतनी लकड़ी उत्पन्न होगी, जो हमें गाय के गोबर मात्र से मिलती है।"

वैज्ञानिकों का दावा है कि एक टन सूखे गोबर में १५५ पौंड अमोनियम सल्फेट होता है। एक पशु अगर प्रतिदिन चार पौंड भी गोबर दे तो प्रतिदिन लगभग एक करोड़ रुपये का तथा प्रतिवर्ष लगभग तीन अरब पैंसठ करोड़ रुपये का प्राकृतिक खाद हमें बिना मूल्य मिल जाया करता है। ८००० पौंड गो-मूत्र में उतना ही नाइट्रोजन होता है जितना १८००० पौंड गोबर में।

"रोमांस आफ दि काऊ" में श्री डी० एच० जानी ने लिखा है "एक वर्ष में पुष्ट खाद द्वारा धरती से २२५ करोड़ रुपये की और आय बढ़ जायेगी। वर्तमान समय में ऊर्जा की कमी को ध्यान में रखकर गोबर गैस प्लांट द्वारा कुछ हद तक ऊर्जा की आवश्यकता पूर्ण की जा सकती है परन्तु यह तभी सम्भव है जब गोबर देने वाला गोवंश सही-सलामत रहे। अपनी पुस्तक "गो-करुणा निधि" में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने लिखा है "एक गाय के जन्म भर के दूध से २५७४० मनुष्य पूरा पेट भर सकते हैं। एक गाय के उत्पन्न बैलों की जोड़ी से ४८०० मन अनाज उत्पन्न हो सकता है जिससे २५६०० मनुष्य एक बार में तृप्त हो सकते हैं। जबकि एक गाय के मांस से केवल ८० मांसाहारी ही एक बार में तृप्त हो सकते हैं।"

गोवंश की रक्षा हेतु राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी जीवन पर्यन्त प्रयास किया परन्तु मुट्ठी भर व्यक्तियों की साजिश के समक्ष उनकी भी एक न चली। एफ० के० दुर्रानी ने अपनी पुस्तक "मीनिंग आफ पाकिस्तान" में लिखा है कि ".....गांधी अनेक बार घोषणा कर चुके हैं कि स्वराज्य अगर गाय की कुर्बानी न रोक सका तो उसका कोई मूल्य नहीं।" परन्तु गोमांस एवं गोचर्म हेतु निरन्तर गोहत्या होती रही है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के १५ वर्ष पश्चात् देश में लगभग ३० करोड़ रुपये का चमड़ा एवं गोमांस निर्यात किया गया था। सन् १९७०-७२ में यह मात्रा बढ़कर ७० करोड़ और १९७६-७७ में २७५ करोड़ था १९७७-७८ में ३५० करोड़ के लगभग तक पहुंच गई। इसी रफ्तार से आज भी गोमांस एवं गोचर्म का निर्यात निरन्तर जारी है। इस कार्य के लिये सबल एवं दुधारू ही नहीं गर्भवती गायों की भी हत्या की जाती है। गोसल्ला की प्राप्ति हेतु जीवित गाय के गर्भस्थ बछड़े को निकाल कर तड़पते हुए की स्थिति में ही जबरन चमड़ा उतार लिया जाता है। इस कार्य के लिए कितनी गोहत्या होती है, इसका अनुमान सन् १९०७ में हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस सर जान वुडरफ के कथनानुसार लगाया जा सकता है। उन के अनुसार गौओं की हत्या भारतवर्ष में प्रतिवर्ष लगभग एक करोड़ विभिन्न प्रयोजनार्थ (गोमांस एवं गोचर्म) की जाती है। उस हिसाब से वर्तमान समय का अनुपात निकालने का साहस नहीं होता।


Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गोहत्या पर प्रतिबन्ध हेतु सन् १९९२ में जबरदस्त आंदोलन हुआ। इसके बाद सन् १९१८ में तथा १९२७ ई० में भी गोवंश की रक्षा हेतु सत्याग्रह एवं अन्य प्रयत्न हुए। उक्त आंदोलनों में आर्यसमाज के साथ अन्य कई हिन्दूवादी संगठन भी शामिल हुए। गोहत्या पर प्रतिबन्ध हेतु राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भी कम प्रयास नहीं किया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तत्कालीन सरसघचालक श्री गुरुजी ने गोहत्या निरोध हेतु प्रबल जनांदोलन का नेतृत्व किया और स्वर्गीय राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद को लगभग दो करोड़ व्यक्तियों के हस्ताक्षरों से युक्त ज्ञापन ७ दिसम्बर सन् १९५२ को दिया। इन सभी आंदोलनों एवं सत्याग्रहों के बावजूद गोहत्या के जारी रहने का भी कुछ कारण जरूर रहा है।

पहला कारण है वह सड़ी हुई मानसिकता, जिसके समक्ष राष्ट्रीय सांस्कृतिक भावनाओं एवं सार्वजनिक हितों को स्थान नहीं। जहां व्यक्तिगत प्रसिद्धि एवं वर्गीय सम्मान की प्राप्ति हेतु वह सब कुछ किया जाता है जो नहीं करना चाहिए और वह कुछ नहीं किया जाता है जिसे करना आवश्यक होता है। उस तरह की मानसिकता आज भी देश मे विद्यमान है और उसी मानसिकता से साम्प्रदायिक भावना एवं धार्मिक कट्टरता से मजबूर होकर अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के प्रथम अंग्रेज प्रिंसपल श्री बेक ने सन् १८८९ में गोहत्या जारी रखने हेतु (उस पर प्रतिबन्ध न लगाने हेतु) लगभग २०७३५ हस्ताक्षर कराये।

गांधी जी को राष्ट्रपिता मानने वाले या उनके आदर्शों को अपना संबल बनाने वाले लोगों को जानना चाहिए कि गांधी ने मुहम्मद अली से खिलाफत में सहयोग इसलिए किया था कि आगे चलकर अपने देश में गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगे। 'यंग इण्डिया" २९ जनवरी १९२५ के अंक में गांधी जी ने लिखा—"Cow slaughter and man slaughter are in my opinion the two sides of the same coin" अर्थात् "गोवध और मनुष्य वध मेरी सम्मति में एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।" इसी बात को महर्षि दयानन्द ने दूसरे ढंग से कहा था "गो आदि पशुओं के नाश से राजा एव प्रजा दोनों का नाश हो जाता है।" निश्चित ही ये उद्गार गाय के साथ हमारी शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति के सम्बन्ध पर नजर रखकर प्रकट किए गए।

"कैटल प्रिजर्वेशन एण्ड डेवलपमेन्ट कमिटी" ने सन् १९४९ में अपने सर्वेक्षण के बाद कहा कि जब तक सम्पूर्ण भारत में गोवध बन्द नहीं होगा, भारत की आत्मा को शान्ति नहीं मिलेगी।" पंजाबकेसरी लाला लाजपतराय ने कहा "गोरक्षा इस देश के नर-नारी– सबके लिये बड़ा भारी कर्त्तव्य है।"

गो-रक्षा का प्रश्न साम्प्रदायिक नहीं और न ही इसका किसी धर्मविशेष से सम्बन्ध है। इसका सम्बन्ध राष्ट्र रक्षा से है। गाय के दूध आदि का उपभोग वर्गों एवं जातियों के लोग बिना किसी भेदभाव के करते हैं।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गाय के दूध का कई रूपों में उपयोग करके हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिख आदि सभी स्वास्थ्यलाभ करते हैं। आयुर्वेद के ग्रन्थ विभिन्न रोगों की चिकित्सा में गाय के दूध, दही, मट्ठा, मूत्रादि के उपयोग की घोषणा करते हैं।

यथा सुराणाममृतं हिताय तथा नराणां भुवि तक्रमाहुः।

तपेदिक के रोगी के लिए काली गाय का दूध, मूत्राशय सम्बन्धी विकार वाले के लिए लोहित वर्ण वाली गाय का दूध एवं कुष्ठ रोगी के लिए चितकबरे रंग की गाय का दूध आयुर्वेद के ग्रन्थों के अनुसार औषधितुल्य होता है। गाय के गोबर से भूमि को लीपकर पवित्र करने की भारतीय पद्धति (हिन्दू पद्धति) गोबर के कीटाणुनाशक गुण की ओर संकेत करती है। इस तरह गाय के दूध एवं इसके द्वारा निर्मित विभिन्न पौष्टिक पदार्थ तथा बछड़े की ऊर्जा (कार्य करने की शक्ति), मलमूत्र द्वारा प्राप्त गैस एवं जलावन तथा प्राकृतिक खाद आदि सिर्फ थोड़े पुआल एवं घास से प्राप्त होते हैं। मरने के बाद इसके चमड़े, हड्डी एवं सींग आदि का प्रयोग होता है। फिर इसे जबरन मौत के घाट उतारने में कौन-सी बुद्धिमत्ता है।

जहाँ गाय द्वारा प्राप्त खाद्य पदार्थों से आरोग्य प्राप्त किया जाता है, वहीं कई वैज्ञानिकों एवं हकीमों ने गो-मांस को रोगोत्पादक माना है। प्रसिद्ध हकीम इब्राहीम के अनुसार गाय का गोश्त जुकाम, कोढ़, दिमागी रोग, राजयक्ष्मा एवं अन्य कई यौन रोग उत्पन्न करने वाला है। विषयान्तर होने के भय से यहां गो-मांस के दूषित प्रभाव पर विशेष प्रकाश नहीं डाला जा रहा है।

इस तरह गाय एवं उसके सम्पूर्ण वंश द्वारा निरन्तर प्राप्त हो रहे आर्थिक एवं सामाजिक लाभों पर दृष्टिपात करें और मानवीय मूल्यों की परिधि में परखें तो यह स्पष्ट भान होगा कि गोरक्षा ही नहीं, सम्पूर्ण गोवंश की रक्षा युद्ध स्तर पर करने की आवश्यकता है। निरन्तर बढ़ती हुई जनसंख्या, भूख, बेरोजगारी, बीमारी, ऊर्जा का अभाव आदि की स्थिति पर गोरक्षा का अनुकूल प्रभाव पड़ेगा। योजनाओं में गोवंश के संवर्धन हेतु प्रस्ताव रखकर इसे राष्ट्रीय समस्या समझकर, मिलजुल कर खुले दिल से रोकने की आवश्यकता है। हमारी शारीरिक आध्यात्मिक एवं सामाजिक उन्नति एवं राष्ट्ररक्षा हेतु गोहत्या का पूर्णतः बन्द होना आवश्यक है। जितना सरकारी पैसा ऊन-जलूल कार्यों में व्यय कर दिया जाता है अगर उसका एक छोटा-सा हिस्सा भी गो-संवर्धन पर खर्च किया जाये तो इससे पूरा देश विभिन्न मोर्चों पर लाभान्वित हो सकता है।

गांधी जी ने कहा था "गोहत्या बन्दी स्वराज्य से भी बढ़कर है।"
प्रसिद्ध कवि चकवस्त ने कहा है—

साहबे दिल तुझे तसवीरे वफा कहते हैं,
माँ कहते हैं तुझे हिन्दू तो बजा कहते हैं।


Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# भारत को हिन्दू राज्य घोषित करने के लाभ

—प्रो० बलराज मधोक

यह हर्ष का विषय है कि भारत को हिन्दू राष्ट्र मानने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, आर्यसमाज, विश्व हिन्दू परिषद् इत्यादि अनेक सामाजिक और संस्कृतिक संगठन अब खुलकर हिन्दुस्तान को हिन्दू राष्ट्र कहने लगे हैं। भारत हिन्दू राष्ट्र है। यह एक ऐतिहासिक तथ्य और वास्तविकता है। जो लोग हिन्दुस्तान को हिन्दू राष्ट्र और अपने आप को हिन्दू राष्ट्र का अंग मानने को तैयार नहीं थे, वे १९४७ में भारत के बड़े भूभाग को भारत से काटने और उसे अपना अलग इस्लामी राष्ट्र बनाने में सफल हो गये। इसलिए अब जो खण्डित भारत बचा है, उसे हिन्दू राष्ट्र न मानना न तर्कसंगत है और न तथ्यों के अनुकूल।

परन्तु यह खण्डित हिन्दुस्तान हिन्दू राष्ट्र के रूप में कायम रहेगा या इसके और टुकड़े होंगे या यह भी इस्लामी राष्ट्र बन जायेगा, यह एक प्रश्न है। पाकिस्तान का शासक वर्ग तो १९४७ में ही "हंस के लिया था पाकिस्तान, लड़ के लेंगे हिन्दुस्तान" की बात करने लग पड़ा था। गत ३५ वर्ष के और विशेष रूप में पिछले दशक के राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय घटनाचक्र ने पाकिस्तान और हिन्दुस्तान में रहने वाले उसके एजेन्टों के हौसले बहुत बढ़ा दिये हैं। अब वे खुलकर खण्डित हिन्दुस्तान का इस्लामीकरण करने और इसे एक बड़ा पाकिस्तान बनाने की बात करने लगे हैं। वे देश में १९४७ के पूर्व जैसे हालात फिर पैदा करने में भी सफल होते जा रहे हैं। अब उनके पीछे



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

न केवल पाकिस्तान और बंगलादेश की शह है अपितु सारे इस्लामी जगत्, विशेष रूप से इस्लामी अरब राज्यों का समर्थन और आर्थिक सहायता भी उन्हें प्राप्त है। इस लिए हिन्दुस्तान की एकता, सुरक्षा और हिन्दू पहचान के लिये एक भयानक खतरा पैदा हो गया है। अब यह स्पष्ट दिखने लगा है कि भारत को हिन्दू राष्ट्र के रूप में कायम रखने के लिए इसे हिन्दू राज्य घोषित करना अनिवार्य है।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि हिन्दू राज्य इस्लामी राज्यों की तरह का मज़हबी राज्य नहीं हो सकता। इसमें मुस्लिम और अल्पसंख्यक पूर्णतः सुरक्षित होंगे। इस मामले में हिन्दुस्तान के हिन्दू राज्य घोषित होने से अल्पसंख्यकों की स्थिति पर कोई बुरा असर नहीं पड़ेगा। उनकी हालत इस्लामी देशों के गैर-मुस्लिम अल्पसंख्यकों की हालत के मुकाबले में बेहतर रहेगी। परन्तु हिन्दू राज्य घोषित होने से कुछ महत्त्वपूर्ण लाभ होंगे। उन विधेयात्मक लाभों को समझना आवश्यक है।

भारत को हिन्दू राज्य घोषित करने का पहला लाभ यह होगा कि देश में साम्प्रदापिक दंगे बन्द हो जायेंगे। संसार भर का इतिहास इस बात का साक्षी है कि साम्प्रदायिक दंगे और युद्ध सैमिटिक मज़हबों की अनुदारता, असहिष्णुता और अपने से भिन्न लोगों को काफिर कहकर उन्हें और उनके मज़हब को नष्ट करने की भावना के कारण होते हैं। भारतीय उद्गम और हिन्दू संगम के अन्तर्गत आने वाले पन्थों के अनुयायी सभी पन्थों और मज़हब के प्रति सद्भाव रखते हैं। वे मतभिन्नता के कारण किसी को मारने या दंगा करने की बात सोच भी नहीं सकते। यही कारण है कि हिन्दुस्तान में साम्प्रदायिक दंगे केवल उन्हीं स्थानों पर होते आ रहे हैं, जहाँ मुसलमान अथवा ईसाई अधिक संख्या में हैं या जहाँ वे अन्य कारणों से अपने आप को हिन्दुओं की अपेक्षा सबल पाते हैं। वे समझे बैठे हैं कि हिन्दुस्तान तो एक धर्मशाला है, जिसके कुछ भाग को काट लेने और अपने अधिकारक्षेत्र में ले लेने के बाद भी उस धर्मशाला के शेष भाग पर बराबर का अधिकार बना रहता है। इसलिये वे दंगे करके हिन्दुओं को आंतकित करना चाहते हैं और विभिन्न क्षेत्रों को अपना प्रभावक्षेत्र बनाना चाहते हैं। हिन्दुस्तान के हिन्दू राज्य घोषित होते ही वे समझ जायेंगे कि अब भारत धर्मशाला नहीं रहा। तब वे अपने आप को राष्ट्रीय जीवन और राष्ट्र की परम्परा के अनुरूप ढालने का प्रयत्न करेंगे। यदि वे ऐसा नहीं करेंगे और विदेशी आक्रान्ताओं जैसा व्यवहार करते रहेंगे, तो उन्हें नागरिकता और मताधिकार से वंचित किया जा सकता है। मूलतः गुण्डे और भीरु होने के कारण वे दंगे करने बन्द कर देंगे इस प्रकार हिन्दुस्तान के हिन्दू राज्य घोषित होने पर ही सर्वपन्थ समभाव और विभिन्न मतावलम्बियों के सह-अस्तित्व की हिन्दू परम्परा का हिन्दुस्तान के


Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सभी लोग पालन करेंगे और हिन्दुस्तान साम्प्रदायिक दंगों के अभिशाप से मुक्त हो सकेगा। तभी हिन्दुस्तान का सर्वपन्थ समभाव का संदेश मजहबी कलहों और दंगों से त्रस्त शेष संसार में भी फैल सकेगा।

भारत को हिन्दू राज्य घोषित करने का दूसरा लाभ यह होगा कि कम से कम खण्डित हिन्दुस्तान की एकता तो बनी रहेगी। इतिहास इस बात का साक्षी है कि हिन्दुस्तान की एकता का मूलाधार यहाँ के लोगों की हिन्दू चेतना है। जिस क्षेत्र में हिन्दू और हिन्दू चेतना कम हो जाती है, वहीं पर अलगाव की भावना उभरने लगती है। यही १९४७ में पूर्वी बंगाल, पश्चिमी पंजाब और सिंध के भारत से अलग हो जाने का कारण बना और यही खण्डित हिन्दुस्तान के कश्मीर-मिजोरम-नागालैंड और कुछ अन्य क्षेत्रों में अलगाव और पृथक्तावादी भावनाओं और आन्दोलनों का कारण है। इस लिए हिन्दुस्तान की एकता के लिए इसके हिन्दू चरित्र को बनाए रखना आवश्यक है और हिन्दू चरित्र बनाए रखने के लिए इसे हिन्दू राज्य घोषित करना आवश्यक है।

भारत को हिन्दू राज्य घोषित करने का तीसरा लाभ यह होगा कि इस की सुरक्षात्मक क्षमता बढ़ेगी। भारत की सुरक्षा को मुख्य खतरा पाकिस्तान से है। सुरक्षा और विदेशनीति के मामले में बंगलादेश भी पाकिस्तान का साथी है। ये दोनों इस्लामी राज्य हैं। वे भारत को दारुल-हरब मानते हैं और इस पर आक्रमण करके इसे दारुल-इस्लाम बनाना अपना मजहबी कर्त्तव्य समझते हैं। इनके सैनिक और जनता जिहाद की भावना से प्रेरित होकर भारत के विरुद्ध युद्ध में जूटते हैं। भारत के अधिकतर मुसलमानों का नैतिक और, जहां कहीं सम्भव हो, भौतिक समर्थन भी उन्हें मिलता है। हिन्दुस्तान के हिन्दू राज्य घोषित होने पर देश के अन्दर के पाकिस्तानी पंचमांगियों के हौसले पस्त होंगे और भारतीय सैनिकों का मनोबल बढ़ेगा। देश की सुरक्षा किसी भी राज्य का पहला कर्त्तव्य होता है। हिन्दू राज्य हिन्दुस्तान की सुरक्षा के मामले में अधिक समर्थ सिद्ध होगा।

भारत को हिन्दू राज्य घोषित करने का एक और लाभ यह होगा कि संसार भर में फैले हुए हिन्दू जो आज अपने आपको यतीम पाते हैं, हिन्दुस्तान को सही अर्थों में अपना अभिभावक कह सकेंगे और संसार में सिर ऊंचा कर के चल सकेंगे। आज हालत यह है कि संसार के अनेक देशों में हिन्दुओं और विशेषकर सिक्खों यानी केशधारी हिन्दुओं से भेदभाव होता है। सऊदी अरब में तो कोई सिक्ख प्रवेश भी नहीं पा सकता। लगभग सभी इस्लामी देशों में हिन्दू न अपने पूजा स्थान बना सकते हैं और न सार्वजनिक रूप में पूजा-पाठ कर सकते हैं। उन पर मुसलमान बनने के लिए हर प्रकार का दबाव डाला जाता है। यदि मुसलमान बनने के बाद वे पुनः



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपने घर लौटना चाहें तो उन्हें कड़ा दण्ड दिया जाता है। हिन्दुस्तान के हिन्दू राज्य घोषित होने पर भारत की सरकार ऐसे देशों पर दबाव डाल सकती है कि वे अपने देशों में हिन्दुओं के साथ वही सलूक करें जिसकी अपेक्षा वे हिन्दुस्तान में मुसलमानों के लिए करते हैं।

भारत के हिन्दू राज्य घोषित होने से अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से भी भारत को बहुत लाभ होगा। सांस्कृतिक दृष्टि से इसके सम्बन्ध संसार के हिन्दू-बौद्ध देशों के साथ घनिष्ठ होंगे और यह संसार के हिन्दू-बौद्ध देशों का अलग संगठन बनाने में पहल कर सकेगा। विभाजन के बाद संसार के लगभग सभी लोग खण्डित हिन्दुस्तान को हिन्दू देश मानते हैं और इसे हिन्दू इण्डिया कहते हैं परन्तु भारत सरकार इस वास्तविकता के अनुरूप अमल नहीं करती। हिन्दू राज्य घोषित होने पर हिन्दुस्तान के प्रति संसार के अन्य देशों का आदर भाव बढ़ेगा और हिन्दुस्तान अपने सही रूप में संसार के सामने आ सकेगा। अपने हिन्दू अस्तित्व को नकार कर गत ३५ वर्षों में हिन्दुस्तान ने जो खोया ही खोया है, पाया कुछ भी नहीं है। हिन्दू राज्य घोषित होने पर इस स्थिति में निश्चित रूप से बदल आएगा।

भारत के हिन्दू राष्ट्र घोषित करने का सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि इसकी बहुत-सी आंतरिक समस्यायें, जो मतों के लिए साम्प्रदायिक आधार पर मुसलमानों और ईसाइयों के तुष्टीकरण के कारण पैदा हुई हैं, हल हो सकेंगी। पितृवंश की हत्या पर रोक, सभी भारतीयों के लिए समान सिविल कानून, हिन्दुओं के लिए देवनागरी लिपि अपना कर उसके भारतीयकरण का काम, विदेशी धन और विदेशी पादरियों पर रोक लगाने जैसे मामले भारत के हिन्दू राष्ट्र घोषित होने पर अपने आप ठीक हो जायेंगे। सभी समस्यायें उन झाड़-फुंसियों के समान, हैं, जो खून के गंदा हो जाने के कारण पैदा होते हैं। भारत ने अपने हिन्दू चरित्र की उपेक्षा की, इसलिए ये समस्यायें आज तक कायम हैं। जिस दिन भारत हिन्दू राज्य घोषित हो जाएगा और हिन्दुस्तान शासक देश के हिन्दू चरित्र के अनुरूप अमल करना सीखेंगे, उसी दिन ये समस्यायें खतम हो जायेंगी।

भारत को हिन्दू राज्य घोषित करना एक राजनैतिक निर्णय है। आवश्यकता इस बात की है कि सभी हिन्दुत्ववादी, राष्ट्रवादी तत्त्व और संस्थायें हिन्दू राज्य का पक्षधर प्रबल राजनैतिक दल बनाने और आन्दोलन खड़ा करने के काम को प्राथमिकता दें।

हिन्दुस्तान, हिन्दू राष्ट्र और हिन्दू समाज इस समय अनेक संकटों में घिरा हुआ है। उन में सबसे बड़ा अस्तित्व का संकट है। हिन्दुस्तान का इस्लामीकरण करने और इसे पाकिस्तान और बंगलादेश की भांति इस्लामी राज्य "दारुल-इस्लाम" बनाने का सुनियोजित षड्यन्त्र चल रहा है। इस



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

योजना का प्रमुख अंग हिन्दू समाज के निर्धन तथा पिछड़े हुए वर्ग को आर्थिक धन के प्रलोभन से मुस्लिम बनाना है। बहुविवाह की सुविधा का उपयोग भी मुस्लिम जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ाने के लिए किया जा रहा है। जनसंख्या बढ़ाने सम्बन्धी इस षड्यन्त्र का उद्देश्य हिन्दुस्तान में मुस्लिमों का बहुमत बनाना है ताकि वे लोकतन्त्र के नाम पर हिन्दुस्तान की सत्ता स्थायी रूप से हथिया सकें। मीनाक्षीपुरम् के घटनाचक्र ने इस योजना को बेनकाब कर दिया है।

यह संकटभरी चुनौती हमारे लिए एक अवसर भी है। इसने हिन्दू को नींद से जगा दिया है। उसे खतरे का अहसास होने लगा है। हिन्दू देश में हिन्दू पुनर्जागरण की शुरुआत हो गई है। इसे विधेयात्मक, रचनात्मक एवं प्रभावशाली सामाजिक तथा राजनैतिक दिशा देने की आवश्यकता है।

## संकटों से घिरा हिन्दू समाज कैसे उबरेगा ?

हिन्दू समाज के जागरण, संगठन तथा उत्थान के लिए कार्यरत विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक संस्थाओं के काम में तालमेल पैदा करने के लिए विराट् हिन्दू समाज का गठन स्वागत योग्य है। परन्तु चुनौती मुख्यतः राजनैतिक है। हिन्दुस्तान के इस्लामीकरण के पीछे का हेतु और उद्देश्य मुख्य रूप से राजनैतिक है। इसका मुकाबला करने के लिए आवश्यक है कि भारतीय उद्गम पन्थों तथा मजहबों जैसे शैवमत, बौद्धमत, जैनमत, सिख मत इत्यादि के अनुयायियों के सैमेटिक उद्गम के पन्थों तथा मजहबों, जैसे इस्लाम और ईसाइयत, में किसी भी कारण से प्रवेश पर कानूनी रोक लगाई जाए। यह सैमेटिक मजहब धार्मिक स्वतन्त्रता, सहिष्णुता और सर्वपंथ समभाव में विश्वास नहीं रखते। जहां कहीं इनका, विशेष रूप से इस्लाम का वर्चस्व होता है, वहां पाकिस्तान और बंगलादेश की तरह किसी गैर-मुस्लिम को सहन नहीं किया जाता। यदि उनके हाथ में हिन्दुस्तान की बागडोर आ गई तो हिन्दुस्तान में न धर्म की स्वतन्त्रता रहेगी और न ही किसी प्रकार का सैक्युलरिज्म अथवा सर्वपंथ समभाव ही रहेगा। इसलिए भारत के संविधान द्वारा प्रदत्त धर्मस्वतन्त्रता के नाम पर भारत के लोगों को मुसलमान अथवा ईसाई बनाने की छूट देना आत्मघाती और राष्ट्रघाती सिद्ध होगा। इस प्रकार के धर्मान्तरण पर पूर्ण कानूनी रोक लगाना आवश्यक हो गया है।

इसके अतिरिक्त मुसलमानों को मजहब के नाम पर दी गई बहुविवाह की छूट खत्म करनी होगी। एक ही देश में मजहब के आधार पर पृथक् सिविल कानून राष्ट्रीय एकता और भारत के संविधान के विपरीत हैं। इन मुद्दों को राजनैतिक मंच से ही प्रभावी ढंग से उठाया जा सकता है। इसलिए देश में इस प्रकार के राजनैतिक दल की आवश्यकता है जो सभी राष्ट्रवादी व हिन्दुत्ववादी व्यक्तियों एवं संगठनों को एक झण्डे तले ला सके और उपरोक्त मांगों के लिए संघर्ष कर सके।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# पाकिस्तान से सावधान रहने की आवश्यकता

—कोमलप्रसाद श्रीवास्तव

● ● ●

क्या इतिहास साक्षी नहीं है कि भारतवर्ष पर विदेशी हमले पश्चिम से ही हुए हैं? हम पूर्वाभिमुख होकर सूर्याराधना करते रहे और पीठ की तरफ से बेखबर रहे, इसीलिये हिन्दुओं की पीठ पर जितने घाव हैं, उतने सामने नहीं। हमें पीठ पर मारा गया है। हमें सामने से अफ़ज़ल खां ने गले लगाया है और पीठ पर छुरा मारने की कोशिश की है। पाकिस्तान का आगाशाही दिनांक ३१ जनवरी से ३ फरवरी १९८२ तक एक हाथ में सफेद झण्डा और पीछे वाले हाथ में अमेरिका प्रदत्त हथियार लेकर भारतवर्ष में घूमता रहा।

इस बार पाकिस्तान सन्धि (युद्ध वर्जन प्रस्ताव) के लिये जो बेचैनी दिखा रहा है, उससे स्पष्ट है कि उसे हिन्दुस्तान पर हमला करने की बेचैनी है, क्योंकि पाकिस्तान के सफेद झण्डे बन्दूक की नोक पर लगे हुए हैं। युद्ध वर्जन सन्धि पर पाकिस्तान की बेचैनी इससे साफ जाहिर है कि आगाशाही पूरा मसौदा ही तैयार करके लाये थे—हिन्दुस्तान को फ़क़त दस्तखत भर करने थे और देखिये कि जिस दिन आगाशाही वापस पहुंचे, उसी दिन उन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ में कश्मीर का मामला उठाने के लिये पाकिस्तान के प्रेस को वक्तव्य दे डाला। यह १९७२ में हुए शिमला समझौते का सरासर उल्लंघन था, जिसमें इस समस्या को आपस की बातचीत द्वारा ही सुलझाने का प्रावधान है।

क्या आप समझते हैं कि अमेरिका से मिले हुए हथियारों के बल पर पाकिस्तान अफगानिस्तान में रूस से टक्कर ले सकता है। मार्शल जिया उल हक कई



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बार अपने वक्तव्यों में स्पष्ट कर चुके हैं कि पाकिस्तान रूस से टक्कर लेने की सोच भी नहीं सकता। फिर वह कौन-सा देश है, जिसे पाकिस्तान जिबह करना चाहता है? क्या वह चीन है? नहीं। चीन तो खुद पाकिस्तान को हथियार देकर उसकी पीठ थपथपा रहा है। केवल हिन्दुस्तान ही ऐसा मुल्क है, जिससे पाकिस्तान टकराता है और टूट जाता है। सन् १९७१-७२ का घाटा पाकिस्तान के मुंह पर मुहम्मद गौरी की हार की तरह अंकित है।

हम घावों को जल्दी भूल जाते हैं। आपको सन् १९७१ की याद है? उन दिनों पाकिस्तान ने हिन्दुस्तान पर हमला किया था। उन्हीं दिनों हमारे मुल्क में भी एक नारा सुनने को मिला था। याद आया? नहीं! मैं याद दिलाता हूं "वह नारा था, "हँस के लिया था पाकिस्तान, लड़के लेंगे हिन्दुस्तान।" यह नारा हमारे घर में ही गूंजा था। बिडम्बना यह है कि पृथ्वीराज चौहान और जयचन्द एक ही समय भारत में पैदा हुए थे।

इस तरह हिन्दुस्तान पर बाहरी खतरा तो मौजूद है ही, हमें अन्दर के खतरों से अधिक सावधान रहना है।

हमें पाकिस्तान की दुश्मनी का डर नहीं—हमें डर है उसकी दोस्ती से।

सन् १९७१ में अमेरिका के सातवें बेड़े ने बंगाल की खाड़ी तक हिन्दुस्तान में खलबली मचा दी थी। तब केवल सातवां बेड़ा था। अब तो डियेगो गार्शिया में अमेरिकी अड्डा बना हुआ है। हिन्द महासागर में फिर सफेद भेड़िये घूम रहे हैं।

कहते हैं कि हमें सबसे खराब स्थिति के लिए भी तैयार रहना चाहिये। क्या आज हमें अपने अस्तित्व के प्रति शंकित नहीं रहना चाहिये?

फिर पाकिस्तान का युद्ध वर्जन प्रस्ताव बगैर सीमा रेखा तय किये कैसे मान लिया जाये? पहले वह कश्मीर पर दावा छोड़े, फिर हम सन्धि पर विचार करेंगे।

आज पाकिस्तान में भी स्थिति विस्फोटक है। उसके टुकड़े केवल हमीं पर गिरेंगे। यदि मार्शल ला प्रशासक को कुर्सी बरकरार रखनी है, तो वह हिन्दुस्तान पर ही हमला करेगा। कुर्सी आदमी से बड़ी होती है। मार्शल जिया जिया उल हक से बड़ा है। अतः हमें जिया उल हक की बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिये।

एक कहावत है कि घर के अन्दर और सामने बेरी का पेड़ नहीं लगाना चाहिये, क्योंकि उसके काँटे हमें चुभते हैं और फल दूसरे खाते हैं। हमारे घर में एक धर्मनिरपेक्षता नाम का बेर का पेड़ लगा है, जिसके बीज सन् १९४७ में देश के भाग्य निर्माता बो गये थे। उसके ऊपर पड़ने वाले पत्थरों की आवाज हमें पूर्वांचल में सुनाई देती है। आज ईसा मसीह हिन्दुस्तान को सूली पर लटका रहा है।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देश की अक्षुण्णता के लिए एक 'कोहीज़न फोर्स' की जरूरत रहती है। हिन्दुस्तान के अलावा हर देश में वह बल धर्म ही है, मगर हम धर्मनिरपेक्ष हैं। इस तरह हम हिन्दू धर्म के अलावा हरेक धर्म को हिन्दुस्तान के टुकड़े करने का अधिकार दिए हुए हैं। जिसे मिजोरम चाहिये वह मिजोरम लेले, जिसे खालिस्तान चाहिये, वह खालिस्तान लेले। इस रोटी पर, जो हिन्दुओं के घर पकी है, बस हिन्दुओं का ही कब्जा नहीं हैं। हमें धर्मनिरपेक्ष की जगह धर्म-संरक्षक हिन्दूराष्ट्र की घोषणा करनी थी। सर्वधर्मसंरक्षक इसलिए कि हम उदार हैं। मगर होना यह हिन्दू राष्ट्र ही चाहिये था।

भारत की वर्त्तमान सरकार भी पाकिस्तान के प्रति स्पष्ट रुख के लिए बधाई की पात्र है। हम पाकिस्तान से सन्धि नहीं कर सकते। हमें यदि अन्दर के जयचन्द को दबाना है, तो पहले बाहर के गजनी को नेस्तनाबूद करना पड़ेगा।

हिन्दुस्तान के आसपास हथियारों का जखीरा बढ़ता ही जा रहा है। अन्दर भी विघटनकारी शक्तियां कभी खालिस्तान, कभी अलीगढ़ और हैदराबाद, कभी अरुणाचल और असम के रूप में सिर उठा रही हैं। नक्सलवादी घटनायें भी इन्हीं का एक रूप हैं।

यदि हमें अपने राष्ट्र को अक्षुण्ण रखना है, तो इसे सर्वधर्म संरक्षक हिन्दू राष्ट्र घोषित करना पड़ेगा।

---

## हिन्दू धर्म बिना जीवन असफल हो जायेगा!

मैं धर्म नहीं छोड़ सकता, इसीलिए मैं हिन्दुत्व नहीं छोड़ सकता। यदि मेरा हिन्दू धर्म मुझ में कमजोर हो जाये तो मेरा जीवन ही असफल हो जायेगा। मैं ईसाई तथा मुस्लिम धर्म को हिन्दू धर्म के द्वारा ही प्यार करता हूं। मुझसे मेरा हिन्दूपन निकाल लो तो मुझमें कुछ न रहेगा।

मैं राजनीतिक व्यक्ति नहीं हूं, राजनीति धर्म का एक अंग है। मैं धार्मिक व्यक्ति हूं। राजनीति में इसलिए पड़ा हूं कि वह धर्म का एक अंग है। धर्म की परिधि के बाहर कुछ भी नहीं है।

—महात्मा गांधी



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

| | |
|---|---|
| १. चारों वेदों का हिन्दी भाष्य | मूल्य ४४) |
| २. सामवेद : आध्यात्मिक भाष्य (पं० विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड) | ४०) |
| ३. गीता का योगपरक भाष्य (पं० आर्यमुनि) | २५) |
| ४. वेदांजलि : ३६५ मंत्रों की प्रेरक व्याख्या | ३०) |
| ५. सोमसरोवर : (सामवेद के पावमान पर्व की व्याख्या— पं० चमूपति) | १५) |
| ६. ईश्वर : वैज्ञानिकों की दृष्टि में : क्षितिश वेदालंकार | १५) |
| ७. संस्कारविधिः [सजिल्द] छोटा साइज़ | १०) |
| बड़ा साइज़ | १५) |
| ८. सरस्वतीन्द्र जीवन चरित्र | ३०) |
| ९. अग्निहोत्र दर्पण : (डा० रामनाथ वेदालंकार) | २०) |
| १०. सत्यार्थ प्रकाश : (१० + १५ इंच) स्थूलाक्षर | १५१) |
| आर्ट पेपर पर | २५१) |
| ११. ज्योति स्तम्भ : | १०) |
| १२. दयानन्द दशन : | १०) |
| १३. योगासन : | २) |
| १४. योग और ब्रह्मचर्य : | ३) |
| १५. दयानन्द चित्र दर्शन : | २०) |
| १६. श्रीमद्दयानन्दप्रकाश : | २०) |
| १७. LIGHT OF TRUTH | ३०) |
| १८. प्रकृति और सर्ग : आचार्य उदयवीर | ६) |
| १९. अथर्ववेद परिचय : | ६) |
| २०. संक्षिप्त महाभारत : | ६) |
| २१. वाल्मीकि रामायण : | ६) |

बड़ा सूचीपत्र मंगाएं।

दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर, पो० आ० अलीपुर, दिल्ली-३६

सम्पादक—प्रकाशक—पण्डिता राकेशरानी के लिए आर्यधन प्रिंटिंग एजेन्सी द्वारा सैनी प्रिंटर्स, पहाड़ी धीरज, दिल्ली-६ से मुद्रित।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# वीर सावरकर के क्रांतिकारी विचार

भारत की एकता और अखंडता के लिए अहर्निश जूझने वाले, हिन्दुत्व की रक्षा के लिए तिल-तिल कर जलने वाले महान् क्रांतिकारी स्वातंत्र्य वीर सावरकर के कुछ महत्त्वपूर्ण विचार हम जय हिन्दू विशेषांक में इस आशा और विश्वास से प्रस्तुत कर रहे हैं कि इन्हें पढ़कर आप में राष्ट्र-रक्षा की पवित्र भावना उदय होगी और आप कुछ करने के लिए अग्रसर होंगे।

—संपादक

**हिन्दुओ !** अपना राष्ट्र गत दो सहस्र विशुद्ध ऐतिहासिक वर्षों तक जो जीवित रह सका वह केवल यदृच्छया जीवित रह गया इसलिए ही जी सका, जो लोग ऐसा कहते हैं वे मूर्ख अथवा लुच्चे हैं। हम जीवित रहे, क्योंकि जीवित रहने के लिए हम ही सबसे योग्य थे। (We survived because we proved fittest to survive.) उन परिस्थितियों से जूझने के लिए जो भूलना आवश्यक था, वह हम भूल गये और जो कुछ अपनाना आवश्यक था, वह सीखे भी। और इसलिए उन परिस्थितियों पर भी विजय पाकर जीवित रह सके।

—सावरकर



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# धर्मान्तर अर्थात् राष्ट्रान्तर

धर्मपरिवर्तन के इस षड्यन्त्र की ओर पैनी दृष्टि से देखते रहो। केवल परमार्थ की चर्चा, केवल द्वैत और अद्वैत का विवाद अथवा चेतन-अचेतन वस्तुओं के अनुसंधान का अर्थ धर्म नहीं है। धर्म का अर्थ है—व्यवहार। धर्म अर्थात् इतिहास, धर्म अर्थात् राष्ट्र और इस धर्म का त्याग किसने किया है ? यदि इंगलैंड का राजा प्रोटेस्टेंट न हो, तो उसे त्याग-पत्र देना पड़ता है। अमरीका के प्रेसिडेण्ट को प्रोटेस्टेंट बाइबिल की शपथ ग्रहण करनी पड़ती है। पश्चिम एशिया का हरेक छोटा-मोटा राष्ट्र भी धर्म-प्रधान है। हम सारे जगत् में भ्रमण किये हुए लोग हैं। मिशनरियों से हमें धर्म-निरपेक्षत की गप्पें हांकने से क्या लाभ ? मनुष्य धर्मरहित जीवित ही नहीं रह सकता. धर्म ही प्रचण्ड सामर्थ्य है। धर्महीन स्टालिन को भी यह मान्य करना पड़ा।

आज हमारे देश में विदेशी ईसाई मिशनरियों ने धूम मचाई है। गोआ और त्रावणकोर में दंगे कराकर उन्होंने धर्म-परिवर्तन कराया है। अन्य स्थानों में शिक्षा, औषधि, अन्न आदि मार्गों से वे धर्मपरिवर्तन करा रहे हैं। किन्तु 'धर्मान्तर म्हणजेच राष्ट्रान्तर' है। धर्म-परिवर्तन का अर्थ राष्ट्रीयता का परिवर्तन है। हिन्दुओं में सहिष्णुता का पागलपन बहुत बढ़ गया है। विदेशियों ने प्रचारित किया है कि हिन्दू-धर्म के समान सहिष्णु धर्म नहीं है। हिन्दू-धर्म अंशतः सहिष्णु है और अंशतः असहिष्णु। न्याय से सहिष्णुता और अन्याय से असहिष्णुता, यह हिन्दू-धर्म का पाठ है। अन्याय से सहिष्णुता, यह कायरता है। इसलिए हिन्दुओ ! ईसाई धर्मप्रचारकों की गतिविधियों का साहस से प्रतिकार करना चाहिए। हिन्दूसभा, आर्यसमाज आदि हिन्दुत्वनिष्ठ संस्थाओं को ईसाई मिशनरियों के विरुद्ध संयुक्त मोर्चा खड़ा करना चाहिए। हिन्दुओं को मिशनरियों का बहिष्कार करना चाहिए। समय रहते सावधान होने से धर्मान्तरान्तर्गत राष्ट्रान्तर का संकट टल सकता है।

हिन्दू जब तक हिन्दू है, तभी तक वह भारत की रक्षा के लिए प्राणोत्सर्ग कर सकता है, सर्वस्व होम कर सकता है। वह प्यारी मातृ-भूमि, परम पवित्र पुण्य भूमि के लिए प्राण देकर 'स्वर्ग' व मोक्ष-प्राप्ति की कामना कर सकता है। किन्तु यदि वह धर्म-परिवर्तन करके मुसलमान या ईसाई हो गया तो फिर वह क्यों व्यर्थ ही इस मिट्टी के ढेर की रक्षा के लिए प्राण देगा ? उसकी पुण्य भूमि भी बदलकर काशी से मक्का-मदीना हो जाएगी। अतः यह निश्चयपूर्वक समझ लेना चाहिए कि इस देश का सच्चा राष्ट्रीय, वास्तविक भक्त हिन्दू ही रहा है, हिन्दू ही रहेगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# वन्दे मातरम् !

—वीर सावरकर

वे कौन हैं जिन्हें परमेश्वर ने भरतखण्ड को 'स्व-देश' कहकर पुकारने का सौभाग्य प्रदान किया है ? वे कौन हैं जिन्हें सर्वशक्तिमान् ने इस भरत-भूमि को अपनी मातृ-भूमि मानने के अधिकार से गौरवान्वित किया है और जो इस भूमि के अमृतमय स्तन्य का दिव्य पान कर इसे 'ऐ माँ' कह कर पुकारने में धन्यता का अनुभव करते हैं ?

यह कृतार्थता, धन्यता और गौरव हमें प्राप्त है—केवल हमें। भगवान् ने भरत-भूमि को माता मानने के अधिकार का अभिषेक एकमात्र हम भारतीयों के मस्तक पर ही किया है। भरतखण्ड को 'स्व-देश' कहने का सौभाग्य प्राप्त कर हम भारतीय गौरवान्वित हैं। यह सौभाग्य संसार में किसी और को प्राप्त नहीं है।

हम सभी बन्धु अपनी पवित्र मातृ-भूमि के सच्चे सपूत हैं। यही हमारी जननी है और इसी ने हमारा लालन-पालन किया है। इसी के अमृतमय दुग्ध का पान कर हम और हमारे पूर्वज बढ़े हैं और भावी पीढ़ी के विकास का भी यही एकमात्र संबल है। सचमुच ही यह अपनी भरत-भू वात्सल्य की साकार प्रतिमा है—स्नेह का जीता-जागता स्वरूप। वेद की ऋचाओं के समान पवित्र यह मातृ-भूमि पुराणों में वर्णित देवी पुरंध्री है। अनुभव एवं ज्ञान का आगार यह सौन्दर्य भूमि चिरयौवना है।

अपने कोटिक पुत्रों पर उसकी समान ममता है। जब करोड़ों कण्ठ समवेत स्वर से वन्देमातरम् का सुमधुर उच्चार करते हैं तो उनका हृदय वात्सल्य से गद्गद हो जाता है। इस प्रेममयी भू को 'माँ' कहकर पुकारने का अहोभाग्य जिस पारलौकिक शक्ति की कृपा से हमें प्राप्त हुआ है, उस महाशक्ति को और साथ ही इस ऐहिक परमेश्वरी आर्य भू-माता को हमारा सदैव प्रणाम।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हे महिमामयी 'भू-माता' ! तेरे भाग्य को गणना कौन कर सकता है ?

असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे,
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालम् ।
तदपि तव गुणानामीश ! पारं न याति ।।

'कज्जलगिरि की स्याही समुद्र के पात्र में घोली गई हो, कल्पवृक्ष की शाखा की लेखनी हो, कागज पृथ्वी हो और माँ सरस्वती स्वयं लिखने वाली हो, तथापि हे आर्य माँ ! तुम्हारे गुणों का वर्णन कर पाना अशक्य एवं असम्भव है ।'

हे माँ ! इस जगती-तल पर तेरे ही समान किसी दूसरे स्मरणीय भू-प्रदेश का दर्शन करने की अदम्य लालसा से हिमालय ने अपनी गगनचुम्बी चोटियों की आँखों से सम्पूर्ण भू-लोक देख डाला, परन्तु यह रमणीयता और यह सौंदर्य उसे सम्पूर्ण संसार में कहीं भी देखने को नहीं मिला । फिर उसने सोचा यह रमणीयता भू-लोक में न सही, शायद स्वर्गलोक में ही देखने को मिल जाय और अपनी इस लालसा की पूर्ति हेतु हिमालय अदम्य उत्साह के साथ ऊंचे उठा और स्वर्ग का कपाट खोल कर उसमें प्रविष्ट हो गया । परन्तु हे माँ ! वहाँ भी तेरी मंगलमय छटा के दर्शन न हुए । हुआ यह कि हिमालय का दर्शन कर स्वर्गवासी देव-देवियाँ एवं अप्सराएं चमत्कृत हो उठीं ।

हिमालय के हिमधवल सौध-शिखरों का मनभावन सौन्दर्य देखकर अमरावती की अप्सराएं विभ्रमित हो उठीं । हिमालय के उस सलोने स्वरूप पर वे मोहित हो गईं । तभी वे अप्सराएं, अमरावती का त्याग कर हिमालय पर स्वच्छन्द विहार करने लगीं । हिमालय के सौन्दर्य की वार्ता जब गिरिजा (पार्वती) के पास पहुंची तो वे भी अपने लोभ का संवरण न कर पायीं, देवी पार्वती भूतभावन भगवान् शंकर के साथ मन-भावन हिमालय के सौध-शिखरों में स्थित कैलाश पर वास करने लगीं । हे आर्य भूमाता ! जिस हिमालय को अपने वात्सल्य से पवित्र करने की लालसा भगवान् शंकर के हृदय में स्फुरित हुई, वह हिमालय तेरी गरिमा बढ़ा रहा है । उस हिमालय का क्या वर्णन करूं —

यं सर्व शैला: परिकल्प्य वत्सं मेरौ स्थिते दोग्धरि दोहदक्षे ।
भास्वन्ति रत्नानि महौषधीश्च पृथूपदिष्टां दुदुहुर्धरित्रीम् ।।

'जिस (हिमालय) को सभी पर्वतों ने वत्स बनाया और दुग्धदोहन में



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वीर सावरकर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दक्ष सुमेरु बने दोग्धा तथा महाराज पृथु के द्वारा बताई गई पृथ्वी में चमचमाते हुए रत्न और महान् श्रेष्ठ औषधियों को दुहा। इस प्रकार के महान् हिमालय से हे आर्य भू ! तुम युक्त हो।'

सूर्य के समान तेजस्वी महान् विन्ध्याद्रि से तुम सम्पन्न हो। रायगढ़ और सिंहगढ़ जैसे रत्नों से सुशोभित, स्वतंत्रता का देव-मन्दिर 'सह्याद्रि' तेरी निधि है। हिमालय, विन्ध्य, सह्याद्रि आदि कुल पर्वतों से अभिषिक्त हे भू-माता ! तुम्हें हमारा प्रणाम।

हे भू-माता, सिन्धु, शतद्रु, ब्रह्मपुत्र और यमुना नदियों के रूप में तूने अपनी लाड़ली सन्तानों के लिए स्वर्गीय पय-सुधा के अखण्ड प्रवाह प्रवाहित किये हैं। सिन्धु, ब्रह्मपुत्र, गंगा-यमुना, नर्मदा, गोदावरी, कावेरी और कृष्णा आदि कलकल निनादिनी, धवल-तरंगिणी नदियों से युक्त हे भू-माता ! तुम्हें हमारा प्रणाम।

हे आर्य भू ! तू उस मानसरोवर से विभूषित है, जहां के विकसित कमलों में लक्ष्मी निवास करती है और जहां के कलहंस स्वर्ण कमल का सेवन और मृदुल-नाल-मृणाल-कन्द का फलाहार करते हैं।

इदं तीर्थसमं सौम्य, सुतलं सूक्ष्मबालुकम्।
रमणीयं प्रसन्नं च, सज्जनानां मनो यथा॥

'—यह (मानसरोवर) तीर्थ के समान सौम्य, सुन्दर तल और महीन रेत वाला रमणीय तथा प्रसन्न है—ठीक वैसा ही जैसा कि सज्जनों का मन होता है।'

इस प्रकार 'मानस' के समान सरोवर के सौन्दर्य से विभूषित-रमणीय भू-माता को हमारा वन्दन।

हे माँ ! तू रत्नगर्भा है। अपार रत्नराशि तेरी गोद में भरी पडी है—इतनी कि तेरे स्वर्ण एवं रत्न से सम्पूर्ण जगती-तल भर जाय। गोलकुण्डा की कोहनूरों से भरी पेटी का हिसाब तो अलग ही है। असीम सुवर्ण से सुशोभित हे स्वर्ण भूमि ! तथा अनन्त कोहनूरों से तेजस्विनी हे आर्य वसुन्धरा ! तुझे हम प्रणाम करते हैं।

मेनका ने ऋषि विश्वामित्र को लुभाने के लिए जिसकी सहायता की याचना की, उस ऋतुराज वसन्त एवं वसुमती को हरी चुनरी से संवारने वाले पर्जन्यराज आदि ऋतुओं से ऋतुमती 'आर्य भू' को हमारा वन्दन।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस सुविस्तृत भारतीय राष्ट्र को जिसकी कृपा से सहस्रों शताब्दियों से निरन्तर जीवनी शक्ति प्राप्त होती रही है और कल्पान्त तक प्राप्त होती रहेगी, उस भू-माता को हमारा वन्दन।

हे भू-माता! धन-धान्य से परिपूर्ण तेरे कृषि-क्षेत्र सम्पूर्ण संसार का योग-क्षेम चलाने की सामर्थ्य रखते हैं - तू शस्य-श्यामला है--तेरे सरोवरों में विकसित पुष्पों पर भौंरे गुनगुनाया करते हैं—तेरे रथ को खींचने वाले अश्वों की पीठ पर स्वयं परमात्मा ने खरारा करके उसे सँवारा एवं पवित्र किया है। सदा पयस्विनी 'गौवों' की भूमि, हे सुभगा भू-माता! तुझे हमारा प्रणाम।

चीन देश के शहंशाह एवं वहां की प्रजा सुप्रसिद्ध स्वनिर्मित दीवार की सुदृढ़ता पर व्यर्थ ही गरूर करते हैं। अरे! जरा भारत की ओर तो आंख उठा कर देखो। इस पवित्र भूमि के उत्तर में निसर्ग देवी ने स्वयं से ही हिमालय के रूप में एक अत्युच्च एवं दुर्भेद्य दीवार खड़ी की है तो दक्षिण-पूर्व एवं पश्चिम की दिशाओं में समुद्र की विस्तीर्ण खाई इसका संरक्षण कर रही है।

जिस भू-माता की उत्तर में सभी स्थल देवता और अन्य दिशाओं से जल देवता स्वयं रक्षा कर रहे हैं, उस 'मां' के सभी पवित्र क्षेत्रों का हम वन्दन करते हैं—हमारी इस 'भू-माता' का सर्वत्र जय-जयकार हो।

संसार के समस्त देशों की अपनी-अपनी कुछ विशेषताएँ हैं और वे ईश्वर-प्रदत्त होती हैं। कहीं-कहीं ऊँचे-ऊँचे पर्वत हैं तो कहीं एक भी पर्वत-श्रेणी नहीं है। किसी देश को समुद्र वलय का पूर्ण संरक्षण प्राप्त है, तो कई देश ऐसे भी हैं जो समुद्र की कल्पना तक नहीं कर पाते। किन्तु हमारी 'भू-माता' को किसी का भी अभाव नहीं है। जो-जो उत्तम, उदात्त, श्लाघ्य और अभीप्सित है, परमेश्वर ने इस भारती में वह सब-कुछ समाविष्ट कर दिया है। यह अत्युक्ति नहीं—वास्तविकता है। हिमालय के समान सुन्दर, गर्वीला एवं दुर्भेद्य पर्वत संसार में कितने देशों के पास है। दुनिया की वह कौन-सी खान है जो कोहनूर हीरे को जन्म दे सकती है? गंगा के समान पवित्र नदी और दोआब के समान उर्वरा भूमि कितने देशों में है? यहाँ यदि कोयले की खदानों की भरमार है तो स्वर्णागार भी कुछ कम नहीं हैं। दुनिया में कुछ देश ऐसे भी हैं जिनके पास इनमें से एक भी वस्तु नहीं है। हमारी मां भारती अनेक अद्वितीय वस्तुओं से सम्पन्न है। यह भूमि उत्तम वस्तुओं का निसर्ग-निर्मित संग्रहालय है। यह सब संसार में कहाँ है, यह न कहकर यह कहना अधिक उपयुक्त होगा



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कि संसार में जो अन्यत्र नहीं है, परमेश्वर की कृपा से वह हमारी मातृ-भूमि में सहज सुलभ है। सारांश, अत्युच्च पर्वत, गहरी नदियाँ, उर्वरा भूमि, सरस फल, सुगन्धित पुष्प, सभी धातुओं के भण्डार, विविध खगवृन्द, विस्तीर्ण महासागर, सुन्दर सरोवर आदि जो-जो भी निसर्ग देवता के वश की बात थी, उसे उसने सम्पूर्ण रूप से प्रदान किया। इस अद्वितीय सौन्दर्य और वैभव से परिपूर्ण आर्य भू-जननी भगवती भारतमाता को हमारा सदैव वन्दन।

लेकिन केवल नैसर्गिक सौन्दर्य वर्णन से ही इस भरतखण्ड का गुण-वर्णन पूर्ण नहीं होगा। नैसर्गिक सौन्दर्य और सम्पन्नता में तो हमारी भू-माता श्रेष्ठ है ही, परन्तु यह उसके गुण-वर्णन का एक अंग-मात्र है। क्योंकि स्वाभाविक सौन्दर्य निसर्गाधीन होता है। सहज सुन्दरता पूर्व भाग्य का द्योतक हो सकती है—कर्तृत्व का नहीं। गोरा-चिट्टा मुखड़ा पाकर यदि मनुष्य कर्तृत्ववान् भी हुआ तो वह केवल गोरे चेहरे वाले कर्तृत्वशून्य व्यक्ति से सौगुना अधिक सम्मानित और मनभावन होगा। इसलिए परमेश्वर ने इस आर्य-भारती को यद्यपि सम्पूर्ण सौन्दर्य सहज रूप में दिया है तथापि उसके सद्गुणों और महानता की खरी कसौटी उसके कर्तृत्व में निहित है

उत्तम नदी वह है, जिसमें अत्यन्त ही मधुर और निर्मल जल हो, उत्तम खेत वे हैं, जो अन्न से परिपूर्ण बड़ी-बड़ी बालियों से भरे झूम रहे हों। उत्तम वृक्ष वह है, जिसके फल मधुर और सरस हों। उसी प्रकार उत्तम देश वह है, जिसकी सन्तानों के अंग-अंग में असामान्य बल-विक्रम हो। देश-भूमि का सच्चा सौन्दर्य, उसकी महानता, उसके सपूतों के कर्तृत्व की कसौटी पर कसकर निश्चित की जाती है।

इस प्रकार वीर-मातृत्व में श्रेष्ठ सिद्ध होने वाली भूमि ही सर्वश्रेष्ठ कही जायेगी। अब यदि इस कसौटी पर हम अपनी भू-माता की परख करें तो हमें यह स्पष्ट रूप से दिखाई देगा कि हमारी मातृ-भूमि ऐसे वीर्यवान् पुत्रों की जननी है जिनके तेज और ओज के समक्ष सूर्य-चन्द्र की आभा भी फीकी पड़ जाती है। वीर-मातृत्व की कसौटी पर यह भूमि केवल मृत्यु-लोक में ही नहीं, सूर्य और चन्द्र-लोक में भी श्रेष्ठ सिद्ध की जा सकती है। इंगलैण्ड, अमेरिका, जापान, चीन आदि बाल राष्ट्रों के साथ इसकी तुलना करना व्यर्थ है। जिस समय रोम देश का जन्म भी इस दुनिया में नहीं हुआ था, ग्रीक देश में मानव का निवास भी नहीं था, उस समय



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भी यह आर्य-भू, वीर-प्रसवा एवं मानव-समाज की अधि-देवता थी। इजिप्ट, खाडिल्या, असीरिया आदि के उदय से शताब्दियों पूर्व हमारे यहाँ की मानव जाति का विकास दर्शन एवं तत्त्व के सूत्रीकरण तक पहुंच चुका था। जब संसार की अनेक भाषाओं के पास केवल ५००-६०० शब्दों का ही कोश था, उस समय भारत-भू के ऋषियों ने भाषा को संस्कृत कर उसे सूक्ष्म विचार-प्रदर्शन के योग्य बनाया। इतना ही नहीं, उसे छन्दोबद्ध कर उसके ताल और सुरों पर लीला-नर्तन कराया। इतिहास का दीपक भी जिस अन्ध-युग को भेदन कर पाने में असमर्थ हो गया, दन्त-कथाओं की तीखी धार भी जहाँ कुण्ठित हो गई, उस सहस्राब्धि वर्ष पूर्व का वेद-घोष आज भी भारतवर्ष के कानों में गूँज रहा है। संसार का प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद इसी भूमि की देन है। आज से दस हजार वर्ष पूर्व तत्त्वज्ञान का अनुसंधान करने वाले वीर्यवान् ऋषि क्या विश्व के किसी देश में मिलेंगे? इस महान् भू के भाग्य की तुलना किसके साथ करें? ऋषियों के तपोवनों तथा उनकी तपस्या से पवित्र भू-माता को हमारा वंदन।

ऋग्वेद इस भूमि का है। अथर्ववेद इस भूमि का है, यजुर्वेद इस भूमि का है। तत्त्वावधान की स्वर्नगा इस भू-माता के चरण-कमलों से तरंगित हुई। शुक और वशिष्ठ आदि ब्रह्मवेत्ता ब्राह्मण इसी भूमि में उत्पन्न हुए। अंगिरस, वशिष्ठ, नामदेव, याज्ञवल्क्य और भृगु आदि विभूतिमान् नाम सुनते ही मन उदात्तता से भर-जाता है। ऐसे महान् तत्त्व-वेत्ताओं ने जिस भूमि की कोख से जन्म लिया, उस तत्त्ववेत्ता भूमि को हमारा वंदन।

न्याय एवं सांख्यशास्त्र के प्रवर्त्तक इस भूमि के कण-कण से पुष्ट हुए थे। अन्ध-श्रद्धा से प्रभावित बुद्धि की अन्ध-परम्परा को तार-तार करके विचार-शक्ति का सर्वप्रथम जय-जयकार करने वाले सांख्यशास्त्र के प्रवर्तक महामुनि कपिल भी अपनी इस 'भारती' का 'हे मां' कहकर वंदन किया करते थे। हे संसार के लोगो! अथवा चन्द्र, मंगल, बुद्धादि ग्रहो! क्या तुम्हारे यहां भरत-भू के समान ऐसी महान् भूमि है जिसे विश्ववन्द्य महामुनि श्री कपिल 'हे माँ' कहकर पुकार सकें। भास्कराचार्य, आर्यभट और वराहमिहिर ने इसी भूमि के अन्न-सेवन से प्राप्त प्रतिभाशक्ति से ज्योतिष और गणित-शास्त्र के शोध किये। दशमलव की खोज इसी भूमि के पुत्रों ने की। गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त इसी भूमि की देन है। 'भूमिति' ने इसी भूमि में जन्म लिया। त्रिकोणमिति इसी भूमि की यज्ञवेदी से उत्पन्न हुई। सप्तस्वरों का गुंजन इसी भूमि के कोमल कण्ठों ने किया। मत्स्य रूप यन्त्र



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(कुतुबनुमा) इसी भूमि पर बना। व्याकरण-शास्त्र का निर्माण यहीं हुआ। शास्त्र-शुद्ध लिपि और वर्णमाला सर्वप्रथम इसी भूमि में विकसित हुई। मयसभा का निर्माण करने वाले 'शिल्प-शास्त्र' पर इसी भूमि का स्वामित्व है।

नाट्य और वैद्यक शास्त्र यहीं जन्मे हैं। कपिल, कणाद, भास्कर, आर्यभट, वराहमिहिर, चरक, पाणिनि, विश्वकर्मा, बाणभट्ट और गौतम आदि तेजस्वी शास्त्र-प्रवर्तकों को उत्पन्न करने वाली जिस भूमि का अन्न वीर्यवान् है, उस शास्त्रविद् भूमि का हम सर्वदा वन्दन करते हैं। किन्तु हे तत्त्व-वेत्ताओ और शास्त्र प्रणेताओ! यह व्यर्थ का गरूर न करो कि सम्पूर्ण संसार के लिए वंदनीय एकमेव तुम्हीं पैदा हुए हो। इस स्वर्ग-मृत्यु और पाताल-लोक में ऐसा कौन है जो वाल्मीकि के सरस, सुपैदन्यास सुवर्णमय मूर्ति के समान हो? रामायण की सरसता क्या संसार के किसी काव्य में उपलब्ध हो सकती है?

पाराशर्यवतः सरोजममलं गीतार्थगन्धोत्करम्
नानाख्यानककेसरं हरिकृपासंबोधनाबोधितम्
लोके सज्जनषट्पदैरहरहः पेपीयमानं मुदा॥

'—महाभारत के रूप में महर्षि व्यास की वाणी विमल-नीरज है, गीता का अर्थ उसकी उत्कट गंध है, अनेक आख्यान-उपाख्यान उसकी केसर हैं, हरिकथा पराग है। संसार के सज्जन रूप मधुकर उस कमल पर अनुदिन मंडराया करते हैं।'

ऐसे महान् ग्रंथ 'भारत' के रचयिता व्यास क्या संसार के अन्य किसी देश में मिलेंगे?

यदि संसार के सभी शास्त्र नष्ट हो जायें और केवल महाभारत ही बचा रहे तो वह सभी शास्त्रों की कमी पूरी कर देगा—'महाभारत' की विद्यमानता से अन्य शास्त्रों के अभाव का स्मरण तक नहीं होगा। तुम्हें क्या चाहिए? नीति-शास्त्र भारत की ओर देखो। और कवित्व चाहिए तो भारत सुधा-माधुरी का अवलोकन करो। इतिहास? सृष्टिवर्णन? क्या-क्या चाहिए तुम्हें?

व्यासोच्छिष्ट जगत् में सर्वत्र जिसकी कीर्ति सर्वंकष शक्ति से दुंदुभी ध्वनित हो रही है, उस व्यास की जन्मदात्री भूमि यही है।

रामायण हमारी है। महाभारत हमारा है। शाकुन्तल हमारा है। इनमें से कोई एक भी संसार में हमें सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए पर्याप्त



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है। आज तो यह सब हमारा है। क्षीरसागर का ज्ञान केवल भरत-भू को ही है। रामायण हमारा क्षीरसागर है। महाभारत दूसरा क्षीरसागर है—शाकुन्तल तीसरा और उत्तररामचरित हमारा चौथा क्षीरसागर है। इतने क्षीरसागरों के समक्ष उस एकाकी क्षीरसागर की गिनती ही क्या? उस एक क्षीरसागर में निवास करने वाले 'लक्ष्मीकान्त' से हम भारतवासी चतुर्गुणित भाग्यशाली हैं। हमारी कविता में लक्ष्मी है, किन्तु लक्ष्मीकान्त की लक्ष्मी में कविता कहां है? वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, भवभूति आदि कविता-कान्त जिस भूमि में उत्पन्न हुए, जिस भूमि से प्रतिभा को स्फूर्ति मिली, उस भूमि को हमारा वंदन।

यह स्फूर्ति केवल काव्य में ही प्रकट नहीं हुई, मानवमात्र को धर्मतत्त्वों से लाभान्वित कराने का श्रेय भी इसी भूमि को प्राप्त है। विश्व की सम्पूर्ण धर्म-परम्परा यहीं उद्भूत हुई। हम सब वेद-प्रणीत धर्म की महान् सन्तान हैं।

हिन्दू-धर्म में से महात्मा बुद्ध ने बौद्ध-धर्म का प्रतिपादन किया। उसी बौद्ध-धर्म की नकल करके ईसा मसीह ने ईसाई मत का प्रतिपादन किया। उसी की धार का पानी चढ़ाकर इस्लामी मत अस्तित्व में आया। उस मुहम्मदी धर्म के प्रवाह को सन्त नानक ने पुनः आर्य-धर्म से लाकर जोड़ दिया। हे अखिल विश्व के मानवो! यदि तुम धर्मच्युत नहीं हो गए हो, और यह धर्म यदि तुम्हारा प्राण है, तो अपने प्राण-प्रदाता इस आर्य-भू का अभिनन्दन करो।

वैदिक धर्म तो इस भूमि का प्राण ही है। उसकी रक्षा हेतु अपने शरीर को तिल-तिल करके जला देने वाले शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य, वल्लभाचार्य आदि धर्मदीप इसी धरती पर जले थे। ओ वीर्यवान् जापान! जो सौभाग्य तुम्हें सुशिम के दस युद्ध जीतने पर भी नहीं नसीब होगा, वह सौभाग्य महात्मा बुद्ध जैसे मनीषी को जन्म देने वाली भरत-भू को सहज ही प्राप्त है। इतना सब होने के बाद भी वह महान् उदारचरिता यह आग्रह नहीं करती कि सभी मनुष्य किसी एक और विशिष्ट मार्ग पर ही चलें। उसके कोटिक पुत्रों में वैदिकधर्मी, जैन और बौद्ध उसे समान रूप से प्रिय हैं। निसर्गतः सुन्दर, रमणीय एवं श्रेष्ठ यह भारतमाता अपने वीर्यवान् पुत्रों के कर्तृत्व के कारण भी अखिल विश्व में सर्वश्रेष्ठ है। यह स्तुतिमात्र नहीं, वास्तविकता है, यथार्थ वर्णन है। ऊपर वर्णित इतिहास इसका साक्षी है। पौराणिक एवं दन्तकथाओं को यदि क्षण-भर के लिए एक ओर रखकर केवल ऊपर वर्णित ऐतिहासिक पुरुषों के आधार पर अपनी



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

श्रेष्ठ भरत-भूमि की श्रेष्ठता का अवलोकन करें तो स्पष्ट रूप से दिखाई देगा कि इनमें से एक-एक महापुरुष की योग्यता इतनी है कि दुनिया के देश यदि उनके समान एक भी व्यक्ति उत्पन्न कर दें तो उनकी भूमि निःसत्त्व हो जाय। अनन्तकाल से असंख्य वीरों को आज तक सतत जन्म देने वाली वीर-प्रसवा, सत्यवती मां भारती को हमारा वंदन।

इस मातृभूमि की कोख से केवल सत्पुत्र ही नहीं जन्मे हैं, इस भाग्यवती के उदर से नर-रत्नों के समान ही उसी मात्रा में स्त्री-रत्न भी उत्पन्न हुए हैं। ऋषि-मुनियों की सभा में शास्त्रार्थ एवं ब्रह्म-विचार चर्चा में विजय प्राप्त करने वाली गार्गी इसी भूमि की देन है। लोपामुद्रा, अहिल्या और तारा का जन्म यहीं हुआ था। दमयन्ती और सावित्री की भूमि यही है। भू-देवी की वे पुत्रियाँ उसके पुत्रों जैसी ही पावन हैं। इस शृंखला में और कितने नाम चाहिएँ। यदि सन्तोष न होता हो तो ओ जगती-तल के प्राणियो और स्वर्गस्थ देवताओ! सुनो, इस पवित्र शृंखला में से केवल एक ही नाम का उल्लेख करना पर्याप्त होगा। सद्गुण, औदार्य, धैर्य, पातिव्रत्य, सदयता, नैसर्गिक गम्भीरता और दिव्य सुन्दरता आदि समस्त सद्गुणों को जिस एक नाम से सम्बोधित किया जा सकता है, वह नाम है—श्री सीता माता का। सीता देवी इस भूमि के उदर से उत्पन्न हुईं। जिस भूमि से श्री जानकी जी ने जन्म ग्रहण किया, उसी भूमि के उदर से हम भी पैदा हुए हैं। यह अनुभूति होते ही मन आकाश से भी अधिक विशाल एवं विस्तीर्ण हो उठता है।

जिस प्रकार जो खेत उत्तम उपज देता है वह उत्तम माना जाता है, ठीक उसी प्रकार उत्तम स्त्री-पुरुषों को जन्म देने वाला देश भी श्रेष्ठ होता है। इस दृष्टिकोण से यदि हम भारत की श्रेष्ठता का अवलोकन करें तो हमें क्या दिखेगा? अंगिरस, गर्ग, वशिष्ठ, याज्ञवल्क्य, जनक इत्यादि महान् तत्त्ववेत्ता। कणाद, कपिल, भास्कर, आर्यभट, वराहमिहिर, भरत, पाणिनि, बाणभट्ट, चरक इत्यादि कविता देवी के लाल। गौतम बुद्ध, शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य, वल्लभाचार्य, गुरु नानक आदि धर्म-संस्थापक। श्री रामचन्द्र, नल, युधिष्ठिर सदृश प्रजा-रंजक राजा। अर्जुन, कृष्ण, कर्ण इत्यादि अतिरथी-महारथी। चन्द्रगुप्त, शालिवाहन, अशोक, विक्रमादित्य इत्यादि साम्राज्य-संस्थापक। शुक्राचार्य और हरिशचन्द्र सदृश मूर्तिमन्त सद्गुणी। गार्गी, लोपामुद्रा, अहिल्या, तारा, मंदोदरी, सावित्री और सीता इत्यादि नारियाँ। बताओ दुनिया वालो? अपने इस महाभाग्य की गणना



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हम कैसे करें ? बहुत कठिन है यह कार्य ।

इन विभूतियों का नामोच्चार तो केवल एक झाँकीमात्र है। यदि भारत का सम्पूर्ण इतिहास उपलब्ध होता तो क्या होता ? जो है वह व्यवस्थित रूप से संकलित नहीं है। अभी तो भारत महोदधि की अथाह जलराशि में से यह टिटहरी केवल चोंच-भर पानी ही ला पाई है। यह वर्णन तो हमारे इतिहास का पूर्वार्द्ध मात्र है। आधुनिक काल के रत्नों की सूची तो अभी अलग ही है।

चित्तौड़ के महाराणा प्रताप, बुन्देलखण्ड के छत्रसाल, बंगाल के प्रतापादित्य, रायगढ़ के हिन्दू-पद पादशाह छत्रपति शिवाजी, पूना के शनिवारवाड़ा के मालिक पेशवा, ग्वालियर के महादजी, पानीपत का रण-मैदान, विहगढ़ की खड़ी चट्टान, ज्ञानेश्वर की लेखनी, विठोवा का भक्त, समर्थ रामदास के दास। कितनों को गिने-गिनायें और कहाँ तक वर्णन करें ?

योद्धाओं की सूची दें या तत्व-वेत्ताओं की। शास्त्रविदों की दें या कवियों की। देश-भक्तों की या स्वातंत्र्य वीरों की अथवा राजनीति धुरन्धरों की दें। हे आर्य वसुन्धरा ! तुम सुभगा हो, सुजला हो, सुवर्णा हो, सुरत्ना हो, तुम्हें हमारा वन्दन है। हे ऋतुमती, वसुमती, सुतले और सुफलिते, हम तुम्हारी वन्दना करते हैं।

हे विविध विहगा, विविध कुसुमा, तुम्हें हमारा वन्दन। हे पुराणी देवी युवती पुरन्ध्री, तेरा अभिवन्दन। हे तत्त्वज्ञ, शास्त्रज्ञ ! तुम्हें हमारा वन्दन। हे प्रेममयी, धर्ममयी माँ ! हम तेरी वन्दना करते हैं। हे सत्त्वमती, वीर्यमती, हे स्वातन्त्र्य तिलक विभूषिते ! तुझे हमारा वन्दन है। श्री शंकरादि त्रिदश देवता जिसका संरक्षण कर रहे हैं, नारद, तुम्बर, व्यास, वाल्मीकि—चारों जिसके स्तोत्र गा रहे हैं, उस महान् भूमि को हमारा वन्दन। शिव, प्रताप आदि वीर जिसके शत्रुओं के कंठ-रक्त का पान कर रहे हैं, उस वीर-प्रसवा महिमामयी मां को हम बारम्बार प्रणाम करते हैं।

वन्देमातरम् !

वन्देमातरम् ! !

वन्देमातरम् ! ! !



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# वीर सावरकर की अमर चिन्तन-धारा

## 'हिन्दू' शब्द की व्याख्या

हमारे कार्य की सारी बाह्य-सृष्टि 'हिन्दू' शब्द की अचूक व्याख्या पर ही निर्भर है। इसलिए सबसे पहले हमें 'हिन्दुत्व' के अर्थ ही को प्रकट करना चाहिये। उस शब्द की व्याख्या और व्याप्ति का स्पष्टीकरण होकर जब वह सुचारु रूप से हृदयसात् हो जायेगी, तभी हमारे स्वकीयों के हृदयों में बार-बार उठने वाली विविध प्रकार की आशंकाओं का निराकरण होगा और हमारे विरोधी हमारे विरोध में जो नाना प्रकार के आक्षेप एवं भ्रम लोगों में प्रसृत करते हैं, उन्हें भी मुंहतोड़ उत्तर देकर शान्त किया जा सकेगा। यह हमारा अतीव सद्भाग्य है कि कई जंगलों की राख छान डालने के उपरान्त ही क्यों न हो, किन्तु इस प्रकार की 'हिन्दू' शब्द की एक निश्चित व्याख्या पहले ही हमारे हाथ लगी है। ऐतिहासिक तथा तार्किक दृष्टि से इस प्रकार की व्याख्या जहां तक सार्थक की जा सकती है, उतनी सार्थक तो वह है ही, पर उसके अतिरिक्त वह तात्कालिक उपयोगक्षमा भी है। हिन्दू शब्द की वह व्याख्या इस प्रकार है—

आसिन्धुसिन्धुपर्यन्ता यस्य भारतभूमिका।
पितृभूः पुण्यभूश्चैव स व हिन्दुरिति स्मृतः॥

अर्थात् जो कोई भी व्यक्ति सिन्धु से लेकर समुद्र तक फैली हुई इस



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत-भूमि को अपनी पितृ-भू तथा पुण्य-भू मानता है और अधिकृत रूप से यह बात कह सकता है, वह प्रत्येक व्यक्ति 'हिन्दू' है।

यहां पर मुझे यह बात स्पष्ट कर देनी होगी कि जिन धर्मों का उद्गम भारतवर्ष में हुआ है, ऐसे कुछ अन्य धर्मों के अनुयायी समझे जाने वाले व्यक्तियों को भी हिन्दू कहना प्रायः असम्बद्ध ही होगा। क्योंकि वह तो हिन्दुत्व का एक अंग या लक्षण-मात्र है। पर यदि हमारी यह आन्तरिक इच्छा हो कि हमारी उक्त व्याख्या संदिग्ध एवं मिथ्या प्रमाणित न हो, तो हमें चाहिए कि 'हिन्दुत्व' के अन्तर्गत संकेत में कहे हुए दूसरे और उतने ही महत्त्व के दूसरे अंश की अवहेलना हम न करें। हिन्दू होने के लिए किसी व्यक्ति को केवल इतना ही कहना पर्याप्त न होगा कि वह किसी ऐसे धर्म का अनुगामी है जिसका उद्गम भारतवर्ष में हुआ, अर्थात् वह भारतवर्ष को अपनी 'पुण्य-भू' मानता है। उसके हिन्दू होने के लिए यह भी आवश्यक है कि वह इस देश को अपनी पितृ-भू भी माने। समूचा हिन्दू-जगत् जहां पर उसके धर्म का जन्म हुआ, उसी अकेले पुण्य-भू के एकमात्र बन्धन से ही केवल नहीं, किन्तु एक संस्कृति, एक भाषा, एक इतिहास और इससे भी अधिक महत्त्व की बात यानी एक 'पितृ-भू' के भी बन्धन से स्वयमेव निबद्ध है और इन्हीं बन्धनों के कारण वह एक स्वयंसिद्ध राष्ट्र तथा स्वतन्त्र लोकसमाज प्रमाणित होता है। उक्त दोनों अंशों को एकत्र करने पर ही हमारे हिन्दुत्व की सृष्टि होती है और उनके संयोग से ही हम संसार के अन्य किसी भी देश के निवासियों से पृथक् प्रमाणित होते हैं। उदाहरण के लिये जापानी तथा चीनी लोग अपने को हिन्दुओं के साथ सम्पूर्ण रूप से न तो एकात्म ही मानते हैं और न वे उक्त कारणों से वैसा मान भी सकते हैं। वे दोनों इस भारत-भूमि को उनके धर्म के जन्म-स्थान के नाते से केवल अपनी पुण्य-भू मानते हैं। वे न तो उसे अपनी पितृ-भू मानते हैं और न वे ऐसा मान ही सकते हैं। अतः वे हमारे सहधर्मी तो अवश्य ही हैं, पर न तो वे हमारे स्वदेश-बान्धव है और न हो ही सकते हैं। परन्तु निस्सन्देह हम सारे हिन्दू परस्पर के केवल सहधर्मी ही नहीं, अपितु स्वदेश-बान्धव भी हैं। चीनियों तथा जापानियों को अपनी-अपनी निजी और पृथक् स्वरूप की वंश परम्परा, भाषा, संस्कृति, इतिहास तथा देश आदि बातें हैं, जो उनका और हमारा जीवन एकराष्ट्रीय बनाने के लिये हमारे साथ पूर्ण अंशों में निबद्ध नहीं हुई हैं। हिन्दुओं के धार्मिक सम्मेलन में—किसी हिन्दू-धर्म महासभा में—वे पुण्य-भूमि की एकता के कारण हमारे धर्म-बान्धवों के



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नाते से हमारे गले लग सकते हैं। किन्तु समूची हिन्दू जाति को एकत्रित करने वाली और उसके राष्ट्रीय जीवन का प्रतिनिधित्व प्राप्त करने वाली किसी महासभा के सम्बन्ध में वे समान स्वरूप की आस्था नहीं दिखायेंगे और न वे समानतापूर्वक उसमें अपना हाथ बंटायेंगे, क्योंकि वह ऐसा कर ही न सकेंगे। किसी भी शब्द की व्याख्या ऐसी होनी चाहिये, जो वस्तुस्थिति पर अच्छी तरह चिपक जाये। उक्त व्याख्या के प्रथम अंश की यानी अनन्य पुण्य-भू होने की कसौटी पर कसने के बाद जिस तरह हिन्दुस्थान में वास करने वाले मुसलमान, ज्यू, क्रिश्चियन तथा पारसी आदि विधर्मी केवल हिन्दुस्थान ही को अपनी पितृ-भूमि मानते हुए भी अपने-आपको हिन्दू कहलाने के अधिकार से वंचित रहते हैं, उसी प्रकार दूसरी ओर उसके 'अनन्य पितृभू होना' इस दूसरे अंश की कसौटी पर कसने के उपरान्त जापानी, चीनी आदि अन्य देशवासियों को भी हमारी और उनकी पुण्य-भू एक होते हुए भी हिन्दू-गुट के बाहर ही रहना पड़ता है। 'हिन्दू' शब्द का 'वह कोई भी व्यक्ति जो अपने-आपको हिन्दुस्थान में पैदा हुए किसी भी धर्म का अनुगामी कहलाता हो' इस प्रकार का जो ढीला और असम्बद्ध स्पष्टीकरण किया गया था, उसमें भी उक्त व्याख्या स्पष्ट रूप से उपस्थित थी। पर अब ऐसा समय आ पहुंचा है कि अब हमें अधिक सुसम्बद्ध बनने की आवश्यकता है। अतः उक्त एकांगी व्याख्या को त्याग कर उसके स्थान में अधिक व्यवस्थित तथा समथक व्याख्या की स्थापना करनी चाहिये और इसलिए मैं आप लोगों के सामने यह प्रस्ताव रखता हूं कि हमारे विधि-विधान में उपर्युक्त पूरा श्लोक ज्यों-का-ज्यों उसके उपर्युक्त स्पष्ट तथा निस्सन्दिग्ध अर्थ सहित समाविष्ट किया जाना चाहिये।

## हिन्दू स्वयमेव एक राष्ट्र है

मेरी मान्यता पर कुछ लोग व्यर्थ का दोषारोपण करेंगे और आह्वान-पूर्वक मुझसे यह प्रश्न भी पूछ बैठेंगे कि जिनके जीवन की प्रत्येक छोटी-मोटी बातों में इतना महदन्तर पाया जाता है, उन हिन्दुओं को हम राष्ट्र के नाम से सम्बोधित कर ही कैसे सकते हैं? इन लोगों को मेरा स्पष्ट रूप से यही प्रत्युत्तर है कि पृथ्वी-तल पर ऐसा कोई देश नहीं कि जिसमें भाषा, संस्कृति, वंश तथा धर्म के सम्बन्ध में सम्पूर्ण रूप की एकात्मकता दिखाई देती हो। किसी भी देश की जनता उसमें रहे हुए परस्पर विसंवादी भेदों के अभाव के कारण राष्ट्रसंज्ञा से सम्बोधित होने के लिये कदापि उतनी पात्र प्रमाणित नहीं होती, जितनी वह परस्पर में रहे हुए भेदों की



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भाव यह है कि जो व्यक्ति मुस्लिम मत को स्वीकार न करेंगे उनकी हत्या कर दी जायेगी। मुसलमानों ने इस आदेश का खूब डटकर पालन किया है, यह सर्वविदित है। कुरान में एक अन्य स्थल पर कहा—'और काटे जड़ काफिरों की। मैं तुम्हें सहाय दूंगा साथ सहस्र फरिश्तों के पीछे-पीछे आने वाले। अवश्य मैं काफिरों के दिलों में भय डालूंगा, बस मारो ऊपर गर्दनों के मारो उनमें से प्रत्येक पोरी (संधि) पर।' 'और लड़ो उनसे यहां तक कि न रहे फ़ितना अर्थात् बल काफिरों का और होवे दीन तमाम वास्ते अल्लाह के और जानो तुम यह कि जो कुछ तुम लूटो किसी वस्तु से निश्चय वास्ते अल्लाह के है पांचवां हिस्सा उसका और वास्ते रसूल के।' कुरान की इस शिक्षा की समीक्षा करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती सत्यार्थ प्रकाश चतुर्दश समुल्लास में लिखते हैं—'ऐसे अन्याय से लड़ने लड़ाने वाला मुसलमानों के खुदा से भिन्न शांतिभंगकर्त्ता दूसरा कौन होगा? अब देखिये मजहब कि अल्लाह और रसूल के वास्ते सब जगत् का लुटना लुटवाना लुटेरों का काम नहीं है? और लूट के माल में खुदा का हिस्सेदार बनना जानो डाकू बनना है। और ऐसे लुटेरों का पक्षपाती बन खुदा अपनी खुदाई में बट्टा लगाता है। बड़े आश्चर्य की बात है कि ऐसी पुस्तक, ऐसा खुदा और ऐसा पैगम्बर संसार में ऐसी उपाधि और शांति भंग करके मनुष्यों को दुःख देने के लिए कहां से आया! जो ऐसे-ऐसे मत प्रचलित न होते तो सब जगत् आनन्द में बना रहता। कुरान के विषय में महर्षि दयानन्द सरस्वती ठीक ही लिखते हैं कि 'यह किताब न ईश्वर न विद्वान् की बनाई और न विद्या की हो सकती है। इसके बिना जो कुछ इसमें है वह सब अविद्या, भ्रमजाल और मनुष्य की आत्मा को पशुवत् बनाकर शांतिभंग कराके उपद्रव मचा मनुष्यों में विद्रोह फैला परस्पर दुःखोन्नति करने वाला विषय है।'

कुरान की उक्त शिक्षा से सर्वथा विपरीत हिन्दू धर्म का आधार वेद क्या कहता है, उसका भी अवलोकन कर लेना चाहिए। वेद आदेश देता है—

सहृदयं सामनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यमभिहर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या॥

अर्थात् तुम्हारा हृदय एक हो, मन एक हो, तुम आपस में लड़ो मत। एक दूसरे को प्यार से चाहो, जैसे गौ अपने नवजात बछड़े को प्यार से चाहती है। एक अन्य स्थान पर भक्त अपने भगवान् से प्रार्थना करता है—

दृते दृꣳह मा मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे, मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे॥



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अर्थात् हे भगवन्, मुझे समर्थ बनाइये, सब प्राणी मुझे मित्र की दृष्टि से देखें और मैं सब प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखूं, हम सब परस्पर मित्र की दृष्टि से देखें। प्राणिमात्र को मित्र दृष्टि से देखने वाला व्यक्ति क्या कभी किसी दूसरे व्यक्ति की विचार भेद के आधार पर हत्या करने की सोच सकता है? एक कुटुम्ब के लोग अनेक बार परस्पर लड़ झगड़ पड़ते हैं, उनमें मनमुटाव और विचारभेद भी हो जाता है। पर इसमें वे एक दूसरे के रक्त के प्यासे नहीं हो जाते। 'करूं मैं दुश्मनी किससे अगर दुश्मन भी हो अपना, मुहब्बत ने नहीं छोड़ी जगह दिल में अदावत की' किसी कवि की यह पंक्ति हिन्दू धर्म पर शत प्रतिशत चरितार्थ होती है।

चूंकि हिन्दू धर्म मानव मात्र का कल्याण करना चाहता है इसलिए उसे जहां भी कोई दोष दृष्टिगत होता है, उसे दूर करने के लिए यह प्रेमपूर्वक उचित परामर्श देना अपना नैतिक कर्तव्य समझता है। उसके परामर्श को कोई स्वीकार करे या न करे यह दूसरी बात है। परन्तु अपनी बात मनवाने लिए वह अनुचित दबाव या किसी प्रकार का बल प्रयोग नहीं करता।

परहित भावना से प्रेरित होकर हमें कई बार अन्य मतावलम्बियों की समालोचना करनी पड़ती है। समालोचना करना हिन्दू धर्म की पांचवीं विशेषता है। अन्य मतों की समालोचना करने के कारण कई विरोधी मत हिन्दू को असहिष्णु और संकुचित मनोवृत्ति वाला समझने लगते है। वस्तुतः यह उनकी अज्ञानता का परिचायक है। शिक्षण संस्थाओं में प्रत्येक विषय का अध्यापन करते समय प्राध्यापक समालोचना का सहारा लेता है। आंख मूंदकर किसी बात को ग्रहण करने की बात वह कभी अपने छात्रों से नहीं कहता। वस्तुतः बिना समालोचना के सत्य की जानकारी हो ही नहीं सकती। हां, यह भी सत्य है कि समालोचना किसी बुरे अभिप्राय से नहीं होनी चाहिए। खेद का विषय है कि समालोचना के वास्तविक अभिप्राय को न समझकर कई बार धर्मान्ध मुसलमान समालोचना से अपने को पीड़ित अनुभव कर हिन्दुओं का अनिष्ट कर डालते हैं। ऐसे भले लोगों को नहीं मालूम कि हमारी समालोचना से उनको कितना लाभ पहुंचा है। कई समझदार मुसलमानों ने हमारी समालोचना से प्रभावित होकर अपनी अपनी बुद्धि का प्रयोग करते हुए अपने धर्मग्रन्थ में लिखी हुई अवैज्ञानिक, भ्रान्ति पूर्ण, अनर्गल बातों का संशोधन करने का प्रयत्न किया है। इस्लामी मत के अनुसार स्वर्ग व नरक स्थान विशेष को कहते हैं, जो इस लोक से परे कहीं है। वास्तविकता यह है कि स्वर्ग-नरक स्थानविशेष नहीं, बल्कि



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अवस्थाविशेष को कहते हैं। हमारी आलोचना से प्रभावित होकर मौलवि मुहम्मद अली लिखते हैं This shows clearly that paradise and hell are more like two conditions than two places" अर्थात् स्वर्ग तथा नरक दो स्थानों की अपेक्षा दो स्थितियां हैं। इसके आगे चलकर अपने पक्ष की पुष्टि में कुरान के कुछ प्रमाण देकर मौलवी साहिब लिखते हैं। "This shows that hell is a condition which shall be perceived only by those in it and similar is the case with paradise यह दर्शाता है कि नरक एक अवस्था है जिसका केवल उस अवस्था वालों को अनुभव होगा और यही दशा स्वर्ग की है। ठीक इसके आगे वे लिखते हैं— "But as I have already pointed out, the Holy Quran says that paradise and hell begin in this very life" जैसा कि मैं पहिले बता चुका हूं कि कुरान शरीफ कहता है कि स्वर्ग और नरक इसी जीवन में आरम्भ होते हैं। एक अन्य स्थल पर वे लिखते है—"Heaven and Hell are not places of enjoyment and torture to be met with only after death, they are realities even here". अर्थात् स्वर्ग तथा नरक मृत्यु के पश्चात् सुख अथवा दुःख भोगने के स्थान नहीं हैं, वे तो यहां की वास्तविकताएं है।

स्पष्ट है कि मुहम्मद अली ने स्वर्ग-नरक का जो रूप बताने का यत्न किया है, वह लगभग वही है जो हिन्दू धर्मग्रन्थों में प्रतिपादित किया गया है। मुसलमानों को हमारी समालोचना से प्रसन्न होकर हमारा आभार प्रदर्शित करना चाहिए क्योंकि इसी समालोचना व खण्डन के कारण वे लोग अपने अन्धविश्वास से भरे हुए विचारों का परित्याग कर वैज्ञानिक तर्कपूर्ण बातों को ग्रहण करने के लिए बाध्य हुए हैं और इस प्रकार सत्य बातों को ग्रहण कर वे लोग गर्व के साथ आधुनिक वैज्ञानिक क्षेत्र में प्रवेश करने के अधिकारी बन सकेंगे।

## अपने नगर में हिन्दू रक्षा समिति स्थापित करें



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# राजनीति के हिन्दूकरण का सवाल

—कैलाश सत्यार्थी

मैं हिन्दू हूं! और यह लिखने में मुझे गर्व है। इसलिये मैं यह भी महसूस करता हूं कि जिस देश में हम रहते हैं, वहां की राजनीति भी वहीं की मिट्टी, पानी और हवा से घुली-मिली राजनीति होना चाहिये। वास्तव में राजनीति का यह राष्ट्रीयकरण ही किसी देश का प्राण होता है।

आज हर दिन, हर क्षण हमारे सामने देश मर रहा है—हम मर रहे हैं। किन्तु आखिर क्या वजह है कि अच्छे-से-अच्छे घोषणा-पत्रों को रखने वाले, रोज-रोज उपज रहे राजनैतिक दलों के रहते यह देश मर रहा है? मरने की बात मैं इसलिये कर रहा हूं कि जहां चोर और सिपाही, हत्यारे और रक्षक का फर्क खत्म होने लगे, वह समाज मरने लगता है। हालांकि राजनीति भी समाज की एक कमजोरी है। ठीक उसी तरह, जैसे डाक्टर और और सिपाही। बीमारी का कारण नहीं, तो डाक्टर क्यों? अपराध के कारण न हों, तो सिपाही क्यों? समाज में असमानता, अनुशासनहीनता, अन्याय न हों तो राजनीति की भला क्या जरूरत? इन मायनों में राजनीति की ज्यादा से ज्यादा जरूरत होना यह दर्शाता है कि समाज ज्यादा से ज्यादा सड़ रहा है। कोई भी समाज जिन कारणों से सड़ रहा होता है, टूट रहा होता है, वे कारण वहाँ के इतिहास, भूगोल और जलवायु में मिले हुए कारण होते हैं, इसलिए उस समाज को स्वस्थ रखने के लिये उसकी अपनी शैली और मूल्यों की राजनीति होनी चाहिए।

परसों केरल में जनता पार्टी टूटी, कल आन्ध्र में कांग्रेस (इं०), आज हरयाणा में लोकदल; कल कुछ और टूटेगा। यह प्रक्रिया नेताओं के स्वार्थ-साधन आदि के सतही कारण के अलावा मूलतः राजनीति के समाज से कटने की प्रक्रिया ही दर्शाता है। दिनोंदिन गहराता यह संकट क्या यह साबित नहीं करता कि हम दिनोंदिन भारतीय शैली और मूल्यों से दूर होते जा रहे हैं। ऐसे में मैं सोचता हूं कि राजनीति के हिन्दूकरण की जरूरत है। किन्तु यह हिन्दूकरण हिन्दूमहासभा वाला या भारतीय जनसंघ वाला हिन्दूकरण कतई नहीं है। वे हिन्दू राज्य की बात करते हैं; मुसलमान इस्लामि-



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्तान की तैयारी करता है; कम्युनिस्ट, कम्युनिस्ट राज्य के सपने देखता है। मैं पूछता हूं आखिर इन सब में शैलीगत फर्क क्या है ? थोपे हुए विचार या ढंग के आधार पर की जाने वाली कोई भी राजनीति हिन्दुत्व की राजनीति नहीं हो सकती। और इस तरह के राजनैतिक दल कोई स्थायी प्रभाव नहीं रख सकते। दुर्भाग्य से आज की राजनैतिक शैली ईसाइयत और इस्लाम की कार्यप्रणाली की शैली है। इन मज़हबों ने अपनी पैदाइश से आज तक अपनी विचारधारा दूसरों पर थोपने का कार्य किया है। अस्पताल खुलवाकर या तलवार चलाकर, हर तरह अपने विचारधारा दुनिया पर थोपी है। खासकर अशिक्षित और कमजोर लोगों पर। भारत में हरेक राजनैतिक पार्टी के पास अपनी एक विचारधारा है, अपना एक वाद है, कुछ के पास दर्शन है, और वह दूसरों पर इसे थोपने में लगा है।

दूसरी तरफ हिन्दू का इतिहास रहा है कि उसने किसी पर भी अपने आपको थोपा नहीं, कोई विचारधारा मनवाने के लिए किसी को मजबूर नहीं किया, प्रलोभित नहीं किया। इसलिए हिन्दुत्व किताब पर लिखने की चीज नहीं, एक परिपूर्ण मानव के प्राणों का समवेत स्वर है। हिन्दुत्व बाहर से कुछ नहीं थोपता, भीतर से उदित करता है। अपनी कोठरी में एक बोतल में प्लास्टिक का फूल सजाने और आंगन में पौधे से महकते गुलाब के खिलने का जो फर्क है, वही विदेशी शैली और हिन्दुत्व का फर्क है। पहले में आरोपण है और दूसरे में स्वयंस्फूर्तता।आज की राजनीति में इसी स्वयं-स्फूर्तता की जरूरत है। और यह तब होगी, जब राजनीति मिट्टी पानी से और हवा से जुड़ कर की जायेगी।

मेरे बार-बार हिन्दूकरण, हिन्दुत्व शब्द के प्रयोग पर किसी को कोई एतराज नहीं होना चाहिए। क्योंकि इस शब्द का कोई मजहबी अर्थ नहीं है। इसका अर्थ उस जीवन-शैली से है, उस राष्ट्रीयता से है और उस संस्कृति से है, जिससे हिन्दुस्तान जिन्दा है—इसलिए हरेक मुसलमान और ईसाई कम्युनिस्ट का हिन्दू होना राष्ट्रीय अनिवार्यता है।

राजनीति के हिन्दूकरण की जरूरत का दूसरा बड़ा कारण यह है कि हिन्दुत्व के मूल्य ज्यों-ज्यों राजनीति अथवा सत्ता पर प्रभावी होंगे, त्यों-त्यों सत्ता की ताकत और जरूरत भी कम होने लगेगी—क्योंकि सत्ता को नियंत्रित करने वाले और नियंत्रित होने वालों के बीच का अंतर घटने लगेगा और यह इसलिए कि हिन्दुत्व की प्रक्रिया समाज को भीतर-बाहर से साथ-साथ बदलने की प्रक्रिया है। जबकि आज के सभी राजनैतिक दल, हिन्दूमहासभा



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

व आर० एस० एस० से लेकर मार्क्सवादी-लेनिनवादी तक सबके सब समाज को बाहरी प्रयासों से बदलने का दावा करते हैं। यह पाश्चात्य भौतिकवादी ढंग है। जब नियंत्रण का प्रयास बाहर से होता है, तो नियंत्रक के पास सत्ता केन्द्रित हो जाती है। तानाशाही का विकास ऐसे ही होता है और तानाशाही जनता की आशाओं व इच्छाओं का दर्पण नहीं हो सकता। इसलिए विकेन्द्रित शक्ति की सरकार ही आदर्श राज्य हो सकती है। हिन्दुत्व का तो सारा चिन्तन और दर्शन ही विकेन्द्रीयकरण पर खड़ा है। हमारे यहां विकेन्द्रीयकरण किसी डंडे के जोर से नहीं होता था। बल्कि राज्य पर धर्म के नियंत्रण के कारण व्यक्ति राजनेता बनने की बजाय धार्मिक होना ज्यादा पसंद करता था। हिन्दू के लिए धर्म, राज्य से बहुत ऊपर की चीज है। राज्य धर्म की रक्षा का साधन मात्र है, साध्य तो कतई नहीं। किन्तु आज सत्ता प्राप्त कर लेना ही हर राजनैतिक दल और राजनेता का साध्य बन गया है।

राजनीति के हिन्दूकरण की आवश्यकता का तीसरा मुख्य कारण समाज में विषमता की समाप्ति की जरूरत है। जो समाज कड़ी मेहनत के बाद भूख से बिलबिलाते किसान के बेटे को अनदेखा करता है, जो बड़ी-बड़ी अट्टालिकाएं खड़ी करने वालों की बारिश में पानी से भरी हुई टूटी झोंपड़ी का दर्द नहीं महसूसता, जो दवाई के अभाव में दम तोड़ते मेहनतकशों को हिकारत की नजर से देखता है, और इस अमानुषिक विषमता को उत्पन्न करने वालों की तरफदारी करता है वह समाज ज्यादा दिन जिन्दा नहीं रह सकता। या तो वह किसी विदेशी सरकार का आर्थिक या राजनैतिक गुलाम बन जाता है अथवा फिर कम्युनिस्ट जैसी विदेशी विचारधारा का। किन्तु हिन्दुत्व इस समस्या को समझने और हल करने का परिपूर्ण चिंतन देता है। पूंजीवाद न तो बन्दूक की गोली से खत्म होता है और न अखबारों से। इसके लिये एक पूरी मानसिक आत्मिक तैयारी की जरूरत होती है। वह तैयारी सिर्फ हिन्दुत्व के पास है। वास्तविकता तो यह है कि सारा हिन्दुत्व त्यागवाद पर खड़ा है। दूसरों की भलाई के लिये जो जितनी बड़ी कुर्बानी देना जानता है वह उतना ही बड़ा हिन्दू है। जब हम राजनीति के हिन्दूकरण की बात करते हैं तो इसका मतलब यही है कि हम राजनीति में त्यागवाद के समावेश की बात दोहराते हैं।

वैसे भी यह तो तय है कि देश के अन्दर अज्ञान, अन्याय और विषमता के जो भी विचार आज हैं, उनके कारण सतही नहीं हैं। बल्कि विकृति इतने



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गहरे जाकर है कि कोई सतही इलाज इसमें कारगर नहीं हो सकता। हास्यास्पद तो यह है कि "दुनिया कैसे बनी", "कैसे चलती है", "समाज कैसे बदलता है" आदि सवालों के 'रेडीमेड' विदेशी जवाब रखकर भारत के राजनैतिक दल समाज बदलना चाहते हैं। भला जो समाज अपने कछारों में पानी देकर खेती को जीवन देने वाली गंगा को मां की तरह पूजता हो। इलाज के काम आने वाले राहगीरों को फल और छाया तक देने वाले पेड़ों को पूजता हो, दूध, बछड़े देने वाली गाय को मां मानता हो—उस देश का आज लगभग हर आदमी दूसरे आदमी से कट रहा है—आस्थाहीन हो रहा है, यह बहुत साधारण प्रक्रिया नहीं है। इस सबके पीछे बहुत गहरी सांस्कृतिक विकृतियां हैं। मगर कैसी विडम्बना है कि इलाज या तो मार्क्स की किताब को रट कर चलने वाले कम्युनिस्ट कर रहे हैं, अथवा एकदम विदेशी शैली पर चलने वाले हिन्दू गांधीवादी या गोडसेवादी कर रहे हैं। यह सब बहुत बड़ा आत्मघात है। (हिन्दू इसमें दूरदराज इलाकों, देहात के तथा दूसरे राष्ट्रवादी मुसलमान, ईसाई, सिख आदि शामिल हैं) के कल्याण के लिये हिन्दुत्व की शैली की ही राजनीति चाहिये।

चूंकि आज सत्ता का लोभ इतना व्यापक बन चुका है कि भीतर की विकृतियों के अलावा बाहरी राष्ट्रविरोधी खतरों को नजरअंदाज किया जा रहा है। ईसाइयों के पास अनाप-शनाप पैसा है। अब इस्लाम के ठेकेदारों के पास भी। वे धर्म परिवर्तन ही नहीं, राष्ट्रीयता के परिवर्तन में लगे हैं। किन्तु वोटों के लालच में कोई भी सरकार कुछ नहीं करेगी। लेकिन हिन्दुओं के तथाकथित ठेकेदार भी तो बिछुड़ों को फिर से हिन्दू बनाने में करोड़ों रुपये कमाकर "धर्मरक्षा" कर रहे हैं। यह सब कुछ बहुत भौंडे स्तर का घिनौनापन है। मैं तो कहता हूं कि राष्ट्र के साथ गद्दारी है। वे स्वयं तो हिन्दू हैं ही नहीं।

हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए 'जन-ज्ञान'
का घर-घर में प्रचार करें।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# भारत विभाजन के समय हिंदुत्व की रक्षार्थ बलिदान

—स्व० भक्त रामशरणदास, पिलखुआ

समय सन् १९४७। मुलतान के देहात में जलालपुर पीरवाला (तहसील शुजाबाद) कस्बे में उस समय १२ हजार हिन्दू नर-नारी रहा करते थे। वहां के मुसलमान थानेदार ने तथा मुसलमान जमींदारों ने हिन्दुओं को आश्वासन दिया था कि आप किसी भी किस्म की कोई चिन्ता न करें; हम मुसलमान आपकी हर प्रकार रक्षा करेंगे। परन्तु दूसरी ओर एक बस, जिसमें ६० हिन्दू नर-नारी सवार थे, और जिसमें धन माल स्त्री और बालबच्चे थे शुजाबाद जा रही थी तो रास्ते में ही यह मुसलमानों द्वारा लूट ली गई, हिन्दू नौजवानों को कत्ल कर दिया गया, जिसमें सुप्रसिद्ध पं० श्री बद्रीनाथ जी भी थे—जिन्होंने जलालपुर में ऋषिकुल की स्थापना कराई थी, उनको और बहादुरपुर के बड़े मेहता साहब को भी कत्ल कर दिया गया। युवा लड़कियों को उड़ा लिया गया।

जब यह समाचार सबको विदित हुआ तो मुलतान शुजाबाद और खासकर जलालपुर में इस समाचार से बड़ी हलचल पैदा हो गई और बड़ा आतंक छा गया।

जलालपुर पीरवाला के हिन्दुओं ने आपस में परामर्श किया कि मुसलमान हमें मुसलमान होने के लिये अवश्य बाध्य करेंगे, गोमांस खिलायेंगे और हमारी नौजवान बहन बेटियों को उड़ा कर ले जायेंगे, इस लिये अच्छा यही है कि सब जने मिलकर एक साथ धर्मरक्षार्थ जल करके राख हो जायें। इसे सबने सहर्ष स्वीकार कर लिया।

११०८ हिन्दू स्त्री बच्चे, नौजवान बूढ़े सभी एक जगह मैदान में आकर इकट्ठे हो गये और अपने अपने घरों का सब सामान रुपया पैसा जेवर कपड़ा आदि एक जगह इकट्ठा कर लिया और सब जने एक साथ मिल करके बराबर बराबर बैठ गये और सबने भगवान् को स्मरण किया और आग लगाली। मुसलमान 'अल्लाहो अकबर' का नारा लगाते हुए गाँव में घुसे तो उन्हें बड़ा ही निराश होना पड़ा और धनमाल जेवर और हिन्दू ललना सभी राख का ढेर हुआ मिला।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# उन्नीस महिलाओं का बलिदान

हमने अपने भारतीय इतिहास में यह तो भलि भांति पढ़ा है कि धर्म रक्षार्थ चक्रवर्ती सम्राट श्री हरिश्चन्द्र भंगी के बिक जाते हैं। महाराणा प्रताप घास की रोटियां खाते हैं। वीर हकीकत, वीर बन्दा वैरागी बलिदान हो जाते हैं। श्री गुरु गोविन्द सिंह जी अपने चार दुधमुंहे बच्चों को बलिदान होते देखते हैं। पर इस घोर कलिकाल में आज भी ऐसे धर्मवीर इस भारत भूमि में मौजूद हैं जो अपनी उन्नीस बहन बेटियों को धर्म की रक्षा के लिये अपने हाथों से काट डालते हों? यह एक अभूतपूर्व सत्य घटना है और मेरे परम सौभाग्य से वे महापुरुष स्वयं कृपा कर मेरे घर पर पधार कर मुझे कृतकृत्य कर चुके हैं।

x x x

अभी दो तीन वर्ष की बात है कि मैं अपने घर के ऊपर के कमरे पर था। संध्या हो चुकी थी। वर्षा हो रही थी। बिजली फेल हो जाने से अंधकार छाया हुआ था। अकस्मात् किसी ने जोर से आवाज दी—भक्त रामशरण दास जी का मकान यहीं पर है? मैं ऊपर से नीचे उतर कर आया तो देखा एक रिक्शा खड़ा हुआ है और उसमें दो सवारियां बैठी हुई हैं और वर्षा के कारण उनके वस्त्र भी भीग गये हैं।

मैंने झट से उन्हें रिक्शे से उतारा और उनका सामान भी अपनी बैठक में रखवाया और उनसे वस्त्र बदलने की प्रार्थना की। वे वस्त्र आदि बदल कर मेरी बैठक में बैठ गये।

मैं—आपने बड़ी कृपा की जो दर्शन दिया। आपका कहां से पधारना हुआ?

उन्होंने कहा—हम इस समय तो दमोह में रहते हैं और इससे पहले पाकिस्तान में रहा करते थे और हमारे घर बार सब पाकिस्तान में छूट गये हैं। अब तो एक छोटी सी दुकान कर रखी है।

मैं--इस समय तो आप कपड़े के काम से आये होंगे?

वे—नहीं भक्तजी, हम आपके सामने एक बड़ी गहन समस्या लेकर के आये हैं जिसे आपको हल करना है। हम आपके लेख कल्याण आदि धार्मिक पत्रों में देखते रहते हैं। इसलिये आपको कष्ट दिया है।

मैं—कष्ट की क्या बात है। जो मेरे योग्य सेवा हो अवश्य बताइये। मैं सदैव तैयार हूं।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'अच्छा, तो पहले हमारी कहानी सुनिये और उसके पश्चात् हमारा प्रश्न है उसे सुनिये और फिर उसका उत्तर दीजिये', उन्होंने कहा।

मैं—अच्छा तो यह हो कि पहले आप भोजन कीजिये, तब आप अपनी गाथा सुनाइये और प्रश्न करिये।

'नहीं, नहीं, हम भोजन तो करके आये हैं और इसकी चिन्ता न कीजिये। अब तो आप हमारी दुःखभरी करुण कहानी सुनिये।

मैं—अवश्य सुनाइये।

'भक्तजी! मैं एक कातिल हूं और मैंने कई कतल किये हैं। (उनके मुख से यह शब्द निकलते ही मेरी फूंक सरक गई। अरे यह कातिल है तो इसका यहां क्या काम? मुझे बड़ा भय लगा कियह मेरे मकान पर रात्रि में कौन आ गया) उन्होंने आगे कहा—

मैंने उन्नीस प्राणियों को कत्ल किया है।

अब तो मेरे और भी छक्के छूट गये। आज यह क्या सुन रहा हूं? क्या ये लोग डाकू तो नहीं हैं? मैंने मन ही मन कहा। उन्होंने आगे कहना कहना प्रारम्भ किया। मैं १९ प्राणियों को मौत के घाट उतारने वाला पापी हूं या धर्मात्मा? और मैंने अच्छा किया या बुरा, यह आपको निर्णय करना है।

मेरे मन में उनकी बात सुनकर तूफान खड़ा हो गया। १९ प्राणियों का कातिल मुझ से धर्मात्मा होने का निर्णय लेना चाहता है! मैंने कहा—'आप आद्योपान्त पूरी घटना सुनाने की कृपा कीजिये'। उन्होंने सुनाना प्रारम्भ किया जो इस प्रकार है—

'हम अपने देश में बड़े आनन्द से रह रहे थे। जब इन नेताओं ने हिन्दू जनता के साथ विश्वासघात करके पाकिस्तान बनाने का निश्चय कर लिया तो चारों ओर से मुसलमान गुण्डों के दल हिन्दुओं के गांवों पर टूट पड़े। जो जो घोर अत्याचार किये गये वे वर्णनातीत हैं।

हमारे गाँव को भी गुण्डों ने चारों ओर से घेर लिया और जिधर देखो 'अल्लाहो अकबर' के नारे सुनाई पड़ रहे थे। गुण्डे घरों में घुस घुस कर आग लगा रहे थे और हिन्दुओं के रोने चिल्लाने चीत्कार करने के करुण स्वरों से आकाश फूटा जा रहा था।

हमारा घर का सब परिवार एक जगह इकट्ठा हो गया और हमारे घर



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की सभी स्त्रियाँ, जो लगभग २० थीं, एक जगह आकर इकट्ठी हो गई और यह विचार विनिमय हुआ कि अब क्या किया जाय ?

बहन बेटियों ने कहा कि हमारे पवित्र पातिव्रत धर्म की किसी प्रकार रक्षा हो जाय। भले ही हमें मृत्यु का आलिंगन करना पड़े, इसकी चिन्ता नहीं।

निश्चय हुआ कि सभी बहन बेटियों को मार कर इनके धर्म की रक्षा की जाय। इन्हें कैसे मारा जाय और कौन मारे, अब यह समस्या सामने आई। गुण्डे तेजी के साथ मारते-काटते बढ़े चले आ रहे थे। यही निश्चय हुआ कि तुम्हीं इस क्रूर कर्म को करो। मैंने हृदय पर पत्थर रख कर यह कार्य करना स्वीकार कर लिया। सब स्त्रियां लाइन लगा करके बैठ गई और मैंने तलवार उठाई और बारी बारी से सभी को मौत के घाट उतार दिया।

मैं धड़ाधड़ काटता रहा और वे बारी बारी से सहर्ष धर्म-रक्षार्थ कटने के लिये आगे आती रहीं। और रोने चिल्लाने का नाम नहीं, वे सहर्ष मृत्यु का आलिंगन करती रहीं। जब मैं १९ को काट चुका और सारा घर खून से भर गया और बाकी बची एक स्त्री को भी मैंने तलवार का वार किया तो उसकी आधी गर्दन कटने पाई थी कि इतने में हिन्दुस्तान की फौज आ गई और वह उस खून से लथपथ जख्मी लड़की को और पापियों से लड़ते-लड़ते मरने को उद्यत हुए हम लोगों को ट्रक में भर कर हिन्दुस्तान में ले आये और दिल्ली आकर उस स्त्री का इलाज कराया गया। वह तो बच गई और शेष १९ स्त्रियां बलिदान हो गईं।

हमने पूछा कि आपको शंका क्या है और आपका प्रश्न क्या है ? वह एक दम से बड़े गम्भीर हो गये और उनकी आँखों में आंसू छलक आये और रुंधे कंठ से बड़े घोर दुःख भरे शब्दों में उन्होंने कहा—हमारा प्रश्न यह है कि हमने अभी कुछ दिन हुए भारत के प्रधान मन्त्री जवाहरलाल नेहरू का दिल्ली की विराट् सभा में भाषण सुना जिसमें उन्होंने गर्जकर कहा है कि हिन्दू और मुसलमान में कोई फर्क नहीं है और इन्सान इन्सान सब एक से हैं। वे लोग मूर्ख हैं और देश के गद्दार है जो हिन्दू मुसलमान को अलग अलग मानते हैं और हिन्दू मुस्लिम रोटी बेटी एक होनी चाहिए देश की उन्नति तभी होगी जब हिन्दू मुस्लिम भेद भाव समाप्त हो जायेगा। जब से हमने उनका भाषण सुना है, तब से हमारे मन में यह शंका उत्पन्न हो गई कि यदि वास्तव में हिंदू मुस्लिम भाई भाई हैं और एक हैं



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और इनमें कोई अन्तर नहीं है और हिन्दू मुस्लिम रोटी बेटी एक होने में कोई पाप नहीं तो हमने हिन्दू मुस्लिम भेदभाव मानकर ही अपने घर बार छोड़े और देश छोड़ा और अपने हाथों से तलवार लेकर अपनी सगी बहन बेटियों को और पूज्या ताई चाचियों को व्यर्थ ही काट-काट कर अपने हाथ उनके खून से रंगे और उनकी हत्या की। अब आप निर्णय करें कि क्या मैं कातिल हूं, हत्यारा हूं और महामूर्ख हूं जो मैंने ऐसा घोर पाप किया था। या मैंने उचित किया और मुझे कोई पाप नहीं लगेगा ?

मैंने झट से उनके चरण छूवे और प्रणाम किया, और कहा कि मैं आज आपका अपने स्थान पर दर्शन करके कृतकृत्य हो गया। आप तो साक्षात् धर्म की जीती जागती मूर्ति हैं। आपकी जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। आपने और धर्म पर हंसते हंसते शीश कटाने वाली और बलिदान होने वाली पूज्या प्रातः स्मरणीया देवियों ने वह उत्तम कार्य किया है जो वर्णनातीत है। जो उत्तम गति बड़े बड़े ज्ञानियों, ध्यानियों, तपस्वियों, त्यागियों और योगियों को भी प्राप्त नहीं होती वही उत्तम गति उन पूज्या देवियों की होगी और अन्य की होगी इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है। वह मेरी पूज्या देवियां स्वर्ग में बैठी हुई देवी देवताओं से पूजी जा रही होंगी। नेहरू या और कोई क्या कहता है इसकी तनिक भी चिंता मत करो। शास्त्र और सनातन धर्म क्या कहते हैं इस पर ध्यान दो। तुमने यह कार्य शास्त्रानुसार और सनातनधर्मानुसार किया है।

मेरी यह बात सुनकर उनका सारा शोक जाता रहा और प्रसन्नता से उनका चेहरा खिल उठा और उन्होंने कहा—यदि यह बात है तो हमें कोई चिन्ता नहीं। हमारा आज भ्रम दूर हो गया और अब हम निश्चिन्त हो गये हैं।

## धर्मवीर छिनकू का बलिदान

रियासत बहावलपुर में श्रीरामभक्त छिनकू रहा करता था। वह एक छोटी सी दुकान किया करता था। बहावलपुर के मुसलमान नवाब तक को छिनकू के ऊपर विश्वास था कि वह न कम तोलता है और न कभी झूठ बोलता है।

एक दिन एक मुसलमान भक्त छिनकू जी के पास आया कहा कि अपनी दूकान पर चलो मुझे कुछ सामान लेना है। चल कर दे दो। उसने उस मुसलमान से कहा कि यह समय दूकान खोलने का नहीं है। यह प्रातः काल का शुभ समय तो भगवान् श्रीराम के भजन करने का है।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह सुनकर उस मुसलमान ने बड़े क्रोध में भर श्रीराम को एकदम से गालियां देनी प्रारम्भ कर दीं और जो जी में आया उसने भगवान् श्रीराम के प्रति अन्ट सन्ट बका। भला श्रीराम भक्त छिनकू अपने परम इष्टदेव भगवान् श्री राम जी को इस प्रकार गालियां कैसे सहन कर सकता था? भक्त छिनकू ने उस उद्दण्ड मुसलमान से कहा कि ऐसे ही यदि तुम्हारे खुदा को और तुम्हारे पीर को कोई कुछ कह दे तो? इस पर तो उस मुसलमान को और भी क्रोध आ गया और उसने पहले से भी ज्यादा गालियाँ भगवान श्रीराम को देनी प्रारम्भ कर दीं। भक्त छिनकू ने भी उसे वैसा ही उत्तर दिया। बात बढ़ गई और उस मुसलमान ने हाकिम के पास जाकर भक्त छिनकू के विरुद्ध रिपोर्ट कर दी। नवाब तक भी यह समाचार पहुंचा। नवाब छिनकू भक्त में पहले से ही बड़ी श्रद्धा रखता था, इसलिये उस नवाब ने भक्त छिनकू को यह कहला भेजा कि तू इनकार कर दे और तू यह कह दे कि मैंने पीर को और खुदा को कोई गाली नहीं दी। ऐसा कहने पर तुम्हें कुछ नहीं होगा और तुम्हें साफ छोड़ दिया जायगा। परन्तु जब कचहरी में भक्त छिनकू को ले जाया गया, वह हाकिम के सामने पेश हुआ और छिनकू का उस हाकिम के सामने बयान लिया गया तो भक्त छिनकू ने झूठ न बोल स्पष्ट ही कह दिया कि इस मुसलमान ने मेरे परम इष्टदेव भगवान् श्रीराम को गालियां दीं। मैंने भी इसके बदले में इसके पीर को और इसके खुदा को गाली दी।

फैसला सुनाया गया कि भक्त छिनकू को संगसार (पत्थर मार मार कर मार देना) दिया जाय। तुरन्त ही छिनकू को पकड़ करके ले जाया गया और एक बहुत बड़े मैदान में ले जाकर के खड़ा कर दिया गया। जो भी उधर से कोई मुसलमान गुजरता वही उस श्रीराम भक्त छिनकू के ऊपर पत्थर फेंक कर मारता और जोर से पत्थर लगते ही भक्त छिनकू कहता 'श्रीराम'। फिर पत्थर आकर पड़ता छिनकू फिर पुकारता 'श्रीराम'। इस प्रकार भक्त छिनकू के ऊपर पत्थर पर पत्थर आकर पड़ रहे हैं और पत्थर की मार से सिर, छाती, हाथ, पांव आदि सारा ही शरीर घायल हो गया है, लहू बह रहा है। पर फिर भी हर पत्थर के आ करके पड़ने पर छिनकू भक्त कह रहा है 'श्रीराम'। छिनकू भक्त की राम राम की रट बराबर जारी है। संध्या के समय उसका एक परम मित्र मुसलमान सज्जन भक्त छिनकू के पास आया और उसे भक्त छिनकू की यह दयनीय दशा देखकर बड़ी दया आई इस लिए उसने कहा कि भक्त छिनकू मुझसे तुम्हारी यह दशा नहीं देखी जाती तुम। मुझे आज्ञा दो कि मैं तुम्हें तलवार



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से एक ही वार में समाप्त करदूं जिससे तुम्हें इस प्रकार से कष्ट न उठाना पड़े और इस प्रकार से तड़प तड़प करके प्राण न देना पड़े। इस पर भक्त छिनकू ने उस मुसलमान को उत्तर दिया कि नहीं प्यारे मित्र ! राजाज्ञा के अनुसार ही मुझे मरना चाहिये। मुझे तो कोई पीड़ा नहीं हो रही है। पीड़ा तो केवल मात्र इस शरीर को हो हो रही है जिसका आज भी और जिसका कल भी नाश अवश्य ही होना है। तुम कोई चिन्ता न करो। और मुझे इस प्रकार कष्ट भोगते हुए ही मरने दो।

परन्तु उस मित्र के लिये भक्त छिनकू के ऊपर ऐसा घोर अत्याचार अधिक देर तक सहन करना कठिन हो गया। उसने भक्त छिनकू का अपने हाथ से सिर काट दिया। जब भक्त छिनकू का धड़ से कट कर सिर पृथ्वी पर गिरा तो उस समय सबने देखा कि छिनकू के अन्दर से श्री राम राम की आवाज (ध्वनि) निकली। यह देखकर सब आश्चर्य चकित हो गये।

---

## डा० रामनाथ वेदालंकार की धर्मपत्नी का देहान्त

वेदों के प्रसिद्ध विद्वान् डा० रामनाथ वेदालंकार की पत्नी श्रीमती प्रकाशवती जी का दिनांक २४-३-८२ को ५९ वर्ष आयु में तिलहर में देहावसान हो गया। वे चार-पाँच मास से अस्वस्थ चल रही थीं।

वे एक धर्मनिष्ठ, ईश्वरभक्त परोपकारशील, आर्यसमाज एवं आध्यात्मिकता के कार्यों में रूचि लेने वाली, सन्ध्या-अग्निहोत्र-गायत्रीजाप आदि करने वाली अतिथि-सत्कारप्रिय, सादा जीवन एवं उच्च विचार के आदर्श को जीवन में परिणत करने वाली और त्याग-तपस्या-परायण महिला थीं। जीवन में वे प्रकाश और प्रेरणा का स्रोत बन कर आईं। दयानन्द संस्थान और हिन्दू रक्षा समिति के कार्य भी उनकी रुचि के अनुकूल थे तथा वे 'जन-ज्ञान' नियमित रूप से देखती थीं।

उनकी स्मृति में उनकी आत्मा की शान्ति के लिए १००)- दयानन्द संस्थान के लिए तथा १००)- हिन्दू रक्षा समिति के लिए दान में भेजे।

जन-ज्ञान अपने हजारों पाठकों की ओर से उनकी दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए परमात्मा से प्रार्थना करता है।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत के गृहमंत्री के नाम भीलवाड़ा जिला हिन्दूमहासभा के अध्यक्ष का खुला पत्र

# पण्डिता राकेशरानी की गिरफ्तारी भारत सरकार के लिए कलंक

आदरणीय महोदय,

यह जानकर अत्यंत वेदना हुई कि आपके होते हुए अखिल भारतीय दयानंद संस्थान आर्य समाज नई दिल्ली की अध्यक्षा एक हिंदु विदुषी प्रकान्ड पंडिता निर्भीक नारी को आपकी सरकार ने धर्म निरपेक्ष सरकार ने धमकी से भयभीत होकर गिरफ्तार कर लिया।

'इस्लाम क्या है' पुस्तक में पंडिता राकेशारानी ने ऐसा क्या लिखा है जो गलत है ? यदि कस कर आप देखें तो इतिहास और सत्य की कसौटी पर राकेशरानी का लिखा एक एक शब्द खरा उतरता है।

दिन प्रतिदिन जैसा की आप सबसे अधिक जानते हैं मुसलमानों की संख्या बढ़ती जा रही हैं। तभी तो वे यह साहस कर सके कि भारत की की राजधानी दिल्ली में जगह जगह पोस्टर लगाकर सरकार को खुले आम यह धमकी दे दी कि यदि इस्लाम क्या है पुस्तक को पूरे भारत में जब्त न किया गया और इस पुस्तक की लेखिका शैतान औरत को गिरफ्तार न किया गया तो हिन्दुस्तानी मुसलमान दिल्ली और मुल्कगीर पैमाने पर इस शरओज फितनापरवर जहरीली और फ्रिरका परस्त जहनियत के खिलाफ जर्बदस्त हरीक चलायेगें जिसकी तमाम तर जिम्मेदारी मर्कजी वजारते दाखिला हकूमते हिन्दू और दिल्ली इंतजामिया पर होगी। और मुसलमानों की इस धमकी से भारत सरकार डर गई गृहमंत्री ज्ञानी जैल सिंह जिनमें उस गुरु गोविन्दसिंह का जिसके बच्चों को दीवारों में जीवित चुन दिया गया था रक्त आज भी बरकरार है डर गये तो अपार वेदना हुई।

आज श्री संजय गांधी रह रहकर याद आते है। ईश्वर ने उन्हें अपने पास बुलाकर हिंदुओं का एक प्रतापी हिमायती एवं रक्षक छीन लिया हैं। उनकी अनुपस्थिति इस समय बड़ी दुखदायी हो उठी है। आज यदि



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

श्री संजय होते तो मुसलमानों की धमकी स्वंय मुसलमानों के लिए मौत का पैगाम बन जाती।

जिला हिन्दू महासभा भीलवाड़ा आपसे विनम्र निवेदन करती है कि परम आदरणीय उद्भट वीरांगना एवं प्रकाण्ड पंडिता राकेशरानी पर से अनुचित कानून के समस्त बधन हटाकर हिन्दू माथे को झुकने से बचायें साथ ही उनकी पुस्तक को जब्त मुक्त करें इसके साथ ही जिन गुण्डों ने पंडिता राकेशरानी के लिए अपमानजनक शब्द लिखे हैं और भारत सरकार को धमकी दी है ऐसे समस्त गुण्डों को ऐसा भंयकर दण्ड दे कि वे और उनका समस्त फिरका भविष्य में फिर कभी इस प्रकार की देशद्रोहिता करने का दुःसाहस ही न करें।

---

## वन्देमातरम् और मौलाना मुहम्मद अली

### श्री माधवराव सदाशिव गोलवलकर

मौलाना मुहम्मद अली जो राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के दाहिने हाथ माने जाते थे और एक निष्ठावान कांग्रेसी मुसलमान थे। एक प्रसिद्ध उदाहरण है।

मौलाना मुहम्मद अली सन् १९२३ में काग्रेस के काकिनाडा अधिवेशन के सभापति चुने गये थे। उस अधिवेशन में राष्ट्रीय गीत 'वन्देमातरम्' के गान के लिए प्रख्यात देशभक्त संगीतज्ञ पंडित विष्णु दिगम्बर पुलुस्कर आये थे। जैसे अधिवेशन प्रारम्भ होने को हुआ और 'वन्देमातरम्' का गान करने के लिए वे आगे बढ़े, मौलाना साहब ने उन्हें यह कहते हुए रोक दिया कि—"नहीं, आप वह राष्ट्रीय गीत नहीं गा सकते वह हमारी धार्मिक भावनाओं पर आघात करता है।" किन्तु दृढ़ निश्चयी-हृदय पुलुस्कर ने यह कहकर दब जाने से इन्कार कर दिया कि वे विशेष रूप से इसलिए आये हैं और अपने कर्त्तव्य का पूरा करेगें। क्रोध में आकर मौलाना मुहम्मद अली बैठक के सभापति के उस स्थान से उठकर चलें गये और जब तक 'वन्देमातम्' का राष्ट्रीय गीत चलता रहा, दूर खड़े रहे।



मुद्रक—प्रकाशक—संपादक पंडिता राकेशरानी के लिए नरेन्द्रप्रेस दिल्ली में छपा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मारने में कोई पाप नहीं है चाहे वह ब्राह्मण ही क्यों न हो।" यह गूढ़ सत्य है और इसको कदापि न भूलना चाहिये।

शूर ही संसार में आनन्द करते हैं। अपनी शूरता दिखाओ और राजनीति के चतुर्मुखी सिद्धांतों—साम, दाम, दण्ड, भेद—का परिस्थितियों के अनुसार उपयोग करो। तभी तुम धार्मिक बनोगे। अन्यथा तुम एक लज्जाजनक जीवन व्यतीत करते रहे हो यदि तुम अपमानों को शर्बत की घूंट समझ कर पी जाते हो। जब जिस किसी के मस्तिष्क में आया वह तुम्हारे ठोकर मार दे या पैरों तले रौंद दे। ऐसी अवस्था में तुम्हारा जीवन इस लोक में साक्षात् नरक तुल्य है और इसी प्रकार परलोक में भी। यही बात है जो शास्त्र कहते है—स्वधर्म का पालन करो—यही सत्य है। सत्यों का सत्य। मेरे प्यारे धर्मबन्धुओ, यही मेरी भी शिक्षा है। निःसंदेह किसी के साथ बुराई न करो, न किसी की हानि करो और न किसी पर अत्याचार, बल्कि जितना कर सकते हो दूसरों का भला करो, लेकिन दूसरों की बुराइयों को चुपचाप सहन करना पाप है। इसका उत्तर उन्हीं के शब्दों में तत्काल और वहीं पर देना चाहिये।

(पूर्व और पश्चिम भाग ५)

## अपने पूर्वजों पर अभिमान करो

हम हिन्दू हैं। मैं इस शब्द को बुरे अर्थों में बिल्कुल प्रयुक्त नहीं कर रहा हूं और न ही मैं उन लोगों से सहमत हूं जो यह सोचते हैं कि इससे कोई बुरा अर्थ निकलता है। पुराने समय में इसका तात्पर्य केवल उन लोगों से था जो सिन्धु नदी के दूसरी ओर रहते थे। हो सकता है कि उन लोगों ने जो हम से घृणा करते हैं इसका बुरा अर्थ निकाल लिया हो। परन्तु केवल नाम से कुछ नहीं बनता। यह हम पर निर्भर करता है कि 'हिन्दू' शब्द उन सब वस्तुओं का द्योतक है जो श्रेष्ठ हैं और आध्यात्मिक हैं अथवा यह बदनामी का, पददलितों का, निकम्मों का अथवा काफिरों का अभिवाचक है। यदि इस समय 'हिन्दू' शब्द का कोई बुरा अर्थ है तो उसकी चिन्ता न करो। अपने कार्यों से यह दिखाने के लिए तैयार रहो कि यह सबसे ऊंचा शब्द है जो कोई भी भाषा आविष्कार कर सकती है। अपने पूर्वजों पर लज्जित न होना मेरे जीवन का एक प्रमुख सिद्धान्त रहा है। मैं संसार में उत्पन्न होने वाले गर्वीले प्राणियों में से एक हूं, परन्तु मैं स्पष्ट रूप से आपसे कहता हूं कि यह गर्व अपने कारण नहीं परन्तु अपने पूर्वजों के कारण है। जितना ही मैंने भूतकाल का अध्ययन किया है, जितना ही अधिक मैंने पीछे मुड़



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कर देखा है, उतना ही मुझमें गर्व उत्पन्न हुआ है और इसने मुझे शक्ति एवं विश्वास पर दृढ़ रहने का साहस प्रदान किया है, मुझे पृथ्वी की धूल से उठाया है, और हमारे उन महान् पूर्वजों द्वारा निर्धारित उस महान् योजना को कार्यान्वित करने के लिये मुझे लगाया है। उन प्राचीन आर्यों की संतान ! प्रभु की कृपा से तुममें वही अभिमान उत्पन्न हो, तुम्हारे पूर्वजों का दृढ़ विश्वास तुम्हारे रक्त में आकर तुम्हारे जीवन का अभिन्न अंग बन जाए और विश्व की मुक्ति में सहायक सिद्ध हो।

**मेरी ओर ध्यान करो, केवल उसी समय तुम हिन्दू हो जब यह शब्द-मात्र तुम्हारे अन्दर बिजली की-सी शक्ति उत्पन्न कर दे।** केवल तब ही तुम हिन्दू हो, जब इस नाम को धारण करने वाला प्रत्येक व्यक्ति चाहे किसी देश का हो, हमारी भाषा बोलता हो अथवा अन्य कोई भाषा, तुम्हारा समीपस्थ और प्रियतम बन जाता है। केवल तब ही तुम हिन्दू हो जबकि किसी अन्य सजातीय का कष्ट तुम्हारे हृदय में प्रविष्ट हो जाये और तुम्हें यह अनुभव हो मानो तुम्हारा अपना सगा पुत्र संकट में है। केवल तब ही तुम हिन्दू हो जब तुम उनके लिये सब-कुछ सहन करने को तत्पर होगे जिसका एक बड़ा उदाहरण मैंने अपने भाषण के प्रारम्भ में दिया है—तुम्हारे महान् गुरु गोविन्दसिंह का। अपने देश से निकाले हुए, आततायियों से लड़ते हुए हिन्दू धर्म की रक्षार्थ अपना रक्त बहाकर रणक्षेत्र में अपने बच्चों का संहार देख कर; ओह ! उस महान् गुरु का यह दृष्टान्त ! जिनके लिये वह अपना व अपने सगे-सम्बन्धियों का खून बहा रहा था, उनके द्वारा त्यागे जाने पर वह घायल सिंह रणक्षेत्र त्याग कर दक्षिण में शान्ति-पूर्वक मरने के लिये चला गया परन्तु उन लोगों के प्रति एक भी निन्दा का शब्द होंठों पर नहीं लाया जिन्होंने कृतघ्नतापूर्वक उसका साथ छोड़ दिया था। मुझको लक्ष्य करो—देश का कुछ भला करना है तो तुममें से प्रत्येक को गुरु गोविन्दसिंह बनना पड़ेगा। **तुम्हें अपने देशवासियों में सहस्रों त्रुटियाँ दिखाई दें परन्तु उनके हिन्दूरक्त का ध्यान रखना है।** वे पहले देवता हैं जो तुम्हें पूजने होंगे, चाहे वे तुमको कितनी भी हानि पहुंचाने का प्रयत्न करें, चाहे वे तुम्हारी कितनी ही निन्दा करें, तुम्हें उनके प्रति प्रेमभरे शब्दों का ही प्रयोग करना है। यदि वे तुम्हें निकाल बाहर कर दें तो उस शक्तिशाली सिंह गुरु गोविन्दसिंह की भांति मरने चले जाओ। ऐसा ही व्यक्ति 'हिन्दू' कहलाने का अधिकारी है; हमारे सम्मुख सदैव ऐसा ही आदर्श होना चाहिये। आओ, हम सब अपने आपसी झगड़े समाप्त करदें और चारों ओर इस महान् प्रेम के सन्देश को फैला दें। (लाहौर में दिये गये भाषण का अंश)



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

## अपने पूर्वजों पर लज्जित मत हो

शीघ्रता न करो, किसी दूसरे की नकल करने का प्रयत्न न करो, यह दूसरा बड़ा पाठ है जो हमें याद रखना है, नकल करना सभ्यता का चिह्न नहीं है। नकल, कायरतापूर्ण नकल, करने से कभी उन्नति नहीं हो सकती। निश्चयरूप से यह मनुष्य के भयंकर पतन का द्योतक है! ओह! जब मनुष्य स्वयं से घृणा करना आरम्भ कर देता है तब उस पर अन्तिम प्रहार आ पड़ता है। **जब मनुष्य अपने पूर्वजों पर लज्जित होना आरम्भ कर देता है, तब उसका अन्त आ जाता है। मैं आपके सम्मुख खड़ा हूं, हिन्दू जाति का एक अत्यन्त तुच्छ व्यक्ति, परन्तु फिर भी मुझे अपनी जाति पर अभिमान है। मैं अपने को हिन्दू कहने में गर्व अनुभव करता हूं।** मुझे अभिमान है कि मैं आपके तुच्छ सेवकों में से एक हूं। मुझे अभिमान है कि मैं मुनियों के वशंज, संसार में उत्पन्न हुए महानतम प्रतिभाशाली ऋषियों की सन्तान, तुम लोगों का देशवासी हूं। इसलिये स्वयं में विश्वास रखो, अपने पूर्वजों पर लज्जित होने की बजाय उनपर अभिमान करो। और नकल कदापि न करो। जब भी तुम दूसरों के अंगूठे तले होते हो, तुम अपनी स्वतन्त्रता खो बैठते हो। यदि तुम आध्यात्मिक क्षेत्र में भी दूसरों की इच्छा पर कार्य कर रहे हो तो शनैः-शनैः तुम स्वतन्त्रतापूर्वक विचार करने की शक्ति खो बैठते हो। जो तुम्हारे पास हो उसे अपने ही परिश्रम द्वारा बाहर निकाल लाओ, परन्तु नकल न करो, फिर भी दूसरों में जो अच्छाइयां हैं, ग्रहण कर लो।

हमें दूसरों से सीखना है। तुम भूमि में बीज डाल दो और उसकी खुराक के लिए उसको खूब मिट्टी, वायु और जल दो। जब बीज पौधा और पौधे से विशालकाय वृक्ष बन जाता है, तो क्या वह मिट्टी बन जाता है, क्या वह वायु बन जाता है अथवा वह पानी बन जाता है? नहीं, जो कुछ उसको दिया गया था उस सबको आत्मसात् करके वह अपनी ही प्रकृति के अनुरूप एक पौधा, फिर एक महान् वृक्ष बन जाता है। आपकी भी यही स्थिति होनी चाहिये।

(वेदान्त संदेश—भाग ३)

## भर्त्सना समाज सुधार का उचित ढंग नहीं

पिछले लगभग १०० वर्षों से हमारे देश में समाज सुधारकों एवं समाजसुधार योजनाओं की बाढ़-सी आई हुई है। व्यक्तिगत रूप से मुझे



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
इन सुधारकों से कोई शिकायत नहीं। इनमें से अधिकतर अच्छे आदमी हैं, भला चाहने वाले हैं और कतिपय विषयों पर उनके लक्ष्य प्रशंसनीय हैं। परन्तु फिर भी यह प्रत्यक्ष सत्य है कि इन पिछले १०० वर्षों में समाजसुधार का कोई स्थायी एवं सारपूर्ण परिणाम नहीं निकला है, जिसका सारे देश में सुप्रभाव होता। मंच पर से हजारों भाषण हुए हैं। हिन्दू जाति के पूजनीय व्यक्तियों तथा उनकी सभ्यता की भर्त्सना में ग्रन्थों पर ग्रन्थ लिख डाले गये हैं, फिर भी उसका कोई सुन्दर व्यावहारिक परिणाम नहीं निकला है। इसका कारण क्या है? इसका कारण खोजना कोई कठिन कार्य नहीं—यह भर्त्सना में ही निहित है। जैसा कि मैं पहले कह चुका हूं कि प्रथम हमें जाति के रूप में इतिहास-प्राप्त चरित्र को बनाये रखना है। मैं मानता हूं कि हमें दूसरे राष्ट्रों से बहुत-सी चीजें प्राप्त करनी हैं, बाहर से हमें बहुत-सी शिक्षाएँ लेनी हैं, परन्तु मुझे यह कहते हुए दुःख होता है कि हमारे अधिकतर वर्तमान सुधार-आन्दोलन पश्चिमीय कार्य करने की पद्धति एवं साधनों की अविवेकपूर्ण नकल बन कर रह गए हैं। निःसन्देह ये भारत के लिये उपयुक्त न हो सकेंगे। यही कारण है कि हमारे हाल के आन्दोलनों का कोई सुपरिणाम न निकला। भर्त्सना भलाई करने का कोई उपयुक्त साधन नहीं है। हमारे समाज में त्रुटियां हैं—यह एक बच्चा भी देख सकता है; और किस समाज में बुराइयां नहीं हैं। मेरा आदर्श है वृद्धि, विस्तार तथा राष्ट्रीय प्रणाली पर विश्वास। **जब भी मैं अपने देश के प्राचीन इतिहास की ओर देखता हूं तो मैं संसार में अन्य कोई देश नहीं पाता जिसने मानव बुद्धि के उत्कर्ष के लिये इतना कुछ किया हो। इसलिए मेरे पास अपने राष्ट्र के प्रति कोई निन्दा का शब्द नहीं है। मैं उनसे कहता हूं "तुमने अबतक अच्छा किया है, केवल इससे और अच्छा करने का प्रयत्न करो।"**

इस भूमि पर प्राचीनकाल में बड़े-बड़े कार्य हुए हैं और अब भी उनसे बड़े कार्य करने की गुंजाइश व समय है। मुझे विश्वास है कि तुम जानते हो कि हम एक स्थान पर रुक कर खड़े नहीं हो सकते; यदि हम गतिविहीन हो जाते हैं तो यह हमारी मृत्यु है। हमें या तो आगे बढ़ना है या पीछे लौटना है। या तो हमें उन्नति करनी है या हमें पतित होना है। **हमारे पूर्वजों ने पूर्वकाल में बड़े कार्य किये हैं, परन्तु हमें सम्पूर्ण जीवन में वृद्धि करनी है और उनकी सफलताओं से आगे बढ़ना है।** हम कैसे पीछे लौट कर स्वयं को गर्त में डाल सकते हैं? यह नहीं हो सकता -- यह नहीं होना चाहिए। पीछे लौटने का परिणाम देश का पतन एवं मृत्यु होगा। इसलिए हम आगे बढ़ें और पहले से भी अधिक बड़े कार्य करें। यही बात है जो मुझे आप लोगों को



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बतानी है। मैं क्षणिक समाज सुधार का उपदेशक नहीं हूं। मैं बुराइयों को दूर करने का प्रयत्न नहीं कर रहा हूं, मैं केवल आपको आगे बढ़ने को कह रहा हूं और मानव जाति की उन योजनाओं को मूर्तरूप देने को कह रहा हूं जो पूर्णरूप से हमारे पूर्वजों द्वारा निर्धारित की जा चुकी हैं।

## हम शक्ति चाहते हैं—भ्रान्तिपूर्ण विचार नहीं

जिस वस्तु की हमें आवश्यकता है वह है स्फूर्ति, नसों में शक्ति, लौहदण्ड और इस्पात की नाड़ियां, न कि अर्थविहीन, मूर्खतापूर्ण और भ्रान्तिपूर्ण विचार। 'शक्ति', 'शक्ति' यह शब्द है जो उपनिषद् का प्रत्येक पृष्ठ मुझसे कहता है। यह एक महान् बात है जो ध्यान रखने योग्य है, यह एक महान् पाठ है जो मैंने जीवन में सीखा है; शक्ति, शक्ति, ओ मनुष्य, दुर्बल न बनो। मनुष्य कहता है—क्या मानव में दुर्बलताएं नहीं हैं? उपनिषदें कहती हैं कि मानव में दुर्बलताएं हैं, परन्तु क्या अधिक दुर्बलता उन्हें ठीक कर देगी? क्या तुम गन्दगी को गन्दगी से धोने का प्रयत्न करोगे? क्या पाप का इलाज पाप है, दुर्बलता का इलाज दुर्बलता है? शक्ति ओ, मनुष्य, शक्ति, उपनिषदें कहती हैं। संसार में यही एक ग्रन्थ है जहां "अभीः" "निर्भय" शब्द बार-बार प्रयोग किया गया है। संसार के अन्य किसी भी धार्मिक ग्रन्थ में इस विशेषण का ईश्वर अथवा मनुष्य के लिए प्रयोग नहीं किया गया है।

## क्या हमें अपनी परम्पराओं और रीतिरिवाजों को कोसना चाहिये?

हम किसी भी महानतम उन्नतिशील राष्ट्र के समकक्ष हों और साथ ही साथ अपनी परम्पराओं के प्रति उतने ही श्रद्धावान् तथा निष्ठावान् हों जितना कि केवल हिन्दू ही जानते हैं। सीधे शब्दों में प्रथम हमें प्रत्येक वस्तु में आवश्यक तथा अनावश्यक का भेद जानना है। आवश्यक वस्तु सर्वकालीन है, जब कि अनावश्यक वस्तुओं का मूल्य एक विशेष समय तक ही रहता है और एक समय के पश्चात् यदि उनको किसी अन्य आवश्यक वस्तु द्वारा परिवर्तित नहीं किया गया तो वे निश्चित रूप से भयावह हो जाती हैं। मेरा अभिप्राय यह नहीं कि तुम खड़े होकर अपने रीतिरिवाजों एवं संस्थानों को गालियां देना आरम्भ कर दो। कदापि नहीं, तुमको उनमें से बुरे से बुरे का भी तिरस्कार नहीं करना चाहिए।

## भारतीय राष्ट्र की आत्मा कहां निवास करती है?

जब हम बच्चे थे, तब हमने एक दैत्या की कहानी सुनी थी जिसका

 Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi 

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जीवन एक छोटे-से पक्षी में था ओर जब तक उस पक्षी को मारा न जाय वह कभी नहीं मरती थी। राष्ट्र का जीवन भी उसी प्रकार है। तुम एक बात और देखोगे कि राष्ट्र उन अधिकारों से वंचित होने की अधिक परवाह नहीं करता जिसका उसके जीवनध्येय से अधिक प्रयोजन नहीं है, परन्तु जब उन ध्येयों पर जिन पर राष्ट्रीय जीवन निर्भर करता है साधारण-सा आघात भी किया जाये, उसी क्षण वह असीम शक्ति से प्रतिघात करता है। भारतीय राष्ट्र की आत्मा धर्म और अध्यात्मवाद है। यदि उस पर आघात होता है तो उसकी घोर प्रतिक्रिया स्वाभाविक है।

## आधुनिकवाद बनाम धर्मपरायणता

भारत में हमारे मार्ग में दो बड़ी रुकावटें हैं, एक पुराने रूढ़िवाद की और दूसरी आधुनिक पश्चिमी सभ्यता की। इन दोनों में से मैं प्राचीन धर्म-परोयणता के पक्ष में हूं, पश्चिमी प्रणाली के नहीं; क्योंकि पुराना धर्म-परायण व्यक्ति ज्ञानरहित हो सकता है, वह कट्टरपन्थी हो सकता है, परन्तु वह पौरुषयुक्त है, उसमें विश्वास है, उसमें बल है, वह अपने ही पैरों पर खड़ा हुआ है, जबकि आधुनिक सभ्यतायुक्त पुरुष की कोई रीढ़ की हड्डी नहीं है। वह तो प्रत्येक स्रोत से, बगैर समझे एकत्रित किये गये विभिन्न विचारों का पुञ्ज है और यह विचार बगैर आत्मसात् किये गये, बिना पचाये हुए तथा बिना क्रमबद्ध किये गये है। वह अपने पैरों पर नहीं खड़ा होता एवं उसका मस्तिष्क चारों ओर घूमता रहता है। उसके कार्य की प्रेरणाशक्ति कहां है?—पश्चिमी व्यक्तियों द्वारा अनुमोदित कुछ सिद्धान्तों पर। उसके सुधार की योजनाएं, कतिपय सामाजिक रीति-रिवाजों के विरुद्ध घोर निन्दात्मक प्रवृत्ति, वास्तव में पश्चिमी दृष्टिकोण पर आधारित है। हमारे कतिपय रिवाजों को क्यों बुरा कहा जाता है? क्योंकि पश्चिम वाले उनको ऐसा कहते है। वह इसका यही कारण बतलाता है। मैं इसको नहीं स्वीकार करूंगा। अपनी शक्ति के बल पर जियो और मरो। **यदि संसार में कोई पाप है तो वह निर्बलता है। सब प्रकार की निर्बलताओं से दूर रहो, क्योंकि निर्बलता पाप है, निर्बलता मृत्यु है।** इन डावांडोल स्वभाव के प्राणियों ने अभी तक स्पष्ट व्यक्तित्व प्राप्त नहीं किया है। हम उन्हें क्या कहें—पुरुष, स्त्री अथवा पशु? जब कि वे पुराने धर्मपरायण व्यक्ति दृढ़ थे और पौरुषयुक्त थे।

(रामनद (दक्षिण भारत) में दिये गये भाषण का अंश—भाग ३)



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

## देशभक्त बनो

ओ हिन्दुओ, हमारा यह राष्ट्रपोत यहां युगों से चल रहा है। यह राष्ट्रपोत लाखों-करोड़ों आत्माओं को भवसागर के पार ले जाता रहा है और इसके कारण लाखों आत्माएं परमपद को प्राप्त कर चुकी हैं। परन्तु आज शायद तुम्हारे अपने ही दोषों के कारण यह नाव कुछ क्षतिग्रस्त हो गयी है, कुछ छिद्रयुक्त हो गयी है, और क्या तुम इसको इसलिये कोसोगे? क्या यह ठीक है कि तुम खड़े हो कर इसको गालियाँ दो जिसने दुनिया की अन्य किसी जाति के मुकाबले में सबसे अधिक कार्य किया है? यदि इस राष्ट्रपोत में, हमारे समाज में, छिद्र हैं तो हम इसके बच्चे हैं। आओ, हम सब मिलकर इसके छिद्रों को बन्द कर दें। हमें प्रसन्नतापूर्वक अपने जीवन-रक्त द्वारा यह कार्य करना चाहिये, और यदि हम नहीं कर सकते तो हम मर जायें। हमें अपने देशवासियों को खतरे से सूचित कर देना चाहिये। वे जागें और हमारी सहायता करें। मैं देश के लोगों को उनकी स्थिति व कर्त्तव्य के प्रति जागरूक करने के लिये देश के एक कोने से दूसरे कोने तक उच्चतम स्वर से पुकारूंगा। मान लो, वे मेरी नहीं सुनते, तब भी मैं उनको धिक्कार का एक शब्द भी नहीं कहूंगा। देशभक्त बनो, और उस जाति से प्रेम करो जिसने पूर्व काल में तुम्हारे लिए इतना बड़ा कार्य किया है। मैं तुम सबसे प्रेम करता हूं क्योंकि तुम सब महान् पूर्वजों की सन्तान हो। तब किस प्रकार मैं तुमको धिक्कार सकता हूं। कभी नहीं। तुम सर्वमंगलमय हो

---

## हिन्दू राष्ट्र और अल्पसंख्यक

—श्री माधवराव सदाशिव गोलवलकर

जब हम हिन्दू राष्ट्र का उच्चारण करते हैं, तो अनेक लोगों के सम्मुख प्रश्न खड़ा होता है कि 'भारत में रहने वाले उन लोगों का क्या होगा, जो आज अपने आपको हिन्दू नहीं कहते?' हम समझते है कि उन्हें अपने आपको हिन्दू कहना चाहिए तथा हिन्दू परम्परा का अभिमान लेकर चलना चाहिए।

अर्थात् वे प्रभु यीशु या हजरत मुहम्मद के उपासना के मार्ग पर चलने को स्वतंत्र हैं, किन्तु उन्हें उपासना के साथ-साथ जीवन का शेष सम्पूर्ण व्यवहार भी नहीं बदल देना चाहिए।

हर आदमी के तीन धर्म होते है: व्यक्ति-धर्म, कुल-धर्म तथा समाज-धर्म या राष्ट्र-धर्म।

व्यक्ति-धर्म का आधा भाग उनके द्वारा स्वीकृत उपासना पद्धति है। अतः उसका महत्व १/६ से अधिक नहीं होना चाहिए। १/६ के लिए हम ५/६ के प्रति हम बेईमान क्यों हों?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# मैंने इस्लाम क्यों छोड़ा ?

—अमरेश आर्य
(भूतपूर्व शेख अमीर अली)

इस प्रश्न का उत्तर देने से पूर्व मैं पाठकों को कुछ आवश्यक बातों से अवगत कराना आवश्यक समझता हूं। इस प्रश्न को उठाने का मेरा एकमात्र प्रयोजन वास्तविकता और सच्चाई को संसार के समक्ष लाना है। मैं किसी पर व्यक्तिगत आक्षेप नहीं करूंगा। किसी मजहब अथवा वर्ग पर अनुचित आक्षेप करने अथवा मनघड़न्त आरोप लगाने का भी मेरा कोई इरादा नहीं। मैं केवल दृष्टिकोण और सिद्धान्त की बात करूंगा। मेरी सावधानी के बावजूद यदि किन्हीं सज्जनों को मेरे लेख में कोई दिल दुखाने वाली बात दिखाई दे, तो वे कृपया उसकी उपेक्षा करदें अथवा मुझे सूचित करने का कष्ट करें। मैं पूरी गम्भीरता से उसे देखूंगा।

मनुष्य आध्यात्मिक क्षेत्र में इसलिए नहीं आता कि उससे कोई अस्थायी भौतिक लाभ प्राप्त करे। वह तो मानसिक शान्ति और आध्यात्मिक आनन्द प्राप्त करने के लिए आता है। मेरा भी यही मन्तव्य है।

मैं वर्षों से सत्य और वास्तविकता की खोज में घूमता फिरता था। इस सिलसिले में मैंने अनेक स्थानों की यात्रा भी की। मैंने वर्षों इस्लाम और ईसाइयत के दायरे में इसकी खोज की। आस्तिकता और नास्तिकता पर भी सोचता रहा। मैं नास्तिकता के तर्कों से सहमत न हो सका। विज्ञान, भूगर्भशास्त्र, प्राणिशास्त्र, वनस्पतिशास्त्र, मानविकी और बुद्धिवाद—इन सब के माध्यम से मैंने नास्तिकता की जाँच की, लेकिन मैंने इन सब को खोखला पाया। मैं इस लेख में इन विद्याओं से मिले ज्ञान-विज्ञान की चर्चा नहीं करूंगा। इस लेख में मैं धार्मिक बातों की ही चर्चा करूंगा।

बहुत पहले से मेरे मन में यह प्रश्न उठता आ रहा था कि इस संसार



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में कोई धनी है और कोई निर्धन, कोई लंगड़ा-लूला, कोई पुरुष और कोई स्त्री—यह अन्तर क्यों है ? जब धर्मशास्त्र यह दावा करते हैं कि इस सृष्टि का स्वामी एक है, जो स्वभाव से न्यायकारी है, तो फिर यह अन्तर क्यों ? नास्तिकों का सब से बड़ा तर्क यही है कि यदि यह सृष्टि भगवान् की बनाई हुई होती, तो इसमें इतनी ऊंच-नीच क्यों होती ?

आइये, हम देखें कि इस सम्बन्ध में कुरान और हदीस क्या कहते हैं—

## ईश्वर के सम्बन्ध में कुरान का मन्तव्य

१. वह बहुत दयालु और कृपालु है।

२. अल्लाह के सिवा कोई उपासना के योग्य नहीं। वह सत् और चित् स्वरूप है।

३. वह सब लोगों का पोषक और स्वामी है।

४. निस्सन्देह अल्लाह अपने बन्दों पर अत्याचार नहीं करता।

५. अल्लाह अपने बन्दों पर अत्याचार का इरादा भी नहीं करता।

६. अल्लाह सारी सृष्टि का स्रष्टा और हर बात का उत्तरदायी है।

उक्त मन्तव्यों से जो खुदा दिखाई देता है, वह अच्छा और इस योग्य है कि उसे स्वामी माना जाये। वह दयालु, कृपालु, सर्वज्ञ, न्यायप्रिय, न्यायकारी, पूजनीय, राजा, बन्दों पर अत्याचार न करने वाला और अत्याचार का इरादा भी न करने वाला है।

## संसार के सुख-दुःख का स्रोत कहां है ?

इस मोड़ पर आकर मजहब दो पृथक्-पृथक् मार्ग अपनाते हैं। मुख्य रूप से मजहब दो हैं—सैमेटिक और आर्य। सैमेटिक से आशय इस्लाम और ईसाइयत से है और आर्य से आशय वैदिक धर्म से है।

आइये, अब देखें कि इस सम्बन्ध में कुरान क्या कहता है ?

१. आकाश और भूमि की बादशाहत खुदा की ही है।

२. आकाश और भूमि के कोष खुदा के ही हैं।

३. आकाश और भूमि की सारी शक्ति खुदा की ही है।

४. सब अच्छाइयां उसी की मुट्ठी में हैं।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

५. निस्सन्देह तुम्हारे रब ने सब लोगों को घेर रखा है।

६. समुद्र और खुश्की में जो कुछ हो रहा है, वह उसे जानता है। उसकी जानकारी के बिना न कोई पत्ता गिरता है और न जमीन के अन्दर से कोई दाना फूटता है। सब बातें उसकी जानकारी और इशारे से होती हैं।

कुरान के उपरिलिखित मन्तव्य और अनेक मन्तव्य आपने देखे हैं। ये बताते हैं कि इस संसार की सब खुशियां, वरदान और खजाने पूरे के पूरे खुदा की मुट्ठी में बन्द हैं और उसने लोगों को इस तरह से घेर रखा है कि उसकी इच्छा के बिना बन्दे कुछ नहीं कर सकते। न कोई पत्ता गिर सकता है, न आकाश में कोई पक्षी उड़ सकता है। उसने पूर्ण नियन्त्रण अपने हाथ में ले रखा है।

अब हमें देखना यह है कि क्या खुदा अपने बन्दों पर गुजरने वाली इन बातों से अवगत भी है। कारण यह कि ऊपर जिस खुदा के बारे में बताया गया है, उसके मुल्क में अकारण कोई उसकी मुट्ठी में सिमटे वरदानों से वंचित नहीं होना चाहिए। फिर ऐसा क्यों होता है? इसके तीन कारण हो सकते हैं —१. या तो खुदा अपने बन्दों की परिस्थितियों से अवगत नहीं या २. अपने बन्दों की परिस्थितियों से अवगत होते हुए भी जानबूझकर उन्हें ऐसी स्थिति में डालता है या ३. इसका कोई पिछला कारण है, जिसके कारण लोग इस स्थिति में आकर पड़े हैं।

वस्तुतः पहली और दूसरी संख्या के कारण ही नास्तिकता को प्रश्रय मिलता है। यहीं से नास्तिकता का पौधा बड़ा होता है, जिसकी चरम परिणति नास्तिकता में होती है। इसके विपरीत तीसरी संख्या का कारण नास्तिकता को निरस्त कर देता है और आस्तिकों के हाथ में प्रबल शस्त्र है।

अब हमें देखना यह है कि कुरान इनमें से किसका साथ देता है। कुरान में लिखा है कि १. आकाश और जमीन की जर्रा भर भी कोई चीज तुम्हारे रब से छिपी हुई नहीं। २. निस्सन्देह अल्लाहताला आकाश और जमीन की छिपी हुई खबर तक रखने वाला है। वह दिल की छिपी हुई बातों को भी जानता है।

- ये दोनों मन्तव्य और इन जैसे कई अन्य मन्तव्य, जो कुरान में विद्यमान हैं, साफ-साफ दर्शाते हैं कि इस संसार की कोई बात खुदा से छिपी हुई नहीं है। वह हर बात से अवगत है। यह सब क्यों होता है? इस सम्बन्ध में कुरान का मन्तव्य देखिये—



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अल्लाहताला अपने बन्दों में से जिसे चाहता है, उसे खूब रोजी-रोटी देता है और जिसे चाहे अल्पमात्रा में देता है। निस्सन्देह अल्लाहताला हर चीज के बारे में पूरी जानकारी रखता है। मतलब यह कि खुराक की न्यूनाधिकता खुदा करता है और वह यह सब अनजाने नहीं, जानबूझकर करता है। जिसे चाहता है, देता है, जिससे चाहे, रोक लेता है। जिसे चाहता है, सम्मान देता है, जिसे चाहता है, अपमानित करता है। जिसे चाहता है, उसका मार्गदर्शन करता है, जिसे चाहता है, पथभ्रष्ट कर देता है। तुम जिसे चाहो, सन्मार्ग पर नहीं ला सकते, लेकिन अल्लाह जिसे चाहता है, सन्मार्ग पर डाल देता है। अल्लाह जिसका मार्गदर्शन करे, उसे कोई पथ-भ्रष्ट नहीं कर सकता और जिसे अल्लाह पथभ्रष्ट कर दे, उसका कोई मार्ग-दर्शन नहीं कर सकता। जब अपने रब के चिह्नों की चर्चा की जाती है, तब उससे मुंह फेरने वालों से अधिक अत्याचारी कौन है? इस हाल में कि वह अपने गुजरे हुए कर्मों को भूल चुका है। वे लोग इन चिह्नों को न समझ पायें। हमने उनके दिलों को बन्द कर दिया है और उनके कानों में कार्क लगा दिया है। इसीलिए उन्हें हिदायत की बातें सुनाओ तो वे कभी हिदायत नहीं पा सकते। जो बन्दा गुमराही में फंसा है, मेहरबान खुदा उसे उसी में मुहलत और ढील देता रहेगा, यहां तक कि वे लोग देखें वह चीज, जिसका उनसे वादा किया गया हो—या तो मौत या कयामत। क्या तुम नहीं देखते कि हमने शैतानों को काफिरों पर ठोंस दिया है, ताकि वे उन्हें बहकाते रहें। सही रास्ते पर लगाना अल्लाह का काम है। लोगों में कुछ जालिम और काफिर हैं। अगर अल्लाह चाहते, तो सब लोगों को हिदायत दे देते। जिसे खुदा ने गुमराही पर डाल दिया है, उसके बचने का कोई मार्ग नहीं है। बेशक रुलाना और हंसाना उसी का काम है। अल्लाह की मर्जी के बिना ईमान लाना किसी आत्मा के बस की बात नहीं। क्या तुम यह खयाल करते हो कि तुम्हारे रब के वरदानों को लोगों ने स्वयं अपने बीच बांट लिया है? हरगिज नहीं। इस दुनियावी हाल में उनके बीच मैंने खुराक और जीवन के लिए आवश्यक वस्तुएं बांटी हैं। मैंने हर पहलू में कुछ लोगों को अन्यों पर वरीयता दी है, ताकि लोग कुछ अन्य लोगों को त्रसित और दास बनायें। यदि अल्लाह चाहते तो लोग खुले तर्क पाने के बाद आपस में लड़ते रहते। इनमें से कुछ काफिर हैं और कुछ मोमिन हैं। यदि अल्लाह चाहे तो लोग कभी भी एक-दूसरे की हत्या नहीं कर सकते। (लेकिन ऐसा हो रहा है। क्यों?) इसलिए कि खुदा जो चाहे, करने वाला है।

इस प्रकार की आयतें कुरान में भरी पड़ी हैं। मैंने उदाहरणार्थ



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कुछेक लिखी हैं। समझदार मनुष्यों के विचार के लिए इतना ही पर्याप्त है। उपरिलिखित आयतें बता रही हैं कि संसार की कोई वस्तु उससे छिपी हुई नहीं। वह खुशियों और गमियों—सबके बारे में जानता है। दुनिया की क्या बात है, आकाश की भी—यहां तक कि दिल की भी—बातों को वह जानता है। सृष्टि को खुशी से हंसाने वाला और रंज से रुलाने वाला वही है। संसार की सारी भोग्य सामग्री को उसने अपने पास रखा है और वही उसे लोगों में बांटता है—सर्वथा अपनी इच्छा के अनुसार। परिश्रम का कोई भरोसा नहीं। किसी को धनी और किसी को निर्धन, किसी को भूखा और किसी को प्यासा रखना उसी के हाथ में है। किसी को आका और किसी को गुलाम, किसी को शासक और किसी को शासित, किसी को अत्याचारी और किसी को पीड़ित रखना—यह सब उसी का काम है। यदि कोई गुमराह है तो वह भी उसी का किया हुआ है। गुमराह कभी भी अपने आप हिदायत हासिल नहीं कर सकते। वह हिदायत और खुशी स्वयं बांटता है। उसके बांटने की कसौटी उसकी मर्जी और मनमानी के सिवा कुछ नहीं। संक्षेप में बात यह है कि संसार के सब भेदभाव और अप्रसन्नताओं का उत्तरदायी खुदा के सिवा कोई नहीं। बिना किसी कारण जन्म से ही किसी को अप्रसन्न रखना भी उसका अपना काम है। इस सिलसिले में कुरान का मन्तव्य अब कुरान के अपने शब्दों में स्पष्ट हो चुका है। उसने अपने बन्दों में से कुछ को अपनी मुट्ठी में बन्द वरदानों से कृतकृत्य किया और कुछ को उनसे सर्वथा वंचित रखा। क्यों? इसलिए कि वरदानों से कृतकृत्य लोग वरदानों से वंचित लोगों को दास व शासित बनाकर खुशियां मनायें। उसने अपने बन्दों में से कुछ लोगों को जानबूझकर पतन के गर्त्त और गुमराही में डाल दिया है। यदि वे बेचारे मुक्ति प्राप्त करना चाहें, तो उनके लिए सब रास्ते भी बन्द कर दिये हैं। मतलब यह है कि कुरान के कथनानुसार सब बन्दे सर्वथा विवश हैं। लोगों पर बलपूर्वक ठोंसे गये कुफ्र और जलालत का दंड भी कितना दर्दनाक है? कुरान कहता है—जहन्नुम में दोजखियों को पीप का पानी पिलाया जायेगा और वे लोग उसे लेकर चुपके से पियेंगे और फिर वह गले से उतरने में मुश्किल करेगा और उन लोगों की हालत इतनी खतरनाक होगी कि हर तरफ से मौत उनकी ओर चली आ रही है। बेशक जो शख्स अपने रब के पास मुजरिम होकर पहुंचेगा, उसे जहन्नुम में डाल दिया जायेगा। उस में न वह मरेगा और न ही जीवित रहेगा। उनके चेहरों को आग झुलसाती रहेगी और वे लोग जहन्नुम में कुरूप बने रहेंगे। तुम्हारी आग जहन्नुम (नरक) की आग के सत्तर हिस्सों में से एक



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
हिस्से है अर्थात् जहन्नुम की आग इस दुनिया की आग से सत्तर गुना ज्यादा गरम है।

उन्होंने कहा कि रसूल खुदा ने फर्माया कि जहन्नुम वालों में सबसे कम कष्ट पाने वाला वह व्यक्ति होगा, जिसे आग की चप्पल पहनाई जायेगी। इस चप्पल के फलस्वरूप उसका दिमाग खौलने लगेगा, जैसे हांडी खौलती है।

अब्दुल्ला अहुर से कहता है कि उन्होंने कहा कि रसूल खुदा ने फर्माया कि बेशक काफिरों की जबान को बाहर खींच लिया जायेगा—कोस या दो कोस लोग उसे पैरों से रौंदते हुए चलते रहें।

इस किस्म की आयतों से कुरान और हदीसों की सैकड़ों पुस्तकें भरी पड़ी हैं। हमने कुछ ही उदाहरण दिये हैं। बुद्धिमान् व्यक्ति के विचार के लिए इतना ही पर्याप्त है। देखिये, बेचारे इन्सान का क्या हश्र हो रहा है। उसे बलात् पतन के गर्त्त में गिरा दिया गया है और उस पर कुफ्र ठूंस दिया गया है। उसके लिए मार्गदर्शन के सब दरवाजे बन्द कर दिये गये हैं। सोचने और समझने की शक्ति को पंगु बना दिया गया है। इतना ही नहीं, उस बेचारे को नरक की आग में झुलसने को विवश कर दिया गया है। फिर भी कहता यह है कि ये सब करतूतें करने वाला बहुत दयालु और कृपालु है। वह अपनी प्रजा पर न केवल कभी अत्याचार नहीं करता अपितु अत्याचार करने का इरादा भी नहीं करता। यदि यह सब निर्दयता और अत्याचार नहीं, तो फिर निर्दयता और अत्याचार किसे कहते हैं ?

यह एक सर्वमान्य सिद्धान्त है कि इस संसार में मनुष्य का जीवन सीमित है। उसकी शक्ति सीमित है। उसके कर्मों की भी सीमा है। सीमित कर्मों का असीम फल देना न्याय नहीं। कुरान कहता है कि जहन्नुम में रहने वाले सदा जहन्नुम में ही रहेंगे। उनके चमड़े बदलते रहेंगे और वे नये-नये कष्ट भोगते रहेंगे।

जब मैं इन असंगतियों की संगति खोजता हुआ कुरान और हदीसों की गहराई तक पहुंचा, तो मुझे वही कुछ मिला, जो मैंने उपर लिखा है। जब मैं वर्तमान संसार को शान्ति देने और मानव समाज को आस्तिक बनाने का मार्ग इस्लाम में न पा सका, तो मेरी खोज वैदिक धर्म की दिशा में मुड़ी। मुझे यह लिखते हुए प्रसन्नता है कि वैदिक धर्म के ग्रन्थों में मुझे अपनी सब शंकाओं के सन्तोषजनक उत्तर मिल गये। प्यारे मुसलमान भाइयो, मेरा आपसे निवेदन है कि यदि आप एक प्रभु की उपासना करना चाहते हैं, तो वैदिक धर्म की शरण में आइए। जो मजहब (जैसे इस्लाम) मानव को दास और पूर्णतः परतन्त्र बनाये, क्या वह ईश्वरीय धर्म हो सकता है ? कदापि नहीं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# हिन्दू धर्म की मान्यताएं

—प्रो. रत्नसिंह

प्रत्येक धर्म की अपनी-अपनी मान्यताएं होती है। हिन्दू धर्म भी इसका अपवाद नहीं है। इसकी कतिपय मान्यताओं का विवेचन करने से पूर्व हम यह स्पष्ट कर दें कि हमारे प्राचीन धर्म का नाम वैदिक धर्म है और हमारा नाम 'आर्य' है। कितने ही साहित्यिक तथा ऐतिहासिक प्रमाण प्रस्तुत किए जा सकते हैं जिनसे यह प्रमाणित होता है कि हमारा देश आर्यावर्त, भारतवर्ष आदि नामों से सम्बोधित किया जाता था तथा हमारे पूर्वज अपने को 'आर्य' ही कहा करते थे। 'हिन्दू' नाम का सर्वप्रथम प्रयोग ईरानियों ने किया। अरब, यूनान, चीन आदि के प्राचीन निवासियों ने भी इसी शब्द के विभिन्न अपभ्रंशों का प्रयोग किया। इस एतिहासिक तथ्य के होते हुए भी यह निर्विवाद है कि वर्तमान में आर्य धर्म के लिए हिन्दू धर्म ही व्यवहृत होता है अतः हम भी हिन्दू धर्म शब्द का ही प्रयोग करेंगे। साथ ही यह भी स्पष्ट कर दें कि वैदिक धर्म का मूलाधार वेद है। उसे 'श्रुति' भी कहते हैं। वेद के पश्चात् इस धर्म का प्रतिपादन करने के लिए जिन ग्रन्थों की रचना की गई, उनका नाम 'स्मृति' है। चाहे वे ब्राह्मण ग्रन्थ हों, आरण्यक हों, उपनिषदें हों, 'धर्मशास्त्र' हों, अंग हों, उपांग हों, वे सभी स्मृति कोटि में आते हैं। 'श्रुति' और 'स्मृति' में विरोध होने पर 'श्रुति' माननीय है, 'स्मृति' का आदेश उपेक्ष्य है। अर्थात् यदि ब्रह्मणादि ग्रन्थों में कोई बात वेद के विरुद्ध पाई जायेगी तो वह प्रामाणिक न होगी।

अब हम हिन्दू धर्म की विशेषताओं पर आते हैं। मानव जीवन की सर्वांगीण उन्नति के साधनों का विवेचन करना हिन्दू धर्म की एक प्रमुख विशेषता है। लोक व परलोक दोनों सत्य हैं। केवल इस लोक को ही सब कुछ समझना अथवा इस लोक की उपेक्षा कर परलोक के लिए ही उद्योग करते रहना दोनों ही अग्राह्य हैं। हिन्दू धर्म कुछ विश्वासों का समुदायमात्र



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
नहीं है, वरन् यह जीवन बिताने का एक ढंग है। इसके अनुसार धर्म वह आचरण है जिससे मनुष्य की लौकिक एवं पारलौकिक दोनों प्रकार की उन्नति हो सके। मनुष्य जीवन दो तत्त्वों का समुदाय है—वे हैं आत्मा और शरीर। एक चेतन है और दूसरा जड़ है। एक दूसरे के सहयोग के बिना सांसारिक व्यापार असम्भव है। अतः सफल व्यापार के लिए दोनों का स्वस्थ रहना आवश्यक है। शारीरिक उन्नति के लिए भौतिक पदार्थों का सेवन नितान्त अनिवार्य है। उसी प्रकार आत्मिक विकास के लिए ईश्वर विश्वास, उसका चिन्तन तथा उसके गुण कर्म स्वभाव का अर्थ जानकर उनके अनुसार अपना गुण कर्म स्वभाव करना आवश्यक है। इस समय कई मत ऐसे प्रचलित हैं जिनके विश्वास मनुष्य की सर्वांगीण उन्नति नहीं होने देते और उसमें बाधा डालते है। हिन्दू धर्म ऐसे विश्वासों को भी धर्म स्वीकार न करेगा।

हिन्दू धर्म की दूसरी विशेषता यह है कि अन्य मतावलम्बियों के मत जैसे वे वर्तमान में उपलब्ध हैं, इसकी दृष्टि में सर्वांश में सत्य नहीं हैं। कुछ लोगों की विशेषतः स्वार्थी राजनेताओं की यह धारणा है कि सभी धर्म सत्य हैं—किसी भी धर्म को स्वीकार कर लीजिये आपका कल्याण हो जायेगा। हिंसा को त्याज्य मानने वाला धर्म भी ठीक और उसे धर्म का अंग स्वीकार करने वाला भी ठीक। कैसी विडम्बना है ? हम इस बात को स्वीकार करने में असमर्थ हैं। प्रथम तो सब मत-मतान्तर धर्म की कोटि में आते ही नहीं हैं। यदि यह मान भी लिया जाये कि वे सभी धर्म हैं तो प्रश्न उपस्थित होता है कि धर्म सबका एक होता है वा अनेक ? जो कहें कि अनेक होते है तो एक दूसरे के विरुद्ध होते है या अविरुद्ध ? जो कहो कि विरुद्ध होते हैं तो एक के बिना दूसरा धर्म नहीं हो सकता और जो कहो अविरुद्ध हैं तो उनका पृथक्-पृथक् होना व्यर्थ है। इसलिए धर्म एक ही है, अनेक नहीं। सत्य एक ही होता है। अनेक नहीं। किसी प्रश्न का सही उत्तर केवल एक होगा और असत्य अनेक। दो बिन्दुओं के मध्य अनेक रेखाएं हो सकती हैं किन्तु सीधी रेखा केवल एक ही होगी। इसी प्रकार मत मतान्तर अनेक हैं किन्तु सत्य धर्म केवल एक ही है और वह है हिन्दू धर्म।

हमारे इस लेख से यह भ्रांति नहीं होनी चाहिए कि हिन्दू धर्म इतर मतावलम्बियों को घृणा की दृष्टि से देखता है अथवा उनको हेय समझ कर उनके हित की कामना नहीं करता। हिन्दू धर्म संकीर्ण नहीं है। यह तो सभी के कल्याण के लिए प्रयत्नशील रहता है। जो लोग सर्प को भी दूध पिलाते



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है उनके द्वारा दूसरों के अहित की आशंका कैसे हो सकती है ? इसलिए मनुष्यमात्र ही नहीं —प्राणिमात्र का हित चिन्तन करना हिन्दू धर्म की तीसरी विशेषता है। वेद में कहा है— 'त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ, अधा ते सुम्नमीमहे अर्थात् परमेश्वर हम सबका पिता और माता है। यतः वह हम सबका पिता और माता है, इसलिए हम सब आपस में भाई और बहिन हो जाते हैं। भला भाई-भाई में वैर कैसा ? अपने सगे भाई के सदृश हम सभी मनुष्यों के कष्टों का निवारण करने के लिए तत्पर रहते हैं। किसी का अनिष्ट चिन्तन तो एक हिन्दू के लिए सम्भव ही नहीं है। बिना विद्या के मनुष्य का कल्याण नहीं हो सकता। विद्या प्राप्ति का अधिकार मनुष्य मात्र के लिए है, जैसा कि वेद में कहा है —

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।

ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय।

परमेश्वर कहता है कि जैसे मैं मनुष्यमात्र के लिए इस कल्याणकारी वेद विद्या का उपदेश करता हूं वैसे ही तुम भी वेदवाणी का ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, अपने और पराये सब लोगों में प्रचार करो। जैसे परमात्मा ने पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, चन्द्र, सूर्य और अन्नादि पदार्थ सबके लिए बनाये हैं वैसे ही वेद भी सबके लिए प्रकाशित किये हैं। हमारी मान्यतानुसार मुसलमान, ईसाई, पारसी आदि सभी को वेद पढ़ने का अधिकार है। महर्षि दयानन्द जी एक प्रश्न करते हैं "क्या मनुष्यादि पर चाहे किसी मत में क्यों न हो दया करके उसका अन्नपानादि से सत्कार कहना और दूसरे मत के विद्वानों का मान्य और सेवा करना दया नहीं है ?" आर्यसमाज के छठे नियम में स्पष्ट कहा है —"संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।"

हिन्दू धर्म की एक अति महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि धर्मप्रचार में यह बलप्रयोग का समर्थक नहीं है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि अनेक धर्मान्धि व्यक्तियों ने तलवार के बल पर अपने विरोधियों की हत्याएं कर अपने धर्म का प्रचार व प्रसार किया है। मुसलमानों को उनके धर्मग्रन्थ कुरान में अन्य मत वालों पर बलप्रयोग के आदेश दिए गये हैं, यथा 'अल्लाह के मार्ग में लड़ो उनसे जो तुम से लड़ते हैं। मार डालो तुम उनको जहां पाओ। कतल से कुफ्र बुरा है। यहां तक उनसे लड़ो कि कुफ्र न रहे और होवे दीन अल्लाह का'। मुसलमान मत का ग्रहण न करना कुफ्र कहलाता है। कुरान के आदेशानुसार कुफ्र से कतल को अच्छा समझा गया है। इसका



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भाव यह है कि जो व्यक्ति मुस्लिम मत को स्वीकार न करेंगे उनकी हत्या कर दी जायेगी। मुसलमानों ने इस आदेश का खूब डटकर पालन किया है, यह सर्वविदित है। कुरान में एक अन्य स्थल पर कहा—'और काटे जड़ काफिरों की। मैं तुम्हें सहाय दूंगा साथ सहस्र फरिश्तों के पीछे-पीछे आने वाले। अवश्य मैं काफिरों के दिलों में भय डालूंगा, बस मारो ऊपर गर्दनों के मारो उनमें से प्रत्येक पोरी (संधि) पर।' 'और लड़ो उनसे यहां तक कि न रहे फ़ितना अर्थात् बल काफिरों का और होवे दीन तमाम वास्ते अल्लाह के और जानो तुम यह कि जो कुछ तुम लूटो किसी वस्तु से निश्चय वास्ते अल्लाह के है पांचवां हिस्सा उसका और वास्ते रसूल के।' कुरान की इस शिक्षा की समीक्षा करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती सत्यार्थ प्रकाश चतुर्दश समुल्लास में लिखते हैं—'ऐसे अन्याय से लड़ने लड़ाने वाला मुसलमानों के खुदा से भिन्न शांतिभंगकर्त्ता दूसरा कौन होगा? अब देखिये मजहब कि अल्लाह और रसूल के वास्ते सब जगत् का लुटना लुटवाना लुटेरों का काम नहीं है? और लूट के माल में खुदा का हिस्सेदार बनना जानो डाकू बनना है। और ऐसे लुटेरों का पक्षपाती बन खुदा अपनी खुदाई में बट्टा लगाता है। बड़े आश्चर्य की बात है कि ऐसी पुस्तक, ऐसा खुदा और ऐसा पैगम्बर संसार में ऐसी उपाधि और शांति भंग करके मनुष्यों को दुःख देने के लिए कहां से आया! जो ऐसे-ऐसे मत प्रचलित न होते तो सब जगत् आनन्द में बना रहता। कुरान के विषय में महर्षि दयानन्द सरस्वती ठीक ही लिखते हैं कि 'यह किताब न ईश्वर न विद्वान् की बनाई और न विद्या की हो सकती है। इसके बिना जो कुछ इसमें है वह सब अविद्या, भ्रमजाल और मनुष्य की आत्मा को पशुवत् बनाकर शांतिभंग कराके उपद्रव मचा मनुष्यों में विद्रोह फैला परस्पर दुःखोन्नति करने वाला विषय है।'

कुरान की उक्त शिक्षा से सर्वथा विपरीत हिन्दू धर्म का आधार वेद क्या कहता है, उसका भी अवलोकन कर लेना चाहिए। वेद आदेश देता है—

सहृदयं सामनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यमभिहर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या॥

अर्थात् तुम्हारा हृदय एक हो, मन एक हो, तुम आपस में लड़ो मत। एक दूसरे को प्यार से चाहो, जैसे गौ अपने नवजात बछड़े को प्यार से चाहती है। एक अन्य स्थान पर भक्त अपने भगवान् से प्रार्थना करता है—

दृते दृँह मा मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे, मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे॥



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अर्थात् हे भगवन्, मुझे समर्थ बनाइये, सब प्राणी मुझे मित्र की दृष्टि से देखें और मैं सब प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखूं, हम सब परस्पर मित्र की दृष्टि से देखें। प्राणिमात्र को मित्र दृष्टि से देखन वाला व्यक्ति क्या कभी किसी दूसरे व्यक्ति की विचार भेद के आधार पर हत्या करने की सोच सकता है? एक कुटुम्ब के लोग अनेक बार परस्पर लड़ झगड़ पड़ते हैं, उनमें मनमुटाव और विचारभेद भी हो जाता है। पर इसमें वे एक दूसरे के रक्त के प्यासे नहीं हो जाते। 'करूं मैं दुश्मनी किससे अगर दुश्मन भी हो अपना, मुहब्बत ने नहीं छोड़ी जगह दिल में अदावत की' किसी कवि की यह पंक्ति हिन्दू धर्म पर शत प्रतिशत चरितार्थ होती है।

चूंकि हिन्दू धर्म मानव मात्र का कल्याण करना चाहता है इसलिए उसे जहां भी कोई दोष दृष्टिगत होता है, उसे दूर करने के लिए यह प्रेमपूर्वक उचित परामर्श देना अपना नैतिक कर्तव्य समझता है। उसके परामर्श को कोई स्वीकार करे या न करे यह दूसरी बात है। परन्तु अपनी बात मनवाने लिए वह अनुचित दवाव या किसी प्रकार का बल प्रयोग नहीं करता।

परहित भावना से प्रेरित होकर हमें कई बार अन्य मतावलम्बियों की समालोचना करनी पड़ती है। समालोचना करना हिन्दू धर्म की पांचवीं विशेषता है। अन्य मतों की समालोचना करने के कारण कई विरोधी मत हिन्दू को असहिष्णु और संकुचित मनोवृत्ति वाला समझने लगते है। वस्तुतः यह उनकी अज्ञानता का परिचायक है। शिक्षण संस्थाओं में प्रत्येक विषय का अध्यापन करते समय प्राध्यापक समालोचना का सहारा लेता है। आंख मूंदकर किसी बात को ग्रहण करने की बात वह कभी अपने छात्रों से नहीं कहता। वस्तुतः बिना समालोचना के सत्य की जानकारी हो ही नहीं सकती। हाँ, यह भी सत्य है कि समालोचना किसी बुरे अभिप्राय से नहीं होनी चाहिए। खेद का विषय है कि समालोचना के वास्तविक अभिप्राय को न समझकर कई बार धर्मान्ध मुसलमान समालोचना से अपने को पीड़ित अनुभव कर हिन्दुओं का अनिष्ट कर डालते हैं। ऐसे भले लोगों को नहीं मालूम कि हमारी समालोचना से उनको कितना लाभ पहुंचा है। कई समझदार मुसलमानों ने हमारी समालोचना से प्रभावित होकर अपनी अपनी बुद्धि का प्रयोग करते हुए अपने धर्मग्रन्थ में लिखी हुई अवैज्ञानिक, भ्रान्ति पूर्ण, अनर्गल बातों का संशोधन करने का प्रयत्न किया है। इस्लामी मत के अनुसार स्वर्ग व नरक स्थान विशेष को कहते हैं, जो इस लोक से परे कहीं है। वास्तविकता यह है कि स्वर्ग-नरक स्थानविशेष नहीं, बल्कि



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अवस्थाविशेष को कहते हैं। हमारी आलोचना से प्रभावित होकर मौलवि मुहम्मद अली लिखते हैं This shows clearly that paradise and hell are more like two conditions than two places" अर्थात् स्वर्ग तथा नरक दो स्थानों की अपेक्षा दो स्थितियां हैं। इसके आगे चलकर अपने पक्ष की पुष्टि में कुरान के कुछ प्रमाण देकर मौलवी साहिब लिखते हैं। "This shows that hell is a condition which shall be perceived only by those in it and similar is the case with paradise यह दर्शाता है कि नरक एक अवस्था है जिसका केवल उस अवस्था वालों को अनुभव होगा और यही दशा स्वर्ग की है। ठीक इसके आगे वे लिखते हैं— "But as I have already pointed out, the Holy Quran says that paradise and hell begin in this very life" जैसा कि मैं पहिले बता चुका हूं कि कुरान शरीफ कहता है कि स्वर्ग और नरक इसी जीवन में आरम्भ होते हैं। एक अन्य स्थल पर वे लिखते है—"Heaven and Hell are not places of enjoyment and torture to be met with only after death, they are realities even here". अर्थात् स्वर्ग तथा नरक मृत्यु के पश्चात् सुख अथवा दुःख भोगने के स्थान नहीं हैं, वे तो यहां की वास्तविकताएं है।

स्पष्ट है कि मुहम्मद अली ने स्वर्ग-नरक का जो रूप बताने का यत्न किया है, वह लगभग वही है जो हिन्दू धर्मग्रन्थों में प्रतिपादित किया गया है। मुसलमानों को हमारी समालोचना से प्रसन्न होकर हमारा आभार प्रदर्शित करना चाहिए क्योंकि इसी समालोचना व खण्डन के कारण वे लोग अपने अन्धविश्वास से भरे हुए विचारों का परित्याग कर वैज्ञानिक तर्कपूर्ण बातों को ग्रहण करने के लिए बाध्य हुए हैं और इस प्रकार सत्य बातों को ग्रहण कर वे लोग गर्व के साथ आधुनिक वैज्ञानिक क्षेत्र में प्रवेश करने के अधिकारी बन सकेंगे।

## अपने नगर में हिन्दू रक्षा समिति स्थापित करें



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# राजनीति के हिन्दूकरण का सवाल

—कैलाश सत्यार्थी

मैं हिन्दू हूं! और यह लिखने में मुझे गर्व है। इसलिये मैं यह भी महसूस करता हूं कि जिस देश में हम रहते हैं, वहां की राजनीति भी वहीं की मिट्टी, पानी और हवा से घुली-मिली राजनीति होना चाहिये। वास्तव में राजनीति का यह राष्ट्रीयकरण ही किसी देश का प्राण होता है।

आज हर दिन, हर क्षण हमारे सामने देश मर रहा है—हम मर रहे हैं। किन्तु आखिर क्या वजह है कि अच्छे-से-अच्छे घोषणा-पत्रों को रखने वाले, रोज-रोज उपज रहे राजनैतिक दलों के रहते यह देश मर रहा है? मरने की बात मैं इसलिये कर रहा हूं कि जहां चोर और सिपाही, हत्यारे और रक्षक का फर्क खत्म होने लगे, वह समाज मरने लगता है। हालांकि राजनीति भी समाज की एक कमजोरी है। ठीक उसी तरह, जैसे डाक्टर और और सिपाही। बीमारी का कारण नहीं, तो डाक्टर क्यों? अपराध के कारण न हों, तो सिपाही क्यों? समाज में असमानता, अनुशासनहीनता, अन्याय न हों तो राजनीति की भला क्या जरूरत? इन मायनों में राजनीति की ज्यादा से ज्यादा जरूरत होना यह दर्शाता है कि समाज ज्यादा से ज्यादा सड़ रहा है। कोई भी समाज जिन कारणों से सड़ रहा होता है, टूट रहा होता है, वे कारण वहाँ के इतिहास, भूगोल और जलवायु में मिले हुए कारण होते हैं, इसलिए उस समाज को स्वस्थ रखने के लिये उसकी अपनी शैली और मूल्यों की राजनीति होनी चाहिए।

परसों केरल में जनता पार्टी टूटी, कल आन्ध्र में कांग्रेस (इं०), आज हरयाणा में लोकदल; कल कुछ और टूटेगा। यह प्रक्रिया नेताओं के स्वार्थ-साधन आदि के सतही कारण के अलावा मूलतः राजनीति के समाज से कटने की प्रक्रिया ही दर्शाता है। दिनोंदिन गहराता यह संकट क्या यह साबित नहीं करता कि हम दिनोंदिन भारतीय शैली और मूल्यों से दूर होते जा रहे हैं। ऐसे में मैं सोचता हूं कि राजनीति के हिन्दूकरण की जरूरत है। किन्तु यह हिन्दूकरण हिन्दूमहासभा वाला या भारतीय जनसंघ वाला हिन्दूकरण कतई नहीं है। वे हिन्दू राज्य की बात करते हैं; मुसलमान इस्लामि-



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्तान की तैयारी करता है; कम्युनिस्ट, कम्युनिस्ट राज्य के सपने देखता है। मैं पूछता हूं आखिर इन सब में शैलीगत फर्क क्या है ? थोपे हुए विचार या ढंग के आधार पर की जाने वाली कोई भी राजनीति हिन्दुत्व की राजनीति नहीं हो सकती। और इस तरह के राजनैतिक दल कोई स्थायी प्रभाव नहीं रख सकते। दुर्भाग्य से आज की राजनैतिक शैली ईसाइयत और इस्लाम की कार्यप्रणाली की शैली है। इन मजहबों ने अपनी पैदाइश से आज तक अपनी विचारधारा दूसरों पर थोपने का कार्य किया है। अस्पताल खुलवाकर या तलवार चलाकर, हर तरह अपने विचारधारा दुनिया पर थोपी है। खासकर अशिक्षित और कमजोर लोगों पर। भारत में हरेक राजनैतिक पार्टी के पास अपनी एक विचारधारा है, अपना एक वाद है, कुछ के पास दर्शन है, और वह दूसरों पर इसे थोपने में लगा है।

दूसरी तरफ हिन्दू का इतिहास रहा है कि उसने किसी पर भी अपने आपको थोपा नहीं, कोई विचारधारा मनवाने के लिए किसी को मजबूर नहीं किया, प्रलोभित नहीं किया। इसलिए हिन्दुत्व किताब पर लिखने की चीज नहीं, एक परिपूर्ण मानव के प्राणों का समवेत स्वर है। हिन्दुत्व बाहर से कुछ नहीं थोपता, भीतर से उदित करता है। अपनी कोठरी में एक बोतल में प्लास्टिक का फूल सजाने और आंगन में पौधे से महकते गुलाब के खिलने का जो फर्क है, वही विदेशी शैली और हिन्दुत्व का फर्क है। पहले में आरोपण है और दूसरे में स्वयंस्फूर्तता।आज की राजनीति में इसी स्वयं-स्फूर्तता की जरूरत है। और यह तब होगी, जब राजनीति मिट्टी पानी से और हवा से जुड़ कर की जायेगी।

मेरे बार-बार हिन्दूकरण, हिन्दुत्व शब्द के प्रयोग पर किसी को कोई एतराज नहीं होना चाहिए। क्योंकि इस शब्द का कोई मजहबी अर्थ नहीं है। इसका अर्थ उस जीवन-शैली से है, उस राष्ट्रीयता से है और उस संस्कृति से है, जिससे हिन्दुस्तान जिन्दा है—इसलिए हरेक मुसलमान और ईसाई कम्युनिस्ट का हिन्दू होना राष्ट्रीय अनिवार्यता है।

राजनीति के हिन्दूकरण की जरूरत का दूसरा बड़ा कारण यह है कि हिन्दुत्व के मूल्य ज्यों-ज्यों राजनीति अथवा सत्ता पर प्रभावी होंगे, त्यों-त्यों सत्ता की ताकत और जरूरत भी कम होने लगेगी—क्योंकि सत्ता को नियंत्रित करने वाले और नियंत्रित होने वालों के बीच का अंतर घटने लगेगा और यह इसलिए कि हिन्दुत्व की प्रक्रिया समाज को भीतर-बाहर से साथ-साथ बदलने की प्रक्रिया है। जबकि आज के सभी राजनैतिक दल, हिन्दूमहासभा



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

व आर० एस० एस० से लेकर मार्क्सवादी-लेनिनवादी तक सबके सब समाज को बाहरी प्रयासों से बदलने का दावा करते हैं। यह पाश्चात्य भौतिकवादी ढंग है। जब नियंत्रण का प्रयास बाहर से होता है, तो नियंत्रक के पास सत्ता केन्द्रित हो जाती है। तानाशाही का विकास ऐसे ही होता है और तानाशाही जनता की आशाओं व इच्छाओं का दर्पण नहीं हो सकता। इसलिए विकेन्द्रित शक्ति की सरकार ही आदर्श राज्य हो सकती है। हिन्दुत्व का तो सारा चिन्तन और दर्शन ही विकेन्द्रीयकरण पर खड़ा है। हमारे यहां विकेन्द्रीयकरण किसी डंडे के जोर से नहीं होता था। बल्कि राज्य पर धर्म के नियंत्रण के कारण व्यक्ति राजनेता बनने की बजाय धार्मिक होना ज्यादा पसंद करता था। हिन्दू के लिए धर्म, राज्य से बहुत ऊपर की चीज है। राज्य धर्म की रक्षा का साधन मात्र है, साध्य तो कतई नहीं। किन्तु आज सत्ता प्राप्त कर लेना ही हर राजनैतिक दल और राजनेता का साध्य बन गया है।

राजनीति के हिन्दूकरण की आवश्यकता का तीसरा मुख्य कारण समाज में विषमता की समाप्ति की जरूरत है। जो समाज कड़ी मेहनत के बाद भूख से बिलबिलाते किसान के बेटे को अनदेखा करता है, जो बड़ी-बड़ी अट्टालिकाएं खड़ी करने वालों की बारिश में पानी से भरी हुई टूटी झोंपड़ी का दर्द नहीं महसूसता, जो दवाई के अभाव में दम तोड़ते मेहनतकशों को हिकारत की नजर से देखता है, और इस अमानुषिक विषमता को उत्पन्न करने वालों की तरफदारी करता है वह समाज ज्यादा दिन जिन्दा नहीं रह सकता। या तो वह किसी विदेशी सरकार का आर्थिक या राजनैतिक गुलाम बन जाता है अथवा फिर कम्युनिस्ट जैसी विदेशी विचारधारा का। किन्तु हिन्दुत्व इस समस्या को समझने और हल करने का परिपूर्ण चिंतन देता है। पूंजीवाद न तो बन्दूक की गोली से खत्म होता है और न अखबारों से। इसके लिये एक पूरी मानसिक आत्मिक तैयारी की जरूरत होती है। वह तैयारी सिर्फ हिन्दुत्व के पास है। वास्तविकता तो यह है कि सारा हिन्दुत्व त्यागवाद पर खड़ा है। दूसरों की भलाई के लिये जो जितनी बड़ी कुर्बानी देना जानता है वह उतना ही बड़ा हिन्दू है। जब हम राजनीति के हिन्दूकरण की बात करते हैं तो इसका मतलब यही है कि हम राजनीति में त्यागवाद के समावेश की बात दोहराते हैं।

वैसे भी यह तो तय है कि देश के अन्दर अज्ञान, अन्याय और विषमता के जो भी विचार आज हैं, उनके कारण सतही नहीं हैं। बल्कि विकृति इतने



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गहरे जाकर है कि कोई सतही इलाज इसमें कारगर नहीं हो सकता। हास्यास्पद तो यह है कि "दुनिया कैसे बनी", "कैसे चलती है", "समाज कैसे बदलता है" आदि सवालों के 'रेडीमेड' विदेशी जवाब रखकर भारत के राजनैतिक दल समाज बदलना चाहते हैं। भला जो समाज अपने कछारों में पानी देकर खेती को जीवन देने वाली गंगा को मां की तरह पूजता हो। इलाज के काम आने वाले राहगीरों को फल और छाया तक देने वाले पेड़ों को पूजता हो, दूध, बछड़े देने वाली गाय को मां मानता हो—उस देश का आज लगभग हर आदमी दूसरे आदमी से कट रहा है—आस्थाहीन हो रहा है, यह बहुत साधारण प्रक्रिया नहीं है। इस सबके पीछे बहुत गहरी सांस्कृतिक विकृतियां हैं। मगर कैसी विडम्बना है कि इलाज या तो मार्क्स की किताब को रट कर चलने वाले कम्युनिस्ट कर रहे हैं, अथवा एकदम विदेशी शैली पर चलने वाले हिन्दू गांधीवादी या गोडसेवादी कर रहे हैं। यह सब बहुत बड़ा आत्मघात है। (हिन्दू इसमें दूरदराज इलाकों, देहात के तथा दूसरे राष्ट्रवादी मुसलमान, ईसाई, सिख आदि शामिल हैं) के कल्याण के लिये हिन्दुत्व की शैली की ही राजनीति चाहिये।

चूंकि आज सत्ता का लोभ इतना व्यापक बन चुका है कि भीतर की विकृतियों के अलावा बाहरी राष्ट्रविरोधी खतरों को नजरअंदाज किया जा रहा है। ईसाइयों के पास अनाप-शनाप पैसा है। अब इस्लाम के ठेकेदारों के पास भी। वे धर्म परिवर्तन ही नहीं, राष्ट्रीयता के परिवर्तन में लगे हैं। किन्तु वोटों के लालच में कोई भी सरकार कुछ नहीं करेगी। लेकिन हिन्दुओं के तथाकथित ठेकेदार भी तो बिछुड़ों को फिर से हिन्दू बनाने में करोड़ों रुपये कमाकर "धर्मरक्षा" कर रहे हैं। यह सब कुछ बहुत भौंडे स्तर का घिनौनापन है। मैं तो कहता हूं कि राष्ट्र के साथ गद्दारी है। वे स्वयं तो हिन्दू हैं ही नहीं।

---

**हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए 'जन-ज्ञान' का घर-घर में प्रचार करें।**



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# भारत विभाजन के समय हिन्दुत्व की रक्षार्थ बलिदान

—स्व० भक्त रामशरणदास, पिलखुआ

समय सन् १९४७। मुलतान के देहात में जलालपुर पीरवाला (तहसील शुजाबाद) कस्बे में उस समय १२ हजार हिन्दू नर-नारी रहा करते थे। वहां के मुसलमान थानेदार ने तथा मुसलमान जमींदारों ने हिन्दुओं को आश्वासन दिया था कि आप किसी भी किस्म की कोई चिन्ता न करें; हम मुसलमान आपकी हर प्रकार रक्षा करेंगे। परन्तु दूसरी ओर एक बस, जिसमें ६० हिन्दू नर-नारी सवार थे, और जिसमें धन माल स्त्री और बालबच्चे थे शुजाबाद जा रही थी तो रास्ते में ही यह मुसलमानों द्वारा लूट ली गई, हिन्दू नौजवानों को कत्ल कर दिया गया, जिसमें सुप्रसिद्ध पं० श्री बद्रीनाथ जी भी थे —जिन्होंने जलालपुर में ऋषिकुल की स्थापना कराई थी, उनको और बहादुरपुर के बड़े मेहता साहब को भी कत्ल कर दिया गया। युवा लड़कियों को उड़ा लिया गया।

जब यह समाचार सबको विदित हुआ तो मुलतान शुजाबाद और खासकर जलालपुर में इस समाचार से बड़ी हलचल पैदा हो गई और बड़ा आतंक छा गया।

जलालपुर पीरवाला के हिन्दुओं ने आपस में परामर्श किया कि मुसलमान हमें मुसलमान होने के लिये अवश्य बाध्य करेंगे, गोमांस खिलायेंगे और हमारी नौजवान बहन बेटियों को उड़ा कर ले जायेंगे, इस लिये अच्छा यही है कि सब जने मिलकर एक साथ धर्मरक्षार्थ जल करके राख हो जायें। इसे सबने सहर्ष स्वीकार कर लिया।

११०८ हिन्दू स्त्री बच्चे, नौजवान बूढ़े सभी एक जगह मैदान में आकर इकट्ठे हो गये और अपने अपने घरों का सब सामान रुपया पैसा जेवर कपड़ा आदि एक जगह इकट्ठा कर लिया और सब जने एक साथ मिल करके बराबर बराबर बैठ गये और सबने भगवान् को स्मरण किया और आग लगाली। मुसलमान 'अल्लाहो अकबर' का नारा लगाते हुए गाँव में घुसे तो उन्हें बड़ा ही निराश होना पड़ा और धनमाल जेवर और हिन्दू ललना सभी राख का ढेर हुआ मिला।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# उन्नीस महिलाओं का बलिदान

हमने अपने भारतीय इतिहास में यह तो भलि भांति पढ़ा है कि धर्म रक्षार्थ चक्रवर्ती सम्राट श्री हरिश्चन्द्र भंगी के विक जाते हैं। महाराणा प्रताप घास की रोटियां खाते हैं। वीर हकीकत, वीर वन्दा वैरागी बलिदान हो जाते हैं। श्री गुरु गोविन्द सिंह जी अपने चार दुधमुंहे बच्चों को बलिदान होते देखते हैं। पर इस घोर कलिकाल में आज भी ऐसे धर्मवीर इस भारत भूमि में मौजूद हैं जो अपनी उन्नीस बहन बेटियों को धर्म की रक्षा के लिये अपने हाथों से काट डालते हों? यह एक अभूतपूर्व सत्य घटना है और मेरे परम सौभाग्य से वे महापुरुष स्वयं कृपा कर मेरे घर पर पधार कर मुझे कृतकृत्य कर चुके हैं।

x x x

अभी दो तीन वर्ष की बात है कि मैं अपने घर के ऊपर के कमरे पर था। संध्या हो चुकी थी। वर्षा हो रही थी। बिजली फेल हो जाने से अंधकार छाया हुआ था। अकस्मात् किसी ने जोर से आवाज दी—भक्त रामशरण दास जी का मकान यहीं पर है? मैं ऊपर से नीचे उतर कर आया तो देखा एक रिक्शा खड़ा हुआ है और उसमें दो सवारियां बैठी हुई हैं और वर्षा के कारण उनके वस्त्र भी भीग गये हैं।

मैंने झट से उन्हें रिक्शे से उतारा और उनका सामान भी अपनी बैठक में रखवाया और उनसे वस्त्र बदलने की प्रार्थना की। वे वस्त्र आदि बदल कर मेरी बैठक में बैठ गये।

मैं—आपने बड़ी कृपा की जो दर्शन दिया। आपका कहां से पधारना हुआ?

उन्होंने कहा—हम इस समय तो दमोह में रहते हैं और इससे पहले पाकिस्तान में रहा करते थे और हमारे घर बार सब पाकिस्तान में छूट गये हैं। अब तो एक छोटी सी दुकान कर रखी है।

मैं—इस समय तो आप कपड़े के काम से आये होंगे?

वे—नहीं भक्तजी, हम आपके सामने एक बड़ी गहन समस्या लेकर के आये हैं जिसे आपको हल करना है। हम आपके लेख कल्याण आदि धार्मिक पत्रों में देखते रहते हैं। इसलिये आपको कष्ट दिया है।

मैं—कष्ट की क्या बात है। जो मेरे योग्य सेवा हो अवश्य बताइये। मैं सदैव तैयार हूं।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'अच्छा, तो पहले हमारी कहानी सुनिये और उसके पश्चात् हमारा प्रश्न है उसे सुनिये और फिर उसका उत्तर दीजिये', उन्होंने कहा।

मैं—अच्छा तो यह हो कि पहले आप भोजन कीजिये, तब आप अपनी गाथा सुनाइये और प्रश्न करिये।

'नहीं, नहीं, हम भोजन तो करके आये हैं और इसकी चिन्ता न कीजिये। अब तो आप हमारी दुःखभरी करुण कहानी सुनिये।

मैं—अवश्य सुनाइये।

'भक्तजी! मैं एक कातिल हूं और मैंने कई कतल किये हैं। (उनके मुख से यह शब्द निकलते ही मेरी फूंक सरक गई। अरे यह कातिल है तो इसका यहां क्या काम? मुझे बड़ा भय लगा कियह मेरे मकान पर रात्रि में कौन आ गया) उन्होंने आगे कहा—

मैंने उन्नीस प्राणियों को कत्ल किया है।

अब तो मेरे और भी छक्के छूट गये। आज यह क्या सुन रहा हूं? क्या ये लोग डाकू तो नहीं हैं? मैंने मन ही मन कहा। उन्होंने आगे कहना कहना प्रारम्भ किया। मैं १९ प्राणियों को मौत के घाट उतारने वाला पापी हूं या धर्मात्मा? और मैंने अच्छा किया या बुरा, यह आपको निर्णय करना है।

मेरे मन में उनकी बात सुनकर तूफान खड़ा हो गया। १९ प्राणियों का कातिल मुझ से धर्मात्मा होने का निर्णय लेना चाहता है! मैंने कहा—'आप आद्योपान्त पूरी घटना सुनाने की कृपा कीजिये'। उन्होंने सुनाना प्रारम्भ किया जो इस प्रकार है—

'हम अपने देश में बड़े आनन्द से रह रहे थे। जब इन नेताओं ने हिन्दू जनता के साथ विश्वासघात करके पाकिस्तान बनाने का निश्चय कर लिया तो चारों ओर से मुसलमान गुण्डों के दल हिन्दुओं के गांवों पर टूट पड़े। जो जो घोर अत्याचार किये गये वे वर्णनातीत हैं।

हमारे गाँव को भी गुण्डों ने चारों ओर से घेर लिया और जिधर देखो 'अल्लाहो अकबर' के नारे सुनाई पड़ रहे थे। गुण्डे घरों में घुस घुस कर आग लगा रहे थे और हिन्दुओं के रोने चिल्लाने चीत्कार करने के करुण स्वरों से आकाश फूटा जा रहा था।

हमारा घर का सब परिवार एक जगह इकट्ठा हो गया और हमारे घर



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की सभी स्त्रियाँ, जो लगभग २० थीं, एक जगह आकर इकट्ठी हो गईं और यह विचार विनिमय हुआ कि अब क्या किया जाय ?

बहन बेटियों ने कहा कि हमारे पवित्र पातिव्रत धर्म की किसी प्रकार रक्षा हो जाय। भले ही हमें मृत्यु का आलिंगन करना पड़े, इसकी चिन्ता नहीं।

निश्चय हुआ कि सभी बहन बेटियों को मार कर इनके धर्म की रक्षा की जाय। इन्हें कैसे मारा जाय और कौन मारे, अब यह समस्या सामने आई। गुण्डे तेजी के साथ मारते-काटते बढ़े चले आ रहे थे। यही निश्चय हुआ कि तुम्हीं इस क्रूर कर्म को करो। मैंने हृदय पर पत्थर रख कर यह कार्य करना स्वीकार कर लिया। सब स्त्रियां लाइन लगा करके बैठ गईं और मैंने तलवार उठाई और बारी बारी से सभी को मौत के घाट उतार दिया।

मैं धड़ाधड़ काटता रहा और वे बारी बारी से सहर्ष धर्म-रक्षार्थ कटने के लिये आगे आती रहीं। और रोने चिल्लाने का नाम नहीं, वे सहर्ष मृत्यु का आलिंगन करती रहीं। जब मैं १९ को काट चुका और सारा घर खून से भर गया और बाकी बची एक स्त्री को भी मैंने तलवार का वार किया तो उसकी आधी गर्दन कटने पाई थी कि इतने में हिन्दुस्तान की फौज आ गई और-वह उस खून से लथपथ जख्मी लड़की को और पापियों से लड़ते-लड़ते मरने को उद्यत हुए हम लोगों को ट्रक में भर कर हिन्दुस्तान में ले आये और दिल्ली आकर उस स्त्री का इलाज कराया गया। वह तो बच गई और शेष १९ स्त्रियां बलिदान हो गईं।

हमने पूछा कि आपको शंका क्या है और आपका प्रश्न क्या है ? वह एक दम से बड़े गम्भीर हो गये और उनकी आँखों में आंसू छलक आये और रुंधे कंठ से बड़े घोर दुःख भरे शब्दों में उन्होंने कहा—हमारा प्रश्न यह है कि हमने अभी कुछ दिन हुए भारत के प्रधान मन्त्री जवाहरलाल नेहरू का दिल्ली की विराट् सभा में भाषण सुना जिसमें उन्होंने गर्जकर कहा है कि हिन्दू और मुसलमान में कोई फर्क नहीं है और इन्सान इन्सान सब एक से हैं। वे लोग मूर्ख हैं और देश के गद्दार हैं जो हिन्दू मुसलमान को अलग अलग मानते हैं और हिन्दू मुस्लिम रोटी बेटी एक होनी चाहिए देश की उन्नति तभी होगी जब हिन्दू मुस्लिम भेद भाव समाप्त हो जायेगा। जब से हमने उनका भाषण सुना है, तब से हमारे मन में यह शंका उत्पन्न हो गई कि यदि वास्तव में हिंदू मुस्लिम भाई भाई हैं और एक हैं



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और इनमें कोई अन्तर नहीं है और हिन्दू मुस्लिम रोटी बेटी एक होने में कोई पाप नहीं तो हमने हिन्दू मुस्लिम भेदभाव मानकर ही अपने घर बार छोड़े और देश छोड़ा और अपने हाथों से तलवार लेकर अपनी सगी बहन बेटियों को और पूज्या ताई चाचियों को व्यर्थ ही काट-काट कर अपने हाथ उनके खून से रंगे और उनकी हत्या की। अब आप निर्णय करें कि क्या मैं कातिल हूं, या हत्यारा हूं और महामूर्ख हूं जो मैंने ऐसा घोर पाप किया था। या मैंने उचित किया और मुझे कोई पाप नहीं लगेगा?

मैंने झट से उनके चरण छूवे और प्रणाम किया, और कहा कि मैं आज आपका अपने स्थान पर दर्शन करके कृतकृत्य हो गया। आप तो साक्षात् धर्म की जीती जागती मूर्ति हैं। आपकी जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। आपने और धर्म पर हंसते हंसते शीश कटाने वाली और बलिदान होने वाली पूज्या प्रातः स्मरणीया देवियों ने वह उत्तम कार्य किया है जो वर्णनातीत है। जो उत्तम गति बड़े बड़े ज्ञानियों, ध्यानियों, तपस्वियों, त्यागियों और योगियों को भी प्राप्त नहीं होती वही उत्तम गति उन पूज्या देवियों की होगी और अन्य की होगी इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है। वह मेरी पूज्या देवियां स्वर्ग में बैठी हुई देवी देवताओं से पूजी जा रही होंगी। नेहरू या और कोई क्या कहता है इसकी तनिक भी चिंता मत करो। शास्त्र और सनातन धर्म क्या कहते हैं इस पर ध्यान दो। तुमने यह कार्य शास्त्रानुसार और सनातनधर्मानुसार किया है।

मेरी यह बात सुनकर उनका सारा शोक जाता रहा और प्रसन्नता से उनका चेहरा खिल उठा और उन्होंने कहा—यदि यह बात है तो हमें कोई चिन्ता नहीं। हमारा आज भ्रम दूर हो गया और अब हम निश्चिन्त हो गये हैं।

## धर्मवीर छिनकू का बलिदान

रियासत बहावलपुर में श्रीरामभक्त छिनकू रहा करता था। वह एक छोटी सी दुकान किया करता था। बहावलपुर के मुसलमान नवाब तक को छिनकू के ऊपर विश्वास था कि वह न कम तोलता है और न कभी झूठ बोलता है।

एक दिन एक मुसलमान भक्त छिनकू जी के पास आया कहा कि अपनी दूकान पर चलो मुझे कुछ सामान लेना है। चल कर दे दो। उसने उस मुसलमान से कहा कि यह समय दूकान खोलने का नहीं है। यह प्रातः काल का शुभ समय तो भगवान् श्रीराम के भजन करने का है।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह सुनकर उस मुसलमान ने बड़े क्रोध में भर श्रीराम को एकदम से गालियां देनी प्रारम्भ कर दीं और जो जी में आया उसने भगवान् श्रीराम के प्रति अन्ट सन्ट बका। भला श्रीराम भक्त छिनकू अपने परम इष्टदेव भगवान् श्री राम जी को इस प्रकार गालियां कैसे सहन कर सकता था? भक्त छिनकू ने उस उद्दण्ड मुसलमान से कहा कि ऐसे ही यदि तुम्हारे खुदा को और तुम्हारे पीर को कोई कुछ कह दे तो ? इस पर तो उस मुसलमान को और भी क्रोध आ गया और उसने पहले से भी ज्यादा गालियाँ भगवान श्रीराम को देनी प्रारम्भ कर दीं। भक्त छिनकू ने भी उसे वैसा ही उत्तर दिया। बात बढ़ गई और उस मुसलमान ने हाकिम के पास जाकर भक्त छिनकू के विरुद्ध रिपोर्ट कर दी। नवाब तक भी यह समाचार पहुंचा। नवाब छिनकू भक्त में पहले से ही बड़ी श्रद्धा रखता था, इसलिये उस नवाब ने भक्त छिनकू को यह कहला भेजा कि तू इनकार कर दे और तू यह कह दे कि मैंने पीर को और खुदा को कोई गाली नहीं दी। ऐसा कहने पर तुम्हें कुछ नहीं होगा और तुम्हें साफ छोड़ दिया जायगा। परन्तु जब कचहरी में भक्त छिनकू को ले जाया गया, वह हाकिम के सामने पेश हुआ और छिनकू का उस हाकिम के सामने बयान लिया गया तो भक्त छिनकू ने झूठ न बोल स्पष्ट ही कह दिया कि इस मुसलमान ने मेरे परम इष्टदेव भगवान् श्रीराम को गालियां दीं। मैंने भी इसके बदले में इसके पीर को और इसके खुदा को गाली दी।

फैसला सुनाया गया कि भक्त छिनकू को संगसार (पत्थर मार मार कर मार देना) दिया जाय। तुरन्त ही छिनकू को पकड़ करके ले जाया गया और एक बहुत बड़े मैदान में ले जाकर के खड़ा कर दिया गया। जो भी उधर से कोई मुसलमान गुजरता वही उस श्रीराम भक्त छिनकू के ऊपर पत्थर फेंक कर मारता और जोर से पत्थर लगते ही भक्त छिनकू कहता 'श्रीराम'। फिर पत्थर आकर पड़ता छिनकू फिर पुकारता 'श्रीराम'। इस प्रकार भक्त छिनकू के ऊपर पत्थर पर पत्थर आकर पड़ रहे हैं और पत्थर की मार से सिर, छाती, हाथ, पांव आदि सारा ही शरीर घायल हो गया है, लहू बह रहा है। पर फिर भी हर पत्थर के आ करके पड़ने पर छिनकू भक्त कह रहा है 'श्रीराम'। छिनकू भक्त की राम राम की रट बराबर जारी है। संध्या के समय उसका एक परम मित्र मुसलमान सज्जन भक्त छिनकू के पास आया और उसे भक्त छिनकू की यह दयनीय दशा देखकर बड़ी दया आई इस लिए उसने कहा कि भक्त छिनकू मुझसे तुम्हारी यह दशा नहीं देखी जाती तुम। मुझे आज्ञा दो कि मैं तुम्हें तलवार



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से एक ही बार में समाप्त करदूं जिससे तुम्हें इस प्रकार से कष्ट न उठाना पड़े और इस प्रकार से तड़प तड़प करके प्राण न देना पड़े। इस पर भक्त छिनकू ने उस मुसलमान को उत्तर दिया कि नहीं प्यारे मित्र ! राजाज्ञा के अनुसार ही मुझे मरना चाहिये। मुझे तो कोई पीड़ा नहीं हो रही है। पीड़ा तो केवल मात्र इस शरीर को ही हो रही है जिसका आज भी और जिसका कल भी नाश अवश्य ही होना है। तुम कोई चिन्ता न करो। और मुझे इस प्रकार कष्ट भोगते हुए ही मरने दो।

परन्तु उस मित्र के लिये भक्त छिनकू के ऊपर ऐसा घोर अत्याचार अधिक देर तक सहन करना कठिन हो गया। उसने भक्त छिनकू का अपने हाथ से सिर काट दिया। जब भक्त छिनकू का धड़ से कट कर सिर पृथ्वी पर गिरा तो उस समय सबने देखा कि छिनकू के अन्दर से श्री राम राम की आवाज (ध्वनि) निकली। यह देखकर सब आश्चर्य चकित हो गये।

---

## डा० रामनाथ वेदालंकार की धर्मपत्नी का देहान्त

वेदों के प्रसिद्ध विद्वान् डा० रामनाथ वेदालंकार की पत्नी श्रीमती प्रकाशवती जी का दिनांक २४-३-८२ को ५९ वर्ष आयु में तिलहर में देहावसान हो गया। वे चार-पाँच मास से अस्वस्थ चल रही थीं।

वे एक धर्मनिष्ठ, ईश्वरभक्त परोपकारशील, आर्यसमाज एवं आध्यात्मिकता के कार्यों में रूचि लेने वाली, सन्ध्या-अग्निहोत्र-गायत्रीजाप आदि करने वाली अतिथि-सत्कारप्रिय, सादा जीवन एवं उच्च विचार के आदर्श को जीवन में परिणत करने वाली और त्याग-तपस्या-परायण महिला थीं। जीवन में वे प्रकाश और प्रेरणा का स्रोत बन कर आई। दयानन्द संस्थान और हिन्दू रक्षा समिति के कार्य भी उनकी रुचि के अनुकूल थे तथा वे 'जन-ज्ञान' नियमित रूप से देखती थीं।

उनकी स्मृति में उनकी आत्मा की शान्ति के लिए १००)- दयानन्द संस्थान के लिए तथा १००)- हिन्दू रक्षा समिति के लिए दान में भेजे।

जन-ज्ञान अपने हजारों पाठकों की ओर से उनकी दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए परमात्मा से प्रार्थना करता है।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत के गृहमंत्री के नाम भीलवाड़ा जिला हिन्दूमहासभा के अध्यक्ष का खुला पत्र

# पण्डिता राकेशरानी की गिरफ्तारी भारत सरकार के लिए कलंक

आदरणीय महोदय,

यह जानकर अत्यंत वेदना हुई कि आपके होते हुए अखिल भारतीय दयानंद संस्थान आर्य समाज नई दिल्ली की अध्यक्षा एक हिंदु विदुषी प्रकान्ड पंडिता निर्भीक नारी को आपकी सरकार ने धर्म निरपेक्ष सरकार ने धमकी से भयभीत होकर गिरफ्तार कर लिया।

'इस्लाम क्या है' पुस्तक में पंडिता राकेशारानी ने ऐसा क्या लिखा है जो गलत है ? यदि कस कर आप देखें तो इतिहास और सत्य की कसौटी पर राकेशरानी का लिखा एक एक शब्द खरा उतरता है।

दिन प्रतिदिन जैसा की आप सबसे अधिक जानते हैं मुसलमानों की संख्या बढ़ती जा रही हैं। तभी तो वे यह साहस कर सके कि भारत की की राजधानी दिल्ली में जगह जगह पोस्टर लगाकर सरकार को खुले आम यह धमकी दे दी कि यदि इस्लाम क्या है पुस्तक को पूरे भारत में जब्त न किया गया और इस पुस्तक की लेखिका शैतान औरत को गिरफ्तार न किया गया तो हिन्दुस्तानी मुसलमान दिल्ली और मुल्कगीर पैमाने पर इस शरओज फितनापरवर जहरीली और फ़िरका परस्त जहनियत के खिलाफ जबंदस्त हरीक चलायेगें जिसकी तमाम तर जिम्मेदारी मर्कजी वजारते दाखिला हकूमते हिन्दू और दिल्ली इंतजामिया पर होगी। और मुसलमानों की इस धमकी से भारत सरकार डर गई गृहमंत्री ज्ञानी जैल सिंह जिनमें उस गुरु गोविन्दसिंह का जिसके बच्चों को दीवारों में जीवित चुन दिया गया था रक्त आज भी बरकरार है डर गये तो अपार वेदना हुई।

आज श्री संजय गांधी रह रहकर याद आते है। ईश्वर ने उन्हें अपने पास बुलाकर हिंदुओं का एक प्रतापी हिमायती एवं रक्षक छीन लिया हैं। उनकी अनुपस्थिति इस समय बड़ी दुखदायी हो उठी है। आज यदि



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

श्री संजय होते तो मुसलमानों की धमकी स्वंय मुसलमानों के लिए मौत का पैगाम बन जाती।

जिला हिन्दू महासभा भीलवाड़ा आपसे विनम्र निवेदन करती है कि परम आदरणीय उद्भट वीरांगना एवं प्रकाण्ड पंडिता राकेशरानी पर से अनुचित कानून के समस्त बधन हटाकर हिन्दू माथे को झुकने से बचायें साथ ही उनकी पुस्तक को जल्द मुक्त करें इसके साथ ही जिन गुण्डों ने पंडिता राकेशरानी के लिए अपमानजनक शब्द लिखे हैं और भारत सरकार को धमकी दी है ऐसे समस्त गुण्डों को ऐसा भंयकर दण्ड दे कि वे और उनका समस्त फिरका भविष्य में फिर कभी इस प्रकार की देशद्रोहिता करने का दुःसाहस ही न करें।

---

## वन्देमातरम् और मौलाना मुहम्मद अली

**श्री माधवराव सदाशिव गोलवलकर**

मौलाना मुहम्मद अली जो राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के दाहिने हाथ माने जाते थे और एक निष्ठावान कांग्रेसी मुसलमान थे। एक प्रसिद्ध उदाहरण है।

मौलाना मुहम्मद अली सन् १९२३ में काग्रेस के काकिनाडा अधिवेशन के सभापति चुने गये थे। उस अधिवेशन में राष्ट्रीय गीत 'वन्देमातरम्' के गान के लिए प्रख्यात देशभक्त संगीतज्ञ पंडित विष्णु दिगम्बर पुलुस्कर आये थे। जैसे अधिवेशन प्रारम्भ होने को हुआ और 'वन्देमातरम्' का गान करने के लिए वे आगे बढ़े, मौलाना साहब ने उन्हें यह कहते हुए रोक दिया कि—'नहीं, आप वह राष्ट्रीय गीत नहीं गा सकते वह हमारी धार्मिक भावनाओं पर आघात करता है।" किन्तु दृढ़ निश्चयी-हृदय पुलुस्कर ने यह कहकर दब जाने से इन्कार कर दिया कि वे विशेष रूप से इसलिए आये हैं और अपने कर्त्तव्य का पूरा करेगें। क्रोध में आकर मौलाना मुहम्मद अली बैठक के सभापति के उस स्थान से उठकर चलें गये और जब तक 'वन्देमातम्' का राष्ट्रीय गीत चलता रहा, दूर खड़े रहे।



मुद्रक—प्रकाशक—संपादक पंडिता राकेशरानी के लिए नरेन्द्र प्रैस दिल्ली में छपा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुरादाबाद में हिन्दू संगठनों के प्राण, हिन्दू रक्षा समिति के सहयोगी, नगर की अनेक शिक्षण संस्थाओं के संचालक सुप्रसिद्ध नेता श्री दयानन्द एडवोकेट का गत २६ मार्च को अचानक निधन हो गया। उनकी मृत्यु से हिन्दू हितों को अपार क्षति पहुंची है। जन-शान दिवंगत के चरणों में सादर श्रद्धा सुमन अर्पित करता है—सम्पादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai


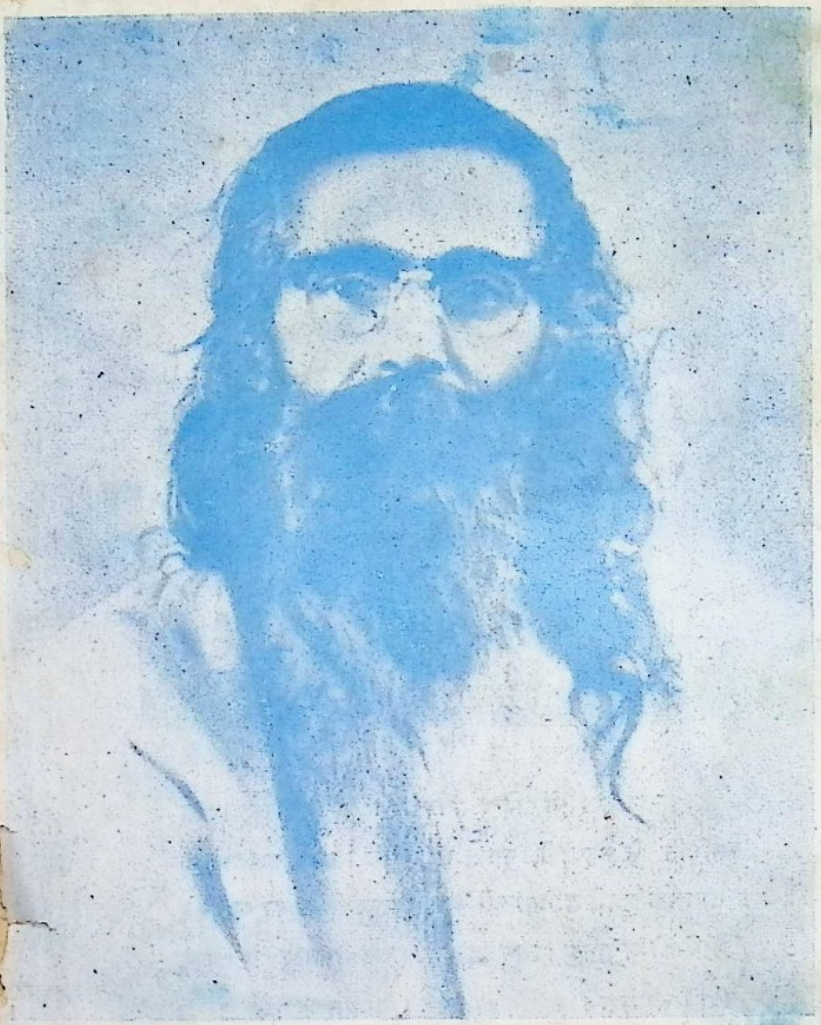

ज्ञान-संगठन और शक्ति के संगम, तपः पूत
हिन्दुत्व की प्रेरणा के अजस्र स्रोत
स्वर्गीय श्री [illegible] गोलवलकर (गुरूजी)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi